

श्रीमद् बुद्धिसागरजी ग्रन्थमाला ग्रन्थांक ८

योगनिष्ठ मुनिराज श्री बुद्धिसागरजी कृत.

श्री परमात्म दर्शन.

जिज्ञासु सद्ग्रहस्थोनी सहायथी

छपावी मसिद्ध करनार,

श्रीअध्यात्मज्ञानप्रसारकमंजल.

[श्री " लक्ष्मी " प्रिन्टिंग प्रेस—अमदावाद.

वीर स. २४३६ सने १९१०

किम्मत [०-१९-०]

वे बोल.

“ ज्ञानक्रियाभ्या मोक्ष ” ए मोक्षमार्गनुं दृष्टिर्विदु छे तथापि घणा जैनो तेना खरा रहस्यने नहि जाणता एक तरफ वधु घलणतो वीजा तरफ न्युन पटलुज नहि पण अपेक्षा समजवाना ज्ञाननी स्वामीए घणी बखत डावो हाथ जमणाने दवावे छे तेवी स्थिति जोवाय छे. आनु कारण पूर्वाचार्योए द्रव्य गुण पर्याय आदीनु जे मुक्षमज्ञान प्रकास्यु छे ते ज्ञानने समय अनुसारनां मनुष्यो समजी शके तेनी उत्तम शैलीथी सरळ भाषामा ग्रथो तैयार करी जनसमाज आगळ जोड़ता प्रमाणमा रजु नहि थवानु छे.

अमार चोकस मानवु छे के जैनधर्मनां सिद्धांतो प्रमाण अने युक्तिओथी एवां तो प्रबळ अने न्याययुक्त छे के जेम जेम ते तत्वो वधु फेलावो पामशे तेम तेम प्राचिन दृष्टि वधु खीली नीकळशे, अने जैनधर्मनु क्षेत्र बहोळ थशे.

आ माटे मात्र जैनोज नहि पण सर्वे लोकोना बोधार्थे जैनधर्मनां पुस्तको रचाववाथी अने सारी रीते बंचाववाथी अन्य लोको पण जैनतत्त्वनो लाभ मेळवशे केमके जैनधर्म मात्र जैनो माटेज नथी. गमे ते ज्ञाति होय पण तेनां सिद्धांतो अनुसार वर्चन राखनार जैन होइ शके छे. आवी भाव उपकारनी दृष्टि ध्यानमा राखी, काळने अनुसरी, तथाप्रकारनो प्रयत्न करी परमपूज्य गुरुवर्य श्रीमद् बुद्धिसागरजीए आवा तत्वमय ग्रथो रच्या छे जे पैकीनो आ “ परमात्मदर्शन ” ग्रथ छे.

आ ग्रथ अमे उपर जणाव्यु तेवा प्रकारनी स्वामीने दुर करनार छे, एम कहीए तो अतिस्योक्ति नहि कहेवाय.

आ ग्रथमा वीजा अनेक विषयो साथे ज्ञान अने क्रिया बनेनी यथास्थित सावीती करी वतावा छ केमके बनेना समेलन विना आत्मकल्याण दुर छे. पटद्रव्य, पटकारक, पचसमवाय, नय निषेपा वीगेरेथी द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भावने, अनुसरीने आ ग्रथ लखायो

છે, જે અભ્યાસીઓને માટે આશિર્વાદરૂપ છે. બલકે આત્મામીમુલક જનાર છે. આશ્ચર્ય વાચનાર પોતેજ કનૂઝ કરશે કે મુહુર્ત્ય શ્રીમદ્ બુદ્ધિસાગરગીર્ આ પ્રકારના પ્રયાસે કરી જૈનસમાજ ઉપર મહાન ઉપકાર કીધો છે તેઓનો આ રીતે જૈનકોમ ઉપરજ ઉપકાર થાય છે, એમ નહિ પણ તેઓના ગ્રંથોની છેલ્લન, અને કાવ્ય શૈલી, એવી તો મેમ ઉપજાવનારી છે કે સર્વે દર્શનવાળાઓ તેઓશ્રી રચીત ગ્રંથો હોંસથી વાંચે છે એમ અનુભવ કઠી આપે છે. એટલુંજ નહિ પણ તેઓશ્રીનાં મજનપદો તો તેઓશ્રી ડ્યા ડ્યાં વિચર્યાં છે, ત્યા ત્યાં ફોડપણ રીતના તફાવત વિના હમેશના માટે ગવાતાજ રહે છે. આથી અન્ય દર્શનીઓ પણ જૈનધર્મને જાણતા અને પ્રીતિ કરતા થયા છે. આ શુ જનસમાજ ઉપર જેવો તેવો ઉપકાર છે ?

તેઓશ્રી તરફના અકુશના આધિને તેઓશ્રી ત્રિપે હમારે જનાવડુ જોડે છે તે જનાવી શકતા નથી, પણ સમાજ તો કનૂઝ કરતી જોવાય છે કે, ભેદાભેદ અને પ્રારામારોની ફોડપણ ચર્ચામાં ન ઉતરતાં પોતે અને અન્ય જીવા પોતાના આત્માનુ કલ્યાણ કડ રીતે કરી શકે તેજ માર્ગ તરફ તેઓશ્રીનુ પ્રયાણ છે અને તે દિવસે દિવસે વધતુ અને વધતુ જાય છે.

તેઓશ્રીના ગ્રંથો સવથી વધુ વિવેચનમા નથી ઉતરી શકતા કારણ તેઓશ્રીનુ માનવુ એમ છે કે દુનિયાં દર્પણરૂપે વસ્તુને વસ્તુરૂપે કેમ નહિ જોડ શકે ? (નેશક ગુણાનુ રાગની દષ્ટિ તેમાં મુખ્ય ભાગ મજવે છે.) તેથી અમો તેવા પ્રકારની તજવીજમા ન ઉતરતાં તેઓશ્રીની કૃતિના ગ્રંથો જેમ પને તેમ સમાજ આગઝ સારા સ્વરૂપમા (ઓઠી કિંમતે) રજુ કરવા એજ કર્તવ્ય સારી આગઝ વચીએ ડીએ અને ગુરુ રૂપાથી મઢઝ પોતાના નામે ? વર્ષમા ? પુસ્તકો વહાર પાડી ગરુ છે.

આ રીતે મઢઝ આગઝ વધવામાં જે ફતેહ પામ્યુ છે તેમાં ગુરુશ્રી ઉપરાત મઢઝને પુસ્તકો પ્રગટ કરવાને દ્રવ્યનીમદ્દ કરનારા દહસ્થાનોપણ હિસ્સો છે જે અમો જનાવવા સુકી જડુયોગ્યધામ્તાનથી અમાઝના ગ્રંથોના સહાયકોના નામો તેતે ગ્રંથો સાથે મુદ્રિત

थयेल छे. जेओ उपरात मजकर " परमात्मदर्शन " ग्रथने प्रगट करवामा नीवे मुजब महाय मळी छे.

- १५०) शेट मोनीजी जेताजी पुनावालाजी विधवा वाड नाजुपाइ
 ७५) शेट मोहनलाल ताराचद. विजापुरवाळा.
 ५०) शेट रायचदभाइ रवचद. साणदवाळा.
 ५०) शेट वाडीगल मगनलाल अमदावाद.
 ५१) शेट अमृतलाल वेशवलाल वाडीसदगत भाइ अमृत-
 लालना स्नणार्थे तेमनी मातुश्री चचळ व्हेने अमदावाद.
 ५०) वाइ हरमोरव्हेन श्री अमदावाद.
 ३१) वकीठ मोहनलाल हेमचद तेओना ची. भाइ सवाड
 ना पुण्यार्थे श्रीपादरा.
 २५) शेट द्याधीभाइ मुलचद. श्री माणसा.
 ३०) शेट माधवलाल अमथालाल. श्री माणसा.
 ३१) शेट मोहनलाल रुमचद अमदावाद.

आवी रीने सहाय करनाराओनो तथा बीजा मददगार ग्रह-
 स्थोनो मडळ आभार माने छे. अने तेओने पोताना द्रव्यनो आ
 रीते सदुपयोग करवा माटे धन्यवाद आपे छे.

मडळनो उद्देश उपर जणाव्यु तेम जनसमाजमा तेओश्री रचित
 पुस्तको बहु वचाय ते माटे सस्ती किंमते प्रगट करवानो छे, ते
 वजावे जाय छे. ते समाज पण जोड शकी छे के बीजी कोडपण
 सहाओ करता मडळ पुस्तकोनी घगीज ओत्री किंमत राखे छे,
 ते पण बीजा पुस्तको प्रगट थवाने उपयोगार्थे तेमज थोडीपण किंमत
 आपी पुस्तक खरीदतां ते उपर बहु भाव रहे छे ते अर्थे.

मडळ आशा राखे छे के गुरुवर्य पुस्तको तैयार करता रहे छे
 तेज प्रकारे प्रगट कराववाने सहायनो वधता जशे

छेवटमा व्यान संचवाने रजा लइए छीए के मडळ मारफते
 आ रीते पुस्तक प्रगट कराववाने जरर विचारशो.

मुसाइ चपागळी
 वीर सवत २४३४
 पोल मुनी १० गुरु

} ली.
 श्री अध्यात्मज्ञान प्रसारक मडळ,

परमात्मदर्शनग्रंथ प्रस्तावना.

जगत्मा प्रत्येक मनुष्यो धर्मनु आराधन करे छे. प्रत्येक मनुष्यो धर्मना माटे इच्छा राखे छे. प्रत्येक मनुष्योने अनंत सुख प्राप्त करवानी तीव्र जिज्ञासा बर्ते छे ज.म, जरा, मरणना दुःख-मायी बचाव थाय ते माटे प्रत्येक मनुष्यो बुद्धयनुसार उपायो शोधे छे अमर थवु ते माटे अनेक प्रकारनी शोधो करे छे. आवी अमूल्य शोध करवानी कौने जिज्ञासा न हे होय ? अलखत सर्वने होय छे आवी शोध माटे ज्ञानदृष्टिनी जरूर छे अने ते पण सर्वज्ञ दृष्टि होवी जोइए आनी सर्वज्ञ दृष्टिवाला तीर्थकरो मथम थइ गया छे. आ क्षेत्रमा धरम तीर्थकर त्रिशलातनय श्री महावीरस्वामी २४३६ वर्ष उपर थइ गया छे तेमणे केवलज्ञानथी सर्व पदार्थो जाणया तथा देखया मनुष्यो नित्य सुख प्राप्त करे तथा जन्म जरा अने मृत्युना दृग्गमांथी छूटे ते माटे तेओथ्रीण आत्मज्ञान बताव्यु छे. सर्व प्रकारना जीव अने अजीव पदार्थोनु-स्वरूप बताव्यु छे ज्ञानदर्शन अने चारित्र्यरूप मोक्ष मार्ग बताव्यो छे. नात जातनो मेद राख्या विना आत्मतत्त्वनी शक्तियो खीलववाना उपायो बताव्या छे साधु धर्म अने गृहस्थ धर्म एम बे प्रकारना धर्म बताव्या छे अमर थवाने माटे आत्मधर्मनु यथार्थ स्वरूप बताव्यु छे. सम्बसरणमां बेसी देशनादेइ चतुर्विध सघनी स्थापना करी छे तेमना गणधरोए द्वादशांगीनी रचना करी, पश्चात् स्थण्डिलोए उपांगनी रचना करी तेमनी पाटे जे जे आचार्यो थया गीतार्थो थया तेआए प्रकारणो ग्रयो भादिनी रचना करी प्रत्येक आचार्योनी मुख्य उद्देश जमानाने अनुसरी गमे ते भाषामां सहेलाइथी मनुष्यो रूप मार्ग समजी शक्रे तेवा ग्रयो अने तेवा प्रकारनो उपदेश आ-

पवानो हतो, ते रीतिने अद्भुसरी उमास्वाति वाचक, सिद्धसेन दिवाकरसूरि, हरिभद्रसूरि, श्री हेमचंद्र आचार्य श्री अभयदेवसूरि, यशोविजय उपाचार्य, आदि धर्मधुरधर आचार्योए. अनेक मनुष्योना उपकारार्थे सस्कृत भाषामा तथा मागधी प्राकृतादि भाषामां उपदेश दीधो छे तथा तेवा ग्रंथो बनाव्या छे. पूर्वोक्त आचार्योना ग्रंथो सूत्रोनी पेटे माननीय पूजनीय गणाय छे. श्री हेमचंद्र पश्चात् लोकोनी स्थिति विद्या सत्रधी घटवा लागी. लोको मागधी अने सस्कृतमां पण अल्प समजवा लाग्या त्यारे आचार्योए जमानाने अनुसरी चालती गुर्जर भाषा आदिमां रासो बगेरे बनाववा लाग्या स. १३२७ नी सालमा सात क्षेत्रनो रास बन्यो छे आ सात क्षेत्रनो गुर्जर भाषानो रास छपावी सिद्ध कर्षु छे के जैनोमाधी गुर्जर भाषा मुख्यताए प्रकाशी छे आ रास भजन सग्रह चोधा भागमां छपाव्यो छे. ते पहेला पण गुर्जर भाषामा जैनाचार्योए काव्य लख्यां होय एम सभव थाय छे अने ते माटे शोध चालेछे. प्रथम तो गुर्जर भाषामा पत्र तरीके रचना करी उपदेश आप्यो पश्चात् ग्रंथमां पण ग्रंथ बनावी उपदेश देवा प्रारभ कर्षो. श्रीवीरे प्ररुपेलां तत्त्वोना सस्कृत, प्राकृत, मागधी, गुजराती, हिंदुस्थानी बगेरे अनेक भाषामा हाल अवतार धएलो अनुभवाय छे श्री वीरमभु मुक्तिमां गया तो पण गगाना प्रवाहनी पेटे तेमनी पाछळ तेमनो उपदेशेलो तत्त्वमार्ग पुरुष परपरा अखड बहेवा लाग्यो हाल पण ते प्रमाणे जोवामां आवे छे.

सस्कृत भाषामा तथा मागधी भाषामा हाल ग्रंथो बनाववामा आवे तो प्रायः दश हजारमा पाच माणस पण भाग्येज समजी शके. सस्कृत तथा मागधीमा बनाव्वेला ग्रंथोने पण गुर्जर भाषामा समजववामा आवे त्यारेज लोकोना समजववामा आवे त्यारे गुर्जर भाषामा ग्रंथो बनाववामा आवे तो घणा लोको समजी शके प्रस

परमात्मदर्शनग्रंथ प्रस्तावना.

जगत्प्राप्तये मनुष्यो धर्मं च आराधनं करोति. प्रत्येक मनुष्यो धर्मना माटे इच्छा राखे छे. प्रत्येक मनुष्योने अनंत सुख प्राप्त करवानी तीव्र जिज्ञासा वर्ते छे ज म, जरा, मरणना दुःख-माधी बचाव थाय ते माटे प्रत्येक मनुष्यो बुद्धयनुसार उपायो शोधे छे अमर यत्न ते माटे अनेक प्रकारनी शोधो करे छे. आर्वी अमूल्य शोध करवानी कौने जिज्ञासा नहि होय ? अलगत सर्वने होय छे आर्वी शोध माटे ज्ञानदृष्टिनी जरूर छे अने ते पण सर्वज्ञ दृष्टि होवी जोइए आर्वी सर्वज्ञ दृष्टिवाळा तीर्थंकरो प्रथम थइ गया छे आ क्षेत्रमा चरम तीर्थंकर त्रिशलाननय श्री महावीरस्वामी २४३६ वर्ष उपर थइ गया छे तेमणे केवलज्ञानधी सर्व पदार्थो जाणया तथा देखया मनुष्यो नित्य सुख प्राप्त करे तथा जन्म जरा अने मृत्युना दुःखमाधी छूटे ते माटे तेओश्रीए आत्मज्ञान वताव्यु छे सर्व प्रकारना जीव अने अजीव पदार्थोनु स्वरूप वताव्यु छे ज्ञानदर्शन अने चारित्ररूप मोक्ष मार्ग वताव्यो छे नात जातनो भेद राख्या विना आत्मतत्त्वनी शक्तियो खीलववाना उपायो वताव्या छे साधु धर्म अने गृहस्थ धर्म एम वे प्रकारना धर्म वताव्या छे अमर थवाने माटे आत्मधर्मनु यथार्थ स्वरूप वताव्यु छे सम-वसरणमा बेसी दशनान्देइ चतुर्विध सधनी स्थापना करी छे तेमना गणधरोए द्वादशगीनी रचना करी, पश्चात् स्थविरोए उपांगनी रचना करी. तेमनी पाटे जे जे आचार्यो थया. गीतार्थो थया तेओए प्रकरणो ग्रथो आदिनी रचना करी प्रत्येक आचार्योनी मुख्य उद्देश जमानाने अनुसरी गमे ते भाषामां सहैलाइधी मनुष्यो तप्य मार्ग समजी शके तेवा ग्रथो अने तेवा प्रकारनो उपदेश आ-

पवानो हतो, ते रीतिने अनुसरी उमास्वाति वाचक, सिद्धसेन दिवाकरसूरि, हरिभद्रसूरि, श्री हेमचंद्र आचार्य श्री अभयदेवसूरि, यशोविजय उपा ग्याय, आदि धर्मधुरधर आचार्योए. अनेक मनुष्योना उपकारार्थे संस्कृत भाषामा तथा मागधी प्राकृतादि भाषामा उपदेश दीधो छे तथा तेवा ग्रथो वनाव्या छे. पूर्वोक्त आचार्योना ग्रथो सूत्रोनी पेटे माननीय पूजनीय गणाय छे. श्री हेमचंद्र पश्चात् लोकोनी स्थिति धिया सबधी घटवा लागी. लोको मागधी अने संस्कृतमां पण अल्प समजवा लाग्या त्यारे आचार्योए जमानाने अनुसरी चालती गुर्जर भाषा आदिमां रासो वगेरे वनाववा लाग्या स १३२७ नी सालमा सात क्षेत्रनो रास बन्यो छे आ सात क्षेत्रनो गुर्जर भाषानो रास छपावी सिद्ध कर्युं छे के जैनोमाधी गुर्जर भाषा मुख्यताए प्रकाशी छे आ रास भजन संग्रह चौथा भागमां छपाव्यो छे. ते पहिला पण गुर्जर भाषामा जैनाचार्योए काव्य लख्यां होय एम समव थाय छे अने ते माटे शोध चाले छे. प्रथमतो गुर्जर भाषामा एय तरीके रचना करी उपदेश आप्यो पश्चात् ग्रथमां पण ग्रथ वनावी उपदेश देवा प्रारभ कर्यो श्रीवीरे प्ररुपेलां तच्चोनी संस्कृत, प्राकृत, मागधी, गुजराती, हिंदुस्थानी वगेरे अनेक भाषामा हाल अवतार थएलो अनुभवाय छे. श्री वीरभद्र मुक्तिमां गया तो पण गगाना प्रवाहनी पेटे तेमनी पाछळ तेमनो उपदेशे लो तच्चमार्ग पुरुष परंपरा अखंड बहेवा लाग्यो. हाल पण ते प्रमाणे जोवामां आवे छे.

संस्कृत भाषामा तथा मागधी भाषामा हाल ग्रथो वनाववामा आवे तो प्रायः दश हजारमा पाच माणस पण भाग्येज समजी शके. संस्कृत तथा भाषा वनावेला ग्रथोने पण गुर्जर भाषामा सम-जाववामा लोकोना समजवामा आवे त्यारे गुर्जर भाषामा आवे तो घणा लोको समजी शके

કહેતું નિર્વિવાદ છે. ગુજરાતમાં રહેનાર પુસ્તકો તથા સ્ત્રીઓ મને સંસ્કૃતનો અભ્યાસ કરે. ઇંગ્લીશ ભાષાનો અભ્યાસ કરે તો પણ ૨૪ કલાકો પૈકી સર્વ કલાકોમાં ગુર્જર ભાષામાં વોલીનેજ સર્વને પાતાનું કાર્ય કરવું પડે છે. માતૃભાષામાં જે વપરદેશ આવવામાં આવે છે તે સહેજે સમજાય છે. આમ કહેવાથી કહ સસ્કૃત અને માગધી ભાષાની હલકાઈ ટેરાડવામાં આવતી નથી કહેવાનું તાત્પર્યાર્થ એ છે કે ગુજરાતીઓને માટે ગુર્જર ભાષામાં લેખ લખી સમજાવવામાં આવે તો વિશેષ વપકાર થાય આ ન્યાયને અનુસરી ગુર્જર ભાષામાં લેખ લખ્યો.

આત્મતત્ત્વ સવધી માન્યતા દરેક દર્શનવાળાઓની ભિન્ન ભિન્ન છે. આર્યભૂમિમાં જૈન, વેદ અને વૈદ્ય આ ત્રણનાં પુસ્તકો વિશેષ જોવામાં આવે છે મુસલમાન અને રીસ્તિ લોકોતો વ્યારે આ દેશમાં આવ્યા ત્યારે તેમના ધર્મના પંથોના પુસ્તકો લેઈ આવ્યા. દરેક દર્શનવાળા ઈશ્વર, કર્મ અને આત્માદિ તત્ત્વો સવધી ભિન્ન ભિન્ન મન જણાવે છે અને તે માટે પોતપોતાની યુક્તિયો જણાવે છે.

પદ્દર્શનમાથી વ્યુ તત્ત્વ સ્વરૂપે તે યુક્તિ અને પ્રમાણથી સમજી શકાય છે શ્રી વૈરમધુષ્ઠ આત્મ તત્ત્વ એવું સરસ વતાવ્યું છે કે તે માં યસ્ય અને જ્ઞાન દ્વાષ્ટિવાગને રચ્યા વિના રહે નહિ. દેવગુરુ અને ધર્મ તત્ત્વનું સ્વરૂપ સર્વજ્ઞ દ્વાષ્ટિથી વતાવ્યું છે. આ ગ્રંથમાં શ્રીવૈરમધુષ્ઠ કહેલું આત્મતત્ત્વ મુગાનુસારે લખ્યું છે. જિનાગમોનું ટોહન કરી દેવગુરુ ધર્મ તત્ત્વાદિનું યથાર્થ વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે.

પ્રથમ આગ્રમાં સદ્ગુરુનું મગલાચરણ કર્યું છે. પશ્ચાત્ ગુરુની ફેલી શક્તિ છે તે જણાવવા પ્રદેશી રાજા અને કેશી કુમારનો સવાદ દેલાડી આત્માની અભિતા સિદ્ધ કરી છે પશ્ચાત્ જ્ઞાન અને ક્રિયાનો સવાદ પ્રસંગાનુસારે જણાવ્યો છે પશ્ચાત્ યોગ્ય અયોગ્ય શ્રોતાના લક્ષણ જણાવ્યા છે પશ્ચાત્ ૬૮ માં પાનાથી પદ્દ્રવ્યનું સ્વરૂપ સં પશ્ચાત્ આત્મધર્મ મદત્તા ત્શાવી છે. પશ્ચાત્ આત્મ

धर्मनी महत्ता माटे क्षमा निष्कपटपणु आदि सदगुणोनी जरूरीयात वतावीछे पश्चात् पत्र १३३ माथी आत्मानी शोध कोड विरला करेछे ते संधी एक वादशाह अने फकीरनी वार्ता आपी बागनु दृष्टांत जणाव्युछे, पश्चात् पत्र १४६ माथी मतिधुत आदि पचहाननु स्वरूप दर्शाव्युछे

पश्चात् साधुनी आत्मध्यानादि क्रिया दर्शावीछे पश्चात् आत्म स्वरूप दर्शाव्युछे, पश्चात् अनुक्रमे पत्र १९० माथी भव्यात्माए दश प्रश्न सवधी विचार करवो जोडए. तेना नाम जणावी अनुक्रमे वर्णन कर्युछे, ते प्रश्नोना सातमा प्रश्नना विषयमाज पत्र १७५ माथी कर्मराजा अने धर्मराजानु युद्ध वर्णन कर्युछे, ते स्थिर चित्तधी वांचवानी जरूरछे, पत्र ३०३ थी आठमा प्रश्नो विषय शरु थाय छे तेनु पूर्णमेमे मनुन करवु जोडए, पत्र ३१५ माथी नवमा प्रश्नो विषय शरु थायछे, पत्र ३३१ माथी आत्मा, कर्मनो तथा भोक्ता केवी रीतेछे तेनु वर्णन कर्युछे पश्चात् सिद्धस्वरूप दर्शाव्युछे पश्चात् पत्र ३५७ थी ईश्वर जगत् कर्ता नथी, तेम संधीनु व्याख्यान कर्युछे, पश्चात् पटस्थानकनी सिद्धि करी वतावीछे, आत्मसिद्धि करवामा अनेक जिनागमोना अनुसारे युक्तियो दर्शावीछे, ते युक्तियोने जो मुखे करवामा आवे तो जैन धर्म तत्त्वोनी पूर्ण श्रद्धा थाय, आत्मा कर्मनो नाश करी अनंत सुख प्राप्त करी अमर थाय छे तेज मुख्य मुद्दो ध्यानमा राखी तेना उपायो दर्शाव्याछे तेथी प्रत्येक मनुष्योनु आ ग्रथ वाचता कल्याण थाय एमा फाइ सदेह नथी, परमात्मदर्शन ग्रथ वाचनार अवश्य ज्ञान दर्शन चारित्र पामी मुक्तिमार्ग पामेछे जे भव्य जीवो होय त्हेने आ ग्रन्थमा लखेला तत्त्वानी श्रद्धा थायछे.

आ ग्रन्थना प्रत्येक पानाना मुखपर मुख्य हेडीग छे तेथी वाचनारने प्रत्येक विषयनी सरलता यशे, आ ग्रन्थमां छेला दुहा तथा चोप

अव्यो नथी, पण फोड भक्त पडित पुरुष

अवशेष दुहा तथा चोपाइयो उपर अर्थ पुरसे तो धर्मल भ प्राप्त करशे समयना अभावे अवशेष दुहा आदि उपर विवेचन थयु नथी ते दुहाओ वगैरे सद्गुरुना पासि जे वाचशे ते विशेषतः अर्थ प्राप्त करी शकशे जडवादिद्योनी सामे रक्षण तरीके आ ग्रंथ उपयोगी थशे आ ग्रन्थने माध्यस्थ दृष्टिथी वाचशे ते सद्गुण रागथी तेनो यथार्थ तत्त्व रहस्य मेळयी शकशे

आ ग्रंथ मूल तरीके-श्री लोदरा गाममा आरभ्यो हतो त्यांथी मेसाणे जई त्यां स १९६० नु चोमासु कर्तुं त्यां अशाड सुदी ५ ना रोज आ ग्रंथ पूर्ण कर्यो. पश्चात् तेज चोमासामां विवेचन जेट्लु लखायु छे तेदलु अत्र टाखल कर्तुं छे बाकीना दुहानु विवेचन, फोई भक्त शिष्य पूर्ण करशे

आ ग्रन्थमा जे फइ जिनाज्ञा विरुद्ध लखायु होय ते सबधी मिथ्यादुष्कृत हो सज्जन दृष्टिथी जे फोइ आ ग्रन्थ वाचशे त्हेने अत्यंत लाभ प्राप्त थशे ज्ञानिने आश्रवना कारण ते सवरूपे परिणमेछे, अने अज्ञानिने सवरना कारण ते आश्रवरूपे परिणमेछे तेम योग्य जीवने आ ग्रन्थ सम्यग्पणे परिणमशे अने अयोग्य कुपात्र मत्सरी दुर्गुणग्राहीने आ ग्रन्थनु वाचन, विपरीतपणे परिणमशे. तेमा तेनी दृष्टि तेज मुख्य कारणछे

मत्स्येक भव्यजीवो आ ग्रन्थ वाची अभ्यात्मस्वरूपमा रमणता करी परमात्म स्वरूप प्राप्त करो परमार्थ प्रति सर्वनी रुचि थाओ परमानदने सर्व जीवो प्राप्त करो सर्व जीवो मंगलमालामाप्त करो. एजशुभाशी.

ॐ शान्ति. शान्ति शान्ति.

मुकाम-अमदावाद-झवेरीवाडो

संवत् १९६६ कार्तिक वदी ८

लि मुनि बुद्धिसागर

आपली पोळनो उपाश्रय

॥ अथ परमात्मदर्शन ॥

पंचशती प्रारभ्यते.

श्री संखेश्वरपार्श्वनाथाय नमः

मंगलम्.

गुरु स्तुति, दुहा.

सुरतरु जंगम तीर्थरूप, सद्गुरु साचा देव;
त्रिकरण योगे तेहनी, जावे कीजे सेव. १

श्री सद्गुरुनी स्तुति कराय छे. अनादि काळधी जीव अज्ञान (अविद्या) थी बहिर् वस्तुमां आत्मपणाधी बुद्धि धारण करी अनतशः दुःखराशि भोक्ता थयो अने बहिरात्मभावे परवस्तुने पोतानी मानी स्वस्वरूप भूल्यो एवा मूढ आ जीवने शुद्ध स्वरूप ओळखावनार श्री गुरुमहाराज सत्य देवरूपे छे मिथ्यात्व अने सम्पक्त्व स्वरूप समजावी शुद्ध मोक्षमार्ग योजक श्रीगुरुना समान बीजा देव नथी मुक्ति रूप फल देवामा श्रीगुरु कल्पवृक्ष छे. अन्य कल्पवृक्षो पौद्गलिक मुखदाता छे अने गुरुरूप कल्पवृक्ष तो अनत आत्मिक शाश्वत सुख समर्पे छे. जो के उपादान कारणरूप गुरु महाराज नथी तो पण उपादान कारणनी शुद्धिकारक तथा सहायभूत निमित्त कारणरूप श्रीगुरुराज छे, ए कल्पवृक्षनी प्राप्ति महा पुण्योदये थाय छे. गुरु जगम तीर्थ छे, अन्यत्र के ज्यां श्री तीर्थकरादिना कल्याण थया छे, ते तीर्थ स्थावर तरीके कहेवाय

छे, ते तीर्थोनी यात्रा सेवा भक्ति करवायी सम्यक्त्व निर्मल थाय छे किंतु ते स्थावर तीर्थनी श्रद्धा ओळखाणकारक पृथ्वीतळ गम नकर्ता श्री सद्गुरु प्रत्यक्ष महाउपकारी छे. येनालवनेनजीवो । भवाभोधितरतीति तीर्थ जेना आलवने जीव ससार समुद्रने तरे छे ते तीर्थछे, श्री गुरु महाराजना आलवने जीव ससार समुद्र तरे छे, माटे गुरु तेज तीर्थ छे, गुरुरूप तीर्थनी सेवाभक्ति श्रुतिनि प्रत्यक्ष फलदा छे श्री गुरुनी वाणीरूप गगामा जे स्नान करे छे ते पोते उपार्जनकृत कल्पपोने गमावे छे चमुनी विद्यमानताए पग अय पदार्थोना निरीक्षणमा सूर्य चंद्र दीपकनी जहर पडे छे, तेम भव्यात्माओने पोतानु आत्मिक शुद्धस्वरूप अवगोरुनार्ये गुरु सूर्य सभान छे तेथी तेनी जहर पडे छे, विशेष ए छे फे, सूर्य अतरनी प्रकाश करी शकतो नथी अने गुरु महाराज अतरना प्रकाशकारक छे. माटे आ सूर्य करता पण विलक्षण अलौकिक गुरुरूप सूर्य छे, पूर्वोक्त सद्गुरुनी त्रिकरणयोगे अत्यंत भावे सेवा करवी, सेवा कीजीए ए कहेवायी एम सूचव्यु के जेने मुक्ति पदनी इच्छा होय तेने सद्गुरुनो बहुमानथी विनय करवो. कारण के धर्मनु मूळ विनय छे अने विनय विना धर्मनी प्राप्ति थती नथी, अने धर्मनी प्राप्ति गुरु विना थाय नही माटे श्रद्धा भक्ति बहुमान पूर्वक गुरुराजनों विनय करवो

सुरतहनी उपमाथी समजतु के-गुरु अनंत आत्मधर्मना टानी छे

आत्मधर्मनु दान ते भाव अभयदान छे. पचधादान छे १ अभयदान, २ सुपानदान, ३ अनुकृपादान, ४ उचितदान, ५ कीर्त्तिदान, ६ पाषाण महाउपकारक अभयदान मुख्य छे, द्विधा अभयदान द्रव्यतो भावतश्च अभयदान वे प्रकारे छे १ द्रव्य अभयदान. २ भाव अभयदान. एकेन्द्रियादिथी ते पचेन्द्रिय पर्यंत जी-

बोना प्राणोनु रक्षण करबु तेमनो कोइ घात करतु होय तो बचाववा तेने द्रव्य अभयदान कहे छे, दरेक जीवने जीवबु प्रिय लागे छे. कोइने मरण शरण थबु प्रिय लागतु नथी. कहु छे के. मरण समो नाथिय भयः मरण समान कोइ भय नथी, माटे प्राणीओने कोइ मारतु होय तो अनेकरीत्या तेमनु रक्षण करबु. जीवनी दयायी जीव तीर्थकरनामकर्म उपार्जन करे छे, नरस्वर्गादि सुखसंपत्तिनो भोक्ता थाय छे. एउ राजानी अणमानीती स्त्रीए चोरने फासीनी शिक्षा थती अटकात्री अने अन्य राणीओए लक्ष रूपैया खरची तेने मिष्टान्न जमाड्यां, किंतु चोरे अणमानीती स्त्रीनो अत्यत उपकार मान्यो अने तेणीए छोडाव्यो त्यारे सुखी थयो, श्री शान्तिनाथना जीवें पूर्व भवमा एक पारेवानो जीव बचाव्यो तेथी अत्यत पुण्य उपार्जन कर्यु, तेम भव्यत्माओए प्रत्येक जीवोनी दया करवी, कोइ जीवनी हिंसा करवी नहीं, मिथ्यात्वे पाप बुद्धिरूप पिशाचिकाना प्रेर्या केटलाक जीवो मत्स्य अज पशुपखीनां मास भक्षण करे छे, मास बेचे छे, मास भक्षरुनी अनुमोदना करे छे ते जीवो घोरकर्म ग्रही अति दारुण दुःखालय अधोगतिभाक् थाय छे अने आ भवमा पण कर्मोदये दुःखनी ब्राह्ममा फसाय छे, माटे मन बचन कायाए करी जीवनी हिंसा वर्जवी.

२ भावअभयदान—भव्य जीवात्माओने तेना शुद्ध गुणोनु दान आपबु तेने भाव अभयदान कहे छे तद्द्विविध=भाव अभयदान बँ प्रकारे छे ? स्वभाव अभयदान २ परजीवधर्म अभयदान. पोतानो आत्मा असख्यातमदेशी छे अने ते प्रदशो अरूपी छे, कोइ काले पण उत्पन्न थया नथी माटे अज छे, वर्तमान, भूत अने भविष्यत् कालमा प्रदशो जेवा छे तेवा ने तेवा रहे छे, माटे छे, ए असख्यात आत्माना मदेशो चाल्या बळता

નથી, ગાન્યા ગલતા નથી, એક પ્રદેશે આત્મા કહેવાય નહીં, બે પ્રદેશે આત્મા કહેવાય નહીં, અસર્યાત પ્રદેશમયી આત્મા કહેવાય છે, જટરૂપ પુટ્ગલથકી આત્માનુ સ્વરૂપ ન્યાહુએ, અનતજ્ઞાન, અનત દર્શન, અનત ચારિત્ર, અનત વીર્ય, इत्यादि આત્માના અનત ગુણો છે, આત્માના એકેક પ્રદેશમા અનત ધર્મ રહ્યા છે, આત્મામાં અનત મુલ્ય અસ્તિભાવે રહુએ

કિંતુ અનાદિ કાલથી જીવ પોતાનાસ્વરૂપના અજ્ઞાનથી પરવસ્તુમા અહમાવ ધારણ કરી, મિથ્યાત્વ, અવિરાતિ, કપાય અને યોગથી પુટ્ગલ સ્ક્રોન અષ્ટકર્મની વર્ગના તરીકે પરિણમી વિચિત્ર શરીરોને ધારણ કરે છે, જીવની અનાદિકાલ મૂલ વસતિ નિગોદ છે, નિગોદના જીવ બે પ્રકારે છે ૧ મૂક્ષનિગોદ ૨ વાદરનિગોદ અનત જીવો વને એ શરીર હોય છે અને ચતુર્દશ સ્વાત્મક (ચંદ્રરાજ) લોકોને કામલની કુપલીની પેરે વ્યાપીને રહ્યા છે, તેને સૂક્ષ્મ નિગોદીયા જીવ કહે છે

એ મૂક્ષ નિગોદીયા જીવને મિથ્યાત્વ, અવિરાતિ, કપાય, અને યોગ રહ્યા છે. સદાકાલ તે દુઃખના ભોક્તા છે પણ પ્રકારના જે અજ્ઞાન છે, તેમાંથી એક પણ અજ્ઞાન ટલ્યુ નથી, તેનામાં સમજવાની કઈ પણ શક્તિ નથી એ સૂક્ષ્મ નિગોદના જીવોમા ક્ષેટ્રાક ભવ્ય જીવો અને કોશ્લાક અભવ્યજીવો છે સાધારણ વનસ્પતિના જીવોને ઘાટ નિગોદીયા જીવ જાણના, દ્વિપ્રકાર નિગોદમાં અનતશ. જન્મ મૃત્યુના ચક્રવેગે જીવ ભમ્યો, ત્યાંથી ભવિતવ્યતાયોગે પૃથિવી, જલ, વ્યલન, વાયુ, પ્રત્યેક વનસ્પતિના શરીરો ધારણ કરી મત્ત્રમણ કર્યું, પણ આત્મસ્વરૂપનો અવશોષ થયો નહીં. દાન એ સ્ત્રી વસ્તુ છે તેટલું પણ જાણવામાં આવ્યું નહીં અને તે કર્યું નહીં

प्रश्न—जल सरोवरमा भर्युं होय छे त्यारे हजारो पशु पखी मनुष्यादि तेमांथी जलपान करे छे, त्यारे जले पोतानुं दान वीजाना अर्थे शु कर्णु ना कहेवाय ?

उत्तर—अन्य जीवो जलपान करे छे ते पोतानी सत्ताथी करे छे, जलपान अन्य जीवो करे तेमा जलना जीवो राजी नथी, नलपान करवाथी जलना जीवोनो नाश थाय छे तेमा पोते राजी नथी, माटे ते दान कहेवाय नहीं. द्वीन्द्रियथी ते चतुरिन्द्रिय पर्यंत जीवो अभयदान पोते करी शकता नथी. पंचेन्द्रियना चार प्रकार छे. १ देवता २ मनुष्य. ३ तिर्यच. अने ४ नारकी. भुवनपति, व्यंजर ज्योतिष्क अने वैमानिक ए चार प्रकारना देवो द्रव्य तथा भाव अभयदान करी शके छे. सम्यक्त्वधारकोदेवो समकितनी अपेक्षाए भाव अभयदान करी शके छे, कारणके समकित पापेला देवताओ पोताना आत्मानु स्वरूप समजे छे, पोताना आत्माने पोताना समकित गुणनु दान आपे छे तथा अन्यदेवो तथा मनुष्योन धर्मनी श्रद्धा करावे छे, माटे वीजाने भाव अभयदान अर्पे छे. सर्व जातना देवताओनो मिथ्यात्व गुणस्थानकथी ते समकित गुणस्थानरुनी अदरमां समावेश थाय छे. बहु देवताओ धर्मभ्रष्टोने धर्ममा स्थिर करे छे, पण देवताओना करता मनुष्यो अभयदानमां विशेष छे, कारणके मनुष्यने वज्र (चतुर्दश) गुण स्थानक छे, जे दान पामवाथी आत्माने कोइनो भय रहे नहीं एषु भाव-अभयदान सपूर्ण मनुष्य पामेछे, अज्ञानी जीवने सत्यासत्यनी समजण पडती नथी तेने सद्गुरु विजगद् दुःख दाजानछ मेव समान धर्म देशनाथी आत्मस्वरूप समजावे छे, जह वस्तुनु स्वरूप समजावे छे, देवगुरु धर्मनु स्वरूप समजावे छे, नवतत्त्वनु विशेष-रीत्या पूरे छे, अने अज्ञानी जीवने समजावे

अरे पुद्गलभेठना भिक्षुक तारी भूख पुद्गलभेठधी फटी भागवा-
नी नथी, तु परवस्तुनु ग्रहण करी मुग्धी यवानो नथी पोताना
घरमा अनत धन छता केम परशुहे भीक्षा मागे छे. तार घर ओ-
ळख, तारो असूट खजानो ताराधी दूर नथी, पर पुद्गल सुधतां
तेने लज्जा शु नथी आवती ? तारी ऋद्धि तारी अन्तर भरी छे
अने तेना अज्ञाने तु दरिद्री थयो छतो अनत दृ खने पामे छे, माटे
तु तारा आत्माने तारी ऋद्धिनु दान आप, परमा केम फांफां मागे
छे ? हे पामर प्राणी ! तें असन् वस्तुने सन् तरीके जाणी, अने
सन् वस्तुने असन् तरीके जाणी तैथी भ्रान थयो माटे हवे कापा
मायाधी तु भिन्न छे तारु फोड नथी फोडनो तु नथी, तु सर्गधी
न्यारी छे एम अत्रबोध, ज्यां फोडनो सचार नथी एवो तु आत्मा
छे जो तु तारा स्वरूपे रमे तो तृप्णा, काम, क्रोध, मोह स्वत.
नास्र पामे मलीन जलमां जेम चद्रनु मतिवित्र थरावर पढतु नथी
तेम तारु मनरप जल ज्या मुग्धी विरुल्प अने सकल्प बडे मलीन
छे तावन् तेमा आत्मरुपी चद्रनुमतिवित्र थरावर पढी शकतु नथी,
तु अज्ञाने पोताने भिक्षुक माने छे, पण हे आत्मा तु तो त्रिभुवन-
पति छो हे पामर प्राणी ! तारामा घण रत्न छे ते मास्र फर अने
जो ते आत्माने मळया तो तु सर्वात्कृष्ट बने जोने सिद्ध परमा-
त्माओ, तेमने समये समये अनत सुख छे तादृश अनत सुख
तारामा छे तेनु दान तु तारा आत्माने आप के जेथी फोडनो भय
रहे नहीँ एम सद्गुरु महाराज पामर प्राणीने लपटेगुदारा भार
अभयदान अर्पे छे ए दान पाप्माधी फोडवार जन्म जरा मरण
मास्र यतु नथी. शुद्ध सच्चिदानदनी लहरीधो आत्मामा मगट छे,
ए भावदान पामेला जीवो अनत सुखने पाम्पा, पामेछे, अने पा
मसे. जहो ! सद्गुरुना समान जगत्मा मोटा फोड दानेश्वरी नथी.

जेणे मिथ्यात्वनो नाश करी सम्यक्त्वनु दान आप्णु. एवा सद्गुरु-
नो कदापि काल उपकार वाळ्या कोइ समर्थ नथी, धर्मनी श्रद्धा
करावनार धर्मगुरुए अनत जन्म मरणना दुःख टाळ्या, तेमनो
उपकार क्षण पण वीसराय तेम नथी.

श्री प्रदेशी राजाने प्रतिबोधक केशी गणधर सदृश सद्गुरु
जाणवा. प्रदेशी राजा विलकुल नास्तिक हतो तेनु वृत्तात कथेछे.

श्वेतारिका नाम्नी नगरीमा प्रदेशीराजा राज्य करतो हतो ते
नगरीना मृगवन नामना उद्यानमा केशीकुमार साधु परिवारे परि-
वर्या, समवसर्या, धार्मिक नागरिक जनो भगवान्ने वदनार्थे आ-
ववा लाग्या, गुरुए देशना आरभी, ते अवसरे काजोज देशथी
अश्वो आव्या छे तेनी परीक्षाने माटे चित्र सारथीए राजाने वि-
नव्यो, चित्रे रथ जोड्यो, लाश वखत मृधी अश्वो दोडाव्या.
अश्वो थाक्या त्यारे सगयमूचक चित्रे राजाने विनव्यु के स्वामिन्
अश्वोने विश्रांति माटे वृक्षनी छायामा वेसाडवा जोइए एम कही
राजा सह चित्रसारथि मृगवनमा आव्यो, त्यां आचार्यदेशना देता
हता त्या जेम आचार्यनी शब्दध्वनि सभळाय तेम आसन्न मुक्ताम
कर्यो प्रदेशी राजाए भव्य जनोने उपदेश देता एवा केशी
गणधरने दीडा.

राजाए मनमा चिंतव्यु के अरे आ मूढ थुं बोलतो हशे, अने
अग्रस्थित एवा मूढ मनुष्यो थु साभळता हशे अहो खरेखर वक्ता
अने श्रोताओ जड छे, एम मनमा विचारी राजाए चित्रसारथी
मति कथु-

प्रदेशी-अरे सारथी! आ जगत्थी विचित्र वेपधारक कोण हशे?
अने ते थु वके छे?

चित्र-हे महाराज श्री पार्श्वनाथ नामना त्रेयीशमा तीर्थकरना प
रपरागत शिष्यो छे अने ते देहयी जीव पृथक् रुहे छे
प्रदेशी-हे चित्र ! ते केवा प्रफारनी युक्तिओथी शरीरथी भिन्न
जीवनी अस्तित्ता कथे छे ?

चित्र-हे नरपते ! णनी मने मालुम नथी तेमनी पासे गमन करी
श्रवण करीए तो मालुम पडे

राजाए कथु " चालो त्पारे तेमनी पासे, एम कही आचार्य
पासे जइ स्थाणुनी पेटे विनयरहीत नास्तक शिरोमणि बेठो

प्रदेशी-तमो कइ कइ युक्तिओथी शरीरथी भिन्न आत्मा मानो छे ?

केशी गणधर-हे राजन् ! ए प्रमाणे प्रश्न पुछवाने इच्छा राखे छे
तो केम विनयनो भग करे छे ?

प्रदेशी-थु मे असमजस कर्यु ?

केशीमूरि-दूरस्थ एवा तें अमोने देखी मनमां एवु चिंतव्यु के आ
मूढो मूर्खाओनी आगळ थु असत्य बकैछे तें मनमां विकल्प
करो तें सत्य के असत्य ए प्रमाणे मूरिनु वचन साभळी
राजा चमत्कार पाम्यो

प्रदेशी-पराभिमायने तपोए शायी जाण्यो ?

सूरी-पाच ज्ञानपांथी मारा विषे चार ज्ञान छे तत्र प्रथम
मतिज्ञानं इन्द्रियप्रणोदनोद्भूत, । द्वितीय श्रुतज्ञान
तच्च श्रवणगृहीत पदवाक्यैरर्थावबोधरूप । तृतीय
अवधिज्ञान तच्चेन्द्रियरुज्ञानव्यतिरिक्तमात्मनैव प्र-
त्यक्षकृत रूपि द्रव्यगोचर । चतुर्थमन पर्यायज्ञान
तच्च मनुष्यलोकवर्तिना सज्जिजीवानां ये मन-

पर्यायान् विचित्रमनोऽवस्थाः ताश्चात्मनैव प्रत्य-
क्षीकृत्य ततोर्थापत्यातश्चितितज्ञानं । एतानि च-
त्वारि ज्ञानानि मम संति तेन परमनोविकल्पितं
अहंजानामि । यत्तु पंचमं केवलज्ञानं तत्र सर्वा-
ण्येतानि चत्वारि ज्ञानानि लीयन्ते सूर्यप्रकाशद-
न्यताराप्रकाशवत् तच्च ज्ञानं मम नास्ति ॥

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अने मन. पर्यायज्ञान ए चार
मने वर्ते छे. तेथी मन. पर्यवज्ञाने अन्य जनोना अभिप्रायने
हु जाणु छु.

प्रदेशी-पोताना मनमा विचार करवा लाग्यो के अहो आ महा-
पुरुष छे, ज्ञानी छे, तेमनी साथे सभाषण लाभार्थे छे एम
चिंती बेसवानी इच्छावाळा राजाए मूरिने कहु, हे स्वामिन्
तमारी आज्ञा होय तो हु बेसु. मूरिए कहु, तमारी पृथ्वी छे
जेम सुख थाय तेम करुं.

राजा बेसी बोल्यो-देह अने जीवन्तु भिन्नत्व तमो कथो छो ते
घटन्तु नथी. आत्माने सुख दुःखनी अवस्थाना भेदो माटे पुण्य
पापनी कल्पना करवी अने पश्चात् पुण्य पाप भोगार्थ प्रति
परलोक गत्यागतिनी कल्पना करवी ते प्रत्यक्ष प्रमाणधी वि-
रुद्ध छे. कारण के-मारो पितामह अत्यंत पापी हतो, तेनो
मारा उपर अत्यंत स्नेह हतो, जो ते कहेवा प्रमाणे न-
ररूमा गयो होय तो तेणे अत्र आवी केम पापनी निषेध कर्षो
नहीं ? कारण के त्या अत्यंत दुःख मारे भोगवन्तु पडे माटे,
हे पुत्र तु हु तो पापार्जनधी दुःखी थयो छु एवो

जगाप नरकमाथी आवी मारा पिताए केम कस्यो नही ? पाटे एवा व्यतिकरना जमाये हु एम स्वीकारु छु के जीव देहनु अत्रय छे, कोइनु पण परलोकगमन नथी.

केशी गणधर—हे राजन् ! जो कोइ पुरुष तारी राणीने भोगवे अने ते तें जाण्यु तो तु तेने कोइरु दड आपे वा नहीं ?

प्रदेशी—तेने हु घणी विडवनाओ करी मार

केशी०—ते पुरुष जो एम कहे के मने क्षणवार मूको तो हु मारा कुदुने गिला आपी आवु के हु अकृत्य करवाथी अत्यत दुःखी थयो हु पाटे तमारे कोइए अकृत्य करधु नहीं तो तु तेनु वचन अगीकार करे ?

प्र०—रुदी तेनु वचन मानी छोडु नहीं

केशी०—त्यारे ए मयाजे तमारा पितामह पण नरकमाथी आवी शके नहीं, ए प्रथम मश्रोत्तर

प्रदेशी—मारा पितामह कदापि आवी शके नहीं तेथी मारी प्रतिज्ञा असत्य ठगती नथी, मारी पितामही तमारा शासननी अनुरागिणी हती ने धर्म कर्ममां सदा आसक्त हती तो ते तमारी युक्तिए देखलोकमा गइ तेनो मारा उपर अत्यत स्नेह हतो ती तेणीए अत्रे आवीने जेम प्रतिशोध कर्यो नहीं ! अरे पीत्र तु धर्म आचर, हु धर्म प्रसादथी स्वर्गमा गइ छु, अने तारा पितामहे तो पापना सबथयां नरक गति पायी एम तेणीए केम कह्यु नहीं, तेने तो अहीं आयता कोइ अटकावी शकतु नथी, तो तेना व्यतिकरना अभावे मारी प्रतिज्ञा सत्यज छे. देहथी जीव भिन्न नथी एतादृशी प्रतिज्ञा मय सत्त्वा.

केशीगणधर—उयारे तें स्नान करी सुगन्धिद्रव्यनु शरीरे विलेपन

कर्युं होय अने अलकार वस्त्रोथी शरीर अलकर्युं होय ते वखते
 चंडाल आनीने कहे के स्वामिन् मारा विष्टाना घरमा क्षणवार
 आवी वेसो. एम कहे त्त्यारे तेनु वचन तु स्वीकारे के नहीं ?
 प्रदेशी-त्या जनु तो दूर रहु पण तेनो सवध पण हु करु नही ?
 केशी-देवताओ निर्मल पवित्र वैक्रियशरीर धारण करी अत्त-
 सुख भोगवे छे, मनुष्यो सात धातुथी निष्पन्न औदारिक श-
 रीरने धारण करनारा छे, मनुष्य लोकनो गध पचशत
 योजन उर्ध्व उठळे छे, मरकटादि अभावे चतु,शत योजन
 दुर्गंध प्रसरे छे. यतः

चत्वारिपंच जोयण सयाइं । गंधोय मणुय लोयस्स ॥
 उहं वच्चइ जेण । नहु देवा तेण आवंति ॥ १ ॥
 संकंति दिव्वपेमा । विसय पसत्ता समत्तकत्तव्वा ॥
 अणहीण मणुअकज्जा । नरभवमसुहं न इति सुरा ॥ १ ॥

इत्यादि विचारी जोता तारी पितामहीनु आवागमन असभ-
 वित छे, मनुष्यभव सवधी मोहना अभावे अने दुर्गंधिस्थान-
 पणाधी तेनु आवागमन यतु नथी.

प्रदेशी-मारी पितामहीनु अनागम हेतु तमोए बुद्धियी सिद्ध कर्युं
 किंतु में जीव देहनी अकृपता घणी युक्तिथी साथी छे. माटे
 मारो पक्ष सत्य छे, में एरु जीवता चोरने नि.छिद्र कोठीमा
 घाली उपर दारुणु टीयु पुनर् मृत्तिकादि द्रव्योथी लिपी.
 केटलाक दिन पश्चात् ते उघाडी मृत चोर देख्यो, किंतु तेना
 जीवने निस्सरवानो निर्गमन मार्ग कोडए देख्यो नहीं, त्त्यारे
 में ॥ चैतन्य शक्ति आ देहमा लय पामी अने जो

विलय ना पामी होय तो जीव अन्यत्र जात, तो तेनो नीकळवानो मार्ग पण थएलो जणात, तेना जीवने नीकळवाना मार्गना अभावे मारी प्रतिज्ञा सत्य छे

केशी-हे राजन् कश्चित् दुदुभिवादक भूमीग्रह (भोंयरा) मां प्रवेशे अने पश्चात् भोंयरानु मुख बध करे, जरा पण छिद्र रहेवा दे नही, त्यां दुदुभि वगाडे तो तेनो शब्द बाहिरना लोको साभळे के नही ?

प्रदेशी-बाहिरना लोकोथी शब्द सभळाय.

केशी-ए दुदुभिना शब्दने निस्सरवानो क्याप मार्ग जणाय छे ?

प्रदेशी-कोइ स्थाने जणातो नथी.

केशी-श्रोत्रथी ग्रहण थाय एवा शब्द पुद्गलोने निःसरवानो मार्ग जणातो नथी तो आकाशनी इव अरूपी आत्मानु निर्गमनद्वार कथरीत्या पामी शक्याय ? गमे त्या थइ आत्मा अरूपी माटे नीकळी शके छे ते स्पृच्छाद्विधी अवलोक्याय नही. इति ततीय प्रश्नोत्तर

प्रदेशी-हे भगवन् ! आपनी बुद्धिनी युक्तिथी ए वात सार्थी पण निश्चयसा य थती नथी चोरना फलेवरमा कुमीयो उत्पन्न थया ते जीवो अछिद्रवाळी कुर्मीना क्या द्वारथी प्रवेशया ? चोरने कइ छिद्र नहोता तेथी प्रतिज्ञा करु छु के विकारवाळ चोरनु शरीर तद्रूपताने पाम्यु माटे मारी प्रतिज्ञा सत्यज छे

केशी-हे राजन् भृशबन्धितसायोगोलकमा चन्दि प्रवेश छे के नही ?

प्रदेशी-अयोगोलकमा चन्दि प्रवेशे छे

केशी-त्यां छिद्रना अभावे अयोगोलकमा चन्दि प्रवेशनी उपलब्धि छे तद्द्वत् जीव पण द्वार दिना पेसतो छतो केम अथद्वेयक

थाय ? किंतु द्वार विना पण अरूरी आत्मानो प्रवेश थाय छे एम सदहवु जोइए. (इति चतुर्थ प्रश्नोत्तर).

प्रदेशी-हे भगवन् तमारी युक्त प्रमाणे तो समलक्षणयुक्त सर्व जीवो छे ते घटतु नथी लक्षणनी साम्यताए सर्वमां सरखु वल होयु जोइए ? ते प्रत्यक्ष प्रमाण विरुद्ध छे जे कारण माटे बालके छोडेलो बाण नजीक पडे छे, अने तरुगे छोडेलो बाण दूर पडे छे. ए सर्व जीव देहनी ऐक्यताए घटे छे, लघु शरीरे लघुवल, मोटा शरीरे उल पण महत् माटे सर्व जीवो-मा लक्षण साम्यताए समलत्व अयुक्त छे माटे मारी प्रतिज्ञा सत्या समजवी.

केशी-कोइ बलवान् तरुण पुरुष प्रत्यचा चढावी बाण फेंके ते ज्या सुधी भूमि उलघे ते ज धनुष्य चढावी बालक बाण फेंके ते युवान पुरुषे फेंकेला बाणे जेटरी भूमि उलघन करी छे तेटली भूमि आ उलघन करे के नही ?

प्रदेशी-ते बाण आसन्न भूमीमा पडे पण पूर्वोक्त पुरुषे फेंकेल बाण तेना जेटली भूमि अवगाही शके नही ?

केशी-भला तेमा शो हेतु ?

प्रदेशी-साधन वैकल्य तेमा हेतु छे

केशी-बालनु शरीर निर्मल साधन छे धातुओना अपुष्टपणार्थी, पृष्ट शरीर समल साधन छे ते माटे सर्व जीवोमा लक्षणनी साम्यता अगीकार कर. (इति पचम प्रश्नोत्तर).

प्रदेशी-तमोए जीवोमां समलक्षणपणु कहु ते असत् छे, कारण तान अने बालकनी शक्तिनी (पराक्रम) भिन्नता छे. शक्ति अल्प छे, युवाननी विशेष छे,

सरखो होय तो पराक्रम पण एक सरखु होयु जोड़ण, पराक्रममा भिन्नता छे माटे समलक्षणयुक्त जीवो कहेवाय नहीं अने ते विरोध प्राप्त थता शरीरयी जीव भिन्न सिद्ध थतो नयी

केशीकुमार—एक पृष्ठ अने मोटु पखी होय ते जेटला भारतु लुब्धन करे तेडलो भार दुर्बल नाना परीयी उपदानो नयी त्या शरीर शक्तिरूप साधननो अभाव हेतु छे मोटा परीमा शरीरशक्ति विशेष, नाना परीमा शरीरशक्ति अल्प तेयी तेना जेटला भार उपाडी शक्ती नयी किंतु जीवो तो सर्व समलक्षणवत छे, माटे समलक्षण जीवोनु छे एम हे राजनु तु जाण.

प्रदेशी—हे भगवन् में जीवता चोरने तुलामा जोरयो, पश्चात् गळे पाशयी मारी नाख्यो, मरेलाने पश्चात् तुलामा आरोही जोरयो तो पण प्रथम जेटला भारनो हतो तेडजोख रयो, टरु प्रमाण पण हीन थयो नहीं, तेयी में विचार्यु के जो देहयी जीव भिन्न होय तो जीवनो अपगम थता मृतक घोर शरीर करी हीन थतु जोड़ए पण थयु नहीं, तेयी सिद्ध ठर्यु के—जीव देहनी ऐश्यता छे

केशी—चामडानी धमणमा वायु पुरीने जोखयी, अने पश्चात् वायु काडी नाखी जोखयी, वायु पुरीने जोखेली धमण करता वायु काडी नाखी जोखेली धमणमा बाह भारनी न्यूनता थाय छे ?

प्रदेशी—हे भगवन् ना भारमा कइ न्यूनता थती नयी

केशी—जो त्या भार थथतो नयी तेम घटतो नयी तो अमूर्त आ-
-त्मानो देहमां शो भार होय ? के जेयी जीव नीकठ्या पश्चात्

चोरनु शरीर भारमां घटे ? वायुरूपी छे, शरीरी छे, आत्मा अरूपी, अशरीरी छे, अन्यत्र गतिमा गमनकर्ता आत्मा सूक्ष्म शरीरी जाणवो. (इति पठे प्रश्नोत्तर).

प्रदेशी-एक चोरने में ककडे ककडा करीने जोयो, त्वचादि सप्त धातुओनु निरीक्षण कर्युं मल मूत्र पण अवलोक्यु पण जयाय जीव देखायो नहीं, माटे जीव देहनी ऐस्यता सिद्ध ठरी.

केशी-हे राजन् वनोपजीवि जनवत् तु मूढ छे

प्रदेशी-कोण ते वनोपजीवि. दृष्टान्त.

केशी-जे काष्ठ छेदन विक्रयथी स्वआजीविका निर्वहे छे, ते वनो-पजीवि पुरुषो कुडाडी करवतादि उपकरणो लेइ तथा पका-ववाना अन्न लेइ वनमा गया, त्या तेओए एक पुरुषने कहु के अमो काष्ठार्थे आगळ जइथु, तु आ मूकुं अरणिनु काष्ठ अने आकडानु काष्ठ पेमाथी अग्नि उत्पन्न करी रसोइ पका-वजे, एम कही ते वनमा गया, पेलो पुरुष केटलोरु वखत निद्राग्रीन थड पश्चात् अरणीना काष्ठना खडोखड करी अग्नि जोयो पण देखायो नहीं, तेम आकडाना लाकडाना खडो-खड करी जोयु पण अग्नि दीठो नहीं, तेथी मिलखो थयो, चरम प्रहरे ते पुरुषो आव्या, अने अने फहेवा लाग्या के-रसोइ तइयार थड छे ? त्यारे मूढ पुरुषे कहु के अग्नि विना शी रीते रसोइ करु ? त्यारे तेओए कहु आ अरणि अने आकडाना लाकडामा अने अग्नि छे तेम कहु हतुं. तेनु केम ? त्यारे तेने कहु के-वने जातिना काष्ठना खडोखड करी जोयु पण अग्नि दीठो नहीं, त्यारे तेओए जाण्यु के, आ महा मूर्ख छे, अरणिकना काष्ठने नीचे मूकी, उपर कडाना काष्ठथी मथन करी अग्नि ७८

કરી તે વડે રસોઈ પકાવી સર્વેણ સ્વાધુ, પશ્ચાત્ સર્વે પોતાને ઘેર ગયા, આ દૃષ્ટાતની પેઠે હે રાજન્ ! તુ પણ મૂર્ખ છે.

પ્રદેશી-તમો નિપુણ, વહુવિદ્ છો તો સમા સમક્ષ તુ મૂર્ખ છે એમ કેમ મને કહ્યું ? એ કહેવું તમને અનુચિત છે

કેશી-મનુષ્ય લોકમાં હે રાજન્ ફેટલી સમાઓ છે ?

પ્રદેશી-રાજસભા, ગાથાપતિ સભા, બ્રાહ્મણ સભા, અને ચોથી રૂપિસભા જાણવી

કેશી-તે સભાઓમાં અપરાધ કરે તેને દડ શો આપવો ?

પ્રદેશી-રાજસભા, ગાથાપતિ સભા, અને બ્રાહ્મણ સભામાં અપરાધ કરનારને અનુક્રમે મોટી લઘુ શિક્ષા ફરવામાં આવે છે અને રૂપિસભામાં અપરાધ કરનારને વાળીવઢે તર્જના કરાય છે.

કેશી-હે રાજન્ ! તુ જાણતો છતો મને કેમ ઉપાલભ આપે છે કારણ કે તુ કુચુક્તિવઢે વારવાર મારી પ્રતિજ્ઞા સત્ય છે એમ કહી વક્રપણુ ધારણ કરે છે માટે તુ અપરાધી અમારો કરેલો દડ યુક્ત છે (ઇતિ સપ્તમ પ્રશ્નોત્તર)

“ દૃક્ષની શાસ્ત્રાઓ કપવા લાગી તે દેહીને શૂરિ કહે છે

કેશી-આ વૃક્ષના પાનડાં ઢાઢીઓ કોણ હલાવતુ હશે ?

પ્રદેશી-વાયુ હલાવે ડે, ત્યા શો સદેહ છે ?

કેશી-હે રાજન્ તુ વાયુ દેલે છે ?

પ્રદેશી-ના ફિંતુ વાયુ સ્પર્શ વઢે પ્રત્યક્ષ દેહવાય છે પણ ચક્ષુથી દેહવાતો નથી

કેશી-વાયુ જેમ ત્વાયુ પ્રત્યક્ષ ડે, તેમ જ્ઞાન ગુણવાન્ જીવ પ્રાનસ પ્રત્યક્ષ છે, એમ નિશ્ચય જાણ.

प्रदेशी-कुथुओमा अने हस्तिमा शी रीते समपरिणामी जीव होय? शी रीते ते सात्रु मानवु, लघु स्थानमा लघु वस्तुनु अवस्थान युक्त छे, मोटी वस्तुनु मोटा स्थानमा अवस्थान युक्त छे

केशी-हे आयुष्मन्-प्रदीप प्रभानो दृष्टात अत्र जण, दीपक मोटी शाळामा मूकयो उता तेटली सर्व शाळाने तेनो प्रकाश व्यापीने रहे छे, तेम-कुभमां मूकयो छता ते कुभनो ज उद्योत करे छे, तेम आत्मा जेवडा शरीरने अवगाही रह्यो होय छे तेटला शरीरनेज चेतना गुणवडे द्योतन करे छे त्या जरा पण शस्य नयी. इति.

प्रदेशी-हे भगवन् आपे अनादि कालथी लागेली एवी मिथ्या-देव मारी आज टाळी आपना सदज्ञानरूप सूर्यथी मिथ्यात्व अंधकार दूर टळ्यु. हे भगवन् मारो उद्धार करनार आप छो, इत्यादि स्तुति करी प्रन ग्रही पोताना घेर गयो बीजा दिवसे अत्यंत आडगर सहीत भाव अभयदानरूप समाकित दाता गुरुने वदन कर्यु, विशेष अधिकार रायपसेणी सूत्रमा छे. श्री महावीर प्रभुए श्रेणिकराजाने भाव अभयदान अप्यु, श्री नेमिनाथप्रभुए श्री कृष्णमहाराजने भाव अभयदान अप्यु, तेना जेवो अन्य कोइ जगत्मा उपकार नथी, माटे सदगुरु भाव कल्पवृक्ष दृष्टांतने सार्थक छे, सुरनरनी उपमाथी दान-गुग सर्वमा श्रेष्ठ छे, अने तेथी धर्मोत्पत्ति छे, एम जगाव्यु, गुरुश्रीरूप जगम तीर्थनी प्राप्ति दुर्लभ छे, ग्रामाजुग्राम विचरता सदगुरुनी प्राप्ति दुर्लभ छे, स्थावर तीर्थ पग भूत तीर्थकरादिनु स्मरण करावे छे, स्थावर तीर्थ उपर जेवी भाव भक्ति श्रद्धा होय छे ताटशी श्रद्धा भाव भक्ति जो सदगुरु

ઉપર થાય તો આત્મા શિઘ્ર પરમાત્મપદ પામે, ભાવ તીર્થ પોતાનો આત્મા સમજશે, અનત ગુગ તેમા મર્યા છે, જો તેની યાત્રા ફોડ મુમુષુ ધારે તો અવશ્ય મુક્તિ પદ પામે આત્મારૂપ પ્રમુના દર્શનાર્થે જતા પ્રથમ ચતુર્દશ પગથીયારૂપ ચૌદ ગુણ સ્થાનક ઉલ્લખતા ક્ષપક શ્રેણિરૂપ દોરી જ્ઞાલી આગઠ્ઠ ચઢતાં ઘાતમા ગુણકાળે ચારઘાતીયો કર્મના સક્ષયથી આત્માના અસરુયાતમદેશરૂપ મહેલમા જવાય છે, અને તેમા વિરાજિત પરમાત્માના સાક્ષાત્ કૈવલ્યચમુથી દર્શન થાય છે, પશ્ચાત્ આત્મા પરમાત્મમમુનાં દર્શન કરે છે, ત્યારે અઠૌકિક સ્વરૂપવાળો બને છે, અને ત્યાંને ત્યાં રહે છે પશ્ચાત્ અઘાતિક કર્મ ક્ષપણથી પરમાત્મસ્વરૂપ ઘની સ્વયમેવ પ્રકાશે છે યાવત્ ભારતીર્થની યાત્રા થઈ નથી તાવન્ સાંસારિક મ્રમણમપચમૂલમૂતરાગદ્વેપની શ્રયિ છેદાની નથી માટે તેના પ્રાપ્તિના હેતુ સ્યાવરતીર્થ અને જગમતીર્થ છે જગમતીર્થની સેવા મક્તિ શ્રદ્ધા, નમન, સ્તુત્યાદિશરા ભાવતીર્થ દર્શન થાય છે, યજ્ઞ પોતાનો આકાર જેવો હોય તેવો આદર્શમા જોવાથી માણે છે તથા જગમતીર્થ સ્વરૂપગુરુપહારામના આલ્લવનથી યાદક્ આત્માનુ સ્વરૂપ હોય તાદૃક દેલાય છે. આત્માનો પ્રકાશ સૂર્ય તથા ચંદ્રથી ધતો નથી, કિંતુ સ્વીય આત્માનો પ્રકાશ સદ્ગુરુદ્વારા થાય છે, પરપુદ્ગલસગી આત્મા પરમાર્વી થઈ મવમ્રમણામાં મૂલ્યો, મોહ માયામાં કલ્યો, આત્માની અનત ઋદ્ધિ દૂલ્યો, પગ ગુહની યાત્રા કરતાં પોતાનુ સ્વરૂપ સમજાયુ, માટે ગુરુ સમાન અર્થ તીર્થ સ્વાત્મ નિર્મલકારક નથી, ગુરુ તજ પરમ જગમતીર્થ છે, ગુરુની સેવા તેજ ગગા નદી જાળવી, ગુરુની કૃપાટ્ટિ તેજ મારી

शुभ गति છે, ए प्रमाणे गुरु महाराज तीर्थरूप जाणवा, तीर्थ वे प्रकारनां छे १ लौकिक तीर्थ, २ लोकांतर तीर्थ वळी लोकोत्तर तीर्थ द्विधा छे, वळी तीर्थ वे भेदे छे, स्वतीर्थ अने परतीर्थ, वळी तीर्थ वे प्रकारनु छे, द्रव्यतीर्थ अने भावतीर्थ. वळी शुद्ध अने अशुद्ध, ए वे प्रकारे तीर्थ छे. स्थावरतीर्थ करता पण सद्गुरु विषे अधिक श्रद्धा भक्तिभाव जागशे, त्यारे नकी समजयु, के आत्मानु कल्याण थशे, धर्म-प्रद धर्मगुरुनी स्तुति पोताना आत्माने निर्मल करे छे, गुरुनो राग, भवभ्रमण त्याग करावे छे, गुरुने तीर्थनी उपमा आपवानो हेतु ए छे के गुरुराज ससार समुद्रमाथी भव्य जीवने तारे छे, एवा धर्म गुरुराजनु शरण मन वचन अने कायावडं थाओ, गुरुराजने सत्य देवनी उपमा आपवामा आवे छे, गुरु रूप देव तो पुण्य अने पापकृत्प स्वरूपने अवबोधे छे, अने भव्यात्माओ उपर गुरु देव सदा काल कृपादृष्टि फेंके छे, अज्ञानरूप अधकार कोडनार्थी नाश पामे नहीं तेवा मिथ्यात्व अधकारनो नाश गुरुमहाराज उपदेशद्वारा करे छे, गुरु तेज देव छे, श्री गौतम स्वामीना मनमा विद्यानो अहकार हतो अने आत्मा छे के नहीं तेनी शक्ता हती, तेमनु पग श्री महावीर गुरुए शक्ता टाळी चारित्र अर्पी हित कर्यु, देवताओ पण पंचमहात्रत धारी पाननिष्ट महामुनि गुरुने नमस्कार करी स्तवे छे, माटे गुरु तेज सापेक्षतः देव जाणवा, आत्माने सिद्धि गुरुथी थाय छे सर्व शाश्वत मुखरूप मागल्यमद् गुरुराज छे, माटे आत्रमा स्तुतिरूप गुरुनु मंगल कर्यु, आत्मा पोताने स्वयमेव जाणे छे ते दर्शावे छे.

“ દુઃશ. ”

તેને તેહિજ ઓઢલે, અવર મ જ્ઞાતા કોય,
જ્ઞાતા તેહિજ આતમા, નિત્યપણે જગ જોય. ૨

માત્રાર્થ—આત્મા પોતે પોતાને ઓઢલે છે, આત્મા વિના અન્ય કોઈ આત્માનો જ્ઞાતા નથી, સર્વે પર્યર્થ જ્ઞાનવડે જે જ્ઞાતા છે, તે આત્મા જાણવો, આત્માનું સ્વરૂપ અન્યથા થતું નથી, એજ અદ્ભૂત આશ્ચર્ય છે જગત્ અસ્થિતસર્વે પદાર્થો જ્ઞાનથી જળાય છે, અને સ્વક્રીય શુદ્ધ સ્વરૂપ પણ જ્ઞાનથી જગાય છે, સ્વ પરને જ્ઞાનમાં વિષયભૂત કરનાર તેજ આત્મા છે, આત્માથી ભિન્ન જડ વસ્તુ-માં જ્ઞાન ગુણ નથી, જ્ઞાન ગુણ શક્તિ અઠૌકિક છે, નિગોઢીયા જીવોને પણ આત્માના આઠ રચક પ્રદેશ નિર્મલા છે, જ્ઞાન ત્યાં ચેતન અને ચેતન ત્યાં જ્ઞાન સદા રમુ છે, નિમિત્તના યોગે આત્મા પોતાને સ્વયમેવ અનાયાસે જ્ઞાનથી નિહાળે છે, કોઈ મિંદ્રનું વચ્ચુ નાનું ધાવણ કોઈ ખરવાડ પકડી લાવ્યો પેહુ મિંદ્રનું વચ્ચુ વકરાના ટોચા ભેગું રમવા ફરવા લાગ્યું, અને મનમાં સમજે છે કે હું પણ વકરાના જેવું છું, મારી જાતિ અને વકરાની જાતિ જુની નથી, એમ સમજતું હતું, પ્રતિદિન તે સિંહચાલ મોટું થવા લાગ્યું, એક દિવસ વકરા સહિત વાઢામાં તે વચ્ચુ વેહુ હતું ત્યારે એક સિંહ આવ્યો, પેહુ સિંહનું વચ્ચુ મનમાં વિચારવા લાગ્યું કે—અહો આ સામું પ્રાણી દેખાય છે તે વિચિત્ર છે, તેનું શરીર અને મારું શરીર મઢતું આવે છે હું જે ટોચામાં રહું છું તેના શરીરના લક્ષણ અને મારા શરીરના લક્ષણ ભિન્ન ભિન્ન છે, આ સામું જે પ્રાણી દેખાય છે તેના સરલો હું છું, એમ જ્ઞાન થતાં એકદમ વાઢામાંથી વહાર નીકળી ગયો અને સિંહ સમુદાયમાં મળ્યો, તેમ આત્મા પોતાનું

स्वरूप स्वयमेव आलवन योगे पामी परमात्मस्वरूपमय बने उ
कथु छे के—

अज कुल गति केसरी लहेरे, निज पद सिंह निहाळ;
तिम प्रभु भक्तें भवि लहेरे, आत्मशक्ति सभाळ.अजित.

परमात्म स्वरूप ओळखी तेनुं ध्यान करता पोतानो आत्मा
पण परमात्म रूप भासे छे, परमात्मा अने मारामा भेदभाव नथी,
मलीन सुवर्ग समान ससारी भवगात्माओनी स्थिति छे, अने शुद्ध
कचन समान सिद्धात्मानी दशा छे, मलीनतानो अपगम ध्यान-
योगे यता परमात्मरूप बनी त्रिभुवन पदार्थ गुण पर्याय ज्ञाता बने
छे, ज्ञातृत्वशक्ति आत्माभा रही छे, जडमा ज्ञातृत्वशक्ति नथी, जड
पदार्थ ज्ञेय छे, जेटला ज्ञेय पदार्थ तेटहु ज्ञान समनत्रु, ज्ञेय पदार्थ
अनंत छे, तेथी ज्ञान पण अनंत कहेवाय छे, अने ते प्रमाणे अनु-
भवमा आवे छे, ज्ञातृशक्तिनो आधार चेतन (आत्मा) छे, आ-
त्मानो कदी नाश यतो नथी, मटे नित्य छे, यत्रपि अविग्राना
योगे अनेक शरीरो धारण करे छे तो पण पोताना स्वरूपने त्य-
जतो नथी, अज्ञानी जीव एम जो कहेवा लागे के आत्मा नरी
पण तेना वचनथीज सिद्ध थाय छे के आत्मानी अस्तित्ता छे तो
ते जीव नास्ति एम कहे छे, अविग्रानो नाश यता अवश्य ययात-
ध्य सहेजे आत्मतत्त्व भासे छे, आत्मा अनंत सुखनो धर्मी छे,
सुख दुःखनी चेट्टा आत्मानो मेरणाए थाय छे, इष्टानिष्ट ज्ञाता
आत्मा छे, जो ए आत्मतत्त्व सम्यक् रीत्या ओळखाय अने तेनु
ज्ञान थाय तो स्वमानी पेडे सर्व जगत् देखाय, आत्माभा जे
चित्तवृत्ति राखी चिंतवन करे छे ते पुरुषो आत्माने सहेजे ओळखे
छे अने सुख भोक्ता बने छे,

“ દુહા. ”

સમાય તુ તારા વિપે, તારુ તાહરી પાસ,
મારુ મારુ મ્યાં કરે, ધરતો પરની આશ. ૩

હે આત્મા તુ તારા સ્વરૂપમાં સમાય છે, તારી ગતિ સર્વના ફરતા ન્યારી અને અનત આનન્દ આપનારી છે, તુ કોઈ અન્ય પદાર્થમા રહેતો નથી, પ્રજ્ઞાશયી તમ' સમૂહ યથા સર્વથા ન્યારુ છે, તેમ અનત શક્તિધારક ચેતનથી સાંસારિક સ્વરૂપ સર્વથા ન્યારુ છે. અચ્છી પરિણતિયોગે પરવસ્તુને પોતાની માની મમતાના પાસમાં પડે છે પણ સદ્જ્ઞાનની આત્મા વિવેકથી તુ વિચાર કે-સ્વપ્નામાં ભાસેતુ જગત્ત જેમ મિ.યા છે, તેમ પ્રાચલવસ્તુ પણ તારી નથી, ચેતન તારી ઋદ્ધિ તારાથી જરા માત્ર ભિન્ન નથી, જેમ મૃગથી કસ્તુરી ભિન્ન નથી તેની દુટીમાત્ર રહેલી છે, તેમ આત્માની ઋદ્ધિ પોતાનામા ભરી છે, પરવામપદ આત્મામા છે, આચાર્યપણુ પણ આત્મામાં છે, તેમ ઉપાધ્યાય, સાધુપણુ પણ આત્મામા છે, જ્ઞાન, દર્શન, ધારિત્ર અને તપ વીર્ય આદિ ગુણો પણ આત્મામા રહ્યા છે, અનત સુખ પણ આત્મામા છે, તો સદ્ધિરાત્મભાવે હે ચેતન પરની આશાથી મૂઢ રની મારુ મારુ એમ શુ ચિંતરે છે ? પરવસ્તુ તારી કદી ચવાની નથી. એમ નિશ્ચય જાણ, તારી ઋદ્ધિ તારાથી ન્યારી નથી, સ્વોને સો પાવે આ કહેવત આત્મામા યોજી, અનાદિ કાલથી ચેતન મિથ્યાત્વયોગે સ્વસ્વરૂપના અનુપયોગે પરવસ્તુને પોતાની માની જન્મ જરા મરણ ઉપાધિ પામી, કિંતુ હવે નિર્ણયપૂર્વક જાણવામા આવ્યુ કે-પરવસ્તુ અચેતન જડ વિશિષ્ટ છે, હુ એનો નથી, એ મારુ નથી, હુ મારા સ્વરૂપે સમાયો છુ, હુ જે જે વસ્તુઓ ચક્ષુથી દેણુ છુ, ઘ્રાણે સુણુ છુ, જિહ્વાએ સ્વાદુ છુ, તે તે વસ્તુઓમાં

हु नथी मारार्थी सर्व पदार्थ जणाय छे, तो पण ते पदार्थोमा हु नथी. सर्व पदार्थो प्रकाश्य छे, अने हु प्रकाशक हु, मारी जे वस्तु नथी तेनी ममता हु केम राखु ? पुद्गलनी ऐठ आ जाँवे बहिरा-त्मभावे वा क्षुधावेदनीना उदये भक्षण करी पण ते पुद्गल अते मारु नथी, एम निश्चय करी स्वस्वभावे स्थिर रहेवु एव हिताकाक्षा.

“ दुहा ”

देखी आत्मस्वरूपने, जाण्यो पुद्गल खेल,
न्यारो तेथी आत्मा, चिदानंद गुणरेल ॥ ४ ॥

भावार्थ-परोपकृतिमान् श्री सद्गुरुद्वारा ध्याननी एकाग्रताए आत्मस्वरूप भास्यु त्यारे आ सासारिक प्रपच सर्व पुद्गल खेल जाण्यो, ते खेलथी आत्मा न्यारो छे अहो शु आश्चर्य, सर्व सा-सारिक पदार्थो नाशवत छे अने आत्मा अविनाशी छे, आनंद, अने ज्ञाननो धारक आत्मा छे, आत्मस्वरूप वताये छे.

पद

चेते तो चेतावु तनेरे, पामर प्राणी-ए राग.

आतम रूप देसु आजरे सकल सुख,	
अचल अखड योगी, अभोगी अशोगी भोगी,	
स्वभावे ते नहीं रोगीरे-सकल सु०	आत० १
देहमाहीं बसनारो, देहातीत मन धारो,	
रूप रग यकी न्यारो रे-सकल.	आत० २
जाणे सुख दुःख सहु, चेतन छे जग यहु,	
व्यापी घट घट बहुरे-सकल०	आत० ३
नाम ठाम जेने नहीं, नहीं जाति भाति कही,	
पोतानामा व्यापी रही रे-सकल०	आत० ४

નિરજન નિરાકાર, જ્ઞાનદ્વિષ્ટિ આરપાર,

બુદ્ધિસાગર સુખકાર રે-સકલં

આતં ૫

પરિપૂર્ણસુખરૂપ આત્માનુ સ્વરૂપ-નિવિહાર અલ્પ છે, આત્મતત્ત્વમાપકુ જીવોને કોઈની સૃષ્ટિ રહેતી નથી. કોઈ નિંદા કરે વા સ્તુતિ કરે તોપણ હર્ષ શોક રહિત આત્મજ્ઞાની વિચરે છે, રાગ દ્વેષની પરિણાતિ મદ પડે છે, સમયે સમયે આત્મિક મુખ સતતિ બુદ્ધિ પામે છે, તૃષ્ણાનુ મૂલ્ય છેદાય છે, પરસ્વભાવ પ્રવૃત્તિ સ્વયમેવ વિરમે છે, અને આત્મસ્વભાવપ્રવૃત્તિદ્વારા નિવૃત્તિ સુખોદ્ભવ થાય છે, દેહમાં વસતા દેહાતીત અવસ્થાનો ભોગી આત્મા બને છે, કારુ-ત્રિષ્ટા સમ પૌદ્ગલિક ત્રિપય સુખ લાગે છે, પરનિંશતો આત્મજ્ઞા-નીને ગમતી નથી, આત્મસ્વરૂપના ધ્યાની પુરુષને જે સુખ થાય છે તે અવાચ્ય છે, આનંદનો સમુદ્રજ જાણે હોયની એવો અધ્યાત્મ જ્ઞાનીનો આત્મા બને છે, આત્મજ્ઞાનીની દશા માત્ર યથા વિના આત્મિક સુખનો અનુભવ પમાતો નથી, આત્મા પરમ પૂજ્ય છે અ-તરાત્મયોગી થઈ પરમાત્મપત્ન્યય ધ્યાનથી યતા અનહદ સુખ ભોગી આત્મા સ્વયમેવ સ્વસ્વરૂપી થઈ રહે છે

“ દુહા ”

ધ્યાનથી દ્વિષ્ટિ ફેંકુ જ્યાં, ત્યા સહુ સ્વરૂપે સ્થિર,

શત્રુ મિત્ર સ્વપ્નુ ભયું, ગદ્ અનાદિકુ-પીર ॥૫॥

ભાવાર્થ-મન, વચન, કાયાની એકાગ્ર આત્મ સ્વરૂપે યતાં જગત્ વિચિત્ર દેશ્વાયુ, પ્રથમ ધ્યાનની પૂર્વે સર્વ જગત્ હાસ્તિના ક-ર્ણની પેટે ચચલ ઉમત્ત લાગતુ હતુ, તે હવે ધ્યાનની એકાગ્રતાપ્ત સ્વસ્વરૂપે સ્થિર યતા સર્વ જગત્ પોતાના સ્વરૂપે સ્થિર દેશ્વાયુ, મારુ મન ચચલ તો સર્વ વસ્તુ ચચલ અને મારુ મન સ્થિર તો સર્વ

वस्तु स्थिर एव इत्याद्यु तेषी सार लीधो के-मन जो आत्मामा रमे तो मोक्ष अने मन. परभावमा रमे तो भवभ्रमणता, एनो निश्चय ययो, आत्मज्ञान विशेष यता स्थिरता सर्वत्र भासे छे, कह्यु छे के-

भासे आत्म ज्ञान धुरि, जग उन्मत्त समान,
आगे दृढ अभ्याससे, पत्थर तृण अनुमान ॥५॥

सारमा सार ग्राह्य, आराध्य आत्मा छे, ध्यानयी आत्मामा रमता शत्रु मित्र म्वमनी पेठे भासे छे, अर्थात् शत्रु मित्र आत्म ज्ञानीनो कोड नथी. अनादि कालनी लागेली कुटेव तो नाशी गड अने शुद्ध चेतना प्रगट थइ, मिथ्यात्वपणु टळ्यु, आत्मानु शुद्ध स्वरूप प्रगट यता सहजानंद प्रगटे छे, आत्मज्ञानीओ एवी दशामा रमे छे, तेमने पुन पुन नमस्कार थाओ.

“ दुहा ”

अहं बुद्धि परमां धरी, परमांही वधाउं;

अहं बुद्धि जो आत्ममां, तो हु कयां रंगाउं.॥६॥

परवस्तुमा अहपणानी बुद्धि धारण करी कर्मरूप परवस्तुमा बंधाउ छु, पण जो आत्मामा अहपणानी बुद्धि थइ एटले आत्मा पोते हुछु अन्यमा हु नथी, आवी बुद्धि यता हु आत्मा कोइयी कयाय रमातो नथी. अर्थात् कर्म करी लेपातो नथी, जे महात्माओ आत्मामांज वृत्ति राखे छे ते आत्मानी ऋद्धि पामे छे, परमा चित्तवृत्ति राखवायी अमुक दुष्ट अमुक रूपट अमुक वैरी इत्यादि बुद्धि याय छे पण पोताना आत्मानी सत्तानुचितवन कर्पायी स्वरूप प्राप्त थाय छे.

“ દુઃખા. ”

કાલ અનાદિ પરિણમ્યો, આતમ જડને સગ,
અશુદ્ધ પરિણામે કરી, કરતો નાટારંગ. ॥૭॥

પોતાનો અજ્ઞાનથી, પામ્યો દુઃખ અનત,
સ્વપદજ્ઞાનાપ્તિ ગ્રહી, થયો સિદ્ધ ભગવંત, ॥૮॥

ભાવાર્થ-અનાદિ કાલથી જીવ કર્માણ્ક ગ્રહી ઔદારિકાદિ શરીર ગ્રહી જડ સગે દુઃખપયોવત્ પરિણમ્યો છતો અને તે કર્મના યોગે પોતાના આત્માના થયેલા અશુદ્ધ પરિણામે કરી ચતુર્ગતિ રૂપ સસારમા જ મ જરા મરણના દુઃખ ગ્રહી નાટારંગ કરતો કર્યા કરે છે, આત્માનો શુદ્ધ પરિણામ યતા ભવ પ્રપચની ઘાજી નાશ પામે છે, પોતાના પટલે આત્માના અજ્ઞાનથી જીવ અનત દુઃખ પામ્યો. શરીરને આત્મા માની બહિરાત્મભાવે રમતો કરતો પોતાનું સ્વરૂપ મૂલ્યો, દુઃખનો સમુદ્ધ પોતાના અજ્ઞાનથીજ માત્ર ધાપ છે પણ સદ્ગુરુ સમાગમે આત્મસ્વરૂપ જાણ્યું તેમાં રમણતા કરી કર્મનો નાશ કર્યો. અને મોક્ષ સ્થાનની પ્રાપ્તિ કરી સિદ્ધ ભગવત થયો એ સર્વ આત્મજ્ઞાનનું ફલ છે

“ દુઃખા ”

જેનાથી નિજ આતમા, સમજાયો સુખકંદ,
ત્રિકરણ યોગે ભાવથી, નમુ ગુરુ કમદ્વદ્ધ. ॥ ૯ ॥

સુખકંદ અનતગુણવિવિધ આત્મસ્વરૂપ જે ગુરુના વૌધથી સમજાયું તે સદ્ગુરુ મહારાજના ચરણ કમલદ્વયને ભાવથી મન વધન અને કાયાણ કરી નમસ્કાર કરુ છું, આત્માને ઓઝલાવનાર ગુરુ છે, ગુરુ પણ આત્મા છે અને શ્રોતા પણ આત્મા છે, 'કિંતુ

गुरुनो आत्मा ज्ञानवंत छे अने सेवक श्रोताजननो आत्मा निर्मल नथी तेने जणार्वनार गुरु छे, उपदेशक धर्मतीर्थ छे, माटे गुरुनेज मोडुं तीर्थ जाणवु, सुदर्शना चरित्रमां चारण मुनिए चंद्रगुतराजाने महाफल जाणी उपदेश आप्यो छे, सद्गुरु समान त्रिभुवनमा मोडु कोइ तीर्थ नथी. सद्गुरु मोडुं तीर्थे छे एम मनमा श्रद्धा यथा सम्यक्त्वनी प्राप्ति यशे, इदर्यमां गुरुनी मूर्ति स्थापन करी तेनुं एकाग्रचित्तथी भक्ति पूजन ध्यान करवाथी आत्माने अलौकिक शांति यशे, अने दररोज एम ध्यान घरवाथी पोताने साक्षात् सद्गुरु जाणे होयनी एम साक्षात् भासे यशे, अने गुरु माहात्म्यथी अनुभव ज्ञाननो प्रवाह बहन यशे, अने दुर्गुणोनो अवश्य नाश यथा मन प्रसन्न यशे, अने आत्मा सद्गुणधाम यशे

“ दुहा. ”

सद्गुरु वण भव दुःखनो, परिहारक नहि कोय ॥
ते सद्गुरु नित्य वंदीए, जन्म सफलता होय ॥१०॥

भावार्थ—भव दुःख अतकारक सद्गुरु बिना अन्य कोइ नथी, ते सद्गुरुने प्रतिदिन वदन करवाथी जन्मनी सार्थकता छे, योर कर्म करनारा दुष्टजनो पण गुरुना उपदेशथी गुरुता पामी शारीरिक मानसिक दुःख सक्षय करी पचमीगतने पाप्मा छे, पापे छे, अने पापशे.

“ दुहा ”

सावन साध्यापेक्षथी, जे पाठे आचार;
राग रोष मद जीतता, सफलो तस अवतारा ॥११॥

रागादिक त्यागी शमे, करशे आतम ध्यान,
सम्यग् ज्ञान क्रिया थकी, थशे ते भगवान् ॥१२॥

भावार्थ—जे भव्यात्माओ पच महात्रतादिनो आचार साधन साधनी सापेक्ष बुद्धिथी पाळे छे, अने राग रोषने जीते छे, तेनो आचार सफळ छे, अने ते दुनियापां जन्म्यो सफळ छे, क्रोध, मान, माया, लोभ, निंदादिनो जय करी शमभावे जे मुमुक्षुओ आत्मध्यान करशे, अने सम्यग्ज्ञान अने सम्यग्क्रियानु अवलंबन करशे ते पोते भगवान् थशे, कर्मपळना नाशयी आत्मा ते सिद्धात्मा थइ शके छे, किंतु अभव्यजीव मुक्तिपद पापी शकता नथी, कारणके अभव्यजीवोपां मुक्ति पामवानो स्वभाव नथी अभव्य जीवोनु उपादानकारण शुद्ध थइ शकतु नथी, भव्यजीवोनु उपादानकारण शुद्धसापत्री योगे थइ शके छे, ससारमा परिभ्रमण करवानु मुख्यकारणराग अने द्वेषभावकर्म छे, नोकपायसहचारि भावकर्ममा छे, क्रोध, मान, माया, अने लोभनो राग द्वेषमा अतर्भाव छे, सिद्ध थता जीवोने राग द्वेष अनादि सान्त भांगे छे, अभव्यजीवने रागद्वेष अनादि अ नत भांगे छे, रागअने द्वेषनो क्षय सवरथी सर्वथा थाय छे, चहिरात्मभावे राग द्वेषनो क्षय थतो नथी, ज्यारे अतरात्मपणु प्राप्त थाय छे, त्यारे राग द्वेषनो क्षय थइ शके छे. कथु छे के—

राग द्वेष के त्याग विन, मुक्तिको पद नांहि,

कोटि कोटि जप तप करे, सने अकारज थाया ॥१॥

रागद्वेषना क्षय विना मुक्तिपद प्राप्त थतु नथी, राग द्वेषना त्याग विना कोटि कोटि जप तप करे तो पण लेखे थतु नथी, प्रथम आत्मस्वरूप गुरुसमक्ष जाणवामा आवे, जडनु ययातध्य

स्वरूप जाणवामां आवे पश्चात् जड अने आत्मानो भिन्नता मालुम पढता विवेक प्रगटे, विवेकृथी आत्मतत्त्वआदेय लक्ष्यमा ग्रहे, अने अजीवतत्त्व हेय जाणे पश्चात् आत्मा विचारे के-मारामा अनत ज्ञान, अनत दर्शन, अमत् क्षायिक चारित्र, अनत वीर्य छे, हु स्वतत्र छु, किंतु अनादिकाळ्यथी राग द्वेषना योगे परतत्र छु, राग द्वेष ए माह आत्मस्वरूप नथी, एम विचारता सर्वत्र सर्व प्राणी उपर तथा वस्तुओ उपर समभाव प्रगटे, दुनीयानी सर्व वस्तुने शमभावे निरखे, राग द्वेषनो क्षय शमभावे आत्मध्याने प्रवर्तता थाय अने सम्यग्ज्ञान अने क्रियाथी मुक्तिपद मळे माटे जे मुनिवरो रागादिकनो त्याग करी वायुनी पेटे अपतित्रद्धताए विचरी स्वआत्महितमा लीन रहेशे, ते क्षणिक आयुष्यनी सफलता करे छे

“ दुहा. ”

को किरिया जड वोलता, तरशुं अम संसार;
 कर्मनाश किरिया थकी, सफलो अम आचार ॥१३॥
 वहिर् क्रियामां राचता, अंतर्तत्त्व न भान,
 भूल्या भवमां भटकता, क्रियाजडी अज्ञान- ॥१४॥

भावार्थ-कोइक क्रियारुचिनीवो एम मानेछेके-अमो क्रिया करवाथी ससार समुद्र तरीशु, अमो जे क्रियाकाडनो आचार आदरीये छीए ते कर्म नाश करशे, माटे क्रिया सफल छे, जे जे क्रिया छे ते सफल छे, यथा दौहन, भक्षगक्रिया, ते प्रमाणे पढि-लेहण (प्रतिलेखन) आदि क्रियाओ पण कर्म नाश करवाथी सफल छे, ए प्रमाणे साध्य आत्मतत्त्वना अजाणपणे अतरक्रिया जे ध्यानादिकनु स्वरूप नहीं जाणवाथी क्रियाजड पुरुषो भवमां

મટકંયા, મટકે છે, અને મટકણે, અને પરમાત્મપદ કેમ પામી શકે,
સાધ્ય સાપેક્ષતાએ ક્રિયા સફળ છે, એમ એકાંતે વાહ્યક્રિયાથી
જદાત્માઓ ઇષ્ટફલ જે મોક્ષ તે પામી શકતા નથી

“ દુહા. ”

કોઈ જ્ઞાનને માનતા, જ્ઞાન સત્ય જગ સાર,
વિના જ્ઞાન ક્યા મુક્તિફલ, જ્ઞાને ભવજલ પાર ॥૧૫॥
એકાંતે એમ જે ગ્રહે, કરે કદાગ્રહ ચિત્ત,
આત્મતત્ત્વ પામ્યા વિના, હોય ન તત્ત્વ પ્રતીત ॥૧૬॥

કેટલાક ભવ્યાત્માઓ જ્ઞાનને મુક્તિમદ માને છે, આત્મતત્ત્વના
જ્ઞાન વિના મુક્તિ નથી, જ્ઞાનથી સસાર સમુદ્ર તરી શકાય છે,
આત્મતત્ત્વના વેધ વિના જે ભવ્યો એકાંતે હૃદયમાં હૃદ્ય કદાગ્રહ
ધારણ કરી સ્વેચ્છાએ પ્રવર્તે છે, તે પરમાત્મપદ પામી શકતા નથી,
આત્મતત્ત્વ પામ્યા વિના મોક્ષની પ્રાપ્તિ થતી નથી

“ દુહા ”

યુવત્યગ નિરક્ષ્યા થકી, વિષય તૃપિ નહિ થાય,
ભોજનજ્ઞાન થયા થકી, મૂલ્ય ન ભાગે ભાય ॥૧૭॥

માર્વાર્થ—યુવતિના અગત્ય નિરીક્ષણ કરવાથી વિષયપુરુષોને
વિષયની તૃપ્તિ થતી નથી, તેમજ વરફી, દૂગપાક, બિટાન્ન ભોજ
નનુ જાણવણુ માત્ર થવાથી, ઉદરપૂર્તિ થતી નથી, માટે તેની ક્રિયા
કરાય તો ઇષ્ટ ફલની સિદ્ધિ પામી છે, માટે ક્રિયાની મુખ્યતાએ
ફલ સિદ્ધિ છે.

જ્ઞાનવાદી—હે ક્રિયાવાદી ! તમો ક્રિયાને ફલદાયક કહો છો તે
યુક્ત નથી, ક્રિયા કરવાથી સસારની હૃદિ પામી છે, રાખવું,

सुद्ध करवु, ए आदि क्रिया छे तो तेथी मुक्ति नथी, किंतु कर्मवध छे, माटे क्रिया संसारवृद्धिहेतुभूत छे, माटे ज्ञान तेज सार छे, कर्मक्षय ज्ञानथी थाय छे.

क्रियावादी—क्रिया यकीज मोक्ष छे, क्रिया बे प्रकारनी छे, १ कर्मक्रिया २ धर्मक्रिया, जे क्रियाथी संसारमा परिभ्रमण करवु पढे अने आश्रवण ग्रहण थाय ते कर्मक्रिया जाणवी, तेनो तो त्याग करवो योग्य छे. पण जेनाथी जन्म जरा मृत्युना दुख नाश पामे एवी धर्म क्रियाओ कही छे, ते करवी जोइए, कारण के तेनाथी कर्मनो नाश थाय छे, किंतु ज्ञान यकी यतो नथी माटे क्रिया^{या} तेज मोक्ष मार्ग छे.

ज्ञानवादी—धर्मने माटे क्रियानी जरूर नथी, आत्मानी मुक्ति तो ज्ञानथी थाय छे, शरीरनी क्रिया, वचननी क्रिया शुं मोक्ष आपी शके ? ना नहीं. मननी क्रिया विकल्परूप मोक्ष आपी शकती नथी, किंतु आत्मानुं ज्ञान थवाथी मुक्ति प्राप्ति छे, ज्यां ज्यां क्रिया त्यां कर्मनो वर समजवो, कारण के क्रिया जड छे तो तेथी उत्पन्न थनार फळ पण कर्म जडछे, तो मुक्ति क्याथी मळे ? माटे ज्ञानथी मुक्तिनी सिद्धता छे.

क्रियावादी—क्रियाने जड कहो किंतु क्रियाथी जडनो नाश थाय छे, कारण के मजातियथकी सजातियनो नाश थायछे, ईदोनो नाश मोगरथी थायछे, तेप कर्मछे ते जडछे तो तेनो नाश क्रियाथी थायछे माटे क्रियाथी नाश यवो तेज मोक्ष जाणवुं, ज्ञानथी कर्मनो नाश शी रीते थाय ? माटे कर्म नाशिका क्रिया जाणवी, मानसिक, वाचिक, कायिक क्रिया करवाथी कर्म नाश थायछे, माटे ते करवी जोइए अने क्रिया ज मोक्ष फलदाछे.

જ્ઞાનવાદી—તમોણ જહ યકી જહનો નાશ થયો એમ વળુ, તે યુક્ત નથી તમારા મત પ્રમાણે તો એમજ સિદ્ધ થાયછે કે પાપ કરવાયાં પણ કર્મ નાશ થાય, કારણ કે પાપ પણ જહ છે અને કર્મ પણ જહછે માટે પાપથી કર્મનો નાશ થાય તો પશ્ચાત્ દયા, સત્ય, તપ કરવાની શી જરૂર હોવી જોડે ? અને જો એમ હોય તો પાપી જીવોની શીઘ્ર મુક્તિ થવી જોડે અને ધર્મો અને પાપો એવો ભેદ ભાવ પણ અસત્ય થાય કિંતુ શાસ્ત્રમા વીતરાગ ભગવતે તો એમ કહ્યું છે કે પાપ કૃત્યથી કદાપિ મુક્તિ મળતી નથી, માટે જ્ઞાનને સત્ય માનો અને તેનાથી મુક્તિ થાયછે

ક્રિયાવાદી—હે જ્ઞાનવાદી ! તુ મારુ કયન સમજી શકયો નહીં, પ્રતિપક્ષી જહથકી પ્રતિપક્ષી જહનો નાશ થાયછે, કર્મનુ મતિ પક્ષી પાપ નથી માટે પાપથી કર્મનો નાશ થતો નથી, પુણ્ય અને પાપ એ બે પરસ્પર પ્રતિપક્ષી છે માટે પુણ્યથી પાપનો નાશ થાયછે પુણ્યની ક્રિયા દુઃખનાશક છે માટે ધર્મની ક્રિયા અવશ્ય કરવી જોડે

જ્ઞાનવાદી—પુણ્યની ક્રિયાથી કહ કર્મનો નાશ થતો નથી, કારણ કે પુણ્ય પણ કર્મસ્વરૂપ છે, તો પુણ્યથી કર્મનો દૂરિ થાય પણ કર્મનો નાશ તો થતો નથી, માટે જ્ઞાનથીજ મુક્તિ થાયછે એમ માનવું જોડે

ક્રિયાવાદી—મલા ઠીરુ પુણ્યથી કર્મનો નાશ ન થાય તો પણ શાતાવેદનીયકર્મ વગાય અને તેથી સત્તમ કૂલમા જન્મ થાય થન, પુરાદિ ઋદ્ધિ માત્ર થાય તેથી સુખ મહે તે પણ ક્રિયાનું ફલ છે, અને તેથી અનુક્રમે કર્મનો નાશ થાય માટે ક્રિયાકાંદની સાફલ્યતા છે

જ્ઞાનવાદી—પુણ્યથી શાતાવેદનીયકર્મ ધધાયછે અને તેનો ભોગ

भोगवत् अवतार धारण करता जन्म जरा मरणना दुःख प्राप्त थायछे, अवे अवतार धारण करता पश्चात् ते भवमा बन्धी नवा कर्म रथाय पण कर्म बधनो पार आवे नहीं, ज्ञानधी कर्मनो नाश थायछे माटे तेनो स्वीकार करवो योग्यछे.

क्रियावादी—अमो क्रियाधी कर्मनो नाश मानीये छीए ते सयुक्त छे, उत्तम अवतार आव्या विना धर्मना कार्य थइ शकता नयी, पडिलेहण, प्रतिक्रमण, प्रभुपूजा, इत्यादि क्रियाओ पापनो नाश करे छे, अने नवीन कर्म प्रतिबधकद्वारा आत्मा निर्मळ यतां मुक्तिनी प्राप्ति थायछे माटे क्रिया सफलछे.

ज्ञानवादी—धर्मनी क्रिया उत्तम कुळजन्म धनसपत्ति आपनारीछे, पण तेधी कर्मनी वृद्धिछे. पडिलेहण, प्रतिक्रमण, प्रभुपूजा, पण कर्मनो नाश करी शकती नयी, जरा सूक्ष्मदृष्टिधी विचारो के—ज्ञान विना क्रिया करवाधी थुं फल थइ शके ? ज्ञानाग्निः सर्वकर्माग्नि, भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन ज्ञान अग्नि सर्व कर्म बालीने भस्मीभूत करे छे, माटे हठ कदाग्रह त्यागी, ज्ञान मुक्तिप्रद माननु ते योग्यछे.

क्रियावादी—क्रिया विना ज्ञाननी उत्पत्ति यती नयी, ^{क्रिया} ज्ञाननो अभ्यास ज्ञानने उत्पन्न करेछे, प्रथमधी कइ ज्ञान होतुं नयी. विद्याभ्यास करता करता ज्ञाननो प्रकाश थायछे, सारमां समजवानु के ज्ञानाभ्यासरूप क्रियाधी ज्ञान उत्पन्न थायछे तो क्रियाधी कर्मनो नाश थाय एमा कइ शका नयी, माटे क्रियाधी कर्मनाश मानवो योग्यछे.

ज्ञानवादी—ज्ञान विना सर्वत्र अधारु, जे कर्मनो नाश करवानोछे ते कर्मनु स्वरूप जाण्या विना कर्मनो नाश शी रीते थाय ?

पुरुषे कथु के, तारो चक्रवेग

छे ते तने मारवा धारेछे, हवे जो चैत्रने चक्रवेग ओळखतो होय तो चैत्रनो घात करे, अथवा तेनो नाश करी शके नहीं. तेम दृष्टांतथी समजवानु के-कर्मनो नाश करवो ते कर्मनु ज्ञान थया विना बनतो नथी माटे ज्ञानथी कर्मनो नाश मानवो जोइए

क्रियावादी-फक्त वस्तुनु ज्ञान थवा मात्रथी फलनी सिद्धि थती नथी, एरु माणसने भोजन करवानु ज्ञान थयु पग भोजननो मुखमा प्रक्षेप करे चावे त्यारे तेनी उदरर्पित्ति थाय अने क्षुधा मटे, माटे क्रियाज फलप्रद छे ज्ञान तो जाणवा मानछे, जेम कोइ तार (तरनार) जळमा तरवानु जाणेछे किंतु जळमा प्रवेश करी हाथ पग हलावे नहीं तो चुडी जाय तेम कर्मनु ज्ञान थता कर्म नाशकारक क्रिया नहीं कराव तो कर्मनो नाश थतो नथी, परंतु क्रियाकरणथी कर्म नाश थायउं

ज्ञानवादी-तमार रुथन ठीकछे, किंतु ज्ञान विना वस्तुनु यथा-तथ्य स्वरूप जाणी शकातु नथी, तो पश्चात् ते आदरी शकातु नथी, मोदक वनाववानु जाणे अने ते भक्षण कर्याथी अमुक फायदो थायछे ते जाणी शकाय तो त्याग वाद करी शकाय, जे वस्तुनु ज्ञान नथी ते वस्तुनी क्रिया थी रीते करी शकाय ?-दृष्टांत तरीके जाणो के-कोइ मनुष्यने बीजा मनुष्ये फलु के शास्त्रमा आकाशगामिनी विद्या कहीछे, तेनु ज्ञान थाय तो आकाशमा उडी शकाय, त्यारे पेला मनुष्ये शास्त्रनी शोध करी आकाशगामिनी विद्या जाणी, त्यार वाद क्रिया करी आकाशमा गमन करवा लाग्यो. अत्र समजवानु के आकाशगामिनी विद्यानु ज्ञान थता तेनी क्रिया थइ शके, माटे ज्ञाननी मुख्यताछे, ज्ञान विना कोइ क्रिया थड शकती नथी

क्रियावादी—हे ज्ञानवादी ! तमो मूळ हेतुयी विरुद्ध उतरोछो, तमारे विचारवु के—ज्या ज्या क्रियाछे त्या अवश्य ज्ञान रहु होयछे, ज्या साकर त्या साकरनो रस, ज्या केरी त्या तेनो रस अवश्य होयछे, तेम ज्या क्रिया होयछे त्या अवश्य ज्ञाननी अस्तित्ताछे, माटे ज्ञाने जाणता क्रिया करती वखत पण गौणभावे ज्ञान होयछे, मुख्यरूपे क्रियाछे, अने क्रियायी कर्मनो नाश थायछे माटे क्रिया तेज कर्मनाशकछे.

ज्ञानवादी—हे क्रियावादी तारु वचन अयुक्तछे, ज्या क्रिया होय त्या ज्ञान होय एवी व्याप्ति नथी, फोनोग्राफ वार्जित्रमां क्रिया बोलवानीछे, पण ज्ञान नथी, आगगाडी (अग्निरथ) मा गमननी क्रियाछे पण ज्ञान नथी, माटे तारु कथन असत्यछे, वळी जेना माटे तु क्रिया करवानु कहेछे ते आत्मा तो अते सिद्धपणु पामी अक्रिय थायछे, अने सिद्धमां क्रिया नथी, अक्रियछे, आत्माना घरनी क्रिया नथी, तो ते क्रिया निष्फलछे, सिद्धमा ज्ञानछे, अने ते तो आत्मानो गुणछे माटे ज्ञानथी मुक्तिछे एम जाण

क्रियावादी—क्रिया आत्मा करेछे, माटे आत्मानीछे, शरीर कड क्रिया करतु नथी माटे क्रिया प्रमाणीभूता कर्मक्षये जाणवी.

ज्ञानवादी—आत्मा कड फक्त एरुलो क्रियाने करतो नथी, शरीरधारी आत्मा क्रिया करेछे, अने ज्यारे शरीरनो त्याग करी सिद्धपद पामेछे त्वारे क्रियापणु टळेछे, आत्मा ससारमा कर्मयोगे सुख दु ख योगे व्रण प्रकारनी क्रिया करी शकेछे, व्यवहार नये क्रियानो कर्ता आत्माछे, निश्चयनयथी जोता

आत्मा नथी माटे आत्मानी क्रिया कही

ने लाकडाने वाळी भस्मीभूत करी २५

(ओळवाइ) जायळे, तेम क्रिया पण कर्पने वाडी पोतानी
येडे नाश पामेडे, माटे क्रियाथी मुक्तिडे.

ज्ञानवादी-हे मिषतम, जरा विचारशो तो मातुष पडशे के-क्रियाथी मुक्तिडे एतु शायी जाण्यु उत्तरमा कहेंतु पडशे के ज्ञानर्या, ज्ञान न होय तो क्रियाने जाणी शक्य नही, तो यत्री शी रीते करी शक्य ? तपोए कथु के क्रियाथी मुक्ति छे आ वचन मत्राप मात्रडे, देग्यो मसन्नचद्र राजर्षि उपारे सूर्यना सामी दृष्टि राखी ध्यान करता हता त्यारे ते कोइ क्रिया करता नहोता, अने ज्ञान ध्यानथी केवलज्ञान पाम्या, विचारो के त्या कइ क्रिया करता हता, कइ नहीं, भरतराजाए आरीसा (आदर्श) भुवनवा भावना भावता भावता केवलज्ञान उत्पन्न कर्यु, मरुदेवा माताए हस्ति उपर भावना भावता केवलज्ञान उत्पन्न कर्यु त्या कइ क्रिया करी नयी, फक्त ज्ञानवडे कर्म स्वपात्री केवलज्ञान पाम्या जीवो देखायडे, माटे ज्ञानछे तेज सत्यडे

क्रियावादी-हे ज्ञानवादी तपोए मसन्नचद्र राजर्षिनु दृष्टान्त ज्ञाननी सिद्धिने अर्थे आण्यु, ते ज्ञानने सिद्ध नहीं करता क्रियाने सिद्ध करेडे, प्रथम समजतु के ध्यानछे ते क्रियारूपडे, ध्यानाना चार प्रकारछे, आर्तध्यान, रीद्रध्यान, धर्मध्यान, शुकध्यान, ए चारमांथी प्रथमना वे ध्यान दुर्गति अर्पेडे, कावस्सभगमां मसन्नचद्र ऋषिए प्रथम दुर्ध्वान ध्यातां नरक गति उपार्जन करी पश्चात् पश्चात्ताप पामी धर्मध्यानादि ध्यावतां कर्म स्वपात्री केवलज्ञान पाम्या तेनु कारण धर्मध्यान अने शुकध्यानरूप क्रियाडे, वार भावनाओ पण धर्मध्यानामां आत्री, मरुदेवी माता अने भरतराजाए धर्मध्यानादि ध्यातां

केवलज्ञान पाम्यु, माटे ते पण क्रियाधीन, केवलज्ञान, मुक्ति आदि पाम्याडे. श्री विजयलक्ष्मीसूरीजीए पण क्युडे के ध्यानक्रिया मनमा आणीजे, धर्म शुक ध्यायीजेरे, इत्यादि, माटे क्रिया कर्म क्षय करीडे.

ज्ञानवादी-हे क्रियामा राचनार. हजी तु पोतानो मत छोडतो नयी, मारा वचन उपर लक्ष आप, ज्ञान विना ध्यान थड शकतु नयी जेनामा ज्ञान ठे ते ध्यान करी शके छे, जुओ भरतराजा. जेनामा ज्ञाननो सर्वथा अभावठे त्यां ध्याननो अभावछे, जुओ, घट जडठे तेमा ज्ञान नयी, जो, ध्याननु ज्ञान न होय तो ध्यान शी रीते शके ? प्रथम ज्ञान अने पश्चात् क्रिया, वळी समजतु के ज्ञान विना जरा पण क्रिया थड शकती नयी, एक टिवसना जन्मेला वालरुने पण स्तन पान प्रवृत्तिमा सस्कार बुद्धि कारण छे, सुख दु.खने पण जगावनार ज्ञानठे, ज्ञान रुपराजानी क्रिया दासीठे, माटे ज्ञानना हुकूम प्रमाणे क्रिया थड शकेठे, ज्ञानरूप राजाना करतां क्रिया दासी मोटी कहेवाय नहीं. ज्ञान देखतुठे, अने क्रिया आरळी ठे, ज्ञान विना चारित्र नयी, ज्ञान विना वैराग्य थतो नयी, ज्ञान विना देव गुरु धर्मने ओळखी शकता नयी, अरे विचारो तो खरा, ज्ञानधीन आत्मा पण ओळखाय छे, पण क्रिया ओळखी शकती नयी. ज्ञानधीनीजाना मननी वात जाणी शक्याय छे, कोइ अध पुरुष वनमां फरतो फरे किंतु अधपणायी-खाडामा चालतां पण पढी जाय, तेना सामो वाय आवे तो कइ दिशा तरफ जतु ते देखी शके नहीं, अने जो देखतो होत तो दु खयी वचे माटे ज्ञान ते देखता पुरुष समान छे अने क्रिया आधळा पुरुष समान छे.

શ્રાવકથી વ્યાખ્યાન વાંચી શકાય નહીં, કારણ કે તે સસારમાં રાહી માંચી વિષયમુગ્ધ ભોગવતો સસાર અમાર જાણીને પળપડી રહ્યો છે, અહકારબુદ્ધિથી પરમા અહપણાની બુદ્ધિ થાયછે, હુ મોટો આ સર્વ માર, મારા સમાન દુનિયામાં કોણ વિદ્વાન છે ? એવા વિચાર થાયછે ત્યાં સુધી નિશ્ચયજ્ઞાનીપણું નથી, શુષ્ક જ્ઞાનીપણું જાણતું, એવા શુષ્કજ્ઞાની પરમાત્મસ્વરૂપ તરફ લક્ષ આપતા નથી અને બાહિરાત્મપણું ધારી મુક્તિ સ્થાન પામતા નથી.

આત્મજ્ઞાનીનું લક્ષણ કહે છે

“ દુઃખ ”

વૈરાગ્યાદિક ગુણ વૃદ્ધ, આત્મમાં પ્રગટાય,
સમભાવે નિરલ્પે સદા, પરમાત્મ પદ પાય ॥૨૦॥

આવાર્થ—વૈરાગ્ય, સવેગ, સમતા, સહનશીલતા, નિર્લોભતા, આદિ ગુણ સમૂહ આત્મામાં પ્રગટાવે અને ગુણધારકઆત્મા, સમ-ભાવે શત્રુમિત્ર, કચન, ઉપલ, નિંદરુ, વદકાદિને દેખે, ત્યારે પર-માત્મ પદની પ્રાપ્તિ થાયછે

“ દુઃખ ”

ત્યાગ વિરાગ વિના કદી, થાય ન આત્મ જ્ઞાન,
આત્મ જ્ઞાન વિના કદી, પામેં નહિ શિવ ઠાળ ॥૨૧॥

આવાર્થ—સસાર-અનભૂતપુનર્જીવનાદિકના મમત્વરૂપ ત્યાગ વિના અને વૈરાગ્ય વિના આત્મજ્ઞાન થતું નથી, અને આત્મજ્ઞાન વિના શિવસ્થાનની પ્રાપ્તિ નથી, સારાશકે—સસારની મોહજાલનો ત્યાગ અને તિત્રસ્થિરજ્ઞાન વૈરાગ્યથી સદ્ગુરુ ઉપદેશદ્વારા આત્મસ્વરૂપ સમજી, આત્મસ્વરૂપમાં લીન થાયછે, આત્મજ્ઞાનીઓને, અમુકમાં અમુક દોષ છે, અમુક ક્રોધી છે, અમુક મારો જનુ છે, આવી

भावना थती नहीं, ते तो एमज विचारेछे के जीवनो कोइ शत्रु मित्र नहीं, तेम सनधी पण नहीं, पारकी निंदा करवी तेमा मने कइ फायदो नहीं, आत्मज्ञानीओ तो एम विचारेछे के-सर्व जीव कर्मना वशे जुंदी जुंदी सारी नठारी आचरणा करेछे, तेमा हुं सर्व ना आत्मानी निंदा करु के शरीरोनी निंदा करु, अलवत विवेक थी विचारता कोइ पण निंदाने पात्र नहीं, ज्यां सुधी मनमां निंदा करवानी बुद्धि थायछे त्या सुधी कोइ अपेक्षाए धर्मी नहीं, तेम परनी निंदा करतो साधु वा थावक होय तो पण ते चढाल समान मनोवृत्तिथी जाणवो, शुष्कज्ञानी मुखथी आ ससार असारछे एम मुखथी पोकारेछे, पण ससारमां आसक्ति राखी भवभ्रमण करेछे, शुष्कज्ञानी चारित्रं अंगीकार करी शकतो नहीं, केटलाक थावको उपरथी त्याग विराग देखाडी ससारमा शुकरनी पेठे आसक्ति धारण करेछे तेम ज्ञानजुं फल विरति पाम्या विना स्वजन्म निष्फल गुमावेछे, केटलाक जीवो उपरचोटीया वैराग्यथी दीक्षा अंगीकार करी पूजा माननी लालचे गच्छमतना कदाग्रहे नड्या छता आत्मस्वरूपना ज्ञान विना वहिरात्मपद पामता परस्पर एक वीजानी निंदा करी टोळें भेषु करवानी बुद्धिथी, व्याकरण, न्याय आदि अभ्यास करी एक वीजानुं खडन मडन करेछे तेवा साधु ओ आत्मज्ञान पामी शकता नहीं पण जे साधुओना हृदयमा ससारनी असारता वसी रहेलींछे, अने शात मुखाकृतिथी विचरेछे, सद्गुरुनु तथा गीतार्थ साधुनी सगति करेछे ते आत्मज्ञान पामी कर्म क्षय करी मुक्तिपद पामेछे, संसारमा वसता त्याग विरागपणु पामवु मुश्केलछे, त्यागी अने वैरागीपणु अध्यात्म दशावाळा मुनिवरो पामी शकेछे, अने आत्मामा अनंत सुख अनादि कालथी तिरोभावे रहुछे, ते पण आत्मानुभवी भव्यो जा.

યાને આત્માયત્ની મિજ્ઞ જાણે તે પુરુષો તેનો ત્યાગ કરી શકેછે, સસાર વલ્લતા અગ્નિ સમાન છે, સસારનાં દરેક કાર્યો ઉપાધિમય છે, સસારની ઉપાધિમાં વસતાં આત્માનુ ધ્યાન યદ્ શકતું નથી, માટે સસારી ઉપાધિ ત્યાગી સદ્ગુરુ ઉપદેશ સાંભલ્લવો કે જેથી વૈરાગ્ય પ્રાપ્ત થાય, અને વૈરાગ્ય પ્રાપ્ત થતા ગુરુ મહારાજને પૂછી આત્માનુ સ્વરૂપ ઓલ્લલવુ, અને તે આત્મસ્વરૂપ જાણતાં તેનું ધ્યાન ધરતાં કર્મનો નાશ યાયછે, માટે આત્મસ્વરૂપાભિલાષિભોષ ત્યાગ અને વૈરાગ્યની પ્રાપ્તિ માટે પ્રયત્ન કરવો.

“ ઢુહા ”

યોગ્ય હોય તે આદરે, હઠ કદાગ્રહ ત્યાગ;

વૈરાગ્યે મન વાસિષુ, તસ પરમાતમ રાગ. ॥૨૨॥

માવાર્થ-આત્મતત્ત્વ તયા તેની પ્રાપ્તિના અવ્યભિચારી હેતુઓને મહ્યાત્મા અગીકાર કરે આત્મતત્ત્વ જેનાથી પામી શકાય નહીં ણવા સાધનોમાં હઠ કદાગ્રહપણાની સુદ્ધિનો ત્યાગ હોય, સદ્ગુરુ મહારાજા મહ્યાત્માઓની વિચિત્ર ગૃહિતિ જોડ જે સાધનથી જેને કાયદો યાય તે સાધન પ્રતાદિ તેને અંગીકાર કરાવે, ત્યારે અતિ-શય પ્રેમમત્તિથી ગુરુ વાલ્યને શિષ્ય અગીકાર કરે, આત્માયીં જીવ મવમયથી થીક પામતો વિચારે કે-જો ઢુર્લભ મનુષ્યાવતાર પામી સ્વછદાચારીવણે વર્તોશ તો અનત મવમ્રમણ કરવા પડશે માટે- ગુરુની આજ્ઞા મસ્તકે ધારી મત કદાગ્રહનો ત્યાગ કરે અને સસારની અનિત્યતા વિચારે-કર્મનુ સ્વરૂપ સૂક્ષ્મદૃષ્ટિથી વિચારી સા રાજ ગ્રહે ષે-આ જગત્ત્મા સમ્યગ્-ર્મથી આત્મહિત છે, ણમ વિંતન કરી જલ્લપકજવત્ સસારભાવથી ન્યારી રહે, તેવા મહ્યાત્માઓને પરમાત્મપદનો રાગ યાય કિંતુ સસારમાં વિષ્ટા શુકરવત્ અહનિશ

विवेकधी शून्य हृदयवाळा, अने परवस्तुने पोतानी मानां हर्ष शोक धारण करनारा रागांधवहिरात्मीयोने परमात्मपदनां राग यतो नधी, वैरागी, त्यागी, मत कदाग्रहवर्जित जीवो परमात्मपदपामी शके छे. आ आत्मार्थोनु लक्षण छे.

“ दुहा. ”

समकित जेणे अर्पियुं, ते मोय गुरु देव;
निमित्त गुरु ते आत्मना, कीजे तेहनी सेव. ॥२३॥
त्यां त्यां गुरुनी बुद्धिधी, भटके जाणे रोझ;
गुरु गुरु शी वस्तु छे, नहीं करतो तस खोज ॥२४॥
धोलुं तेटलुं दुध एम, तेवी गुरुमां बुद्धि,
गुरुबुद्धि सर्वत्र जास; तस नहि आत्म शुद्धि ॥२५॥
सेवे सद्गुरु प्रेमधी, चरणकमल आधीन,
पामे ते परमार्थने, थावे शिवसुखलीन. ॥२६॥
सद्गुरु सम कोनो नही, भवमांहि उपकार,
कामकुंभश्रीसद्गुरु, भवजल तारण हार ॥२७॥
प्रत्यक्ष उपकारी गुरु, परोक्ष जिनवर होय;
एहवी बुद्धि प्रगटतां, धर्म योग्यता सोय. ॥२८॥
गुरुश्रद्धाभक्ति विना, लागे नहीं उपदेश;
भणवुं सुणवु शास्त्रवुं, ते पण हेतु क्लेश. ॥२९॥
सद्गुरु वचनामृत विना, तत्त्वस्वरूप न पाय,
सद्गुरु थकां, समकितरत्न ग्रहाय. ॥३०॥

तारक बुध्विथी गुरु, कथन करे उपदेश,
श्रद्धा भक्तिथी सुणी, आदर करो विशेष. ॥३१॥

भावार्थ—अनतरूणायोगे केवलपरमार्थबुद्धिधी - अनर
भव दुःखवल्लिछेदककुठारसदृश धर्ममूलभूतसमकितरूप रत्न जे
सद्गुरुरूप अर्पण कर्युं ते गुरु मोटा देव समानछे, देव गुरु धर्मनी
श्रद्धाथी समकित आत्मायां उत्पन्न थायछे, देव वीतराग अष्टादश
दूषण रहीत होय तेने स्वीकारवा

यत जिनेन्द्रो देवता स्तत्र, राग द्वेष विवर्जित
हतमोहमहामल्ल, केवलज्ञानदर्शन ॥१॥

सुरासुरेंद्रसंपूज्य, सद्रूतार्थप्रकाशक
कृत्स्नकर्मक्षय कृत्वा, सप्राप्तं परम पद ॥२॥

जीवाजीवौ तथा पुण्य, पापमाश्रवसवरौ,
वयोविनिर्जरामोक्षौ, नवतन्वानि तन्मते ॥३॥

तत्र ज्ञानादिधर्मेयो, भिन्नाभिन्नविवर्त्तिमान्
कर्म शुभाशुभ कर्त्ता, भोक्ता कर्मफलस्य च ॥४॥

चैतन्यलक्षणो जीवो, यश्चैतद् विपरीतवान् ॥

अजीव.स. समारूपात्. पुण्य सत्कर्मपुद्गला ॥५॥

इत्यादि

वीतराग शासनमा जिनेन्द्र भगवान् देवछे, ते राग द्वेष रहित
छे, जेगे मोहरूप महामल्लनो सर्वथानाश कर्योछे, अने जेमने केवल
ज्ञान अने केवलदर्शन साकार निराकार उपयोग तरीके भास्योछे,
वैमानिक अने भूवनपति आदिना चोसठ इद्रोवडेजेना चरण क्रमळ

पूजायाछे, एवा वीतराग देव जाणवा, बळी तीर्थंकर देव त्रिभुवनवर्ति घर्मास्तिकायादिक पद्द्रव्योना गुण पर्याय आदि सत्य पदार्थोना प्रकाशकछे, जेधुं जगत्तु स्वरूपछे तेषु तेमणे केवलज्ञाने प्रकाशुछे. असत्य जल्पननु तेमने कइ प्रयोजन नहीं, दयाळु अने उपकारीपणाने लीधे सत्य तत्त्वनी प्ररूपणा करीछे, भरत, ऐरवत अने महाविदेह क्षेत्रमां तीर्थंकरोनी उत्पत्ति थायछे वीश स्थानकमानु गमे ते स्थानक उत्कृष्ट परिणामयोगे आराधवापी त्रिभुवन आराध्य तीर्थंकरनामकर्म वधायछे, अनादिकालसगी रागद्वेष स्वरूप महामल्ल शत्रुनो जेणे सर्वथा नाश, स्वशुद्धआत्मिकपरिणामपी कर्योछे. एवा तीर्थंकर महाराजाने चौत्रीश अतिशय अनुक्रमे उत्पन्न थायछे, स्वआचार कल्प अने भक्तिभरयी गमन करी प्रभुनी प्रभुता दर्शाववा माटे चतुर्निकायना देवता देवीओ प्रभुने लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न यता अलौकिक विचित्र मनहर देवताइ अष्टमहामातिहार्य युक्तसुमवसरणनी रचना करेछे ते उपर बाह्य अने अतर्लक्ष्मीवडे सुशोभीत त्रिजगतारक तरणि, पांत्रीस वाणीगुणधारक, परमपूज्य परमपवित्र त्रयोदश गुणस्थानवर्ति श्री देवाधिदेव तीर्थंकर महाराजा वचना तिशये युक्त देवता मनुष्यतिर्यचोत्पन्न वार पर्यद अग्रे मधुर ध्वनिपी बहिरात्मा, अंतरात्मा, परमात्मास्वरूप तेमज देवगुरु धर्म अने नवतत्त्व, पद्द्रव्यनु स्वरूप, भव्योना कल्याणार्थ प्रकाशेछे, अने देशनान्ते साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका रूपचतुर्विधसंघनी स्थापना करेछे, तेमा सर्वपी मुख्य चतुर्विध संघमा मुनिराज छे, धर्मनी अपेक्षाए सघछे, वीतराग आज्ञा मुजव ज्या प्रवर्तन नहीं, ते सघ फहेवाय नहीं, मोहजनितभ्रमणाए केटलाक श्रावकना कूलमां उत्पन्न थइ श्रावको साधु, साध्वी विना श्रावक वर्गनेज सघ

તરીકે અજ્ઞાનથી ગણે છે, એ વર્તન વીતરાગશાસ્ત્રથી વિરુદ્ધ છે, સાધુના સત્તાવીસ અને શ્રાવકના એકવીસ ગુણ મઝી અઢતાઢીશ ગુણયુક્ત સઘ કહેવાય છે જ્ઞાન દર્શન ચારિત્રથી ભિન્નાભિન્ન અને વ્યવહારનયથી શુભાશુભ કર્મનો કર્તા તથા ભોક્તા, ચૈતન્યલક્ષણ યુક્તજીવતત્ત્વની પ્રરૂપણા તીર્થકરે કરી છે. જીવથી વિપરીત અ-જીવતત્ત્વનુ પ્રરૂપણ તેમને કર્યું છે, એમ નવ તત્ત્વનુ પ્રરૂપણ કર્તા વીતરાગ દેવ છે, આયુષ્ય મર્યાદા પર્યંત પૃથ્વીતલ પાવન કરી અ-ઘાતીયાં કર્મ સ્વપાવી અશરીરી અનામી યદ્ સિદ્ધસ્થાનમાં પહોંચી સાદિ અનતિ સ્થિતિ અમરમર પદ ભોગવે છે, એવા દેવને દેવ તરીકે માનવા, વીતરાગ આજ્ઞાશ્રાવક પચાચાર, પચમહાવ્રત આ-રાધક ગુરુને ગુરુ તરીકે સ્વીકારવા, વીતરાગકથીતમોક્ષમાર્ગ સ્વરૂપ ધર્મને ધર્મરૂપે સ્વીકારવો, આ ઋણ તત્ત્વની શ્રદ્ધા ગુરુ મહા-રાજના ઉપદેશથી યાવ છે, માટે ગુરુ મહારાજ સમક્રિતદાયક પ્રવલ્લ નિમિત્ત કારણ છે, તેમને જ ગુરુ તરીકે સદા સ્વીકારી તેમની આજ્ઞા નુસાર ચાલવું વિવેકશૂન્ય અજ્ઞાનવાસીન ચિત્તવાળો મૂઢપુરુષ પરમાર્થશુદ્ધિહીન જેટલુ મવાહી ધોલુ તેટલુ ડુગ્ગ ઈરી અજ્ઞાનથી રોજ પશુની પેટે સર્વ મુહોમાં, સર્વ ધર્મોપદેશનોમાં ગુરુશુદ્ધિ ધારણ કરે છે તે અજ્ઞાની સ્વઆત્મશુદ્ધિ કરી શકતો નથી અને ધવિવ્યત્ કાલે સદ્ગુરુશ્રદ્ધા વિના કરશે પણ નહીં, આત્મતત્ત્વજ્ઞ, અધ્યા-ત્મોપધોગી ગુરુનુ આલચન અનાદિકાલસલમ્પ્રજ્ઞાનનો નાશ કરે છે, સહજાનદી આત્માનુભવ મદિરમાં મ્હાલ્લનાર ગુરુ મહારાજ પ્રત્યક્ષ મારા ઉપકારી છે, અને ત્રિનેશ્વર પરોક્ષ ઉપકારી છે, એમ વિવેકદષ્ટિ જેને મત્યક્ષ યદ્ છે તે ધર્મ પામી શકે છે, ગુરુ શ્રદ્ધા અને શુદ્ધાન્તઃકરણથી ગુરુ ભક્તિ કરવાથી તેમનો ઉપકાર ભગ્યાત્માને લાગે છે, અને શ્રદ્ધા ભક્તિ, વિના ઉપદેશ લાગતો નથી, ગુરુની આજ્ઞા

विना स्वयमेव शास्त्र वांचे तो पण यथायोग्य तत्व तेना हृदयमां परिणमे नहीं, अने विपरीत परिणमे तो अपध्यसेवननी इव उपदेश निष्फल थाय

परमार्थधी जोता तारक बुद्धिधी गुरुराज उपदेश अपेंछे, ते उपदेश विनयधी अति हर्षे श्रवण करी आदरवा योग्य आदरो, अने त्याज्यने त्यागी सुगुरुमां गुरुबुद्धि थया विना उपदेश कइ असर करी शक्ये नहीं, ए निश्चय जाणवु अने गुरुए जिज्ञासु अने श्रद्धाळने उपदेश आववो, पात्र विना उपदेश लागतो नहीं.

अज्ञानी मूढ मत कदाग्रही कुगुरुओनी सगतिधी जे लोकौनी बुद्धि विपरीतपणे परिणमीछे, तेमने उपदेशधी असरक्वचित् थाय छे, खारी भूमिमां पतितजळनी जेम निष्फळताछे, तेम खळ भवाभिनंदी जीवोने उपदेशनी पण निष्फळताछे, जेना नीचे कल्या प्रमाणे लक्षण होय तेने उपदेश देवो योग्यछे.

१ संसारनी अनित्यताए वामित चित्त होय

२. हुं कोणछुं? क्याधी आण्यो? क्या जइश? हुं मारे कर्तव्यछे?

३ हुं ते कोण? हुं अने मारुं ते शु? ए जाणतो होय अथवा जाणवानी जिज्ञासा होय.

४ भवनो भय लागे एटले जन्म जरा मृत्युधी व्याप्तसंसार षळताअभि समान छे तेमां पडीश तो वळी मरीश. एवो जेने भय होय

५. गुरु महाराजनी वाणी उपर पूर्ण विश्वास होय तेम प्रीति होय.

६. सत्य अने असत्यने समजी शकतो होय अने कदाग्रहीन होय.

७ गुरु कथनानुसार प्रवर्तनार होय.

८ कपट वृत्ति जेने होय नहीं, अने सदाचार मट्टियुक्त होय.

९ लोकविरुद्धनो त्याग करनार होय

१० विनेय होय अने गुरुनी श्रद्धा सहीत सेवामा तत्पर होय.

इत्यादि लक्षणो जेनामा होय ते उपदेश ग्रहणार उत्तम पात्र भूत थायक वा मुनिपणे पण शिष्यो जाणवा.

नीचेना लक्षणवाळाओने उपदेश लागीं शकतो नहीं.

गाथा.

स्तो दुठो मूढो--पुर्व्विबुग्गाहिओअ चत्तारि

उवएसस्स अणरिहा अइवासएहिं परिवुज्जति ॥१॥

१ सत्सारेज सार मानी तेमां अत्यासक्ति करनार

२ हु कोण छु ? मारे शु कर्तव्य छे ? तेनो पण जेने विचार थाय नहीं.

३ पापना कार्यों करतां भय पामे नहीं,

४ जीवोनो घात करनार धूर्त शठ मूर्खपणु जेनामां होय,

५ गुरुना दोषो जोनार, तेमनी निंदा करनार अने गुरुनी श्रद्धा तथा गुरुनो विनय बहुमानगहीत होय.

६ गुरुमहाराजनी वाणी उपर विश्वास, श्रद्धा, तेमज तेमना उपर प्रीतिरहीत होय.

७ हुगुरु अने सुगुरुनी परीक्षा करवानी जेनामां शुद्धि न होय.

८ कपटी, व्यसनी, तेमज निंदक होय,

९ कुगुरुना फदामा फसाएठ होय अने दृष्टिरागी होय.

१० जेनु स्थिर चित्त न होय, जेम भमावे तेम भमे, विवेकशून्य हृदय होय.

गुरु करता पोताने मोटो माननार, अने पोतानो कको खरो माननार होय

७५ समजे नहीं अने गुरु उर द्वेष करे

अविनयी होय

त्यादि लक्षणयुक्त जीवो होय ते उपदेश देवाने योग्य नहीं, गुरुसगतिथी तेवा जीवोने पण लाभ मळे, एकात नहीं, तानी गुरु महाराज अवसरना जाणछे, माटे स्वपर लाभार्थे करेछे, योग्य लागे तो उपदेश आपे अने अयोग्य लागे तो आपे नहीं, मौन धारण करे, ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य वीर्यादि ध्यानथी प्रवर्ते, सद्गुरु महागजा सदा स्वतंत्र आत्मोपयो- छे, धर्मध्यान अने शुद्धध्यानना योगे आत्मा परमानंद रमण करी तत्पद प्राप्त करे एम गुरुनी प्रवृत्तिछे, एवा ज्ञासह वर्तवुः

“ दुहा ”

त्यागी ज्ञानथी, उपादेयशुं हेत,
करता कर्मने, शाश्वत पद अट लेत. ३२

ने भावकर्म, तेनो करी परिहार,
भंगे झीलतां, लहीए भवजल पार. ३३

पारीपणुं, रोकी सद्गुरु सेव;
मनहुं करी, पामो शाश्वत मेव. ३४

१०५० कर्ता कर्मनो नाश,
भी उपमा, तेना थइए दास. ३५

- મૂઝ વિના નહિ વૃક્ષ જગ, ગુરુગમ વળ મ્યાં જ્ઞાન,
વાચો પોથી પત્ર પળ, નહીં ટલે અજ્ઞાન. ૩૬
- મળવુ ગળવુ માનથી, જન મન રજન કાજ,
આત્મલક્ષ્યના ધ્યાન વિળ, લહે ન શિવ સામ્રાજ્ય ૩૭
- ક્રિયા કાંઠ કપટે કરી, કરતો રજે લોક,
શુષ્કજ્ઞાન પળ એકલુ, જાણો મવિજન ફોક ૩૮
- લાભાલાભે સુખ દુઃખ, શત્રુ મિત્ર સમ ભાવ,
ઉદાસીનતા ચિત્તમાં, મવસાગરમા નાવ ૩૯
- નિદો નિદક નેહથી, પૂજો પૂજક કોઈ,
ધૂતો કહેશે ઢોંગીએ, સમભાવે સવ જોઈ ૪૦
- અંતઃસૃષ્ટિગુણતણી, આતમમાહી અનુપ,
વાંઠા વઢુ વોલે સુણી, મનમા રાઘી ડુપ ૪૧

ભાવાર્થ—જ્ઞાનથી ત્યાજ્ય વસ્તુને ત્યાગી આદરવા યોગ્ય વસ્તુ સ્વરૂપજ્ઞાનાવાર આત્મા પ્રતિ પ્રીતિ અતરાત્માયોગે ઉત્પન્ન થઈ છે એવા મુનિવરો આત્માની સાથે એકતાની પ્રીતિ કરતા હતા કર્મનો નાશ કરી શાંતિ સિદ્ધિ સૌધમાં પ્રવેશે છે, હે આત્મા જેના યોગે તારી અશુદ્ધ પરિણતિ થઈ છે, એવું દ્રવ્યકર્મ અને ભાગ્યકર્મને સ્વતઃ શુદ્ધપરિણતિથી અસરચાતપ્રદેશથી દૂરકર, સમતાઈની સાથે ધ્યાન રૂપ સરોવરમા ક્રીડા કરતા તુ મવપાયોધિ સહેજે ઉતરી મુક્તિનગર પ્રાપ્ત કરીશ, એમ મુનિરાજ ધ્યાનમા ભાવે, અષ્ટકર્મનો આત્માની સાથે જે વધ તેને દ્રવ્યકર્મ કહે છે, અને રાગ દ્વેષની પરિણતિને ભાગ્યકર્મ કહે છે, આત્મસ્વરૂપમાર્શમળતા કરવાથી દ્રવ્ય

कर्म अने भावकर्मनो नाश धायछे.

हे शिष्य तु परमात्मपदनी अभिलाषा राखतो होय तो स्व-
च्छंदताचारीयपणु टाळी गुरुना आधीन मन करी सद्गुरुनु सेवन
कर के जेथी शाश्वतपद पामीश, कर्मरोगनो नाश करणार्थम् गुरु
धन्वतरी वैद्य समान छे, तेमना दास थइएतो कर्मनो नाश थाय,
वैद्य विना दवाओ पोताने फायदाकारक थती नथी, तेम गुरुनी
आज्ञा मीति विना गमे तेटला सद्गतो धारण करीए तो पण यथा-
योग्य आत्महित थतु नथी

मूल विन वृक्ष क्या ? अने गुरुगम वण आत्मज्ञान क्या ?
श्रावक वर्ग अविद्या तथा अविनयना योगे स्वयगुरु वनी ज्ञानी
गुरुनी अपेक्षा राखा विना पोथी पुस्तक वाचे पण ते ज्ञान सत्य-
ज्ञान तरीके थशे नहीं, पोतानी भेले वाचेला ज्ञानथी वैराग्यादि
गुणो जोइएतेवा प्राप्त थशे थहीं अने शकादि दोषोनु निराकरण
थशे नहीं मुनिवर्गन पण गुरुगमद्वारा विनयभक्ति बहु मानथी
ज्ञान ग्रहणु योग्य छे, अने तदर्थम् योगवहनादिनु शास्त्रमा अनत
ज्ञानी वीतराग भदते भव्यात्माओना हितार्थे प्ररूपण कर्यु छे.

मानथी पूजावाना अर्थे जनमन रजनार्थम् विद्याभ्यास करवो,
शास्त्र वाचवा इत्यादि सर्व मोक्षहेतुभूत कार्य नथी, आत्माना
हितने माटे भणवु, गणवु, वाचवु, इत्यादि शुद्ध परिणाम थयो नथी
त्या सुधी शिव साम्राज्य पामी शकातु नथी बाह्याडवरी क्रिया-
काडना कपटथी देशोदेश विचरतो छतो मनुष्योने रजे ते पण
आत्मलक्ष्यता उपयोग विना व्यर्थ छे तेमज क्रियाने नहीं मान-
नार, प्रतादिनो खप नहीं करनार जेने सत्यज्ञान थयु नथी एवा
वारूपडुताधीज पडित पद धारण करनार शुष्कज्ञानीनु एकलु ज्ञान
पण आत्महित मति थतु नथी.

लाभ, अलाभ, सुख, दुःख, शत्रु, मित्र, जीवितव्य, मरण आदि प्राप्त यतां जेनु समचित्त छे अने सांसारिक पदार्थो मति उदासीनता जेना हृदयमां वर्तेउे एवा सद्गुरुमुनिवर समारूप समुद्रमां नाव समानछे

निंदक सुशीयी (बेलाशक) एवा मुनिवरनी निंदा करो, अने पूजक भावपी भले पूजो, धूर्तो भले ढोंगी फदे, पग एवा महात्मा सर्वने समभावे निरखे छे बीजाना भला भुटा फदे तेमां पोताने थु ?

ज्ञानिगुरुमहाराजा आत्माना गुगउष्टि अतर्दष्टि योगे नीहाळी ममूदित थायउे, आत्माना असग्यातमदेशोछे, एकेक मदेशे अनत ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्यादि गुणो सदा शाश्वत भावे रखाछे, वळी आत्मा पोताना म्बरूपे रुपीछे, पुद्गलनी अपेक्षाए अरूपीछे, ज्ञानरूप उपयोगनी अपेक्षाए साकारछे, दर्शनरूप उपयोगनी अपेक्षाए निराकारछे, वळी शाश्वत आत्मामा उत्पादव्यय अने ध्रुव समये समये वर्तेउे, वळी आत्मामां स्थित अगुरुलघु पद्गुणहानि वृद्धि करेछे, ए आत्मा पुद्गल द्रव्य साथे मिलेउे तोषण ते थकी न्यारीछे, अनत ऋद्धिनो भोक्ता मारा आत्मा विना परद्रव्यनी साथे मारे फइ सबध नथी, मारो आत्मा कर्म अवरायोछे, पण ते गुणो मारा नष्ट थया नथी, मारा आत्माना गुणोने उपमा आपवी व्यर्थउे, अहो हूं आत्मा अखडलु, सर्व पदार्थनो हु समये समये ज्ञाता लु, प्रग भुवनमा एवो फोइ पदार्थ नथी के मारायी अजाण्यो होय, हु प्रकाशकलु, अन्य द्रव्य प्रकाशपछे, ज्ञाता अज्ञाता ए हु जाणुलु, पण तेथी हु न्यारो लु, मारु स्वरूप वाच्या-वाच्य बैखरी भाषायी छे, मारा अनता गुणोउे तो हवे मारे परभावमां रमणता केम करवी ? एम विचारी आत्माना गुणो तरफ

पोतानी दृष्टि दीधीछे, जेणे एवा मुनिश्वरनु शरण याओ. एवा मुनिवरो आत्मध्यान-ध्याता- आपस्वभावमा विचरेछे, बकवादी-ओना धर्तीगो साभळी मौन धारण करी सद्गुरुओ विचरे छे, कुगुरुरूप विपधरोनी कुशेशनारूप विपज्वालायी अज्ञान सर्व मनुष्यो प्रायः मुझाइ गयाछे, कोइ विरला आसन्न कालमा सिद्धिपद पा-मनारा महात्मओ वा तेमना अनुयायी शिष्यो सम्यग्मार्गे गमन करेछे

“ दुहा. ”

नाटकियानी पेठ ज्यां, धर्मतणो उपदेश;

अंतर्दृष्टि ज्यां नहीं, तेनो मिथ्या वेप. ४२

अहो दुःपम कलिकालमां, विरला सुभगुरु जोय,

वाकी फुट्यो राफडो, सर्पतणो अवलोय; ४३

द्वेष गच्छ ममता ग्रही, वळी कदाग्रह चित्त;

मतमतांतरमां पड्या, दुर्गतिनारीमित्त. ४४

भावार्थ—अतर्दृष्टिना उपयोग विना नाटकीयानी पेठे ज्यां धर्मनो उपदेश साधुनाम घरावी आपेछे तेनो वेप मिथ्याछे.

पचविष ज्या भेगा मळ्याछे एवा आ कलिकालमा विरला शुद्ध मुनियो होयछे, वाकी लौकिक अने लोकोचर कुगुरुओनो जाणे राफडो फुट्यो होय अने सर्पो फाटी नीकळे तेनी पेठे फाटी नीकळ्याछे.

वेपनी ममता, गच्छनी ममता वळी कोइ प्रकारनो मनमा कदाग्रह राखी जे साधु राग द्वेषना उदये मतमतांतरमा रक्त थया छता, शुद्ध प्ररूपणा भूळी पोतानी पुष्टिने माटे मोहाध वनी आत्मस्वरूपनुं भान भूली परभावमा राचेछे, माचेछे तेवा कुगुरुओ दुर्गति नारीना मित्र जाणवा,

“ દુહા ”

જલધિ ભરતી ઓટમાંહી, મત્સ્યો આકુલ થાય,
તીરે આવે પ્રાણ નાશ, ગચ્છતળો એ ન્યાય. ૪૫

શરીરપર મમતા નહીં, કરે શુ તેને દેહ,
ગચ્છ વસ્યો વ્યવહારથી, અતર્ગુણ ગણ ગેહ. ૪૬

ભાવાર્થ—સમુદ્રમાં જ્યારે ભરતી ઓટ આવેછે, ત્યારે જલપ્રવાહના જોરથી મત્સ્યો આકુલ વ્યાકુલ થાયછે, તેમાથી કોઈ કટાક્ષીને ફાટે આવેછે, ભરતી ઉતરી જાતાં જલ વિના તરફડી મરણ પામેછે, વા ધીવરો તેને પકડી લેછે, અને દુઃસ્વભાગી ધાયછે, તેમ ગચ્છ સિંઘાડામા વસતો કોઈ મુનિ, આવી કેવલ આત્મની વાત સાંભળી એકાકી વિચરેછે, તો તે આત્મહિત કરી શકતો નથી, માટે ગચ્છમાર્હીં વસીને આત્મસાધન કરવું, વૈરાગી, ત્યાગી ગીતાર્થ જ્ઞાની પોતાની યોગ્યતાથી આત્મસ્વરૂપના ધ્યાન માટે એકલ વિહારી થાય તેનો એકાત નિપેદ નથી.

જે મુનિવરોને શરીરપરથી આત્મજ્ઞાનના બલબદે મમતાભાવ ઉઠી ગયોછે, તો તે મુનિવરોને શરીર રાગ દ્વેષનું કારણ થતું નથી તો પશ્ચાત્ વ્યવહારથી ગચ્છમાં વસેલા તથા વસતા એવા મુનિયોને ગચ્છ ઉપર કેમ મમતા ધાય અને કેમ ગચ્છ રાગ દ્વેષનું કારણ ધાય ? અલબત્ત થાય નહીં ગચ્છ એટલે સાધુનો સમુદાય, સમૂહ, તેમા જ્ઞાનીને કેમ મોહ ધાય ? અને અજ્ઞાની તો ગચ્છનો સ્વીકાર કરે નહીં, તો પણ શરીરપર મમતા ધારણ કરે જ્ઞાનના અભાવે સવરના કારણો પણ અજ્ઞાનીને આશ્ચર્યપે પરિણમેછે. જેનાથી વંચાપછે, તેનાથી જ્ઞાની હુટેછે, માટે જ્ઞાની ગુર મરારાજા અતર્માથી સસાર સ્વેચ્છકી ન્યારા રહી વર્તેછે, જ્ઞાનિકો ભોગ

सची निर्जराको हेतुहे=ज्ञानी भोग कहे तो पण तेथी निर्जरा था-
यछे. ज्ञानीने कोइना प्रतिषध नथी, राग द्वेषनु जे कारण लागे
तेनाथी दूर रही आत्म-दान करेछे. श्री यशोविजयजी प्रमुख
सुगुरुओ जाणवा.

कपटी मुनिनु लक्षण कहे छे.

“ दुहा. ”

मनभीतरनी ओरने, वर्ते वाहिर ओर;

कहेणी रहेणी सम नहीं, ए पण चऊग चोर. ४७

मनमा कइ अने राहिर आचरण कइ कहेणी प्रमाणे रहेणी
न होय, श्रावनी आजीजी करनार होय, कपटपणाथी वर्ते ते
पण चउटानो चोर जाणवो, कदापि प्रताडि पाळी शकतो होय
नहीं पण प्ररुपणा वीतरागमार्गना अनुसारे करे ते आराधक छे,
पण कपटी तो विराधक छे

“ दुहा ”

योग्य जाणतां खोलता, पेटीःधर्म विशाल;

सेवो साचा दीलथी, सदगुरु महा कृपाल. ॥४८॥

ज्ञानी गुरु महाराजा योग्य जीव जाणीने धर्म रत्ननी पेटी
मनोहर विशाल खोले छे, अने तेना आत्मानु कल्याण करेछे,
भव्योने उपदेश द्वारा मोक्ष मार्ग दर्शावे छे, अपोग्य मनुष्यनी
आगळ मौन धारण करे छे, जे दृष्टिरागी न होय अने विनयी
होय तेनी आगळ योग्यता प्रमाणे अवसरे उपदेश आपेछे, एरु
सरखो उपदेश प्रत्येक मनुष्यने परिणमतो नथी, माटे योग्यनेज
उपदेश देवो, भेषनु जल, सीप, झाड, सर्प आदिना मुखमां-पडयु

પણુ મિત્ર મિત્ર પરિણમે છે તેમ અત્ર પગ દટ્ટાત જાણવું.

કોઈ એમ કહેશે કે-મુનિઓએ સર્વને ઉપદેશ આપવો અને ઉપદેશ આપવા માટે તો સાધુપણુ અગીકાર કર્યું છે, અને ન આપે તો અન્ય કોણ આપે ? તેને પ્રત્યુત્તરમા કહેવાનું કે-જેમ સેનાપતિ લડકરી સિપાઈને તરવાર સ્વલતા મારતા શીખવે છે, પણ જેની યોગ્યતા થઈ નથી તેવા લઘુ ઘાલકને કઈ હાથમાં તરવાર (સ્વદ્ગ) આપતો નથી, ને આપે તો ઘાલકનો નાશ થાય તેમ જ્ઞાની શુદ્ધ યોગ્યતા જેને પ્રાપ્ત થઈ છે તેને ઉપદેશ આપે છે. ઉપદેશમાં પણ પાત્રના આધારે ફેરફાર રહે છે, કેટલાક સ્થાને સસારમાં રાવેલા માચેલા શ્રાવકો વિરતિધર્મના ભાષ્યરૂપે ઉપદેશ આપે છે, પણ તેમનું વૈરાગ્ય દ્વાગ વિના સર્વ અલેખે જાણવું. ગુરુના ઉપદેશથી જે વૈરાગ્ય થાય છે તે અન્યથી થતો નથી. પચમારકમા શ્રી તીર્થકરાદેના અભાવે તથા પચત્રિપના યોગે યોગ્ય જીવો અલ્પ જાણવા માટે હે ભવ્યાત્માઓ મોક્ષની પ્રાપ્તિ માટે નિર્મલ મનથી સદ્ગુરુનું શરણ કરો, અને તે ફરમાવે તેજ શ્રદ્ધાથી અગીકાર કરશો તો પરમપદ પામશો

“ દુઃખા. ”

વને વને નહીં હસ્તિયો, યુગે યુગે નહિ દેવ;
મુઢ મુંઢ નહિ ગુરુપણુ, જાણી સદ્ગુરુ સેવ ૪૯
વિષય મીલ મોગી નહીં, વ્રહ્મચારિ ઇંણવત,
કપટ વૃત્તિ ત્યાગી સદા, નમુ સદ્ગુરુ મહત્. ૫૦

વન વન પ્રતિ હસ્તિયો હોતા નથી, અને મરત પેરવતનો પ્રત્યેક આરકમાં કઈ સીર્ષકરોની ઉત્પત્તિ થતી નથી, તે પ્રમાણે મસ્તક

मुदावी रजोहरण मुहपत्ति झाली लीपेला गृहस्थ जेवामां सर्वमा कइ गुरूपण होतुं नथी, जीव अजीवतु स्वरूप जाणे नहीं अने दुःख-गर्भित वैराग्यथी साधुवेष ग्रहण करी राग द्वेषना फदमा फसाय, हसे, तोफान करे, क्लेश करे ते सर्व कुगुरुओ जाणवा, जे महात्माओ विषयभिक्षाना भोगी नथी, ब्रह्मचारीछे, क्षमादि गुणवतछे, अने कपटवृत्तिनो जेणे त्याग कर्योछे अने जे गाढरीयानी पेठे चालता नथी तेवा सद्गुरुने हु पुनः पुन. नमस्कार करछु, बाकी वेष धरवा मात्रथी शु ? माटे परीक्षा करी आत्मतत्त्वना उपयोगी गुरुनु शरण करवु, एकगुरुनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्तवु, पतिव्रतानी पेठे माथे एक धर्मप्रद गुरु होय, एक गुरुनी भक्ति अद्धाथी शिष्यश्रावक सदगुणधाम वनेछे, अनुभवथी जोता एम जो न वर्त्तीय तो सपूर्ण धर्म पामी शकाय नहीं, कोइ गुरु कइ कहे अने कोइ गुरु कइ कहे, हवे वेमाथी कोनी आज्ञा मानवी, जेवो जोइए तेवो एकथी अधिक गुरुओपर भक्तिभाव, रहे नहीं, घणा पक्का अनुमवीओने आ वाक्य सत्य लागशे, नहीं लागे तेनु भाग्य, बाकी अन्य मुसाधुओ मानवा पूजवा योग्यछे. तेमनी भक्ति करवी अने सदुपदेश साभळवो आ बात गुरुव्रत ग्रहणनी अपेक्षाएजे.

‘ दुहा ’

धर्मरत्न जेथी मुदा, लहीयुं गुरु रसाळ;

शरण शरण तेनुं सदा, अवर म झखो आळ ॥५१॥

भटकी गुरु गुरु वंदीया, शिर पटक्यु सोवारं,

ज्यां त्यां माथु नामियु, लह्यो न.किंचित् सार ॥५२॥

भावार्थ—जेनी पासेथी धर्मरत्न समजी समकित ग्रहण कर्यु, हर्षवडे ते गुरुनुं सदा मन वचन अने कायाए करी शरण अंगी-

कार करुछु, अने भव्यात्माओ करो, अन्य आळ पपाळ शखो नहीं

कुगुरुओमां गुहनी बुद्धि धारण करी चांदा, तेमना चरणे शतवार शिश पटव्यु अने हराया ढोरनी पेटें ज्यां त्यां माधु घाल्यु अने माधु नमाव्यु पण सार कइ पाम्यो नहीं, अने ते प्रमाणे वर्तवापी आत्महित धवानु नथी.

यत्.

अगीयथ्य कुसीलेहिं, सग त्रिविहेण वोसिरे ॥

मुखमग्गसिमे विग्घ, पहमि तेणगे जहा ॥१॥

अगीतार्थ अने कुशीलियानो सग त्रिविधे वोसिराववो, पथमां चोरनी पेटे मोक्ष मार्गमां वित्र करनाराछे.

“ इहा. ”

एम अनंता भव भमी, पाम्यां दु ख अपार,

सद्गुरु स्हेजे ओळरया, तार तार मुज तार ॥५३॥

भावार्थ—एम अनादिकालथी कुगुरुनी सग्तियोगे आत्माना अशुद्ध परिणामे, चतुर्गत्यात्मक ससारमां अनतिवार भ्रमण करी विचित्र शरीर धारण करी ताडन तर्जन, क्षुधा, तृषा, रोग, शोक, वियोगादिथी अनत दुःख लक्षु, हवे भवितव्यतायोगे सद्गुरुने ओळरूया, जीव आनद पामी, गुरु विश्वासथो कहेछे के हे गुरु तु मने तार तार, तार तार ए शब्द पुनः पुन. कथनथी ससार भय साये मुक्ति मार्गनी अति आकासा जणावी, आत्मार्षी ध्यानी समकित दाता धर्मगुरुनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवु

“ परमात्मार्थिं गुरुभक्त शिष्योऽनुं लक्षण कहेछे. ”

“ दुहा. ”

गुरु विनयी भक्ति घणी, श्रद्धा ए मन स्थिर;
शिवपद अर्थी साहसी, मनमां आति गंभीर ॥५४॥

गुरुनो विनय मन वचन अने कायायी करवामा तत्पर होय, यथाशक्ति भावयी अत्यंत भक्ति गुरुनी करनार होय, गुरुक्त तत्त्वने विपे जेनी श्रद्धा स्थिरपणे होय वा गुरुना द्वेषीळा इर्ष्यावाळा तथा तेमना प्रतिपक्षा कुगुरुओ तथा कुभक्तो आहुं अवल्ल समजावे, गुरुना दोषो देखाडे कुशुक्तिथी गुरु महाराजे कहेलां तत्त्वनु खडन करे, वळी एम कहे के-एनामा शो भलीवारछे, एतो कइ जाणतो नथी. कपटीछे, एम पोतानी मरजीमा आवे तेम बोले पण तेथी सुशिष्योनी गुरु उपरनी श्रद्धा जरा मात्र पग कमी थाय नहिं, उलटु सुवर्णने जेम जंम गाळीए तेम तेम दिग्निमित थाय तेम गुरु भक्त शिष्योनी श्रद्धा उलटी वधती जाय, अने गुरुओनी सगतिथी श्रद्धा उठे तो पीतळ समान भक्तो जाणवा, एवा भक्तो ४ चार गतिमा भटक्या, भटकेछे, अने भटकशे, श्रद्धा वे प्रकारनी छे, हळदरना रंग समान अने अन्य मजीठ समान, हळदर समान श्रद्धानो कारण पाम्यायी नाश थायछे, माटे गुरु उपर मजीठना रंग समान श्रद्धा थवी जोइए वळी श्रद्धाना वे भेदछे. १ प्रशस्य श्रद्धा, अने २ अप्रशस्य श्रद्धा ते प्रत्येकना पण वे भेद छे, हळदर रंग समान, मजीठ रंग समान, वळी लौकेक गुरु अने लोकोत्तर गुरुनी श्रद्धा जाणवी

वळी श्रद्धा वे प्रकारनी छे, व्यवहार नय गुरु श्रद्धा,—व्यवहार नययो गुरु अनेक प्रकारनाछे, पापनी विद्या शिखवे ते पाप

દુગ્ધપાનસદૃશ અયોગ્યને તત્ત્વોપદેશછે, યોગ્ય અને અયોગ્યની પરીક્ષા કરવી ગુરુમહારાજના હસ્તમાછે, વિદાલના ઉદરમાં સ્ત્રીર ટકતી નથી તદ્વત્ અયોગ્યના હૃદયેધર્મતત્ત્વ ટકતું નથી અવિનયીને ગુણધર્મતત્ત્વરહસ્ય આપતુ આત્મહિતકર થતુ નથી

સપ્રતિ કાલે ધર્મતત્ત્વનો ઉપદેશ શાક ખાજીપાલાની પેઠે યોગ્ય અયોગ્યની પરીક્ષારહીત દષ્ટિગોચર થાયછે, તેથી વાસ્તુલેશ વા અલ્પફલની માત્રિ થાયછે, સ્વેદુત પણ ભૂમીની પરીક્ષા કરી વાવવા યોગ્ય ધાન્યકાલે ખાવેછે, તો ધર્મરૂપ ધીજ યોગ્યાયોગ્યની પરીક્ષા કર્યા વિના કાલવિના કોઈપણ મનુષ્યના હૃદયમા રોપવુ, તે અનુચિત, ચિંતનીયછે જગત્મા મનાવા પૂજાવાની લાલચે જગત્ના પ્રવાહમાં પડેલા ગુરુનામ ધરાવનારાઓ ગમે તેમ ઉપદેશ આપી ઘોઢા જીવોને ફસાવી પોતાના વશમા કરી લેઈ રાચેછે, માચેછે, તે પોતાનુ તથા અન્યનુ યથાયોગ્ય ભલુ કરી શકતા નથી સદ્ગુરુ સ્વતત્રછે, યોગ્ય હોય તેહને ઉપદેશ આપે, અન્યથા મૌન રહેછે.

કુયુક્તિ કરનારા અને પોતાની પડિતાઈ જણાવનારને સદ્ગુરુ અત્કરણથી ઉપદેશ આપતા નથી, નેમજ ગુરુના વચન ઉપર વિશ્વાસ નથી તેની સાથે ગુરુજી માથાઠૂટ કરતા નથી પથ્થર ઉપર કમલ ઉગે તો અવિશ્વાસીને ગુરુનો ઉપદેશ લાગે. ગુરુના ઉપદેશથી વચ્ચમા પોતાનુ ડહાપણ ચલાવનાર ગુરુભક્ત કહી શકાય નહીં, હાલના કાલમા ગુરુભક્ત યવુ મુશ્કેલછે, કેટલાક પુત્યરં સમાન કુગુરુઓછે, પોતે સસાર સમુદ્રમા વૂઢે અને સ્વભાથિનોને બુઢાઢે, સસાર સમુદ્ર તરવામા કેટલાક પાઢઢા સમાન ગુરુઓછે, અને કેટલાક વહાણ સમાન છે, ઇમજાણી સદ્ગુરુનુ અવલ્લવન કરવુ ઇ પરમાર્થ છે.

“ दुहा ”

समकितदायक सद्गुरु, तेजुं नहि मन भान;
परोपकारी बुद्धि वण, ते मटके अज्ञान. ॥ ६२ ॥

समकित दायक सद्गुरुना उपकारनु जेने भान नथी ते प-
रोपकृतिथी अजाण सम्यक्त्वनो सार फल पापी शके नहीं, उप-
कार बुद्धिनी विरलताए गुरुना विनयना अभावे राखमा थी
होम्भा जेजु थाय ते ससार समुद्रनो पार पापी शके नहीं.

“ दुहा. ”

समकितदायक गुरु अने, दीक्षा गुरुमां भेद;
अतर रवि खजुआ समो, सुशिष्य मनमां वेद. ६३
दीक्षा दायक महामुनि, धर्मगुरु जग जोय,
समजे समजु सानमां, करो न सशय कोय ६४

भावार्थ-सम्यक्त्व दायक धर्मगुरु अने दीक्षा गुरुमा घणो
भेद छे क्या, रवि अने क्या सत्रोत एटरो अतर हे सुशिष्य मनमा
जाण दीक्षा प्रदायक गुरु वाहुलताथी धर्मगुरु होइ शके छे. कारण
के-धर्मप्राप्ति जेनाथी यइ होय ते दीक्षा आपे तो ते होइ शकेछे,
समजु सानमा समजु शसयनु रुड प्रयोजन नथी. धर्मगुरुनो
उपकार कोड पण रीत्ये वळे तेम नथी

“ दुहा ”

एवा गुरुने सेविए, थइए सद्गुण धाम,
गुण धारी शिष्यो लहे, शिवपुरनो विश्राम. ६५

सद्गुणधाम भूत गुरुपदपरुज सेवता अनेक गुणधाम भूत

शिष्यो धाय, अने गुग्गुली शिष्यो शिवपुरतो विश्राम लई शके छे, सद्गुणी यनारने प्रथम गुरुनी आश्रयकताछे, दुष्पथयी सुपथे लावनार गुरुमहाराजछे, जेने गुरु नयी ते पाँते गुरु यई शकतो नयी.

“ दुहा. ”

सहस्र सूर्योदय हुवे, चंद्र उगे शतवार,
दीपक करो हजार पण, अध न जुवे लगार ६६
ज्ञानी सद्गुरु जो मले, अतिशय दे उपदेश,
मूर्खने लागे नहीं, उलट्ये थावे क्लेश. ६७

भावार्थ—सहस्रगमे सूर्यो प्रकाशे, हजारवार चंद्रनो उदय धाय, हजार दीपक सलगायो, पण जे अधपुरुषछे ते जरा मात्र पण देखी शकतो नयी. तेम मूर्खात्मा मोहाध जडपुरुषने ज्ञानी सद्गुरु मळे अने अतिशय उपदेश आपे तोपण मगशीलीया पापागनी पेडे जरा मात्र असर यती नयी उलट्ये मूर्खने क्लेश थायछे, अने सद्गुरुने पण वाक्केश अवशेष फल जाणवु

“ दुहा ”

जडताए जड थई रहे, गुरुमां कुपुरु बुद्धि,
रासभपुच्छ ग्रही इव, करे न आत्म शुद्धि ६८
सद्गुरुनो विश्वास नहि, कुपुरुनो विश्वास,
अज्ञानी पशु आत्मा, सर्व दु खनो वास. ६९

भावार्थ—आत्मस्वरूपनी अज्ञानताए जड जेवो यई जई दृष्टि-रागयी तथा मोहांधपणायी गुरुस्वरूप समग्र्या विना कुलनी मर्यादाए गुरुपशु मानतो अज्ञानी जीव गुरुमां अगुरुपशु मानेछे,

अने अवळी परिणतियोगे कुगुरुपां गुरु बुद्धि धारण करेछे, ते पोतानी कुटेवने गद्दापुच्छ ग्रहनारनी इव भवभ्रमण दु.ख राशि पामतां सद्गुरुनो उपदेश लागता पण पोतानी हठ मुकनो नथी. तेवो अज्ञानी जीव पोताना आत्मानी शुद्धि करी शकतो नथी जेने सद्गुरुनो विश्वास नथी अने कुगुरुना वचननो विश्वासछे, ते अज्ञानी पणु आतमा सर्व दु.खनु पात्र वनेछे, अवळी परिणतियोगे अवळा मार्गे भवितव्यतायोगे गमन करेछे. तेवा जीवने योग्यतानी प्राप्ति विना उपदेश पण क्लेशभूत थायछे, राजा, दीवान, शेठ, लक्षाधिपति होय पण योग्यता विना सद्गुरुनो उपदेश असर करतो नथी.

“ दुहा ”

तर्कशक्ति जेनी घणी, वाणी जस गभीर,
मोक्षाशा मनमां वशी, धर्मकार्यमां धीर. ७०

एवा शिष्यो पामशे, अनेकान्त सुपथ,
गुरुगम ग्रथो वांचीने, थाशे महानिग्रथ. ७१

भावार्थ—जेनी तर्कशक्ति घणी होय, अने वाणी गभीर होय, खप पडे तेदळु पोले, मोक्षाशा जेना मनमा वशी होय. अने धर्म कृत्यमा मेरुवत् अहगरुत्ति होय, गुरुना वचनो वज्रना टारुणानी पेठेज जेम जेना हृदयमा कोतराता होय, एवा सद्गुणी शिष्यो स्याद्वाद अनेकात मार्ग पामशे अने स्वच्छदाचारीपणु तथा अहपणु त्यागीने गुरुगम ग्रथोने वाची धारी श्रावकपणु अगीकार करशे. अथवा शक्ति परिणामयोगे निग्रय अवस्था ग्रहण करशे, योग्यता पोतानी फेटळीछे अने कथा ग्रथो वाचवा, योग्यछे. ते गुरुमहाराज जाणेछे माटे तेमना फरमावेला ग्रथो वाचवा

एवी हिताकांक्षा धारवी.

“ दुहा. ”

सदा महानिग्रथथइ, पाळे पचाचार,

पचमहात्रत पाळता शुद्ध बरे व्यवहार ७२

निश्चय आत्मस्वरूपमा, रमता रहे निशदीन,

गुणपर्याय विचारने, करणामां लयलीन ७३

भारार्थ-द्रव्यથી ધન ધાન્યાં નરવિધ પરિગદ ત્યાગી ભાવથી રાગ દ્વેષનો ત્યાગ કરી નિર્મમત્ત્વપણે વાયુમત્ અમતિપદ્મપણે સદા વિચરે, વ્યવહારથી પચમહાત્રત અને જાનાચાર, તર્જનાચાર, ચારિત્રાચાર, તપ આચાર અને વીર્યાચારને પાલે, આત્મે, નિશ્ચયનયથી પોતાના આત્મસ્વરૂપમા નિશ્ચિન મુનિવર રમે હવે પ્રસંગત. પ્રથમ પદ્મદ્રવ્યનુ સ્વરૂપ પ્રતાપે છે

૧ ધર્માસ્તિકાય દ્રવ્ય-ચત્રણ સહાયો ધમ્મો,=ચાલતાને સદાય આપવાનું. ગુણ ધર્માસ્તિકાયનો છે, તે અઝીવદ્રવ્ય છે, અસ્પી, અચેતન, અક્રિય, ચલનસાદ્યગુણ તેનો જાણવો માઠતુ પાણીમા તરે છે તેનો એ સ્વભાવ છે, પણ પાણી તેને સાદ્યમારક છે ધર્માસ્તિકાયના અસત્યતા પ્રદેશો છે, પ્રત્યેક પ્રદેશમાં ઉત્તાનવ્યય થયા કરે છે, દ્રવ્ય સ્વરૂપથી ધ્રુવપણુ અસત્યતા પ્રદેશોમા અનાદિ અનતમે ભાગે છે અગુહ લઘુથી પ્રત્યેક પ્રદેશમા પદ્મગુણ હાનિ વૃદ્ધિ યગ કરે છે ધર્માસ્તિકાયદ્રવ્ય અન્યદ્રવ્યમા પરિગમતુ નથી અને અન્ય દ્રવ્યના ગુણોનુ ઘાતન નથી, કેવલજ્ઞાનવદે ધર્માસ્તિકાય દ્રવ્ય દેહી જ્ઞાનય છે અન્ય જીવોને કેરનીના વચનની શ્રદ્ધા ગમ્ય છે, ધર્માસ્તિકાયના કોઈપણ પ્રદેશનો નાશ થતો નથી, એક ઠેકાળેથી અન્ય સ્થાને તેના પ્રદેશો જતા નથી, લોકાકાશમાં વ્યાપીને

रहे, धर्मास्तिकायने कोई उत्पन्न करना नहीं, जलमा थलमा
 ज्वा त्या धर्मास्तिकाय व्यापी रह्ये, तेनामा वर्ण गध
 रस अने स्पर्श नहीं. समये समये अनता जीवोने तथा अनत
 पुद्गलमय परमाणुओने गमनमा साहाय्य आपे. प्रदेशे प्रदेशे अ-
 नता गुण अने अनता पर्याय्ये. पोताना स्वरूपे धर्मास्तिकाय
 अस्तिरूपे. अने परस्वरूपे नास्तिरे प्रदेशे प्रदेशे अनत स्वगुणनी
 अस्तित्ता समये समये परिणमी रही, तेमज धर्मास्तिकायना प्र-
 त्येक प्रदेशे अनत परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, अने परभावनी ना-
 स्तिता परिणमीछे, तेमज प्रदेशे प्रदेशे अनत पर्यायनी. समये समये
 अस्तित्ता जाणवी तेमज धर्मास्तिकायना असख्यात प्रदेशमासमये
 समये परद्रव्यना अनत पर्यायनी नास्तित्ता परिणमी रही, जे
 समयमा अनत निजगुणनी अस्तित्ता तेज समयमा अनत परगुणनी
 नास्तित्ता जाणवी. जो धर्मास्तिकायमा परद्रव्य, गुणपर्यायनी ना-
 स्तिता न रहे तो अन्य द्रव्यरूपे धर्मास्तिकाय परिणमे अने द्रव्य
 द्रव्यनो भेद रही शक्ये नहीं, माटे स्वगुण स्वद्रव्यनी अस्तित्ताना
 समयमा परद्रव्यनी नास्तित्ता मानवाची प्रत्येक द्रव्य पोताना
 स्वरूपे परिणमे, अस्तित्पणु धर्मास्तिकायमा रह्ये, ते पण अवक्त-
 व्यछे, अने अनत नास्तित्पणु रह्ये, ते पण अवक्तव्यछे, एरु गव्दनो
 उचार करता असख्याता समय व्यतीत थायछे, तो एरु समयमा
 स्थित अस्तित्ता अने नास्तित्तानु कथन अशक्यछे, ज्ञानवडे जाणी
 वैखरी भाषाची तेनु स्वरूप कही शक्यातु नहीं, थोडु कही शक्या
 छे, जेटु जाणवामा आवे तेटु वैखरी वाणीची कही शक्यातु
 ज्ये माटे वक्तव्यावक्तव्यपणु तेमा जाणवु. इत्यादि विचारतां सप्त
 पणु थायछे, वळी धर्मास्तिकाय छे ते द्रव्यपणे नित्यछे,

अने उत्पाद, व्ययनी अपेक्षाए अनित्य छे, द्रव्यार्थिक नयनी अपेक्षाए धर्मास्तिकाय शाश्वतछे, अने पर्यायास्तिकनयनी अपेक्षाए धर्मास्तिकाय अशाश्वतछे, धर्मास्तिकाय ज्ञेयछे, पण तेनामा ज्ञातापणु नयी, जड छे माटे

२ अधर्मास्तिकाय-स्थिर रहेवामा साहाय्यदायकगुण अधर्मास्तिकायनो छे, मनुष्य मार्गमा चालतां धाके छे, त्वारे झाड जेम तेन बेसवामां सहाय्यकारक छ, तेम अधर्मास्तिकार्यनी साहाय्ययी जीव पुद्गल स्थिर थाय छे, ए द्रव्यना चारगुण छे, अमूर्त, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श थकी रहित, जीवत्वथी रहीत माटे अचेतन, विभाविक क्रिया रहित माटे अक्रिय, निश्चयनयनी अपेक्षाएतो सक्रिय छे, स्थिर पदार्थने साहाय्य करे छे, माटे स्थिर साहाय्यगुण अधर्मास्तिकाय असख्यात प्रदेशमयी छे, लोकाकाशमा व्यापीने रह्युछे, अनादि कालथी छे, माटे तेनो उत्पन्न कर्ता कोइ नरी, कोइ पण काले तेनो अंत नयी, माटे अनंत छे, अधर्मास्तिकायना प्रत्येक प्रदेशमा अगुरु लघुथी समये समये पद्गुण हानि वृद्धि परिणमी रही छे, अधर्मास्तिकाय चर्म चक्षुथी देखी सकातु नयी. अधर्मास्तिकायना चार गुण छे, रूप रहित माटे अमूर्त, अचेतन एटले जीव रहीत, अक्रिय एटले विभाविक क्रिया रहीत, अने स्थिर सहाय्यगुण ए चारगुण अनादि अनन्तमे भागे अधर्मास्तिकायमाछे, समये समये अनंत जीवने तथा पुद्गलोने स्थिति सहाय्य आपे छे, एकेक प्रदेश अनन्त गुण पर्याय रता छे अधर्मास्तिकायद्रव्यमां सगुण पर्यायनी अस्तित्ताछे, परगुण पर्यायनी नास्तित्ता छे, द्रव्यत्वनी अपेक्षाए दरेक अधर्मास्तिकायना प्रदेशो एक सत्त्वा छे, कारण के दरेके प्रदेशमां द्रव्यत्वपणु रह्यु छे, किंतु अगुरुलघुथी यतीपद्गुणहानिवृद्धि प्रदेश प्रदेश माति भिन्न भिन्न परिणमी

रही छे. ते अधर्मास्तिकायना प्रदेशमा अनतगुणनी हानी छे, त्या अनत गुणहानी मटीने असरयात गुणहानि थाय छे, संरूपात गुणहानि होयछे, त्या अनतगुण हानि थायछे, एम असरयाता प्रदेशोमा पङ्गुण हानिवृद्धि समये समये भिन्न भिन्न परिणमवाची सर्व प्रदेशो अपेक्षाए एक सरखा नथी, एक स्थानथी बीजे ठे-काणे प्रदेशो गमन करता नथी माटे प्रदेशो अचल छे, वळी प्रदेशना कडका थता नथी, माटे अखडछे. अधर्मास्तिकायमा जाणवानो गुग नथी माटे जडउ, पोताना स्वरूपे अधर्मास्तिकायमा अनंत शक्तिछे, तेनी केवळी भगवान्ना वचनथी श्रद्धा करवी. आ द्रव्य लोकाकाशमा व्य.पक छता कोइ द्रव्यना गुणनु घातक नथी. अने ते अन्य द्रव्यमा परिणमतु नथी, पोताना स्वभावनो त्याग करतु नथी. अधर्मास्तिकायने पुण्य पाप लागी शकतु नथी, परद्रव्यनी साथे परिणम स्वभाववाळा जीवद्रव्यने पुण्य पाप लागी शकेछे. अधर्मास्तिकाय द्रव्य जाणी शकायछे, माटे अधर्मास्तिकाय प्रकाशयछे, अने ज्ञान प्रकाशक छे, अधर्मास्तिकाय ज्ञेयछे, अने जीव ज्ञाताछे, द्रव्यार्थिक नयापेक्षया अधर्मास्तिकाय शाश्वत छे पर्यायार्थिक नयापेक्षया अधर्मास्तिकाय अशाश्वत छे, अन्य द्रव्य साथे परिणमतु नथी माटे अधर्मास्तिकाय अपरिणाभीछे, अधर्मास्तिकाय द्रव्यरूपे नित्य छे. अने पर्यायरूपे अनित्य छे, अनत अस्तित्व धर्मथी युक्त अधर्मास्तिकायछे. आ द्रव्य जाणवा योग्यछे, अने ते आदरवा योग्य नथी फक्त ते द्रव्यनु स्वरूप ज्ञानदृष्टिथी जणायछे, आत्मानी साथे तेने कइ सवध नथी. एकेक प्रदेशे अनत धर्म अनतगुण अनतपर्यायनी अस्तित्ता छे, अने अधर्मास्तिकायना एकेक प्रदेशमा परद्रव्यना अनतधर्म अनतगुण अने अनतपर्यायनी नास्तित्ता व्यापी रहीछे, अन्येक प्रदेशमा रहेला धर्मनी अस्तित्ता

તથા પરધર્મની નાસ્તિતાની અપેક્ષા સમ્ભવી ઉત્પન્ન થાયછે, જેમ જેમ સમ્યક્ જ્ઞાન થતુ જાયછે, તેમ તેમ ઉપયોગની એકાગ્રતાએ વિ-
શેષ જ્ઞાન થતુ જાયછે.

૩ આકાશાસ્તિકાય-અધર્માસ્તિકાયાદેકને અગાહના આ પવાનો સ્વભાવ આકાશનોછે, આકાશના બે ભેદછે, ૧ લોકાકાશ અને ૨ અલોકાકાશ, જેમાં છ દ્રવ્યની સ્થિતિ છે, તે લોકાકાશ જાણતુ, જેમા આકાશ સિવાય અન્ય પદાર્થની સ્થિતિ નથી તેને અલોકાકાશ કહેછે તેના ચાર ગુણ છે, અરૂપી દૃઢે રૂપરહીત, આકાશનુ કાલુ, પીલુ, ધોલુ, નીલુ, શ્વેતઆદિ રૂપ નથી
પ્રશ્ન-આકાશનુ ચતુષી જોતા કાલુ રૂપ દેખાયછે, અને તમે કેમ ના કહોછો ?

ઉત્તર-આકાશ સામુ દેખતા જે કાલીમા દેખાય છે તે કઈ આ-
કાશની કાલીમા નથી કિંતુ પુદ્ગલદ્રવ્યની કાલીમાછે, માટે આકાશનુ રૂપ નથી

પ્રશ્ન-નિર્મળ જલથી પરિપૂર્ણ સ્થિર સરોવરમા આકાશનુ પ્રતિબિંબ પડેછે, દેસો, સરોવર માટે આકાશનુ રૂપ માનતુ જોઈએ

ઉત્તર-વિશેષ સૂક્ષ્મઅદ્વિદ્વારા પરીચા કરતાં અવવોધાજે કે આકાશનુ પ્રતિબિંબ સરોવરમા પડતુ નથી, અને સરોવરમાં જેનુ પ્રતિબિંબ પડેછે તે પુદ્ગલદ્રવ્યછે, તેમા જોતા માલુમ પડેછે કે-વાદળા વિગેરેનુ પ્રતિબિંબ સરોવરમા દેખાયછે, સાકારનુ પ્રતિબિંબ પડેછે, નિગકારનુ પ્રતિબિંબ પડતુ નથી, ઠ દ્રવ્યમા એક પુદ્ગલ દ્રવ્ય સાકારછે, વાકીના પાંચ દ્રવ્ય નિરાકારછે, સાકારનુ સાકારને વિષેજ પ્રતિબિંબ પડેછે, આકાશ નિરાકારછે માટે તેનુ પ્રતિબિંબ પડી શકતુ નથી.

प्रश्न-आत्माने विषे अन्य द्रव्य भासेछे, त्यारे आत्मामा अन्य द्रव्यनु प्रतिविंब पड्या विना केम भासे ?

उत्तर-दर्पणमां मुखनुं प्रतिविंब जेम भासेछे, तेम आत्मांमां अन्य पदार्थोनां प्रतिविंब पडतां नयी, ज्ञान गुण पोतानी शक्तियीं सर्व पदार्थोने जाणेछे, तेयीं सर्व पदार्थोनां प्रतिविंब आत्मा-मा पडतां नयी. ए उपरयीं सिद्ध थायछे के-आकाश अरूपी छे, अचेतन एटले जीवरहित, विभाविक क्रियारहीत आकाश जाणुं. फेटलाक मतवादी एम मानेछे के-आकाशयीं जळनी उत्पत्ति थइ पण ते मतव्य नयी. कारण के-आकाश निराकार अक्रियछे अने तेनायीं कोइ पण पदार्थनी उत्पत्ति थती नयी, जळादिक साकारछे, अने आकाश निराकारछे, माटे निराकारयीं साकार वस्तुनी उत्पत्ति थइ शके नहीं, वळी आकाश अनादि कालनु छे, अने कदी तेनो अत आववानो नयी माटे अनत छे, माटे आकाशनो वनाउनार कोइ नयी, वळी आकाशनो उत्पन्न करनार कोइ होवो जोइए, एम कोइ कहे तो विकल्प के-आकाशरूप कार्यनु उपादान कारण कोण ? अने निमित्त कारण कोण ? प्रथम पक्ष-आकाशनुं उपादान कारण इश्वर जो कहेसो तो ते सभवतो नयी, कारण के इश्वर ज्ञानवान् छे, अने आकाश जडछे, इश्वरनो ज्ञान गुण आकाशरूप कार्यमां आववो जोइए, पण तेम नयी माटे इश्वर आकाशनु उपादान कारण कहेवाय नहीं, अलवत आकाशनु उपादान कारण कोइ नयी. जेने उपादान कारण नयी तेने निमित्त कारण पण नयी. इश्वर आकाशनुं निमित्त कारण नयी. आकाश अनादि कालयीं स्वयसिद्ध छे, आकाशमां अवगादना गुणछे, तेयीं अन्य द्रव्योने रहेवा माटे

અવકાશ આપણે. આકાશના એકેક પ્રદેશે અનતા ધર્મ, અનતા પર્યાય રહ્યા છે આકાશ દ્રવ્યના પ્રત્યેક પ્રદેશો દ્રવ્યત્વ પળાથી એક સરસાણે, અને પ્રત્યેક પ્રદેશમાં અગુરુ છદ્મુથી પદ્મગુણ જ્ઞાનિ વૃદ્ધિ સમયે સમયે થઈ રહીએ તેની અપેક્ષા એક સરસા નથી આકાશમાં સ્વદ્રવ્ય સ્વસેત્ર, સ્વકાલ, અને સ્વભાવની અપેક્ષા અસ્તિત્વ પળું છે અને પરદ્રવ્ય, પરસેત્ર, પરકાલ અને પરભાવની અપેક્ષા નાસ્તિત્વ પળું છે આકાશમાં પરદ્રવ્યની જે નાસ્તિતા તે પળ અસ્તિત્વ પળું છે. પરદ્રવ્યની નાસ્તિતા અસ્તિત્વ પળું આકાશદ્રવ્યમાં ન રહે તો અન્યદ્રવ્યની અસ્તિતાનો નાશ થાય અને અન્યદ્રવ્ય કહેવાય નહીં, જે સમયમાં સ્વદ્રવ્યાદિકની અસ્તિતા છે તેજ સમયમાં પરદ્રવ્યાદિકની નાસ્તિતા છે, અસ્તિતા અને નાસ્તિતા વૈત્તરી વાળીથી વહી શકાય સર્વધા માટે અવક્તવ્ય છે. ઇત્યાદિ વિચારતાં સમ્ભવગી ઉત્પન્ન થાય છે. આકાશમાં જાણવાનો સ્વભાવ નથી. માટે જડ છે. વહી તેના પ્રદેશના કઢકા યતા નથી માટે અસ્તિત્વ છે. જ્ઞાનગુણે જળાય છે માટે જ્ઞેય છે. લોકાલોક વ્યાપી આકાશદ્રવ્ય છે. જલમાં ધલમાં જ્યાં ત્યાં અહીં-પળું આકાશદ્રવ્ય વ્યાપીને રહું છે, આત્મગુણોનું ઘાતક આકાશદ્રવ્ય નથી. અને તે અન્ય દ્રવ્યમાં સયોગપળું પરિણમતું નથી. અન્ય દ્રવ્યો તેનામાં રહે છે. માટે અન્ય દ્રવ્ય આધેય છે. આકાશ દ્રવ્ય આધાર છે. આકાશદ્રવ્યના સ્કંધ, દેશ, પ્રદેશ, કેવલજ્ઞાનથી જાણી શકાય છે, આત્માના એક પ્રદેશમાં જ્ઞાનની એવી શક્તિ છે કે-આકાશદ્રવ્યના અનતા ગુણ-અનતા પર્યાય, અનત ધર્મ એક સમયમાં જાણી શકે છે.

૪ પુદ્ગલાસ્તિકાય-વર્ણ, ગંધ, રસ અને સ્પર્શ થકી યુક્ત પુ-

द्विगलद्रव्यछे, तेना चारगुणछे मूर्त्त अचेतन जीवपणायकी रहीत. सक्रिय एटले मळवा विखरवारूप क्रिया करेछे, पुद्गलपरमाणु अनतछे. परमाणु बाळयो उळे नहीं, भेद्यो भेदाय नहीं, परमाणु दर्शन चक्षु अगोचर जाणवु. द्विपरमाणुं सयोगी स्कंधने द्विप्रदेशी स्कंध कहेछे. अनंत परमाणु सयोगी स्कंध दृष्टिगोचर थायछे, ते व्यवहार परमाणु कहेवायछे. निश्चयनये तो स्कंधरूपायछे एरु परमाणुमा एक वर्ण एक गत्र एक रस अने वे स्पर्श रहाछे, परमाणुपी वनेळा केटलाक स्कंधो चक्षुयी देखाय पण हाथमा पकडाय नहीं, केटलाक स्कंधोनो स्पर्श ग्रहाय किंतु चक्षुयी देखाय नहीं जेम वायु. केटलाकनो गत्रग्रहाय पण चक्षुग्राह्य थइ शकता नथी जेम कस्तुरीना पुद्गल स्कंधो विगेरे. एम विचित्र स्वभावयुक्त पुद्गलस्कंधो थायछे. अने विचित्र पदार्थ वनेछे प-
श्चात् विखरी जायछे. यावन्त पदार्थो चर्मचक्षुयी ग्राह्ये ते सर्व पुद्गल छे केटलाक पुद्गल स्कंधो चर्मचक्षुयी पण अग्राह्य छे, अधकार तथा प्रकाश पण पुद्गल द्रव्यछे. कर्म पण पुद्गल द्रव्यछे, पचथा औदारिकादि शरीर पण पुद्गल द्रव्यछे, बादर पदार्थना ज्ञानथी सूक्ष्म पदार्थ स्वरूप अनुमाने जणायछे, पत्थर मृत्तिका आदि सर्व पुद्गल द्रव्य जाणवा. एकेंद्रियथी यावत् पचिद्रि जीवोए पुद्गल स्कंधोने शरीरपणे ग्रही स्व-
सत्तामा लीयाछे, ते सर्वपुद्गलद्रव्यछे, पुद्गलद्रव्य जीवद्रव्यना गुणोने आच्छादन करेछे पुद्गलद्रव्यथी छता जीवद्रव्यने वाधा करेछे.

प्रश्न-जीवनी अनंति शक्ति छे, तेने पुद्गल द्रव्य शु करी शके ?

उत्तर-अधुना कर्मधारक जीवोनी अनति शक्ति तिरोभावे सत्तामा वर्त्ते छे, किंतु आविर्भावे शक्ति प्रगट थइ नथी अनादि का-

છથી આત્માને કર્મ લાગ્યું છે, તેથી અનાદિકાલથી આત્માની શક્તિ તિરોભાવે વર્તે છે. જો આધિર્ભાવરૂપે શક્તિ યદ્ હોય તો કર્મનું કદ જોઈ શકાય નથી, માટે કર્મના યોગે જીવની શક્તિ અવરાઈ છે, જેમ સૂર્યને ઘાટલાં આચ્છાદન કરે છે તો સૂર્યના પ્રકાશનું આચ્છાદન થાય છે, પ્રકાશ ઠંડકાઈ જાય છે, કિંતુ યદા ઘાટલાં વિલરાઈ જાય છે ત્યારે પ્રકાશ સ્વચ્છ પડે છે. એમ આત્મા અને કર્મ વિષે જાણવું આત્મા સૂર્ય સમાન છે, અને કર્મ ઘાટલા સમાન છે, દૃષ્ટાંત એક દેશી જાણવું.

મશ્ન-અરૂપી આત્માના ગુણોનો ઉપઘાતરૂપી કર્મથી શી રીતે થઈ શકે? ઉત્તર-બ્રાહ્મી ઔપધિરૂપી, અરૂપી સુદ્ધિ દૃદ્ધિમા ઉત્તેનક છે, મદિરા રૂપી છતાં જ્ઞાનીના અરૂપી જ્ઞાનનું આચ્છાદન કરી પ્રથિલ બનાવે છે, તથા રીત્યા આત્માના અસર્યાત પ્રદેશે લાગેલાં જ્ઞાના ઘરણીયાદિક કર્મરૂપી અરૂપી આત્મગુણોની આધિર્ભાવતાનું આચ્છાદન કરે છે.

વિષયાંતરથી નિવૃત્ત થઈ પુદ્ગલ દ્રવ્યનું સ્વરૂપ કયતાં અન્ય મશ્ન કરે છે

મશ્ન-પૃથ્વી, પાણી, વાયુ વિગેરેની ઉત્પન્ન કર્તા હિશ્વર છે, અને તેને તેને કેમ અય સ્વરૂપે કયો છો.

ઉત્તર-પૃથ્વી, પાણી, વાયુ વિગેરેનો કર્તા હિશ્વર નથી અનાદિકાલથી તે વસ્તુઓ છે હિશ્વર અરૂપી નિરજન છે તેનાથી રૂપી પૃથ્વી આદિ જગત્ વર્તી શકતું નથી, સર્વ દ્રવ્ય પોતપોતાના સ્વભાવે વર્તે છે પુદ્ગલ દ્રવ્યમા જાણવાનો સ્વભાવ નથી માટે જદ છે, પ્રત્યેક પરમાણુના ઉદરાત, ક્ષય, અને ધ્રુવવળુ છે. વર્ણ, ગંધ, રસ અને સ્પર્શની પરાવર્તના પ્રત્યેક પરમાણુમાં થાય છે પુદ્ગલ દ્રવ્યમા સ્વગુણ, સ્વર્મ, સ્વપર્યાયની અસ્તિ-

ताछे. परद्रव्य, परधर्म, परपर्यायिनी नास्तित्ता पुद्गल द्रव्यमां छे जे समयमा अस्तित्ताछे, तेज समयमा नास्तित्ताछे अस्तित्ता अने नास्तित्तानुं स्वरूप वक्तव्या वक्तव्य रूपेछे पुद्गल द्रव्य चतुर्दश राजलोकमा व्यापीने रह्युंछे. पुद्गल परमाणुआ अनताछे पुद्गल द्रव्यने आ जीवे शरीर, आहार, इन्द्रियादिपणे अनतिवार ग्रहण कर्युं अने मूक्युं पण पुद्गल द्रव्य कोइ काले आत्मानुधयुनथी अने धवानु नथी एतु विस्तारथी स्वरूप गुरुमुखथी धारयु.

५ काल-कालना त्रण भेद छे, अतीत काल, अनागत काल अने वर्तमान काल, कालनो समय अति सूक्ष्म छे, सर्व द्रव्य उपर कालनी वर्तना वर्ती रहीछे, काल द्रव्य आत्मगुणोनुं घातक नथी.

६ जीवद्रव्यास्तिकाय-जीव द्रव्य अरूपीछे, शरीरधारी जीव व्यवहारनयथी रपी कहेवाय छे. जीव चेतन छे, पोतानुं स्वरूप निश्चयनयथी अक्रिय छे, अने बली निश्चयनयथी पोताना धर्मनी क्रिया जीव करेछे, माटे जीव सक्रिय छे, व्यवहारनयथी जीवकर्मनी साथे भळ्यो छतो परद्रव्ययोगे गमनादिकक्रिया करेछे माटे सक्रिय छे. जीवद्रव्य अनत छे. जीवना वे भेद छे. एक स-सारी अने सिद्धना जीवो संसारी जीव पण अनतछे, अने सिद्धना जीवो पण अनत छे, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, उपयोग ए जीवनुं लक्षणछे जीवमा स्वरूपीय द्रव्य, क्षेत्र कालादिकनी अस्तित्ता छे, परद्रव्यना द्रव्य क्षेत्र काल भावनी जीव द्रव्य मा नास्तित्ताछे, स्वद्रव्यादिकनी अनत अस्तित्ता अने परद्रव्यादिकनी अनत नास्तित्ता समये समये जीवद्रव्यमा वर्ते छे. द्रव्यार्थिक नयथी जीव शाश्वतो छे, अने पर्यायार्थिकनयथी जीव अशाश्वतो

છે. જીવમાં સ્વચ્છ, વ્યય અને ધ્રુવપણુ વ્યાપીને રહ્યું છે, જીવના અસરુચાતા પ્રદેશ છે, એકે પ્રદેશે અનતજ્ઞાન, અનતદર્શન, અનત વીર્ય, અનતભોગ, આદિ પ્રકૃતિ રહીએ, પચદ્રવ્યના દ્રવ્ય, ગુણ, પર્યાય ધર્મનુ જાણવાપણુ એક આત્માના પ્રદેશમાં રહ્યું છે તો અસરુચાતા પ્રદેશની તો વાતજ શી ફરેવી? નિશ્ચયને સ્વગુણાદિકનો કર્તા આત્મા જાણવો, વ્યવહારનપથી કર્મનો કર્તા આત્મા જાણવો. વ્યવહારના ઘણા ભેદછે. શુદ્ધ વ્યવહારનય, અશુદ્ધ વ્યવહારનય શુભ વ્યવહાર, અશુભ વ્યવહાર, અનુપચરિત વ્યવહાર, ઉપચરિત વ્યવહારનય, વહી વ્યવહારનયના ષે ભેદછે. ૧ સદ્ભૂત વ્યવહાર, ઘીજો અસદ્ભૂત વ્યવહાર. એક દ્રવ્યાશ્રિત તે સદ્ભૂત વ્યવહાર અને જે પરનિષયનો આશ્રય કરે તે અસદ્ભૂત વ્યવહાર નય જાણવો.

પ્રથમ સદ્ભૂત વ્યવહારના ષે ભેદછે, એક ઉપચરિત સદ્ભૂત વ્યવહાર અને ઘીજો અનુપચરિત સદ્ભૂત વ્યવહારનય. સોપાધિક ગુણ ગુણીનો ભેદ દેસાહે. જેમ જીવસ્યમતિજ્ઞાન અત્રમતિજ્ઞાન સોપાધિક ગુણછે, અને જીવ ગુણી તેનો ભેદ દેસાહ્યો, તે ઉપચરિત પ્રથમ ભેદ જાણવો.

તથા નિરૂપાધિક ગુણ અને ગુણીના ભેદે ઘીજો અનુપચરિત સદ્ભૂત વ્યવહાર જાણવો જેમ જીવસ્ય કેવલજ્ઞાનમ્ જીવનુ કેવલજ્ઞાન, અત્ર કેવલજ્ઞાન નિરૂપાધિક ગુણછે, અને જીવ ગુણી છે, માટે નિરૂપાધિકપણે ગુણ ગુણીના ભેદે ઘીજો ભેદ જાણવો

અસદ્ભૂત વ્યવહારનયના ષે ભેદ છે, એક ઉપચરિત અસદ્ભૂત વ્યવહાર, અને ઘીજો અનુપચરિત અસદ્ભૂત વ્યવહાર જાણવો

પ્રથમ ભેદ અસદ્ભૂતવ્યવહારને પદ્ધત્યે કલ્પિત સવધે હોયછે, જેમ

आ देवदत्तनु धनछे, अत्र देवदत्त अने धनने उपर उपरनो सबध छे, स्वस्वामीभावरूप कल्पित सबधछे, ते माटे देवदत्तनुं धन कहेवु ते उपचारथी जाणवु. तथा देवदत्त अने धन एवे एक द्रव्य नहीं, माटे ते धननो आरोप देवदत्तने विषे असद्भूतछे ए उपचरित असद्भूत व्यवहार जाणवो. आत्मानी साथे कर्मसंश्लेषपणुछे, एट्छे आत्मानी साथे कर्म. तथा देहना संश्लेषपणाना (जोडावा वा मळवा) ना योगे अनुपचरित असद्भूत व्यवहार जाणवो.

आत्मानी साथे अष्टकर्मनो सबधछे ते धन सबधनी पेठे कल्पित नहीं. वळी औदारिक-वैक्रिय, आहारक, तैजस अने कार्मण शरीरनो आत्मानी साथे सबधछे ते पण धन सबधनी पेठे कल्पित नहीं. विपरीत भावनाए निवर्ते नहीं, जावज्जीव रहे तेमाटे ए अनुपचरित अने कर्मादिक भिन्न विषय माटे असद्भूत जाणवो.

अनुपचरित असद्भूत व्यवहारनये जीव कर्मनो कर्ता जाणवो, अने उपचरित असद्भूत व्यवहारतः गृह धननो कर्ता जाणवो, तथा स्वजाति उपचरित असद्भूत व्यवहारे पुत्र पुत्रीनो कर्ता जीव जाणवो पुत्र पुत्री पोतानी जातिना छे, पुत्रादिक जीवना नहीं तेम छता जीवना कहेवा ते उपचार, पुत्रादिक पोतानाथी भिन्नछे माटे असद्भूत जाणवो. विजाति उपचरित असद्भूत व्यवहारे धनादिकनो कर्ता जीव जाणवो. धन विगरेनी जीवना करता जुदी जातिछे एट्छे, ते पुद्गल जातिछे, माटे विजाति धनादिक जाणवु, धन विगरेनो कर्ता जीवने कहेवो ते उपचार छे, कल्पितपणुं छे. धनादिक पोतानाथी भिन्न द्रव्यछे माटे असद्भूतपणु तेमा जाणवु.

स्वजाति विजाति उपचरित असद्भूतव्यवहारनयन नगरादिकनो कर्ता जीव जाणवो. जीव, गजीव वनेनो समाप्त

तेमां ययो अशुद्धनिश्चय नये राग द्वेषनो अशुद्ध स्वभावे जीव
कर्त्ता जाणवो.

शुद्धनिश्चयनये स्वकीयनिरुपाधिकज्ञानदर्शनादिक गुणोत्तो
कर्त्ता जीव जाणवो.

आत्मानु केवळज्ञान ते शुद्ध सद्भूत व्यवहार जाणवो, धर्म
अने धर्मोत्ता भेदधी ए व्यवहार ययो, तथा मतिज्ञान, श्रुतज्ञान,
आत्मानुते एम कहीए ते अशुद्ध सद्भूत व्यवहार जाणवो.

परद्रव्यनी परिणति भळवाधी द्रव्यादिकमा नवविध उपचा
रधी असद्भूत व्यवहार थायछे

१ द्रव्ये द्रव्योपचार, २ गुणे गुणोपचार, ३ पर्याये पर्यायो-
पचार ४ द्रव्ये गुणोपचार, ५ द्रव्ये पर्यायोपचार, ६ गुणे द्रव्यो-
पचार, ७ पर्याये द्रव्योपचार ८ गुणे पर्यायोपचार ९ पर्याये गुणो
पचारि. एतु स्वरूप कहे छे

१ द्रव्ये द्रव्योपचार—क्षीरनीरन्यायवत् जीव पुद्गल साथे म
ळयो छे माटे जीवने पुद्गल कहीए ए जीवद्रव्ये पुद्गल द्र
व्यनो उपचार जाणवो

२ गुणे गुणोपचार—भात्र लेश्या ते आत्मानो अरूपी गुणछे तेने
जे कृष्ण नीलादिक काळी लेश्या कहीएछीए ते कृष्णादि
पुद्गल द्रव्यना गुणनो उपचार करीएछीए ए आत्मगुणे
पुद्गल गुणनो उपचार जाणवो, इति गुणे गुणोपचार

३ पर्याये पर्यायोपचार—अश्वहस्ति प्रमुख आत्मद्रव्यना अमान
जातीय द्रव्यपर्याय तेने स्फुट कहेळ, आत्मपर्याय उपरे पुद्गल
पर्यायजे स्फुट तेनो उपचार कहीए छीए ते पर्याये पर्यायोपचार

४ द्रव्ये गुणोपचार—हु गौरवर्णलु एम वोळता हुं एटले आत्म
द्रव्य अने गौरपणु ते पुद्गलनु उश्वलतापणु, आत्मद्रव्यमां

गौररूप जे पुद्गलनो गुण तेनो उपचार कर्यो माटे द्रव्ये गुणोपचार जाणवो.

- ५ द्रव्ये ^{पर्यायी-} गुणोपचार-हु गौरवर्गलु एम मोलता हु ते आत्मद्रव्य अने देह तो पुद्गल द्रव्यनो सामान्य जातीय पर्याय जाणवो.
- ६ गुणोपचार-यथा दृष्टत ए गौर देखायडे, गौरतरूप पुद्गल गुण उपरि आत्मद्रव्यनो उपचार ते गुणे द्रव्योपचार.
- ७ पर्यायेद्रव्योपचार-देहने आत्मा कहेवो त्या देहरूप पुद्गल पर्यायने विषे आत्मद्रव्यनो उपचार कर्यो ए सातमो भेद जाणवो.
- ८ गुणोपचारोपचार-मतिज्ञान ते पचइन्द्रिय अने मनोजन्य छे माटे शरीरज रुहीए अत्र मतिज्ञानरूप आत्मगुणने विषे शरीररूप पुद्गल पर्यायनो उपचार कर्यो.
- ९ पर्यायेगुणोपचार-शरीर ते मतिज्ञानरूप गुणजडे अत्र शरीररूप पर्यायने विषे मतिज्ञानरूप गुणनो उपचार करायडे, ए नवम भेद व्यवहारनये अनेकथा जीव व्यवहरायडे, निश्चय नये सर्व जीवनी सत्ता एरु सरसीछे. सर्व वस्तुथी जीव न्यारोछे, अनादि कालथी आत्मानी अशुद्ध परिणतियोगे आत्मा कर्मादिकने ग्रहेडे, यथा मदिरापानथी मुक्त मनुष्यनी बुद्धि फरी जायडे, तेम कर्मनायोगे आत्मा परस्वभावमां राच्यो माच्योडे, यदा उपयोगनी एकाग्रताए स्वयानमा आत्मा रमे तदा कर्मादिकनो नाश थायडे. जे रुद्धिने माटे जीव फाफा मारेडे, ते रुद्धि आत्मां समायीडे. आत्मा पोतानु स्वरूप ज्ञानवडे जाणेडे अने परद्रव्यनु स्वरूप पण ज्ञानवडे जाणेडे. आत्माना समान कोइ उत्तम वस्तु नथी, आत्मा आदेय, आराय पूज्यडे. आत्मानी रुद्धि आत्मस्वरूपना ज्ञानथी प्राप्त जगत्नो स्वामी आ प्रत्यक्ष देखाता शरीरमां

आत्माडे, तेना करता चमत्कारी प्रीजी कइ वस्तुछे? गुरमणि,
कामकुम्भ, कामरेनु पण आत्माना आगळ हीसायमा नयी
आत्मा तेज परमात्माडे आत्मा ते निश्चययो विचारता पोतानो
गुरुछे, स्याद्वान् रीते आत्मानो ओळखण कोइ भाग्यवत पुण्यने
थायछे, आत्मानु स्मरण करतु प्रवृत्ति मार्गमा प्रवृत्ति त्या मुधी
थायछे क ज्या मुधी आत्मानु ज्ञान तथा रमण नयी, आत्मानु
स्वरूप ज्या मुधी जाण्यु नयी, त्या मुधी प्रवर्धमान गुणदायानी
प्राप्ति थती नयी कगुछे क-

आया सामाईअ आया सामाईयस्स अठ्ठे,
वकी कगुछे के-

जे एग जाणइ, से सब्ब जाणइ;

जे सब्ब जाणइ, से एग जाणइ ॥१॥

एको भाव सर्वथायेन दृष्ट सर्वभावा सर्वथातेन दृष्टा-
सर्वेभावाः सर्वथायेन दृष्टा एकोभावा सर्वथातेन दृष्ट २
यथातव्य एक आत्मानु स्वरूप जेणे जाण्युजे, तणे सर्व द्रव्यनु
स्वरूप जाण्युछे कारण के-ज्या मुधी भव्यान्मा आत्मानु स्वरूप
जाणतो नयी तातव अन्य द्रव्योनु स्वरूप जाणतो शकतो नयी,
सर्व शास्त्रनी रचना पण आत्मज्ञान यकीछे सर्व शास्त्रकारो आत्मानी
स्तुति करेछे

स्तोत्रम्-

अनतदेवेश जगन्निवास, त्वमक्षर त्वपुरुष. पुराण.
त्वमव्यय. शाश्वतवर्मगोप्ता, त्वमस्य विश्वस्य परनिधानम् १
भावार्थ-हे आत्मा तु अनतछे, तागे कनी अन नयी, तु आत्मा

देवतानो पण स्वामीडे-चतुर्दश रज्वात्मक लोहमा तारी स्थितिछे. तु असख्यात प्रदेशमयी छे, त्यारा प्रदेशो क्षरेतेम नथी तारु स्वरूप नाश पामवानु नथी. माटे तु अन्युत अने अशरडे, अनादि कालनो तु आत्माछे, तु अव्यय स्वरूपछे. सनातन शुद्धधर्ममय तुछे, भव्या-त्माओने मोट्यामां मोट्ट निधान तुछे. तुज परमेश्वररूपछे. आम पोते मुनिराज शरीरमा व्यापी रहेला आत्मानु ध्यान करे.

“ दोहा. ”

नव तत्त्व पड् द्रव्यना, ज्ञाने छे उपयोग,
अनत गुणनी रुद्धिनो, कर्त्ता नित्यज भोग ७४
भोगी नहि परभावनो, आत्मस्वरूपे ध्यान,
ध्यान नहिं परभावनुं, देखे चरण निधान. ७५

भावार्थ-जीवतत्त्व, अजीवतत्त्व, पुण्यतत्त्व, पापतत्त्व, आश्रव, सवर, निर्जरा, बध, ने मोक्ष ए नवतत्त्वनु द्रव्य अने भावथी जेने ज्ञान थयुंछे, अने पड्द्रव्यनु द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावथी ज्ञान जेने थयुंछे, ते ज्ञानी जाणवो नवतत्त्वनो पड्द्रव्यमा अतर्भाव थायछे. पड्द्रव्य विना जगत्मा अन्य कोइ पदार्थ नथी, पड्द्रव्यमा पण एक आत्मद्रव्य पोतानुछे. आत्मद्रव्यनी श्रद्धा थवी मुश्केलछे. कोइरु तो आत्माने जळ पकजवद् सर्वथा अलिप्तमानी व्यवहार निश्चयनयना ज्ञान विना एकात मिथ्यात्व स्वरूपे आत्मानु यान करता समकित विना चतु-र्गत्यात्मक ससारना त्रिभिध तापोने पुन पुन प्राप्त करी विवेक शून्यताए ग्रथिलनी पेटें कृत्याकृत्यने नही गणता मोहनीयना उदये नरभवनी निष्फलताए ससारना चतुरगितिलक्ष जीवयोनिना प्र-वाहमा रोग शोकथी पीडाता चक्र खाता तणायछे, जेटला विद्वानो मख्यातवत थया, थायछे, अने थशे ते सर्व ज्ञानना प्रताप थकी

अने ते ज्ञान आत्मद्रव्यमा रगुडे, दुनीयामा जेट्ठा शाहूडे ते आत्मायाथी नीरव्याडे अभ्यासादिक ज्ञानना साधनडे, अनत गुणोनो भोक्ता आत्माछे, आत्माणी ऋद्धि सदाकाल आत्मामा रहीडे, आत्म ऋद्धिनो क्तापि नाश धनार नथी. निश्चयनयथी जोता आत्मा पराभावनो भोगी नथी आत्मायां परभावनु ध्यान निवारी स्वशुद्ध आत्मस्वरूपनु ध्यान करे तो चरणनिधान देखे, क्रियाकाडयी भगवदाज्ञा डोघ्यालु कपटीओ अज्ञानी जीवने पोताना फदमा फसावी धर्मना विश्वासमा फसावी पोते पण अज्ञानमा चुढेछे, अने अन्योने पण नुडाटडे, सिंहना पराक्रमनो अभिमानथी पोतानामा आरोप करनारो शृगाल क्या सुधी कपट वृत्ति चलावी शके आत्मज्ञान तेज धर्मडे, तेज आदेयडे, अधुना पचत्रिपना योगे आ भरत क्षेत्रमा कृष्ण पक्षीणा जीवोनी ग्राह्यताण गीतार्थना, सद्गुरुना समागम तथा विश्वास विना अने भवाभिनदीपणाना त्याग विना अशुभ व्यवहारना त्याग विना सुमुखुना योग्यगुणो विना अज्ञानी जीवो ज्या त्या दृष्टिरागनी अधताए विवेकनयनशून्य थया छता उपर उपरथी धर्मनामे टीला टपटा करता अने करभ विवाह प्रसंग रासभ प्रशसाना आचरणमा पोतानी वाह्याहमा कृत कृत्यता समजनार अज्ञानी जीवा सद्गुरुनी वाणी त्रिपना प्याला समान लेखवी, बुगुरुनी वाणी अमृतना प्याला लेखयता, बुधारामा सुधारानी बुद्धि माननार, अस्तिर चित्तवाळा पामर प्राणीओ आभ्यात्मिक शाखोना ज्ञान विना अने देवगुरु धर्मनी श्रद्धा विना स्वच्छदाचारीपणाने लीत्रे आत्मप्रशसा अने परगुणापरुर्पताण अज्ञानश्रद्धाए तत्त्व पाम्या जाणे होयनी ? एम समागमा पराभव प्रवृत्ति मी स्वआसुष्य पूर्ण करी नृभवर्चितामणि ग्लनसमान हारी नरकादिक गतिना

मेमान वड आधि व्याधिनी दुःख श्रेणि परपराने पामेछे.

आत्मार्थि जीव स्वपरवस्तुनो विवेक करी हेयज्ञेय उपादेय समजी गुणठाणानी पग्णिनि समजी व्यवहार निश्चयनयनु स्वरूप गुरुगमद्वारा समजी वैराग्यनी तीक्ष्णताए सद्गुरु आज्ञाभक्ति विनययोगे सालवन अने निरालयन याननी अभिलाषाए अतःकरण शुद्धिपूर्वक स्पाद्वाद आत्मिक धर्मनु आराधन करतो जल पकजवत् वर्तन चलावतो व्यग्रहाम्ना वर्तेछे, परभाव प्रवृत्तिमूलरागद्वेषमहा मूढछेदक आत्मस्वभावपरिणतिमा वर्तता भव्यात्माओ ज्ञान यानयोगे क्षयोपशमभावे वा उपशम भावे मोहनीय कर्मनो उच्छेद करी समकित पामी स्वल्पकालमा कर्मक्षय करी केवलज्ञानादि सपदा पामी चउदमु गुणठाणु आयुष्य मर्यादाए उलघी सादि जनति स्थिति पामी अनहद आनन्ददायक शाश्वत शिवसुख स्वरूप युक्तिधाम पामी शकेंछे. समये समये जीव सात वा आठ कर्म वात्रे छे, स्वभावमां रमे तो कर्मपथ टुंछे, माटे आत्मतत्त्वनी प्राप्ति अर्थे सद्गुरु वचनामृतनु विनयभक्तियोगे पान करवु एज द्विताकाक्षा.

“ दुःख ”

अखड अक्षय शाश्वतु, देखी आतम रूप,
चित्ते चमक्यो आतमा, अरे हु तो महा भूप. ७६

भावार्थ—अखड, अक्षय, शाश्वतस्वरूप पोतानु पोते आत्मा देखी चित्तमा चमक्यो अर्थात् आश्चर्य पाय्यो, अने कहेवा लाग्यो के—अरे हु तो महाभूपहु, जशपि पर्यत में पोताने अज्ञानी जाण्यो, हु गरीज छु एवी मने भ्राति हती पण हवे ए भ्राति चाली गइ, हु निर्धनहु एम हु पोताने मानतो हतो पण जाण्यु के—मारा आत्मामा अनत धन रख्छे, तेनी समति काले खपर पडी, चक्रवर्ति आदि

राजाओने हु महाभूप तीरके स्वीकारतो हतो पण हवे आत्मानु स्वरूप ओळखता मालुम पड्यु क इद्र, चद्र, नार्गेद्र करता पण आ शरीरमा व्यापक आत्मा मदाभूपठे एनी प्रभुताइने कोड पामी शके तेम नथी स्त्री पुत्रादिकपर जेट्ठी ममता थाय ठे तेट्ठी जो आत्मा उपर ममता थाय अने तेनु ध्यान करायमा चित्त लागे तो आत्मा परमात्मस्वरूपने पामे वहिरात्मिसाधुओने शिष्यो करवा उपर जेट्ठी चाहनाठे तेट्ठी जो आत्माना उपर चाहना थाय तो परमात्मपद अवश्य पामी शक्या वाचधन तो मछेठे अने पापना उदये विणशी जायठे पण आत्मानु अतर्धन रुदापि काठे नाग पामी शक्यु नथी. दुनीयाना प्रवाहमा जे तणायठे ते आत्मिक लक्ष्मी पामी शकता नथी-घगा भर कर्या, रगा शरीर डोड्या, पौद्गलिक माया सर्व नाश पामी किंनु उणे कालमा आत्मा चेतन स्वभावेज वर्तेछे माटे आत्मा शाश्वतठे, बाचवा अगर रुहेवा मात्रथी नहीं पण ते अनुभवगम्यठे

“ दृढा ”

रझळ्यो हु परदेशमा, लहिया हु ख अनत,
शुभ देखी निजदेशने, शान्त थयो शिवकंत ७७

भारार्थ-पोताना आत्माना असख्यात प्रदेश ते पोताना प्रदेश जाणवा अने पृथ्वीना जे देश ते पुद्गलास्तिकायठे, पुद्गलास्तिकाय द्रव्य जडछे, पृथ्वीना प्रदेशोने पोताना प्रदेश मानी परदेशमा रझळ्यो, क्षुधा पिपसाए ताडनतर्जन छेदनभेदन आनि आत्माण अनत दुःखो सहन कर्या, अने नाना प्रकारना शरीरो धारण कर्या पण दु खनो अत आयो नहीं, पण हवे सद्गुरुयोगे आत्मानु स्वरूप जाणता पोतानो देश ओळख्यो अने आत्मा मुक्तिनो स्वामी शान्त

धयो, ध्यानयी आत्मा अने परमात्मानो भेद टळेछे. कहुछे के-
आत्मनोहि परमात्मनियो भूद्भेद बुद्धि कृत एव विवादः,
ध्यानसंधि कृदमुव्यपनीय द्रागभेदमनयोर्वितनोति. १

आत्मा अने परमात्मामा भेद बुद्धिनो विवाद हतो,
अर्थात् तेमा पडितना विवादरूप झगडा हता तेने ध्यानरूप संधि
पाळे ध्यानी पुरुषे जलद्रीधी वेनु अभेदपणु करी आप्नु,
ध्यानमा आत्मा अने परमात्मानो अभेद थाय एटले ध्याननी सिद्धि
जाणवी ध्यानीने पौद्गलिक देश उपर क्यांथी ममता होय. भर-
निद्रामा सून्यतानी पेठे ध्याना पुरुष रागद्वेषसून्य थायछे, खरु
सुख ध्यानी पुरुष जाणेछे, शब्दज्ञानियो भले व्याकरण न्यायना
वाक्पडितपणाथी इद भवति इद न भवति इत्यादिथी भोळा लोकोनी
आगळ भ्रमजाड रवे किंतु आत्मिक सुख मळतु नथी,
अने निरर्थक वाह्याचारनिंदकी थड मनुष्य जन्म हारेछे, एवा शब्द
ज्ञानीओने स्वदेशनी ममता थरी मुश्केलछे, शब्दज्ञानियो खंडनमड-
ननी सकल्प जाळमा पडी आत्मिकसुख प्राप्त करता नथी, अने
तेमनु परदेश पर्यटन पर यत्रानु नथी, ग्राह क्रियाकांडनी खटपटमा
शब्दवानीयो मतभेद चठारी परस्पर राग द्वेष करेछे, तेमनु क-
ल्याण मत कडाग्रहन्वयी यत्र दुर्लभछे स्वदेश अने परदेशनु ज्ञान
नथी त्या सुधी जीव मिथ्यात्वी जाणवो आत्मतत्त्वनु ज्ञान थाय
त्यारे मनुष्य जन्म लेखे जाणवो, खरेखर आत्मज्ञ महाशयो आत्मा-
नी तार्त्रिक शक्तताने पामेछे, उपर उपरनी हलदरना रग समान
जे शानता ते अते टकी शकती नथी केटलाक जीवो उपरथी वगनी
पेठे रुपट्टितियो शात टेखायछे, अने अतरमा रुपट्टी भरेळा होय
छे, केटलाक जीवो उपरथी देखता शात जगाता नथी अने अतरमा
खरेखर . . . केटलाक जीवो उपरथी पण शात होयछे अने

અતર્મા પણ શાન્ત હોયછે, કેટલાક અતર્થી શાંત હોતા નથી અને
 ઉપરથી પણ શાંત હોતા નથી. શાતાવસ્થાનુ મુલ્વ જાત્મજ્ઞાનીયો
 પામ્યા, પામેછે, અને પામશે

“ દુહા ”

પરપુદ્ગલના દેશને, માન્યા મારા દેશ,

તેની મમતાએ કરી, ગ્રહિયા પુદ્ગલ વેપ ૭૮

ઠામ ઠામ હુ ભટકિયો, ચાર ગતિ હુ લ્લે સ્વાળ,

ત્યા પણ મમતા દેશની, કીર્તી ગુણની હાળ ૭૯

માતાર્થ-પૌદ્ગલિક દેશને પોતાના માની રાગ દ્વેષથી કર્મ
 ગ્રહણ કરતો ઊતો વિચિત્ર મનારના ધરીર ધારણ કર્યા, નાના દેહો
 ધારણ કરી દુઃસ્વની સ્વાળભૂત ચાર ગતિમાં ઠેરાળે ઠેરાળે ચેતન
 ભટક્યો, અને જ્યા જ્યા ઉત્પન્ન થયો ત્યા પણ દેશની મમતા ધારણ
 કરી પોતાનુ માન ભૂલી આત્મગુણનો તિરોભાવ કર્યો, આ મારુ ઘર,
 મારુ ક્ષેત્ર, મારી પૃથ્વી, આદિના અભિમાનથી રશિયા જાપાનની
 પેઠે હજારો જીવોનો નાશ થયો તેનુ કારણ પરપૌદ્ગલિક દેશની
 મમતાએ, અવાની જીવો સ્વદેશાભિમાનમા એમ એ મુઘી મળ્યા
 હોયછે તો પણ અજ્ઞાન મનાહમા તળાડ જાયછે પોતાનો દેશ ત્રયો
 છે તે ગુરુમક્તો નિશ્ચયત જાણી શકે છે મન વાલ વિપયમા ધારે
 છે, તારત્ જીવ કર્મની રાશિ અચુદ્ધ પરિણામે ગ્રહેછે, ગુજરાત,
 વગલાદિ દેશો મારાએ અને હુ એનોહુ, આ રાજ્ય મારાએ અને હુ
 એનોહુ, આ હુટન મારાએ, અને હુ એનોહુ, એવી શુદ્ધિ યાવત્
 થાયછે તાવત્ જાણવુ કે-ચેતન જડતા અનુભવેછે, આત્મા અને
 પરમાત્મ સ્વરૂપનુ જ્ઞાન થાય તેને જ્ઞાન કહેછે અને આત્મા અને
 પરમાત્માની ધ્યાનયાગે ઐશ્વર્યતા થાય તેને વિજ્ઞાન કહેછે.

उक्तञ्च—

अन्य शास्त्रेऽपि क्षेत्र क्षेत्र ज्ञयोर्ज्ञान, तज्ज्ञानं ज्ञानमुच्यते;
विज्ञान चोभयोरैक्यं, क्षेत्रज्ञ परमात्मनोः१

स्वकीय अज्ञानथी आत्मा भटकायछे, अने पोताना ज्ञानथी कर्म विमुक्त आत्मा वनेछे, आत्मानो उद्धार आत्माज करी शकेछे, आत्मानु उपादान कारण आत्माना गुणोछे, उपादाननी शुद्धि अर्थ भव्य जीवो निमित्त हेतु अवलगी परमात्मपद पामेछे, अभव्य जीवोमा उपादान कारणनी शुद्धि थाय तथा प्रकारनो स्वभाव नथी. निमित्त कारण तो पामेछे, किंतु अभव्य जीवमा भव्य स्वभाव नथी, तेथी उपादान कारण शुद्ध थतु नथी भगवद्गीताना छद्वा अध्यायना पाचमा श्लोकरुमा कह्युछे के—

श्लोक.

उद्धरेदात्मनात्मान, नात्मानमवसादयेत्,
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धु, रात्मैव रिपुरात्मन. १

आत्मा उद्धारवो पोते, आत्माने मारवो नहि,
यधु पोतेज पोतानो, पोतेज रिपु छे सहि. १

आत्मा स्वशुद्धपरिणामयोगे पोते पोतानो उद्धार करेछे अर्थात् परमात्मपद पामेछे, ज्ञपुरूपो कहेछे के—आत्माने भव्यात्मा-ओए मारवो नहीं, पोताना आत्मानो घात करवो तेना समान पाप नथी, अ यात्मगीतामा कह्युछेके—

स्वगुण रक्षणा तेह धर्म, स्वगुण विध्वंसना ते अधर्म,
भाव अर्थात् अनुगत प्रवृत्ति, तेहथी होय संसार छित्ति.१

गुणो कर्मयोगे ढकायाछे, तिरोभावे रखाछे,

तेनु रक्षण करबु एटले ते अनत गुणोंने आविर्भाव करवा, धर्मश्रुयी अरारा देरा नहीं तेनु नाम धर्मत्रे, धर्मना चार भेदछे, १ नामधर्म, २ स्थापनाधर्म, ३ द्रव्यधर्म, ४ भावधर्म कोडनु धर्म एबु नाम आपनु ते नामधर्म, कोड पण वस्तुमा धर्मनो आरोप करतो ते स्थापनाधर्म, धर्मना हेतुओनु अलगन करतु ते द्रव्यधर्म वा उपयोग नून्य जे धर्म ते द्रव्यधर्म जाणवो, आत्मानी उपयोगताए नय-निक्षेपा सप्तभगीथी आत्मानु अनेकान्त रूप जाणी श्रद्धा करवी, तेनु रक्षण करबु तेनु नाम भावधर्म जाणवो

ते भावधर्म आत्मामा रह्योछे, शुद्ध, सत्य, अस्पृह, अक्षयरप भावधर्म अरपीछे अने ते भव्य जीवोंने प्राप्त यायछे, समकितवत जीवने भावधर्मनी प्राप्ति थायछे, भावधर्म विना सर्व क्रिया निष्फल जाणवी

द्रव्यधर्मना रे भेदछे, लौकिक द्रव्यधर्म बीजो लोकोत्तर द्रव्यधर्म, लौकिक द्रव्य मिथ्यात्वनु कारणत्रे, भावधर्म सापेक्ष लोकोत्तर द्रव्यधर्म परमात्मपद साधक निमित्त कारणत्रे, आत्मीयगुणोनु रक्षण ते धर्म, अने आत्माना गुणोनो नाश करवो एटले आत्माना गुणो तिरोभावे वर्ताय तेम रागद्वेषयोगे ज्ञानावरणीयादि कर्म ग्रहण कराय तेनु नाम अधर्म जाणवो, नाम अन्धात्म, स्थापना अन्धात्म, द्रव्य अध्यात्म अने भाव अन्धात्म ए चार ४ निक्षेपाए अन्धात्म जाणतु आपना ३ त्रण अन्धात्म अनुपयोगी जाणवा, भाव अन्धात्मथरी कर्मकलक नाश पामेछे माटे भाव अध्यात्म अनुगत प्रवृत्ति थाय तो तेथी ससारनो उच्छेद थायछे, माटे ज्ञानी पुरपो कहे छे के आत्माने मारवो नहीं, आत्मानी जो अशुद्ध परिणति थइ तो आत्माए आत्माने मार्यो कहेवायछे, आत्मा पोते पोतानो वधुछे, एम कहेवाथी सिद्ध थयु के पोतानु भलु करवा पोते आत्मा समर्थ

छे, राग द्वेषने आत्मा जीते तो आत्मा वधु समानछे, सगा सहोदर वधुनी ममताथी आपणा पोताना आत्माने रागद्वेष लाग्याछे ते दूर थता नथी, माटे बीजाने वधु तरीके मानवा ए तो ससार व्यवहारनी कल्पनाछे, व्यवहारिक कार्योमा सहोदर वधुनी जरुछे, किंतु आत्मा परमात्मस्वरूपमयथाय तेमा तो आत्माज पोते वधुछे, त्या अन्यनु कथु चालतु नथी, रागद्वेषना प्रवाहमा आत्मा अशुद्ध परिणामथी वहेछे तो आत्मा पोते पोतानो शत्रुछे एम जाणवु आत्मा परभाव त्यागी स्वभावमा रमे तो आत्मानो कोइ शत्रु नथी, आत्मा विना आत्मानो शत्रु अन्य कोइ व्यवहारथी कल्पना मात्र जाणवो. राग द्वेषे ससारमा राचतु माचतु, तथा आत्मानी अज्ञानताथी मिथ्यात्व परिणतिए करी आत्माने परमात्मपद पामवामा आत्मा शत्रुभूतछे, यावत् जीव समकित पाम्यो नथो अने मिथ्यात्व भावे रमो पग्ने पोतानु मानेछे तावत् तात्त्विक सुख पामी शकतो नथी, माटे आत्मिक असल्यातपदेशमा ध्यान देवु.

“ दुहा. ”

धर्माऽधर्माऽकाशना, प्रदेश हान न लेश;

पुद्गलना जे देश छे, दे अज्ञानी क्लेश ८०

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकायना प्रदेशथी आत्मगुणोनी हानि छेशमात्र पण थती नथी, पण पुद्गल स्वरुओ अज्ञानीने र्लेश आपेछे

धम्मा धम्मा गासा तिन्निवि ए ए अणाइया ।

अपज्जवसियाचेव सब्वच्छ तु वियाहिया

धर्म, अधर्म अने जाकाश ए नग द्रव्य जनादि कालनाछे अने अनछे १४ ओरु व्यापि धर्मास्तिकायछे, अधर्मास्तिकाय

पण चउद् राजलोक व्यापीठे, आकाशास्तिकाय लोकाळोक व्यापी
छे अशुद्ध परिणति योगे आत्मा पुद्गलास्तिकायना स्कंधोने ज्ञा-
नावरणीयादि अष्टविधकर्मराशिरूप त्रिणावी ग्रहण करी ससारमां
परिभ्रमण करेडे

आत्मा शुद्धस्वरूप जोता अरूपीठे, छतां रूपी एवा कर्मथी
आत्माना अनतगुणोनु आच्छादन थायठे, आत्माना एकेंक प्रदेशे
अनति कर्मवर्गणाओ लागीठे, किंतु आत्माना आठ रूचक प्रदेशे
कोइ कर्म लागतु नथी ते आठ रूचक प्रदेश सिद्ध समान सदाकाल
निर्मल अनादि कालनाछे, ए आठ रूचक प्रदेशे पण जो कर्म लागे
तो जीवनु जीवतपणु चाल्यु जाय रूचक प्रदेशनो एवो स्वभावछे
के तेने कोइ कर्म लागी शक नही, जेम जेम एकेंद्रियादिक भवतु
उद्वघन करी उच्च गतिमां आवेछे तेम तेम तरतमयोगे सामान्यतः
मतिज्ञान श्रुतज्ञाननी प्राप्ति थायठे

गिव्यप्रश्न—आत्माना असरयात प्रदेशी शी रीते कहेवाय ? अस-
रयात प्रदेश कहेवाथी आत्माना असख्यात भाग थया त्यारे
आत्माना खड थया अने अखड आत्मा कहेवाशे नहिं माटे
आत्माना असख्यात प्रदेशो कहेया ते शीरीते=

सद्गुरु—आत्मा असख्यातप्रदेश मळी कहेवायठे, असख्यात प्रदेश
कहेता आत्माना असख्याता भाग थड शकता नथी कारणके
प्रदेशो एक एरुथी जुदा पडता नथी, प्रदेशो बाण्या बळता
नथी, छेया उेटाता नथी, हण्या हणाता नथी वेवळीं वेवळी
समुद्ध्यात करे त्यारे आत्माना प्रदेशो लोक प्रमाण वि-
स्तारेछे छता पण प्रदेशो एरुमेरनी साये नित्य समथयी सज-
प्रितठे तेथी असख्यात प्रदेशे मळी आत्मा कहेवामा कोइ
जानतु दूषण नथी आवतु, आत्माना प्रदेशो अरूपीठे, तेथी

असख्य प्रदेशात्मक आत्मा पण अरूपी कहेवायडे. आत्माना खड कोइनाथी पाडी शकता नथी, अने कोइ काले खड थता नथी. माटे अखड आत्मा कहेवायडे, असरयातप्रदेशो कल्पना मात्र नथी पण ते सत्यडे. कल्पना मात्र रुढेवामां प्रत्यक्ष प्रमाण नथी, अनुमान प्रमाण नथी, उपमान प्रमाण पण नथी. अने आगम प्रमाणमा तो आप्तमुण्य श्री सर्वज्ञ वाच्य प्रमाण कहेवायडे—श्री सर्वज्ञ भगवते कशुडे के—लोगागासतुळा भव्यपएसा माटे लोकाकाशा जेटका आत्माना प्रदेशडे एम सत्य श्रद्धा करवी.

प्रश्न—कोइ एक गिरोचीनी पुठडी कपाइ जइ त्यारे एक तरफ पुठडी कूदेडे. उठळेडे, अने एक तरफ धड उठळेडे त्यारे जीव वेमा समजवो के एरुमां ?

उत्तर—पुठडी अने षडमा एम वेमा आत्माना असरय प्रदेशो होयाथी वेमा अरेखाए जीव कहेवाय डे. केडलाक प्रदेशो पुठडीना भागमा रहेला होयडे तेथी ते हालेडे पण धडना भागमा ते सर्व प्रदेशो भळी जायडे त्यारे पुठडी हालती नथी ते समये धडमा जीव कहेवायडे ए उपरथी सिद्ध वायडे के आत्माना प्रदेशोथी एवो वनाव जने छे, स्मृति अने गुरुगमथी आ दृष्टान्त मनन करवु. ज्ञानावरणीय कर्म सर्व जीवने एक सरखु होय तो सर्व जीव एक सरखा ज्ञानवाळा होय जोइए पण ज्ञान एक सरखु होतु नथी माटे ज्ञाननु प्रतिपद्यक ज्ञानावरणीय कर्म जीव जीव मत्ये भिन्न भिन्न नाना प्रकारनु होयडे तेथी तेना क्षयोपशम भावे मत्येक जीवन भिन्न भिन्न प्रकारनु ज्ञान थायडे.

अवरणीयकर्म पचयिउडे, ज्ञानावरणीयादि

अष्टकर्म आत्माना अष्ट गुणोनु आच्छादन करेते. अष्टकर्मना नाशयी अष्ट गुणो आधिर्भाते थायते, यत्रापि जो के कर्म चलवान्ते तथापि आत्मा ज्ञानयोगे स्वस्वरूपमा रमे तो क्षणमा कर्ममो नाश करी शक्यते. भगवद्गीतामा पण कथ्युंते के-

अध्याय चोथो लोक ३७ मो

यैवेवांसि समिद्धाऽग्नि, भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन
 ज्ञानाग्नि सर्व कर्माणि, भस्मसात् कुरुते तथा. ३७
 नहि ज्ञानेन सदृश, पवित्र मिह विद्यते,
 तत्स्वय योग ससिद्ध कालेनात्मनि विदति ३८
 अपिन्नेदसि पापेभ्य, सर्वेभ्य पापकृत्तम
 सर्वज्ञानप्लवेनैव, वृजिन सतरिष्यसि ३९

भावार्थ-महामेरुना ओळपनारने वालुका जेम लभ्यते, अग्नि काष्ट समूहने वाजी भस्म करेते तेम ज्ञानरूप अग्नि सर्व कर्मोने वाजी भस्म करेते आत्मानु अनेकातपणे यथातथ्य ज्ञान थाय तो कर्मनो नाश थायते परम पुरुषार्थ साधन ज्ञान समान कोइ नथी, अपवित्रने पण ज्ञान पवित्र करेते, माटे ज्ञान सदृश अन्य कोइ पवित्र नथी, ज्ञानी सर्व पापनो नाश करेते, हु आत्मा परमात्मा स्वरूपद्व एम स्वसत्ताने भव्यात्मा भ्यावेते

मोटामा मोहु पाप करनारो तु होइश तो पण हे अर्जुन तु ज्ञान नौकायी सर्व पाप तरी जाइश एम कृष्ण कहेछे.

शिष्य-आ ठेकाणे तमो केम भगवद् गीतानो द्वाखणे आपोओ ?

जैन-जैनधर्म एरु देगी नथी पण सर्व देगीते, जैनोमा जेम वाननु महात्म्य कथ्युंते, तेम गीतामां पणते ते जणाववा माटे साक्षी

आपीछे अन्य शास्त्रना श्लोकोंने समकृती जीव अने कान्तनयनी अपेक्षाए ग्रहण करी समकृत रूपे परिणमावेछे, एरु शरीर त्यागी अन्य शरीर धारण करवानु कारण कइ पण होवु जोइए. ते कारण कर्मछे, अने कर्म आत्माथी भिन्नछे, भिन्नछे त्यारे ते चैतन्य नथी, विपरीत जड द्रव्य सिद्ध ठर्युं, माटे तेनो पुद्गलास्तिकाय द्रव्यमा अतर्भाव थायउ. लोहचुनक पोतामा रहेली शक्तिवडे जेम से यने पोतानी भणी खेचेछे तेम आत्मा अशुद्ध परिणतियोगे स्वभावयोग्य पुद्गलोने राग द्वेषयोगे कर्मरूपे ग्रहण करेछे. अने कर्मथकी चार गतिना दुख जीव पामे छे. नैश्चयिक शुद्ध आत्मिक स्वरूप ध्यावे अने आत्म ने सर्वथकी न्यारो माने अने परवस्तु उपरथी अहममत्तभाव उठाडे तो सिद्ध बुद्ध परमात्म स्वरूपमय आत्मा थाय.

“ दुहो ”

वर्ण पांच जेमां रह्या, गंध दोय ज्यां खास;
 पांचे रसनी स्थीति ज्यां, स्पर्श आठनो वास ८१
 एवा पर्यायो रह्या, तेहिज पुद्गल द्रव्य,
 व्याप्युं लोकाकाशमां, कर्ता नहि कोइ भव्य. ८२
 काल अनादिथी रह्युं, रहंशे काल अनंत,
 नित्यानित्यपणे सदा, रूपी द्रव्य कहंत ८३

भावार्थ—पाच वर्ण, वे गंध, पाच रस, अने आठ स्पर्शरूप पर्यायो जेमा रह्याछे, तेने पुद्गलद्रव्य कहेछे, ते लोकाकाशमा व्याप्युछे, पण अलोकाकाशमा पुद्गलद्रव्य नथी, पुद्गलद्रव्य अनादिकालथीछे, अने अनंत काल सृष्टी रहेशे, द्रव्यार्थिक नये पुद्गलद्रव्य नित्यछे, अने पर्यायार्थिक नये पुद्गलद्रव्य अनित्यछे, पुद्गल द्रव्यरूपीछे.

“ दुहा ”

- घटपट वस्तु जे दिसे, ते सह्य पुद्गल जाण ।
 ते आत्मथी भिन्न छे, शास्त्र वचन प्रमाण. ८४
- पुद्गल देशे म्हालतां, माथी चेतन जाय,
 तेमा ममता मानता, मरी मरी दुःख पाय ८५
- पृथ्वी थड नहि कोयनी, कोथी करे उपाय,
 लक्ष उपायो लखे, नहि आकाश जलाय. ८६
- पुद्गल वस्तु कारमी, घर हाथा ने म्हेल,
 सोनु रूप धन सह्य, पुद्गलना छे खेल ८७
- दृष्टा पुद्गलनो सदा, सुख दुःखनो जे जाण,
 वास वस्यो पुद्गल विषे, आत्म गुणनी खाण. ८८
- पुद्गल जे देखाय छे, तेथी चेतन भिन्न,
 कर्त्ता चेतन कर्मनो, परपरिणति रस पीन ८९
- आत्माऽसख्य प्रदेश छे, प्रति प्रदेशे ज्ञान;
 अनत जिनपर भाषियु, छति पर्याये जान ९०
- विशेष सामान्ये करी, दो भेदे उपयोग,
 असख्यात प्रदेशथी, वत्ते निजगुण भोग. ९१
- अस्ति वर्म अनतनो, भोगी आत्म राय,
 नास्ति वर्म अनत त्यांय, समयसमय वर्ताय ९२
- उज्वल आत्मप्रदेश छे, समता रस भडार,
 तेनो कर्त्ता आत्मा, शुद्धनये निर्वार ९३

- वसतां तेह प्रदेशमां, रमतां समता सग,
सुखसागरमां उच्छे, हर्षानद तरंग. ९४
- ममता पर परदेशनी, भागी जागी ज्योत,
सहजे आत्म स्वरूपनो, थयो महा उद्योत. ९५
- भिन्न जाति पुद्गल तणी, मारी तेथी भिन्न;
भिन्न जातिशुं सग श्यो, तेथी थइयो खिन्न. ९६
- संग अनादि कालथी, तेने मानी भिन्न,
राग द्वेषना योगथी, ग्रहियां देह विचित्र. ९७
- दुग्धनीरसयोगवत्, आत्म पुद्गल सग,
थयो अनादि कालथी, करतां कर्म कुटंग ९८
- तेथी अवळी परिणते, कर्ता कर्म कहाउ,
सवळी परिणति योगथी, शुद्ध निरजन थाउ. ९९
- पुद्गल खावु पहेरबुं, पुद्गल वसति महेल,
वास वसी तेमां मुधा, मानी सुखनी स्हेल. १००
- रमुं हवे शुं बाह्यमां, जेनी कूडी चाल,
सगे तेनी माहरे, थबु पडयुं वेहाल. १०१
- मित्र नहि ते माहरो, अवळो तास सहाव,
हाय हाय तस सगथी, बनिया एह वनाव. १०२

भावार्थ—आ प्रत्यक्ष घट पट दडादि वस्तु चक्षुषा विषय गोचर थायछे. ते पौद्गलिक वस्तु जागरी अने ते आत्म द्रव्यथी भिन्नछे. एम श्री तीर्थकर महाराजा शास्त्रमां कथेछे.

पृथ्वी आदिक रूपे स्थित उपवन, गिरि, वन्यादि, गुमरात, पजार, इग्लांड, युरोप, अमेरिकादि देशोंमां मारापणानी बुद्धिची राची घाची तल्लीन बनी तेमा म्हालतां चेतन मार्यो जायते, देश, गृह, धनादिकमा मारापणानी बुद्धि धरतो मृत्यु पामी पुन पुन तदगत वासना योगे जन्म धारण करी आधि व्याधि उपाधिनां दुःखो पामेते हे चेतन शु तृष्णा जाळमां फसायते ? स्वभावाभाव रूप अज्ञानतम राशिमा विवेक नयन शून्यात्मा अत्र तत्र ऐहिक सुखनी भ्रान्ति ए भ्रमण करतो, मनोराज्यनी सफल विकल्प श्रेणिए चढयो छतो धुन्न वृन्द ग्रहण पुरपवत् क्षणिक तुच्छ सर्वदा जड पृथ्वीने पोतानी मानी तदर्थे सहस्रश जीव घातक बनी शोफापुष्टपवत् स्वमहत्त्वतापां अन्य भव्यात्माओने पर्वतारोहण पुरुष दृष्टिवत् लघु गणी पारमाधिक तच्च शून्यात्मा क्षणिक तुच्छ स्वार्थमां राची परवस्तुमां ममतानो दृढ भाव सकम्पी रात्री दिवस तिलपीलक यत्र वृषभवत् असदाचरणोमा स्वकाल अज्ञानी पशुवत् निर्गमेते, पोतानाची अत्यंत भिन्न पृथ्वी कोइनी थड नथी, अने थवानी नथी मारी मारी मानवी ए केवल भ्रातिछे, लक्ष उपायो करता पण आकाश हाथमां झाली शकातु नथी तेम कोटि उपायो करतां पण पृथ्वी देश, घरघार पोतानां थवानां नथी, देश, घरने जीव मूकी परभवमा चाल्यो जायते, जे घर हाट म्हेळ यथावतां रक्षण करता चेतने जरा पण शांति लीधी नथी, ते घर हाट मूकी मरण ममये जीव टगमग जोतो जीववानी सहस्रश आशाओ करतो पण परभवमा चाल्यो जायते, साथे कोइ पण वस्तु आवती नथी, ज्यां जे वस्तु हती ते त्याने त्या रहीं, अनता भव कर्या पण कोइ वस्तु साथे आवी नथी, तो आ भवमा तु कइ वस्तु पोतानी साथे लड जइश ? हा अल्पत कोइ पण वस्तु पोतानी साथे आवनार

नयी, पौद्गलिक वस्तु उपर शो राग अने द्वेष करवो ? केटलीक वस्तुओ मळेडे अने केटलीक वस्तुओ नाश पामेळे, सगा सवधी वर्गनी प्रीति पण स्वार्थना लीधे क्षणिकडे. खरी वस्तु आत्माडे, बाह्य पदार्थोमां मारापणानी बुद्धि थायडे तेनो नाश यइ अतर आत्मतत्त्वमां मारापणानी बुद्धि थाय ते परमात्मपद पापी शकाय. घर हाट म्हेल आदि पौद्गलिक वस्तु कार्माडे, सुवर्ण, रुपु, मोती, हीरा आदि सहु धन जे कहेवायडे ते कारमुडे, हे जीव तेमा तु शुभमता धारण करेळे ? जेनो सयोग तेनो अवश्य वियोग थवानोडे, पूर्वोक्त पुद्गलनो दृष्टा अने सुख दुःखनो ज्ञाता आत्मा देहरूप पुद्गलमा वस्योडे, अनतगुणनो धणी आत्माडे, पाच प्रकारना शरीरधी आत्मा भिन्नडे, पर परिणतिमा लीन थएलो चेतन व्यवहारधी कर्मनो कर्त्ता जाणवो

आत्माना असख्याता प्रदेशडे, प्रत्येक प्रदेशे अनतु ज्ञान थॉ जिनवरे कष्टुडे. आत्मामा अनत धर्मनी अस्तित्ता रहीडे, तेमज आत्मामा अनत धर्मनी नास्तित्ता रहीडे, अस्ति अने नास्ति धर्म समये समये आत्मांमां वर्तेडे, सत्ताए ससारी जीवोना प्रदेश निर्मल सिद्ध समान जाणवा अने ते समता रसनो भडारछे, शुद्धनयधी स्वज्ञानादिक गुणनो कर्त्ता आत्मा जाणवो

आत्माना असख्यात प्रदेशमा रमता असख्यमदेशरूप आत्मा पोते पोताना स्वरूपे स्थिर यता अने शत्रु मित्रपर समपणु ते रूप समता साधे रमथा क्षणे क्षणे अनत अनतगणु सुख थायडे, आत्म स्वरूपनो स्ववीर्य याने उग्रोत यना परपरदेशनी ममता नष्ट थइ अने नाण्यु के-पुद्गलनी जानि माराधी भिन्नडे, अने हु तेधी भिन्नहु, तो मारे पुद्गल जानिधी शो लाभ ? अने तेनो सग केम करवो जोडए ? अरेरे हु अनादि कालवी तेनी सगतिधी खिन्न ययो.

तर्कं नरक गति दीये, जेने नहि निज भान,
 शब्दशास्त्रथी भिन्नछे, आत्मपद गुणवान् ११५
 कथा पुराणी बहु करे, जन मन रजे भाट,
 वाद वाघरी घेरछे, धर्म विना सहु वात ११६
 क्रियाकाड नवि मुक्ति दे, जो नहि आत्मभान,
 आत्मोपयोगी साधुने, धर्मक्रिया गुणखाण ११७

भावार्थ—चतुर्गति सरथी चतुरशिति लक्ष जीवयोनिमां आ
 मत्पक्ष शरीरनिष्ठनीये जन्म मरण करी अनत दु ख पाप्म्यां

पुद्गल ममता वा अरुचिथी जीवनी परिणति रागद्वेषमय
 थड जायछे, रुचि अरुचि पग पुद्गलना सरधेछे, पुद्गल सरधे
 शोक धायछे, देशधनादिक पुद्गलनी लालसाए दुनियाना जीवो
 सहस्रश' जी गोना मागनी आहुति युद्धाग्निमां होमेछे रुसिया,
 जापान, विगेरे युद्ध करेछे ते पग पुद्गलनी लालसाथी जाणवी
 मद्मद गीजनवत् नृपो पुद्गल लालसामा रक्त बनी शोफा
 पुरुषवत् स्वमहत्वनी भ्रमणामा भूली तत्त्व विवेचन विवेकरून्य
 अत फरणवाळाभो भजागल स्तनवत् स्वआयुष्यनी निष्फलता करेछे

पुद्गल द्रव्य आत्मगुण विरोधीछे, तेनी मित्रता करता स्व-
 कीय गुणनी हानि थया विना रहेती नथी, पुद्गलथी पोताने
 भिन्न नहीं माननार अज्ञानी मूढात्मा रणना रोक समान ज्ञान-
 रून्य जाणवो

आहार, पाणी आदि पुद्गलने अनता जीवोए भोगव्यु तेज
 पुद्गलने आ जीव भक्षण करेछे, अनता सिद्ध भगवतोए सतारा-
 वस्यामा अनता मत्र करी पुद्गल रूधोने स्वाधा, पीधा, पळी

तेज पुद्गल द्रव्यने अभव्यादि जीवोए पण पोताना भोगमां ग्रहा माटे पुद्गल सर्व जीवोनी वमन करेली ऐंठ जाणवी. ते ऐंठने हे जीव ! तें अनतिवार चुयी, हाल पण चुयेछे, भविष्यकाले पण फोण जाणे शु थसे ? हजी तु केम चेततो नथी, तारी अनति ऋद्धि तारी पासेछे ते मूर्कने तु ऐंठ चुये ते तारी ओठी अज्ञान-ता ! अरे जीव तु जरा मात्र पण शरमातो नथी, शु तने भिक्षुक-नी पेटें पुद्गल ऐंठ चुथवाथी तृप्ति वळवानीछे ? ना फदी नहीं, जेटला पुद्गल ऐंठ चुयेछे ते गमे तो इद्र, चद्र, नरेंद्रादिक होय तो पण भिखारीना सरखा जाणवा

प्रश्न—हे सद्गुरु ! त्रयोदश गुणस्थानवर्ति श्रीतीर्थकर केवळी पण

आहार पाणी ग्रहण करेछे तेथी ते पण शु भिक्षुक जाणवा ?

उत्तर—हे शिष्य—श्री त्रयोदश गुणस्थान वर्ति तीर्थकर महागजे मोहनीय, अतराय, ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, ए चार ४ कर्मनो सर्वथा क्षायिक भावे क्षय कर्योछे, वेदनीयादिक चार अघातीयां कर्म अवशेष रहाछे, क्षुधा लागवी, तृपा लागवी ए वेदनीयकर्मनो विषयछे, मोहनीय कर्मना अभावे क्षुधा वेदनीयना उदये क्षुधा शांत्यर्थम् गृहभाटकवत् आहारादिकनु ग्रहण करेछे, तेथी पुद्गल ऐंठ चुयी कहेवाय नहीं, ममताभावे आहारादिक जे ग्रहण करेछे ते पुद्गल ऐंठ चुथनारा जाणवा

मुनिराजो के जे स्वस्वभावमां रमनारा अने परस्वभावना त्याग करनारा कडाग्रह त्याग करनारा शत्रु भिन्न सम दर्शक अध्यात्मनिष्ठ चित्तवृत्तिवतो पुद्गलने माटे क्षुधा तृपा शातिने माटे आहार पानादि ग्रहण करेछे, पण तेमा राचता नथी तेथी ते पुद्गलनी ऐंठ चुथनारा जाणवा नहीं, मेवा मिष्टान्न आदि भक्षण करतो ते भक्षण करवानी जेना मनमा लालसाछे, अने

गतिरूप ससार तेनो नाश करनारजे ध्यान तेने सेवो, तेनो आदर
करो, तेना उपर राग धरो. अने ध्यानवत पुरुषोनी सगति करो के
जेयी मति श्रुतज्ञाननी स्फुति थाय जे ध्याननु अवलबन करता
प्रसन्नचद्र राजर्षि कर्मग्रथी छेदी मोक्षे गया ते ध्याननु अवलबन
करबायी मनुष्य जन्मनी साफल्यता जाणवी

श्लोक

आतुरैरपि जडैरपि साक्षात्, सुत्यजाहि विषयाननुरागः
ध्यानवास्तु परमद्यनिदर्शी, तृप्तिमाप्य नतमृच्छति भूयः २

भावार्थ—कामातुर अने जड पुरुषोवडे पण कारण पामी पचें-
द्रियना विषयो त्यजायछे जेमके-कोइने स्त्री भोगवषीछे पण वेद-
खानामाछे, तेथी मुखे विषय त्यागे कोइ रोगी दवाखाचाना
प्रसंगे चरी पाछेछे, तेथी शाकादिकनो मुखे त्याग करेछे, पण
ते विषयनो कारणीभूत जे राग तेनो नाश थतो नथी राग दशा
त्यागवी दुर्घटछे किंतु ध्यानवत पुरुष तो मात्र परमात्म स्वरूपने
देखनारछे तेथी ते ध्यानमां तृप्ति मानी पुद्गल वस्तुने न्यारी गणी
आत्य स्वरूपमा मग थयो छतो अत्यंत आनंद भोगवेछे, तेवी ध्यान
दशा पामी फरीथी विषयनु मूल कारण रागदशाने बांउतो नथी,
कारणके ध्यानीने विषयमा थती जे सुखनी भ्राति ते टळीछे तेथी
राग थाय नहीं

श्लोक

यानिशा सकलभूतगणानां,
ध्यानिनो दिनमहोत्सव सएषः ।
यत्र जाग्रति च तेऽभिनिविष्टा,
ध्यानिनो भवति तत्र सुषुप्ति ३

सर्व प्राणीने निद्रामां जे रात्रि जायछे, ते रात्रि ध्यानदशावत मुनिने दिवसना महोत्सवरूपछे, अहो ध्यानिनी केटली उरामता तेनुं मुख अनुपमछे. अने ससारी जीव विषयमा लीन षड् जे बेलाए जागेछे ते बेळा ध्यानवाळा मुनिराजने शयनरूपछे, एमां केटलो भेदछे ते विचारवो.

श्लोक

बध्यते न हि कषायसमुत्थैर्मानसैर्नततभूपनमद्भिः
अत्यनिष्टविषयैरापि दुःखैर्ध्यानवान् निभृतमात्मनिलीनः१

भावार्थ— यानवान् पुरुष, रागद्वेषरूप कषाय जनित मनधी बधातो नधी. ध्यानीने नृपतितति आवी नमस्कार करे तोपण तेनु चित्त डोळावु नधी, अर्थात् तेना मननी स्थिरता पूर्वना जेवी बनी रहेछे अत्यंत अनिष्ट विषयना दुःखे पणनिधळपणु छोडे नहीं तेने आत्मां लीन जाणवो.

श्लोक.

स्पष्टदृष्टसुखसंभृतमिष्टं, ध्यानमस्तु शिवशर्मगरिष्ठ ।
नास्तिकस्तु निहतो यादेन, स्यादेवमादि नयवाङ्मयदंडात्

भावार्थ—स्पष्टदृष्टसुखे भर्षु एवु इष्ट ध्यान ते मोक्षना सुख करतां पण अधिकछे, पण ज्यासुधी शास्त्रनादद यकी नास्तिक भावने अतिशयपणे दृष्यो नधी त्यां सुधी नधी, पण नास्तिक भावे रहित जे ज्ञान ते मोदुछे

श्लोक

ज्ञातेष्व्वात्मनि नोभूयो ज्ञातव्यमवशिष्यते ।
अज्ञानपुनरेतस्मिन् ज्ञानमन्यन्निरर्थकम् ॥१॥

जेने आत्मने जाण्यो तेने पुन, किंचित् अय जाणवानु रहु नथी, अने यावत् आत्मने जाण्यो नथी तावत् अय सर्व जाण्यु निरर्थक छे

श्लोक.

नवानामपि तत्त्वानां, ज्ञानमात्मप्रसिद्धये,
येनाजीवादयो भावा स्वभेदप्रतियोगिन १

नवतत्त्वनु ज्ञान पण आत्मज्ञान प्रगट करवाने माटेडे, कारण के अजीवादि जे भाव ते पण आत्मज्ञानडे समायछे

श्लोक

एक एवहि तत्रात्मा, स्वभाव समप्रस्थित ।
ज्ञानदर्शनचारित्र, लक्षणप्रतिपादित १
प्रभा नैर्मल्यशक्तीना, यथा रत्नान्नभिन्नता,
ज्ञानदर्शनचारित्र, लक्षणाना तथात्मन २
आत्मनो लक्षणाना च, व्यवहारो हि भिन्नता ।
षष्ठ्यादिव्यपदेशेन, मन्यते न तु निश्चय ३
घटस्यरूपमित्यत्र, यथा भेदो विकल्पज ।
आत्मनश्च गुणाना च, तथा भेदो न तात्त्विक ४

त्या आत्मा एक पोते स्वस्वभावपणे रबोडे, ते आत्मा ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप लक्षणे करी युक्तछे

रत्ननी कति अने निर्मलता शक्ति कई रत्न रती भिन्न नथी तेम ज्ञान, दर्शन, चारित्र लक्षणथी आत्म भिन्न नथी. आत्मा अने आत्मानु लक्षण ए ने व्यवहारे जुदाछे ते षष्ठी विभक्तिना व्यपदेशथी मनायछे किंतु निश्चयथी नहीं

जेष घट अने घटनु रूप तेनो भेद विकल्प मात्रडे ते प्रमाणे आत्मा अने आत्माना गुणोनो भेद तात्त्विक नथी.

श्लोक

वस्तुतस्तु गुणानां तद्रूपं न स्वात्मन पृथक्
आत्मास्यादन्यथानात्मा, ज्ञानाद्यपि जडं भवेत्॥

भावार्थ—वस्तुतः जोता गुणोनु अने आत्मानु रूप जुदु नथी यडि भिन्न नथीए तो आत्मा ते अनात्मा थाय नानादिक पण जड थाय.

श्लोक

मन्यते व्यवहारस्तु, भूतग्रामादिभेदतः ।
जन्मादेश्च व्यवस्थातो, मिथो नानात्वमात्मनां १
न चैतन्निश्चये युक्तं, भूतग्रामो यतोऽखिलः
नामकर्मप्रकृतिजः स्वभावोनात्मनः पुनः २

जन्मावस्था बाल, युवान, वृद्ध, स्त्री, पुरुष, नपुंसक आदि भेदथी आत्माओनु विचित्रपण व्यवहारनयवाळो मानेछे, पण ए बात निश्चयनये जोता युक्त नथी अर्थात् सत्य नथी, ते नय ए कहे छे के—जीवने सर्व अवस्था नामकर्मना स्वभावथी प्रगटेडे पण ते आत्मानो स्वभाव नथी.

श्लोक

जन्मादिकोपिनियतः परिणामो हि कर्मणा,
न च स्यादात्मन्यविकारिणि

निश्चयनययी जोतां जन्म जरा मरणादिक परिणाम ते आ-
त्मानो नधी पण ते कर्मनो परिणामछे माटे अविकारी आत्माने विवे
कर्मनो वास्तविक सबध नधी.

श्लोक

यथा तैमिरकश्चद्र, मप्येक मन्यते द्विधा,
अनिश्चयकृतोन्माद् स्तथात्मानमनेकधा २

भावार्थ—जेम तिमिर रोग बाळो एक चद्रने ते तरीके मानेछे
तेम निश्चयनयना ज्ञान विनानो उन्मादक प्राणी आत्माने अनेक प्रकारे
मानेछे.

श्लोक.

व्यवहारविमूढस्तु, हेतूंतानेव मन्यते ।
बाह्यक्रियारतस्त्वान्त स्तत्त्वं गूढ न पश्यति १

भावार्थ—व्यवहारनयमां रक्त विमूढात्मा परपर्यायने पोताना
फलहेतु मानेछे माटे जेनु मन बाह्य क्रियामां रक्तछे तेवा प्राणी छुप्त
तत्त्वने देखी शकता नधी.

श्लोक

अज्ञानी तपसा जन्म, कोटिभि कर्मयन्नयेत् ।
अन्तं ज्ञानतपो युक्त, तत्क्षणेनैव सहरेत् ॥

ज्ञानविना एककोटि भवसुधी अज्ञानी जेटलां तप करे ते
तपमां जेटला कर्मनो क्षय न थाय तेटला कर्मोने एक क्षणमां ज्ञान
सहित तपश्चर्याए स्वपावे

श्लोक

तद्ध्यान सा स्तुतिर्भक्ति सैवोक्ता परमात्मनः ।
पुण्यपाप विहीनस्य, यद्रूपस्यानुचितन ॥

शरीररूपलावण्य, वप्रछत्रध्वजादिभिः ।

वर्णितैर्वीतरागस्य, वास्तवीनोपवर्णना ॥

पुण्यपापरहित परमात्माना स्वरूपनु चिंतवन करवु तेने ध्यान कहेवु अने स्तुति तथा भक्ति पण तेज जाणवी.

पण शरीरना वर्ण लावण्य-वम, छत्र ध्वजाओथी परमात्माओने करी परमात्माने बखाणवा एवी जे स्तुति ते वस्तुत वास्तविक स्तुति नथी

श्लोक

व्यवहार स्तुतिः सेय वीतरागात्मवर्तिनां; ।

ज्ञानादीनां गुणानां तु, वर्णना निश्चयस्तुतिः ॥

पुरादिवर्णनात् राज, स्तुतिः स्यादुपचारतः ।

तत्त्वत. शौर्यगांभीर्य्य धैर्यादि गुणवर्णनात् ॥

श्री तीर्थकरना शरीरादिकनु वर्णन करवु एवी जे स्तुति ते व्यवहारे जाणवी. अर्थात् ते व्यवहार स्तुति जाणवी. पण वीतराग परमात्माना ज्ञानादिक गुण प्रशसवा अने ते गुणो पोताना आत्मा-मां सत्ताए रखाछे एम जाणी तेनु ध्यान करवु. तेज खरी स्तुति छे परमात्म स्वरूप हु छु, एम सतत दृढ निश्चयथी चिंतववु ते निश्चय स्तुति जाणवी.

जेम देश नगरादिकना वर्णनथी राजने बखाणेले ते उपचारे स्तुति जाणवी अने राजानु बल गाभीर्य्य धैर्यादिक गुणोनु वर्णन ते निश्चय स्तुति जाणवी

श्लोक

पुण्य पाप विनिर्मुक्तं तत्त्वतस्त्वविकल्पकं ।

नित्यं ब्रह्म सदा ध्येयमेवा शुद्धनयस्थितिः ॥

क्षमा खड्ग करे यस्य, दुर्जन. किं कश्चिद्यति;

अतृणे पतितो वान्हि स्वयमेवोपशाम्यति

८

क्षमा एज भव्यात्माओनो नाथ जाणवो, माता पिता मित्र समान पण क्षमा जाणवी. क्षमा एज मोनी शोभाछे क्षमा एज कीर्त्ति जाणवी. कारण के जेनामा क्षमा नथी अने क्रोत्रे करी धमधमायमान सदा रहेछे तेनी कीर्त्ति जगमां थती नथी क्षमाथी कीर्त्ति उत्पन्न थायछे क्षमा तेज सत्य जाणवु क्रोधीमां सत्य क्यांथी होय. क्षमा एज मोटी पवित्रताछे, क्षमा विना म्लान पण लेखे नथी दान पण लेखे नथी क्षमा रहीत साधु होय तो ते नामनो साधु जाणवो, ज्यां क्षमा नथी त्यां गभीरता रहेती नथी. क्षमा एज मोडु तेजछे, मुखकारक आनन्दप्रदा पण क्षमाछे, जे क्रोधी होय ते आनन्द क्यांथी पामे ? क्रोधीना अनेक वैरियो दुनीयामां होयछे तेथी क्रोधीने निगते उध पण आवती नथी बळी क्रोत्री मनुष्यनो कोइ मित्र पण होतो नथी कारण के ज्या त्या क्रोधथी तेना उपर अमीति जलनी दृष्टि थया करेछे, क्षमा कल्याणकारीछे, जे मनुष्यमां क्षमा नथी ते पोताना तथा परना आत्मानो घातक बनेछे. क्षमा मोटी पूजाछे कर्मरूप रोगथी रहीत थया माटे क्षमा पध्यछे क्षमा एज मोडु हितछे क्षमा ए मोडु दानछे जेनामा क्षमाछे ते पोताना आत्माने ज्ञान दर्शन चारित्र गुणोजु दान आपेछे क्षमा तुल्य अन्य कोइ तप नथी वृरगडु ऋषिए क्षमारूप तपथी आत्महितनी सिद्धि करी श्री वीरभगवाने क्षमाबडे अनेक उपसर्गों सहन कर्या, श्री मेतार्यमुनिए क्षमाथी आत्महित साधु श्री स्कंधरुमुरिना शिष्योने श्राणीमां घात्री पील्या पण तेमणे क्षमाथी कर्म शत्रुनो पराजय करी आमिरु लक्ष्मी प्राप्त करी समरादित्य केवळीए साधु अवस्थायां क्षमाए करी घोर उपसर्ग सहन कर्या. क्षमाधारक अनेक मुनिवरोए

परमात्मपद प्राप्त कर्तुं भविष्यत् काले पण करशे, अतरमा क्रोधरूप अग्नि सळगी रहोछे अने बाह्यी छठ अदृम विगेरे करे तोपण आत्महित थतुं नथी. क्रोध नररुनु वारणुछे. क्रोध फणीधर सर्प समानठे ते क्षमारूप नागदमनी औपधीधी वश थायछे. क्षमाना समान तप नथी, संतोष समान सुख नथी टया समान धर्म नथी.

राम अने क्रोध सहीत जे प्राणीठे ते जगलमा जोगी थइ वास करशे तो पण थु थयु ? अलवत कड नही. अथवा जेणे काम क्रोध जीत्याछे ते अरण्यमा जइ थु करशे ? अलवत् कड नही काम क्रोधनो ते जय कर्पोछे तो तु अरण्यमा जइ थु करीश ? जेनु चित्त काम क्रोधादिक रुपाय सहीतठे तो तेने कपायला वल्ल पहेरवावडे करीथु ? अथवा जो वित्तमा रामक्रोधादिक करायनी उत्पत्ति नथी तो तेवा पुरुषने कपायला वल्ल पहेरवायी थु ? अर्थात् कड नही

जेणे इद्रियो दमी नथी तेने अरण्य थकी थु ? तथा अदातने आश्रमोवडे करी थु ? अर्थात् कड नही. जेने इद्रियीने जीतीछे एवो दान्त पुरुष जे ठेकाणे वसे ते अरण्य तथा आश्रम जाणवु, माटे भव्यात्माओ क्षमा धारण करो. क्षमा रूप खड्ग जेना हाथमाछे तेने दुर्जुन थु करशे ? अर्थात् कड नही, तृण विनानी जगाए पहेलो अगारो पोतानी मेळे शान्त थइ जायछे, तेम आपणा उपर अन्य पुरुषे क्रोध करी पण आपणे क्रोध करीथु नही अने क्षमा राखीथु तो अन्य पुरुषे आपणा उपर वरसावेलो क्रोध पोतानी मेळे शान्त थशे.

श्लोक.

क्रोधान्धाः पश्य निघ्नति पितरं मातरं गुरुम् ।

सुहृदं । द्वारा नात्मानमपि निर्घृणाः ॥ १

हे भव्य देव क्रोधान्ध जीरो पिता माता अने गुरूनो पण-
नाश करेछे तेमज मित्र सढोडर स्त्री तथा पोगाना आत्मानो पण
निष्ठुर पुरखो क्रोधवशे घात करेछे. माटे क्रोधने त्यागी क्षमा धा-
रण करवी, भव्य प्राणी क्षमा वारण करी सामायिक समभाव स्वरूप
करे आत्मा अने आत्माना गुणो ज्ञान दर्शन चारित्रादिकनु स्वरूप
मनमा विचारे-

यत. श्लोक

नचात्मन पृथक्ज्ञाना, दि त्रय विद्यते क्वचित् ।
ज्ञानादि त्रय मेवात्मा, नास्य कापि परा भिन्दा ॥१॥
आत्मानमात्मना वेत्ति, मोहत्यागाद्य आत्मनि ।
तदेव तस्य चारित्र । तज्ज्ञान तच्च दर्शनम्- ॥१॥

आत्माथी पृथक् ज्ञानादिक नथी, ज्ञानादिक स्वरूप आत्मा
छे, व्यवहारथी तेनो भेद जाणवो

श्री हरिभद्रस्वरियोगमद्रीपमां सामायिकनु लक्षण फहेछे.

श्लोक

अतीत च भविष्य च यन्न शोचति मानसं ।
तत् सामायिक मित्याहु, निर्वातस्थानदीपवत् १
निस्सग यन्निराकार, निराभास निराश्रय ।
पुण्यपापविनिर्मुक्त, मन सामायिक स्मृत ॥२॥
गते जोको न यस्यास्ति नैव हर्ष समागते ।
शत्रु मित्र सम चित्त, सामायिक मिहोदित ॥३॥

भावार्थ अतीतकाळमां जे थइ गयु, जागता सवधी वा पग्म-
वधी तेनो विकल्प सकन्य कर नई, वा अतीतकाळ सवधी कोइ

घात याद करे नहीं. साराश के अतीतकाल सगधी शोक करे नहीं. तेम भविष्यकाल सबधो स्व अने पर आश्रयी विकल्प सकल्प करी शोक करे नहीं. विकल्प सकल्प रहीत आत्मानो स्वउपयोगे अवस्थीति—तेने सामायिक कहेछे कोनी पेठे ते दर्शावेछे, वायु रहीत दीवानो ज्योतिनी पेठे दीवाने वायु लागता ज्योति चचळ थायछे, तेम आत्मानां पण विकल्प सकल्प यता आत्मा चचळ थइ परस्वभावमां पढेछे. माटे एकाग्रचित्ते स्थिरपणे एक आत्मस्वरूपमा उपयोग राखवो ते सामायिक जाणवु मनमा कोड पण वस्तु चिंतववी नहीं, मननी साये कोड पण वस्तुनो सग थाय नहीं. अर्थात् मन अन्य वस्तुना संगथी रहीत होय, कोडपण वस्तुनो आकार मनमा चिंतववो नहीं, मनमा कोड पण वस्तुनो आभास रहे नहीं. कोडपण वस्तुना आश्रय रहीत मन निराश्रित होय, मन पुण्य अने पापना व्यापार रहीत होय, मनने आत्म स्वरूपमा लीन करी देवु, जेम भरउघमा कोड पण वस्तुना व्यापार रहीत बाह्यथी देखता जणायछे, तेम भरउघनी पेठे पस्वस्तुने भूली अखड निर्मल आत्म स्वरूपमा आत्म स्वभावे जागवु, अने परस्वभावनी चिंतवना करवी नहीं अने तेने सामायिक कहेछे

गतकाल, गतअवस्था, गतवस्तु आदिने विषे मनमा शोक थाय नहीं, अने आवतो काल, आवनार भावीकाले वस्तुना इष्ट सयोग तेनो मनमा हर्ष थाय नहीं, अने शत्रु तथा मित्र उपर समचित्त होय एवी जे आत्मानो अवस्था तेने सामायिक कहेछे. आ उपरना त्रण श्लोको रुथाकोप ग्रथमा कहाछे जे भव्यात्माओने क्षमावडे तथा समपणे सामायिक वर्तेछे तेमने क्रोधादिक शत्रुओ पराभव करी शकता नथी.

भव्यात्माए मुक्तिपडनी चाहना राखता अदेखाइतो - नाश क

रखो जोइए अदेखाइ रूप नागण हृदयमा पेसना आत्माना गुणो
 हणायछे परना गुणो सांभरी तथा परजीवनी कीर्ति सांभळी प्राणी
 विचारे छे के-हाय, हाय ते माराथी वधारे बबगायछे लोकोपा
 तेने वधारे मान मछेछे, एनी जो भूख वाहु वा एना उपर कइ
 फलक चढे तो ठीक थाय एम पाप विचार करी लोकोनी आगळ
 निद्रा कर. खोटां कलसो चडावो. ए सर्व भदेखाइनु
 फलछे नागण कदापि कोइने करे तो सारी पण अदेखाइए
 नागिणी जे प्राणीने हसेछे तेनु आ भवमा तथा परभवमा पण
 खराय थायछे, अदेखाइ ज्यां सुधी हृदयमां त्यां सुधी आत्मज्ञान
 थतुं नथी वकील वकीलनी साथ अदेखाइ, साधु साधुनी साथ
 अदेखाइ, वेपारी वेपारीनी अदेखाइ, नोरु गोइने अदेखाइ प्राय
 रहेवानो सभवछे, माटे आमार्यो प्राणी मनमां विचारे के-मर
 प्राणी, पोतानां कर्मयोगे ज्ञाना वा अज्ञाना भोगवेछे कोइनी कीर्ति
 थाय तेमां मारे जा कारणथी अदेखाइ करवी ? जेवा कर्म ते प्रमाणे
 यश वा अपयश थया करेछे, तेमा मारे गु ? यण वा अपयण, मान
 वा अपमान ए कइ आत्मिक वस्तु नथी हु आत्मा तेनाथी भिन्नहु,
 हु कर्मयोगे कोइ वस्तु राजी थयो ते वस्तु याचकोण कीर्ति गाइ,
 पण तेमानु आजे कइ नथी वळी कोइ भवमां अपमान पण घगां
 थयां हसे पण तेमानु हाल कइ नथी जे पोतानी वस्तु नथी तेमा
 अहभाव सकलरी वम रति अरति करवी जोइए, कयुछे के-

करहिक फाजी करहिक पाजी, करहिक हुआ अपभ्राजी,
 करहिक जगमें कीर्ति गाजी, सब पुद्गलकी वाजी आप म्व० ?

धरतशेठ श्रीश्रीपालनी अदेखाइथी अते मरण पाम्पा अने
 दुर्गतिमां गया धरतशेठे अदेखाइथी शु शु कृय कर्षुं नथी, दुनी-
 यामां अदेखाइ करतारनी पढती थया विना रहेती नथी. अदेखा-

इथी निंदा रुपट हिंसा, असत्यादि दोषो उत्पन्न थायछे, विशेषे थु कहेवु ? आत्मारथी पुरुषे अदेखाइनो नाश करवो. तेनो नाश करवा सत पुरुषोनी सगति करवी.

जे पुरुषने मानदशा होयछे ते मानी कहेवायछे, मानी पुरुष कृत्य अकृत्यने विचारतो नथी, तथा तेने जरा पण शान्ति मळती नथी अने ते विद्या धन पामी शकतो नथी, लघुतायी प्रभुता थाय माटे लघुता भावी माननो नाश करवो. रावण दुर्योधनादि पुरुषोए मानथी दुःखराशि ग्रहण करी. गमे तो राजा होय. करोडाधिपति होय तोपण मान दशा ज्यारे ठूटे त्यारे कल्याण थायछे, बाहुवल मुनिवग्ने मान केवलज्ञानमा विन्नकारक थयो. अने ज्यारे मान दशा छोडी त्यारे केवलज्ञान उत्पन्न थयुं श्री यशोविजयजी उपाध्याय मान नामना पाप स्थानकनी सझायमा कहेछे के-

विनयश्रुत तपशील त्रिगुण हणे सवे, माने ते ज्ञाननो भजरु होय भवोभवे; लुपक छेरु विवेक नयणनो मानछे, एहने छडे तास न दुःख रहे पछे.

इत्यादि विचारी भव्य पुरुषोए मानदशा त्यागी आत्मस्वरूप-मा आयुष्य गाळवु मायास्वरूप रुधाकोश ग्रये आ प्रमाणे छे.

माया परित्याग महो विधाय, सदार्जव साधुजना विधत्ते यथैहिका मुष्मिक कामितानां, सिद्धिर्भवेद्दःपरमार्थशुद्धा

यतः श्लोक.

दंपती पितरः पुत्राः सौदर्याः सुहृदो निजाः ।

ईशा भृत्यास्तथान्येऽपि माययाऽन्योऽन्य वंचकाः ॥१॥

सर्व जिम्हं मृत्युपद मार्जवं ब्रह्मण. पदं ।

एतावान् ज्ञान विषयः प्रलापः किं करिष्यति. ॥१॥

समग्र विद्या वैदुष्येऽ, विगतासु कलासुच ।
धन्यानामुपजायेत । बालकानामिवाज्व ॥३॥

अज्ञानामपि बालानां, आर्जव प्रीतिहेतवे ।
किं पुन सर्वं शास्त्रार्थं परिनिष्ठित चेतसां. ॥४॥

श्रुताब्धि पारमाप्तोपि । गौतमो गणभृद्धर ।
अहो शैक इवाश्रोपीत् आर्जवाद्भगवाद्भिर ॥५॥

अशेषमपि दुःकर्म रुज्वा लोचनया क्षिपेत् ।
कुटिलालोचनां कुर्वन् अल्पीयोपि विवर्धयेत् ॥६॥

काये वचसि चित्तेच समतात् कुटिलात्मनां ।
न मोक्ष किं तु मोक्ष स्यात् सर्वत्रा कुटिलात्मनां ७

तप क्रिया ज्ञान विचक्षणा अपि ।

कौटिल्यमेक न परित्यजत ॥

दुर्योनि दु खानि लभति ते नरा. ।

'साध्वी यथा वीरमतीति नाम्नी. ॥ ८ ॥

अहो आ जगत्मां जे खरेखरा गुणोथी साधुजनोडे ते कप-
टना त्याग करी सरलताने धारण करेछे, आ भव अने परभव
सदधी इच्छित कार्यानी सिद्धि सरलताथी थायछे अने परमार्थथी
विचारतां धर्मनो अधिकारी पण निष्कपटी भव्यात्माडे स्त्रीओ पि-
ताओ, पुत्रो, मित्रो सहोदरो, स्वामीसेवक आदि मायाबद्धे परस्पर
घचरु जाणवा मृत्युने देनार (मृत्युपद) कपट जाणवु सरलता
ब्रह्मनु स्थान आत्माने हितकारकडे.

समग्रविद्याएकरी विद्वान होय अने सर्वकलानो वेत्ता होय तोपण कपटनो त्याग थवो मुडकेलछे. वन्यछे एवा पुरुषोने के नाना भोज्या वाळकोनी पेठे सरलताने धारण करेछे.

जेने तत्त्वजु ज्ञान नथी एवा वालकोनी सरलता पण प्रीति माटे थायछे तो जे सर्व शास्त्रार्थना पारगामीछे, एवा पडितोनी सरलता आत्माने विशेष हितकारी थाय तेमा थु कहेबु ?

श्रुतज्ञाननो दरियो एवा गौतम गणधरे पण सरलताथी भगवाननी वाणी साभळी अहो केवी आश्चर्यता ?

सरलपणे आलोचना करवाथी घणां कर्मने प्राणी खपावेछे, कुटिलताथी आलोचना करतो अल्प पापी होय तो पण प्राणी पापने वधारेछे, जेनी कायामा मनमा वचनमां कुटिलताछे, एवा जीवो उत्कृष्ट तप तपे, आकरी क्रिया करे, वैराग्यरगमा झीलया होय एवा देखाय तोपण तेनो आत्मा कर्मरहित थइ मोक्षपद पामतो नथी, मायाए रहीत जीवोनो मोक्ष थायछे एमा सदेह नथी. विचित्र प्रकारना तप अने विचित्र प्रकारनी धर्म सगधी क्रिया अने ज्ञानमा विचक्षण एवा पुरुषो पण एक समग्रदुःखमूलभूता कुटिलताने सेवता दुर्योनिमा उपजी विचित्र प्रकारना भयकर दुःखोना भागी थायछे. जेम वीरमती नामनी साभवी कुटिलताथी दुःख पापी तेम कपटी पुरुषो पण धर्म विषयमा कुटिलता करी चतुर्गतिरूप ससारमा परिभ्रमण करेछे, माटे आत्माथिं पुरुषोए मने करी वचने करी तथा कायाए करी कुटिलतानो त्याग करवो, निष्कपटी मनुष्यने धर्म परिणमेछे. उटायीराजानो घातरु वाह्यथी साधु अने अत्यंत विनयव्रत एवो विनयरत्न कुटिलताथी मरी नरकमा गयो, तेम तेनी पेठे जे धर्माचारमा वाह्यथी जुदा आचरण अने मनमा जड एम करगे ते धर्मरत्न पापी शकगे नहीं. अने दुःखना

भागी यशे भावधर्मनी प्राप्ति कोइ निरला जीवने थायछे. द्रव्य धर्म तो कपटी पण आइरेछे, आत्मज्ञानी समक्ती जीवने भावधर्मनी प्राप्ति थायछे, सारात्र के मायानो त्याग करशे ते परमात्मपद पामयाने योग्य थशे. श्रीयशोविजयजी उपा याय कहेछे के-

श्लोक.

- दमेन व्रतमास्थाय, यो वांछति परपद ।
 लोहनाव समारुह्य, सोऽब्धेः पारयियासति ॥१॥
 केश लोचधरा शम्भा, भिक्षा ब्रह्मव्रतादिक ।
 दमेन दुष्यते सर्व, त्रासेनैव महामणिः ॥२॥
 सुत्यज रस लापत्य, सुत्यज देह भूषण ।
 सुत्यजा कामभोगाद्या, दुस्त्यज दभसेवनम् ३
 स्वदोष निन्द्वो लोफ, पूजास्यात् गौरव तथा ।
 इयतैव कदर्यते, दमेन व्रत बालिशा ४
 अहो मोहस्य माहात्म्य, दीक्षा भागवतीमपि ।
 दमेन यद् विलुपति, कज्जलेनेव रूपक ५
 आत्मोत्कर्षात् ततोदभात्, परेपा चापवादत ।
 बध्नाति ऋटिन कर्म, बाधक योग जन्मन ६

इपट्टस्तिथी पचमहाव्रत ग्रही जे जीवो परमपदने वांछे छे, ते जीवो लोहनी नावपा बेसी समुद्रनी पार पामता इच्छता होय तेम जाणवा

केशनु लुचन करवु साधुने सहेल छे, सूर्यसापी दृष्टि राखी आतापना लेवी सहेलछे, पृथ्वीने विषे शयन करवु, लज्जानो

त्याग, गृहे गृहे भिक्षा मागवी, काम विकारने जीती ब्रह्मचर्य पा-
ळवु आदि सर्व सहेलछे किंतु साधुने कपटनो त्याग करवो मुश्के-
लछे सर्व त्रत, तप क्रियादि कपटथी दुषित थायछे. जेम सुदर
निर्मल मणिने डाग्रलागवाथी तेनी काति मद्र थायछे तेनी पेडे अत्र
समजवु.

रसत्रु लोलपीपणु सुखे त्यागी शकाय, देह भूपग पण त्यागी
शकाय. कामभोगादिने पग सुखे त्यागी शकाय पग कपटनो
त्याग करवो घगो विकटछे. जेम जेम विद्वत्ता वृद्धि पामे तेम तेम
आत्म उपयोगी शून्य मुनि कपटमा पोतानी विप्रानो उपयोग करे छे
कपटभाव त्यागवाथी सुख थायछे, कोइ प्राणी मान पूजानो
लालचे उपरथी वाद्य चारित्र शुद्ध पाळे, पचसपितिनो पाद्यथी
खप करे, त्रग गुप्तिनो वाद्यथी सारी रीते खप करे उपरथी एवो
वैराग्य जणावे के लोको तेना उपर फीदा फीदा थइ जाय पण
अतरमा आत्मानो उपयोग होय नहीं अने अभ्यतर निर्मल परि-
णाम न होय पोताना गच्छनो मतनो पक्ष सरल करवानी ला-
लसा बनी रही होय, आत्मा अने परमात्मानु स्वरूप थु छे ? तेनो
तो विचार पण करे नहीं, व्याख्यान वाणीथी हजारो जीवोने र-
जन करे, बोलवानी कळा एवी होय के जेथी विचारा मुग्ध जी-
वोने बश करी दृष्टी रागीया करे, एवो साधु कपटवृत्तिथी
परमात्म स्वरूप पामी शकतो नथी. ज्वारे साधुनी पग आवी स्थीति
छे तो अल्पज्ञ सत्सारना खाडामा पतिन श्रावकवर्गतो भाग्ये कप-
टनो त्याग करी शके कपट रूप फालो नाग जे भव्यना हृदयमां
पर निद्रा, स्वमहत्त्वता, परापकर्ष्य फणीवडे करी सहीत बसतो
होय ते प्राणी दुःखनी परपराने पामेछे अल्पज्ञ पुरुषो कपटीयोना
कपटने नथी, जे मुनि वाद्य क्षणिक मान पूजा की-
र्तिनी आगळ ठाकठाक आवरण देखाडी रजन.

કરે તે શ્રાવકની આગળ એ વાલેકે તે ભટ્ટિક મહામુનિ તેમને
જાણે પણ પોતાનામા કડ્ડ હોય નહીં

શ્રી ચિદાનંદજી મહારાજ કહેછે કે—

કથની કથે સહુ કોઈ, રહેણી અતિ દુર્લભ દોઈ,
જય રહેણીકા ઘર પાવે, તવ કહેણી લેવે આવે ?

નિષ્કપટી અને કપટી સાધુઓની પરીક્ષા કરવી દુર્ઘટ છે, મહા
બુદ્ધિના ધણી એવા અભયકુમાર સરસ્વા કપટી વેશ્યા શ્રાવિકાનુ
કપટ જાણી શક્યા નહીં, તો વાલજીવોનું શું કહેવું ? જેને માન
પૂજા કીર્તિની લાલચ ગડ્ડે એવા પુરુષોને ધન્ય છે, વિવેકી સુદ્ધ
પુરુષ દસની પેઠે કપટી અને નિષ્કપટી સાધુઓની પરીક્ષા કરી
દે છે, કપટી એમ ધારે છે કે હું અંચને છેતરું છું પણ કપટી તૈના
આત્માને કર્મ છેતરી પોતાને વશ કરે છે તે જાણી શકતો નથી
આસ્વી દુર્નિયામા કપટજાલ મોહ રાજાએ પાથરી છે તેમા મનુષ્યા-
દિક રૂપ માછલા વિચારાં અતર્ના અજ્ઞાને સપડાય છે. અને વિવિધ
દુ.સ્વ પામે છે, જેને સ્વેસ્વરુ નિજ આત્માનું જ્ઞાન થાય છે તે કપટ-
જાલને છેદી નાસે છે, નિષ્કપટી પુરુષોની વાર્ણીમા દ્વિધાભાવ
રહેતો નથી, નિષ્કપટી મનુષ્ય જેવું હોય તેવું કહે છે. કપટીની
દ્વિધા કાક સદૃશ છે પોતાના દોષને ગોપવનાર લોક પોતાનું ગૌરવ
માન પૂજા જેમ ધાય તેમ દમથી આચરણ કરે છે, અહો કેટલી અ-
જ્ઞાનતા ? જેનો અતિ ત્યાગ કરવાનો છે તેનામા મુદ્ધાવું એ વાલજી-
વોનું લક્ષણ છે માણી મનમા પરમાર્થબુદ્ધિથી વિચારે તો કપટ
કરવાનું કડ્ડ કારણ નથી એમ વિશ્વાસ થાય સુરુમહારાજને પણ
કપટી શિષ્યનો વિશ્વાસ આવતો નથી જ્ઞાની ગુરુરાજની પાસે જડ
કોઈ માણી કપટી પૃચ્છા કરે તો તે તુરત જાણી લે છે અને તેથી
પૃચ્છકને અયોગ્ય જાણી મૌન ધારે છે, કપટી એવું જાણીને કપટ

करेछे के, हु युक्ति रचु छु, हु कळा करुछु, हु वोलुछु, ते अन्य कोइ जाणतु नथी पण याट राख के प्रथम तो कपटने जाणनार तारा शरीरमा रहेलो तारो आत्माछे. वीजु सिद्ध भगवत ज्ञाने करी तारु कपट जाणी रद्याछे, कोनाथी छानु तारु कपटछे. हे मूर्ख जीव ! तु चार घडीना चादरणानी पेटे आ दुनीयामा थोडो काल रही परभवमा चाल्यो जनारछे, तारा शरीरनी खाख थइ जशे, हाडकाना चरेचरा थइ जशे. करेला कर्म परभवमा भोगववा पइशे. तु तारी मेले विचार तो तारा आत्मा न्यायाधीशनी पेटे न्याय करी आपशे, कपट विनानी तारी केटली जीदगी गइ ? तेनो विचार कर-तारु कपट कदापि तु अत्र छानु राखीश पण परभवमा केम छूटीश ? राजा, राणा, शेठ, गरीब आदि सर्व कपट करशे तो ते तेनु फल भोगवशे. पोताना आत्माने सुबुद्धि-थी प्रश्न करो के हे आत्मा तने कपट मियछे ? न्यारे आत्मा तर-फथी विचार यशे के कपट करवु ते महापापछे

- अहो मोहराजानु भाहात्म्य तो जुओ के प्राणी श्री तीर्थक-रोक्त भागवती दीक्षाने पण काजळें करी चित्रामणनो जेम लोप थाय तेम कपटे करी लोपी नाखेउ

पोताना आत्मानी वडाइ करे, घणु कपट धरे अने पारका अवर्णवाद बोले तेथी प्राणी कठीन कर्म बाधेछे, तेवा पुरुषो योगी-ना जन्मने बाध करनाराछे ते शुद्ध चारित्र पामी शके नहीं. श्री यशोविजयजी उपाध्यायजी “माया” विषे कहे छे के—

नममास उपवासीया सुणो सताजी ।

शीत लीए कृश अन्न गुणवंताजी ॥

गर्भ अन्नता-पामशे सुणो सताजी ।

आरभ्यते पूरयितु, लोभगर्तो यथा यथा ।

तथा तथा महच्चित्र, मुहुरेपो विवर्धते १३

लोभस्त्यक्तो यदि तदा, तपोभिरफलैरल

लोभस्त्यक्तोनचेत्तर्हि, तपोभिरफलैरल १४

लोभमूलानि पापानि, रसमूलानि व्याधय

स्नेहमूलानि दु खानि, त्रीणित्यक्त्वा सुखीभव १५

सर्व दोषनु स्थान लोभछे, गुणनो ग्रास करवाने लोभ राक्षस समान छे व्यसनरुप वल्ली कटभूत लोभ जाणवो एम सर्वार्थनो बाधक लोभ जाणवो निर्धन सो रूपीयाने इच्छे, अने सो रूपीया मळे हजारनी इच्छा, अने हजारनी अधिपति थये लाखनी इच्छा थाय लक्षमळे करोडनी इच्छा थाय कोटीश्वर नृप रद्धि चाहे, राजा चक्रवर्तिनी पदवी इच्छे अने चक्रवर्ती देवतानी रूद्धि चाहे छे. देवताने इद्रनी पदवानो लोभ रहे छे एम मूलमा लनु अने अते वृद्धिने पामनार लोभ शरावनी पेठे जाणवो

पापनु मूळ हिंसा अने कर्मनु मूळ जेम मिव्यात्व, अने रोगोंने विषे जेम राजरोग (क्षयरोग) सर्व रोगनु मूळछे तेम लोभ सर्व प्रापनो गुरु छे अहो लोभनु साम्राज्यतो जुओ पृथ्वीने विषे एक छत्र लोभनु राज्यछे, वृक्षो पण निधानने पामीमूळीए करी सताडेछे

द्रव्यना लोभमा द्वीन्द्रियादि जीवो पण सपडायाछे पूर्व भवना निधान उपर मूर्च्छावडे अधिरोहण करे छे

सर्प, उदर, गिरोली प्रमुख पण धनना लोभमा पूर्व भवनी मूर्च्छाना योगे फसायछे. अने निधानना उपर वास करेछे

भूत प्रेत पिशाच यक्षादिक पण धनना अधिष्ठाना तरीके रहे छे, अहो लोभनी केवी सत्ताके देवताओ सरखा पण धनादिकनी मूर्च्छाए नीच योनिमा अवतरेछे भोगा भोगा मुनिवरो के जे उपशा-

न्तमोह गुणठाणे क्रोधादिकने झीनी चढ्याछे तो पण तेमने लोभ धको देइ पाडी नाखेछे

लोभधी राजाओ ठाकोरो विगेरे गामनी सीमोनी तकरारमा हरसाल ऋश करी वैर धारण करी लडी मरेछे, जुओ प्रत्यक्ष रूशीया अने जापान देश लोभना कारण माटे मोटी मोटी हाल लडाडओ करी अने तेमा लाखो जीवोनो सद्धार थयो.

लोभरूपी खाडाने पूरवा माटे जेम जेम प्रयत्न करीये छीए तेम तेम वृद्धि पामेछे. अहो केतु आश्चर्य ?

लोभ त्याग्यो तो तपवडे पण शु ? अर्थात् लोभना नाशथी तप तपवानी कइ जर नही अने कडापे जो लोभ हृदयमा छे तो तपश्र्यावडे करीने शु ? अर्थात् कइ नहीं लोभ मूळ भूत पाप कृत्य जाणवा, रसमूळ भूत व्याधियो जाणवी स्नेह मूळ दुःखो जाणवा, एटले स्नेहथी भव दुःखो उत्पन्न थायजे, माटे हे प्राणी ए व्रण वस्तुओनो त्याग करी तु मुखी था.

लोभधी कपट थाय लोभधी जोवहिंसा थाय, लोभधी असत्य वचन बोलतु पडे, लोभधी चोरी करवानु मन थाय. लोभधी कृत्य अकृत्यनु भान रहे नहीं. लोभधी लज्जा दूर रहे, लोभधी धर्मनाश पामे, लोभधी विवेकनो नाश थायजे. लोभी पुरुषने मुखे निद्रा पण आवती नथी, लोभी पुरुष गरज वखतेगधेडाने पण वाप कहेजे लोभी पुरुष सदा पारकु खरान चाहेजे, लोभी पुरुष मातापिताने पण छेतरेजे, लोभी पुरुष साधु पुरुषनु पण अपमान करेछे, मम्मण श्रेष्ठ जेवा लोभी पुरुषो परभवमा पण सुख पामी शकता नथी, आ दुनीयामा लोभी पुरुष शु शु कृत्य करी शकता नथी. लोभी पुरुष धनने माटे घात करेजे तेनु मरण इच्छेजे, जुओ लोभ वशे धवल श्रेष्ठ राजाने मारवा माटे गया, पण खोटे ते पडे

तेनी पेहे पोते मरण पाम्या अरे दुर्गतिमा गया लोभघकी सागर
 श्रेष्ठ समुद्रमां वृही मरण पाम्या लोभयी पुत्र पोताना पि
 तानो राज्यने माटे घात करेछे, करावेछे, वाछे, लोभी पुरपनीपासे
 लाखो रुपैया होय तो पण मुखे उर्या सफता नयी, लोभी पुरुष
 पापकर्मयी जरा मात्र पण दरतो नयी साधुओने वस्त्र पात्र शि-
 प्यादिकनो लोभ होय छे ज्ञानी पासे तेंमांनु फड नयी. ज्ञानी
 वस्त्र पात्रादिक राखे छे छता ते उपर मोह राखतो नयी ज्ञानी
 मनमा एम विचारे छे के हु कइ वस्तुनो लोभ करु जे वस्तुनो
 लोभ थाय छे ते वस्तुक्षणीकूठे अने मारी नयी, राज्य धन, कुटुंब,
 पुत्र, पुत्रीओ, घर, हाट, वस्त्र, विगेरे वस्तुओ आत्मानो नयी अने
 आत्मानो साथे आवनार पण नयी फक्त अज्ञानताए जीव परव-
 स्तुने पोतानी मानी तेना लोभमा विचित्र दु खो पामेछे मरी गया
 बाढ सर्व वस्तुओ ज्या दृशे त्यानी त्या रेदृशे. माटे अरे जीव जरातो
 विचार ' ' पृथ्वी, घर, हाट, राज्य, लक्ष्मी मूकी घणा मनुष्यो चाल्या
 गया तेम तु पण एक त्विसा सर्व मूकीने चाल्यो जवानो, जे का
 यामा सारु सारु मिष्टान्न तु भरेछे, जे कायामा तु वस्योछे, जे
 कायावडे तु हाली चाली शकेछे, जे कायाने तु हवरावे धोवरावेछे
 ते काया पण अते तारी ववानी नयी तो तु लोभशा माटे करेछे ?
 धुमाडाना वाचक भग्वा जेम नफामाछे ते परवस्तुने पोतानी मानी
 लोभ करयो ते पण खोंटोछे खारु जल पीवाधी जेम तृप्ति वळती
 नयी तेम लोभ करवाधी शान्ति सुख मळता नयी माटे अमृत स-
 मान मतोप गुणनु हे जीव तु सेवन कर के जेथी शान्ति सुख मळे.



संतोप स्वरूप

श्लोक=रुथाकोप ग्रये

यथा नृणां चक्रवर्ती, सुराणां पाक शासनः
 तथा गुणानां सर्वेषां, संतोप परमोगुण १
 संतोपयुक्तस्य यते रसंतुष्टस्य चक्रिण.
 तुलयासंमितो मन्ये प्रकर्षं सुखं दुःखयोः २

३

।। ।

[४

इद्र, तेम सर्व
 यतिना जेटलु
 मन करवावडे
 क्तिखी मुखनं
 ए एवा सतोप
 केरामा शयन
 मुखी जाणवो
 ख होतु नयी.
 १. सतोप अ
 वा समर्थजे.
 सतोपी मोटे
 १ नयी आ-

त्मनान थया बिना तात्त्विक सतोप यतो नथी माटे आत्मज्ञान क
रतां सर्व दोषो नाश पापशे चत्रयतीं सरखा मोटा राजाओ पण
लक्ष्मीनो त्याग करी सुखी थया

आत्माथां भव्योए पारकी निदानो त्याग करवो, कारण के
निंदक चढालठे निंदक मोटो पापीउं नाम देइने निंदा करे तो
अधम जाणवो परमा भूल होय पण तेना पटे निंदा करवापी
कइ फायदो यतो नथी पापमा शक्तिवाळा पुस्पोने निंदा करवानो
स्वभावउं. गगानलमा स्नान करनार होय, अडसठ तीर्थनी यात्रा
करे किंतु जो ते निंदक छे तो ते अपवित्र अने दुष्ट जाणवो, वहा
दूर पुस्पो निंदा करता नथी. निंदक कागडाना करता पण
भूडोउं. अदेखाइथी निंदा उत्तन थायछे अने निंदाथी क्लेश
उत्तन थायछे अने ते सामा पुस्पना जाणवामा आवे तो परस्पर बैर
वधायछे, निन्दक आभवमा तथा परभवमा पण दुःख पायेछे, निंदा
करवाथी मित्रनी मित्राः पण तूटेउं

जो तमे गुणी थवाने चाहताहो के मनुष्यनी धोनी वाजू तरफ
दृष्टियो पण काळी वाजू तरफ दृष्टियो नहीं, हालना चसतमा
कोइ सर्व गुणी नथी, कोइ पुरुषनी कोइ निंदा करे तो तेने मनमा
एम विचारबु के भले ए निंदे हु जो सारो मनुष्य उ तो तेनी
निंदाथी मारे शु ? निन्दकना उपर मारे केम क्रोध करवो जोइए ?
सामा मनुष्यनु हित इच्छु होय तो तेना गुण गावा कोइ निंदक
निंदा करे तो उलटु निंदकनामा ने गुण होय ते आपणे बखा
णवो पण सरात्र लागणीथी सामु तेनु बुरु करवा प्रयत्न करवो
नहीं कोइ आपणा उपर दुष्टता करे तो पण आपणे तेनी तरफ
शुभ भावना राखवी, तेनु सारु करवा शुभ सकल्प करवो एम क-
रवाथी सामो बुरूप अते दुष्टतानो त्याग करशे आ नियमनो अनु-

भव करवाथी खातरी थशे

आत्मज्ञानीओ कोइनी पण निद्रा करता नथी तेओ तो आत्म स्खवपमा तल्लीन रहेछे परना तरफ दृष्टि देता नथी अने कडापि उपकारने माटे परतरफ दृष्टिछे तो पण आत्महितथी अन्य प्रवृत्ति करता नथी.

कोइ विरला जगत्मा आत्म तत्त्वनी शोधमा स्वकाल निर्गमन करेछे, अने कोइ विरला परमात्मपदने पामेछे, सत्य तरफ प्रायः दुनीया प्रवृत्ति करती नथी पण असत्य तरफ करेछे ते उपर एक दृष्टांत मुसलमानी धर्ममा प्रगट थयु छे ते एवी रीते के कोइ एक महान् पादशाहना वखतमा एक फकीरे प्रश्न रुयो के—हे पादशाह आ सब खलक चुरे रस्तेपर कयु चल रही हे ? तयारे एना उत्तरमा पादशाहे फकीरने विज्ञप्ति करी कह्यु के—आपकु मेरा मुकामपें दो वर्षतक रहेना चाहिए, जय आपका सयालका जबाब में देनेकु शक्तिमान होउगा—आ उपरथी फकीर बाबा त्या रद्या के तुरत पादशाहे पोताना राज्यमाना तमाम अमीर उमरावोने बोलावी हुकम आप्यो के—अमारा खजानामाथी तमाम लक्ष्मी खर्ची एक महा मोटो बाग बनाउयो जोडए ने ते बागमा तमाम सृष्टिनी सर्व वस्तुओ प्रगट करीदेवी बाट तमाम जगत्मानी सर्व प्रजाने ते बाग जोवा बोलाववी, ने तेमनो तमाम खर्च तेमनी जग्यापर पहाँचाइया सुधी नो आपणे करवो जोडए आवा प्रकारनो हुकम मज्जात सर्व कचेरी मडळे ताउडतोय आखी पृथ्वीमा रहेला तमाम कारीगरने बोलाव्या ने तेमना कथा प्रमाणे असख्य जातना साधनो पुरा पाइवा लाग्या. जे उपरथी बसे कोसनी वचमा जनीन पहाड समुद्र नाना प्रकारना तमाम दुनीयामा रहेला पशुपखीओ तथा अढारभार

वनस्पति, मेवाना झाड, विचित्र प्रकारना अमूल्य वस्त्र रत्न स्वाहिर भातभातना पत्रवात्र, बागमा फरवाना मनोहर लताना मडपोवाळ रस्ता, ठेकाणे ठेकाणे सुंदर वेश्याओ नाटक करे तेम गोठवण थड, स्थळे स्थळे विचित्र प्रकारना नाटका तेमज ग्वेलाडुओनी गोठवण थड, साकरीया पाणी, गुलावजळ लोकोना उपभोगने माटे तैयार कराव्या अनेक तरेहना जानवरोना तमासानी रमतनी गोठवण थड. बाग जोनाराने बेसवाने माटे अनेक सुरशीओ आदिनी सगबड थड बागमां सुंदर सरोवरो हवा खावाने माटे वधाव्या अने ते सरोवरनी आसपास चारे तरफ लीमडा ववराव्या. घटा करावी, ठेकाणे ठेकाणे पाणीना फुवाग मूकी दीधा, विपेश थु ? अपरपार तेनी शोभा जाग जगतनी वस्तुओधी वनावी दीधी, अने राजवर्गे पादशाहने खबर आपी पादशाहे जगत्मा एवी जाहेरात् खबर आपी के-मारा वसो कोशना वागना मध्यभागमा एक महेल में रचावेलो ठे, ते महेलमा अमुक दिवसे उपोरना व्रण वागे हु एक कलाक सताइ रहीश, तेवामा जे पुरप मने शोधी काढशे तेने हु मारी तमाम पादशाही आपी देख्ण एवी रीतनी जाहेर खबर दुनीयामा फेलावी दीधी ठरावेल्या दिवसे तमाम लोको बादशाही बाग जोवा आव्या तमाम प्रजा बाग जोवा मशगुल थड कोइ फुलना झाडो जोवा लाग्या सोइ बाघसिंहादि पशुओने जोवा लाग्या, केटकाक शोखीन तळावनी शोभा जोवा लाग्या अने ठडो पवन खावा लाग्या, नाटक जोवाना रसीया नाटक जोवामा लीन थया मेवाना रसीया मेवा खावा लाग्या कोइ पुरपे वीजा पुरपने कहु के-भाइ चात्रो आपणे बादशाहने शोधी काढीए, त्यारे सामा पुरपे जवान आप्यो के-तु तो घेलो थयो छे, थु राजा ते महेलमा सताय ? एने एनु राज्य व्हालु छे

माटे आपणे तो वेश्याओनो नाश जोवामा आनद मानीथु—कोइ व्याकरण शास्त्रना विद्वाने नैयायिकने कहु—हे नैयायिक तु वादशाह महेलमा सताणो छे ते वातने खरी वात माने छे के खोटी त्यारे नैयायिके कहु वे—वादशाह वाक्य प्रमाण वा अप्रमाण वा, तस्य वाक्य सत्य वा असत्य वा एतन् कार्यम्य किं प्रयोजन, इदंश पूर्व न भूत, कदापि वादशाह गाडो थयो हगे, कदापि महेलमा तेने शोधवा जता वादशाह मारी नाखे तथा वळी एक एवी शका थाय छे के—वादशाह महेलमा छे तेमा थु प्रमाण ? प्रत्यक्ष प्रमाण प्रत्यक्ष विरुद्ध छे अनुमान प्रमाणमा कोइ हेतु अव्यभिचारी सिद्ध थतो नथी, उपमान प्रमाण पण सादृश्यना अभावथी वाधितछे. आगम प्रमाणनी पण अत्र सिद्धि थती नथी, माटे अमो तो वादशाहने शोधवानु वध राखी आ प्रत्यक्ष देखाती वस्तुओ जोवामा आनद मानीथु, त्यारे व्याकरणशास्त्रवेत्ताए कहु सत्य सत्य भवता कथन पादशाह वाक्य प्रमाणीभूत मया न ज्ञायते—कोइ सगा सबधीनी वातो करवा लाग्या, वागनी मनोहरतानी एवी खुबी हती के पगले पगले विचित्र जोवानु मळे, खावानु मळे, वेटलाक तो वृक्ष तळे मूड गया, वेटलाकएक बीजाने वस्तुओ ओळखाववा लाग्या, वेटलाक रुपैया खर्ची टीक्रीडो करावी तमासा जोवा लाग्या, वेटलाक एम विचारवा लाग्या के वादशाह बुद्धिमान् छे, तेनी ओछी माया नथी ते एवो सताणो हशे के आपणा हाथमा आववो मुश्केलछे, माटे आपणा करता होइए ते करो. वेटलाक एम चिंतववा लाग्या के ज्यारे आ वागमा पण एवी भूलवणी चुरुवणी छे के आपणे भूला पडीयेछीये तो वादशाहना महेलमा तो वह भूलवणी चुरुवणी हगे के जेथी शोधवाने वडले आपणे डीए तो जोभृष्ट थडए. वेटलाक सुदर पगीओ

तथाच श्री हेमद्रुग्पादाः

प्राणभूत चरित्रस्य, परब्रह्मैककारण,

समाचरन् ब्रह्मचर्यं, पूजितैरपि पूज्यते २

तथा च दशमामे श्री प्रश्न व्याकरणे यस्य ब्रह्मचर्यस्य नामानि गुणाश्चैवमुच्यते तथाहि जवृ एतोय वभवेर उत्तम तत्र नियम पाण दसण चरित्त सम्मत्त विणयमूल गुणप्पहाणजुत्त हिमवत्त महत् तेय मत्त पसध्य गभीर धिपितमज्ज अज्जय साहुजणा चरित मोत्त मग्ग विमुद्ध सिद्धिगति निलय सासत्त मन्वावाह अपुण भव पसध्य सोम शुभ सिव मयल मत्तवर कर जति वरमा रत्तिलय मुसाहस्सहिप नवरि मुणिवरोहि महा पुरिस धीर सूर धम्मिय धितिमताणय सया मुविमुद्ध भव्व भव्वजण समुच्चिण निसक्किप निम्भय निच्छुत्त मिरायात्त निरुवत्तेव निव्वुइ घर नियम निप्पकप तत्र सज्जम मूल दलियणेग्ग पचमहव्वय मुरत्तिलय समिति गुत्ति जाणवर क्वाड मुक्कय-रत्तवण ट्ठिण्ण फलिह सण्णद्धोत्थयिअ दुग्गतिपह मुगतिपह देसग्गं च लोगुत्तम च वयमिण पउमसर तलाग पालिभूय मुहा सगडअर तुव भूअ महाविडिम रत्तव खधभूत महानगर पागार क्वाड फलिह भूअ रज्जपिणद्धोव इट्ठकेउ विमुद्धणेग गुणसपिणद्ध, जम्मिअ भग्गम्मि होइ सहसा सव्वसभग्गसद्धिय महिय चुण्णिय बुशल्लि तप-ल्लट्ट पडिअ खडिय परिसडिय विणासियअ विणयसील तत्र नियम गुण समूह त बभ भगवत्त गहगण णत्तवत्त ताराणाण वाजहाउल्लुपत्ति मणिमुत्त सिलप्पवाल रत्त रयणागराणव जहा समुद्धो वेरलि उव्वेव जह मणीण जह मउडो चेव भूसणाण वत्थाण चेवग्ग्वोम जुअल अरविंद चेव पुप्फ जेठ गोसीसचेव चदणाण हिमवता चेव ओस-हीण सीतो आचेव निम्मग्गाण उदहीमु जहासयभूरमणो रुअगवरो चेव मड्ढि अपव्वयाण पवरे ऐरावणो इव कुजराग सीहोव्व ज

हामिगाण पवरो पन्नगाण चैव वेणुदेवे धरणे जणपण इद्राया
 कप्पाण चैव वभलोए सभासु अजह भवे सुहम्पो डितीसु लवसत्त
 मगासव्वपवरा दाणाण चैव अभयदाण किमिराओ चैव कवला-
 ण सघयणे चैव वज्जरिसभे सठाणे चैव चउरसेज्जाणेसुअ परमसु-
 क्कझाण णाणेसुअ परम केवल सिट्ठ लेसासुअ परमसुक्कलेसा
 तिथ्यकरो जहचैव मुणीण वासेसु जहा महाविदेहे गिरिरायाचैव
 मदरवरे वणेसु जहा नटणवण परच दुमेसु जह जजू सुदसणा वी-
 सुजसा जीसे नामेण अय दीवो तुरगावती रहयती नरवती जहवीसु
 ते चैव राया रहिए चैव महारह मते एव अणेग गुणा अहीणा भ-
 वति एकम्मि वभचेरे जम्मिअ आराहि अ वयमिण सच्च सील तवो
 ओय विणओय सजमोय खती मुत्ति तहेव इह लोइअ पारलोइय
 जसोकित्ति य पव्वओय तम्हा निहुएण वभचेर चरिअव्व सव्वओ
 विमुद्ध जावजीवाए. इत्यादि महिमा ब्रह्मचर्य प्रतनो कह्यो उे.

“ दुहा. ”

आत्म सुखनी चाहतो, विषयेच्छा परिहार,
 विषयेच्छा मनमां घणी,तो शु ? आत्म विचार. १
 आत्म स्वरूपे ध्यानतो, विषयेच्छानो नाश.
 प्रतिपक्षी वे धर्मनो, नहीं एकत्र निवास. २
 वे साथे वर्ते नहीं, वर्ते त्यां छे दंभ;
 भोगज कर्माधीनयी, त्यां शुं होय अचंभ. ३
 दुर्गधीनी कोथळी, मळमूत्रे भरी देह;

एहवी, अपवित्रतानुं गेह.

सहु, श्रवे अशुची नित्य;

मोह करे शु जीवडा, समज समज तु चित्त ५
 भोग रोग सममानतो, स्वप्ने पण नहीं आश,
 अनित्य आ ससारमां, क्याथी तेनो वास ६
 दुर्लभ आत्मस्वरूपनी, वातो करवी सहेले,
 किंतु आत्म स्वरूपनी, प्राप्तिछे मुस्कल ७

निद्रा, आलस्य, असत्यादि दूषणो निवारि निःसगी थइ आ-
 त्म तत्त्वनी खोज करनार आत्मतत्त्व पामी गकेछे आत्मतत्त्वनी
 वातो करवी सहेलेछे पण आत्म तत्त्वनी प्राप्ति थवी मुस्कलेछे कोइ
 विरला प्राणी आत्मा उपर रचि करेछे.

आ चेतन अज्ञानयोगे भ्रमित थइ क्वापि चञ्चित थइ जाय
 छे. एवु आत्म स्वरूप भूली गयो तेथी परवस्तुमा मोह पाम्यो,
 अशुद्ध परिणत्तिथी ओदारिका, बेक्रिय आहारक, तेजस, कार्मणादि
 शरीरो धारण करी तेना योगे ताडनतर्जन छेदन भेदनादिक दुःखो
 ल्यां, हवे जो तने सुखनी आशा थइ होय तो हे आत्मन् चेत चेत
 समय चाल्या जायछे मनना मनोरथ मतमा रहेशे, सद्गुरु सगे रही
 आत्म स्वरूप समज अने तेना ध्यानमा रहेता आश्रवणु दूरी करण
 थशे अने अतर् तत्त्वोपयोगे सवरनी प्राप्ति थशे तार स्वरूप तु देखे
 पटछे तारो मोक्ष थशे

श्री देवचंद्रजी पण कहेछे के-

“ दुहा ”

तत्त्वते आत्म स्वरूपछे, शुद्ध धर्म पण तेह,
 परभावानुग चेतना, कर्म गहछे एह १
 तजपिर परिणति रमणता, भज निज भाव विशुद्धः

आत्म भावथी एकता, परमानंद प्रसिद्ध २

स्याद्वाद गुण परिणमन, रमता समता संग;

साधे सुष्ठानंदता, निर्विकल्प रसरंग ३

मोक्ष साधनतणु मूल जे, सम्यग्दर्शन ज्ञान;

वस्तु धर्म अवबोध विणु, तुस खंडण समान. ४

आत्मबोध विणु जे क्रिया, तेतो बालक चाल,

तत्पार्थनी वृत्तिम, लेजो वचन सभाल. ५

इत्यादिथी पण आत्मज्ञाननी खास जरुरेछे, आ जगत्मा राग द्वेषव्यापी गयोटे ने आत्माना अज्ञानने लीवे जाणवो. आ शरीरमा रहेला आत्माना सरखा अन्य शरीरोमा पण रहेला आत्माओटे एम जो जाणयामां श्रद्धा पूर्वक आवे तो कोइ दुःख कोइ जीवने आपे नहीं, अने कोइ जीवना उपर कोइ जीव वैर राखे नहीं. आत्मज्ञानी सर्व जीवने सिद्धसमान गणे तो पत्री कया जीवनी साये ते विरोध करे ? अलयत कोइ जीवनी साये ते विरोध करे नहीं, ए बातनो अनुभव करवार्थी मालम पडशे, आत्मिक शुद्धानंद पण त्यारे अनुभवमा आवशे राग द्वेषथी जेनु मलीन छे तेने सुख मल्लु नथी जगत्मा ताच्चिक सुखना भोक्ता आत्मज्ञानी मुनिवरोछे. तेमने स्त्री नथी पण समता रूपक्षी भावथी जाणवी राजाओ शेठीयाओ, वस्त्रीओ, टाकतरो, ज्यारे ताप आदिना निवारण माटे छत्री धारण करेछे तो तेना बदले आत्मज्ञानी मुनिवरो क्षमारूप छत्रीने धारण करेछे क्षमारूप छत्रीथी क्रोधरूप ताप लागतो नथी, अने अदेखाइरूप उष्ण पवन तो जरा मात्र लागतो नथी बळी मोहरूप मेघनी वृष्टिथी पडेलु तृष्णारूप पाणी तेने क्षमा छत्रीथी शीली श-

कायछे, अन्य राजाओ पादशाहो ज्यारे एक देश बे देशना मालिक होयछे त्यारे मुनिराज तेना करतां पण अधिक पोताना आत्माना असख्यात प्रदेशना मालिक होयछे. ज्यारे अन्य राजाओ घणी लक्ष्मी भेगी करेछे त्यारे मुनिराज आत्माना ज्ञान दर्शन चारित्र लक्ष्मी भेगी करेछे. तफावत एटलो के राजानी लक्ष्मी खोटी, क्षणिक छे अने मुनिनी लक्ष्मी सत्य अने अचल असूटछे, राजा पादशाहने मनवचन कायाए करी सतोप रहेतो नथी त्यारे मुनिने मनवचन कायाए करी सतोप रहैछे राजा ज्यारे नपात्रि शत्रुओनी साथे युद्ध करेछे, त्यारे मुनीश्वर रागद्वेषरूप शत्रुओनी साथे युद्ध करेछे, राजाओ ज्यारे वागमां क्रीडा करेछे त्यारे मुनीश्वरो धर्मध्यानरूप वागमां क्रीडा करेछे—धर्मध्यानरूप वाग केवो छे ते कहेछे—धर्मध्यानरूप वागनी चारे तरफ उडासीनतारूप बाड करेली छे ज्ञानरूप कृपधर्म ध्यानरूप वागमा शोभी रहेल्येछे सवेगादिक वनस्पति त्यां ग्नीली रहीछे त्यां मुनिराज स्थिर चित्तरूप आसन उपर बेसी विचरेछे ते वागनी शोभा अनहटछे तेनी मृगधीयी अनेक जातना रोगो नाश पामेछे ए वागनी अदर छुट प्राणीओ प्रवेश करी शक्ता नथी जेनी योग्यता होय ते त्या जइ शकेछे जगतनी मोह मायामां फसाएला प्राणीओने ते वागनु सुख थतु नथी, वळी ए वागमां एक चारित्ररूप महेल शोभी रह्येछे तेनी अदर जन्म जरा मरणनां दु ख नाशक अनेक औषधो रखांछे तेना मुनीश्वर उपयोग करी शकेछे अने ते औषधोनु भक्षण करी अजरामरपद पामेछे वळी ते वागमां रहेला ज्ञानरूपमांथी मुनिश्वर जठपान करेछे ज्या परोपाधिरूप तापतो आवी शक्तो नथी वळी ते वागनी असख्यात प्रदेशरूप जमीन स्वच्छ निर्मलछे मुनीश्वरनी माये शुद्ध चेतना रहेछे. वळी ते मुनीश्वर आत्मा अने परमात्माना अक्यतारूप भांगने कायारूप ख-

लमा घूटी मनरूप प्यालाथी पीवेडे. तेथी शुद्ध चेतनारूप नीशो मु-
नीश्वर महाराजने एवो चढे छे के ते बखते अगम निगम दर्शाय छे.
अने ते समये शरीर अने शरीरीनु पण भान रहेतु नथी अने ते
बखते अनहद आनद थायछे. आवा मुनिराजने मुख थायछे ते
अनत छे. श्री यशोविजयजी उपा'याय अ'यात्मसारमा कहेछे के-

श्लोक.

कान्ताधर सधा स्वादात्, यूनां यज्जायते सुखं ।
विंदुः पार्श्वे तदध्यात्म शास्त्रस्वादसुखोदधेः १
अध्यात्मशास्त्र सभूत-संतोष सुख शालिनः
गणयंति न राजान नश्रीदिनापि वासवम्. २

भावार्थ—स्त्रीना अधर रूप अमृतना स्वादथी युवान पुरुषोने
जे सुख थायछे तेतो भ्रमणा मात्र छे, ताच्चिक मुख नथी, ते सुख
तो अ'यात्म शास्त्रना स्वादथी उत्पन्न थयेलु दरिया समान सुख
तेनी भागळ विंदु समान छे. अ'यात्म शास्त्रथी उत्पन्न थयेलु स-
तोष रूप मुखना भोक्ता जे प्राणी छे ते प्राणी राजाने तथा धनदने
तथा इद्र सरखाने पण लेखामा गणता नथी.

श्लोक

रसो भोगावधिः कामे, सदृभक्ष्ये भोजनावधिः
अध्यात्म शास्त्र सेवाया रसो निरवधि पुन. १

कामने विषे भोगवता सुधी रसछे, मिष्ट भोजनने विषे जम-
वाना बखत पर्यंत मधुरपणुछे पण अ'यात्म शास्त्रनी सेवानो जे
रस ते तो निरवधि छे. कारण के अ'यात्मशास्त्रनो रस-मारभ
मतिदिन वृद्धि पामेछे. ते रस कोइ बखत बदलानो-

નથી, જ્યારે આત્માનદી મુનિરાજને અત્યંત મુલ્ય થામળે ત્યારે મિદ્ધ
 ભગવતોને અનંત મુલ્ય છે તેમા શુ કહેવું ? અનુભવથી મુગની પ્ર
 તીતિ થાય છે વહી મુનીશ્વર ઉપર કહેલા ણ્યા યાગમા મદાકાઠ
 વાસ કરે છે, તેમને કોઈ જાતની સૃષ્ટિ નથી આમા મુર્નીંદ્રના યાગ-
 ની તો છે રાજા વા શાહુકારોના યાગ આવી યકૃતા નથી રાજાને
 તો મનુષ્ય સેવે છે કિંતુ મુનીશ્વરને મુર અમુર ડ્રાટિક પગ સેવે છે
 રાજાને પરશત્રુ ધક્કી ભય રહે છે કિંતુ મુનીશ્વરને જય દોતો નથી.
 રાજાની પાસે અનેક મુખદો હોય છે ત્યારે મુનીશ્વર સ્વી રાજાની
 પાસે ક્ષમા, વૈરાગ્ય, જ્ઞાન, દર્શન ચારિત્રાદિ અનેક મુખદો દાય છે
 રાજાની લક્ષ્મી જન્માતરમા સાથે આવતી નથી. પગ મુર્નીંદ્રની લક્ષ્મી
 તો પરભવમા સાથે આવે છે અને મોક્ષમા પગ સાથે રહે છે, રાજા પો
 તાના દેશમાં પૂજાય છે, અને મુર્નીંદ્ર તો જ્યાં ત્રિચરે ત્યાં પૂજાય છે
 રાજા વૈભવ છતાં દુસ્વી થાય છે, અને આત્મજ્ઞાની મુનીશ્વર તો વૈભવ
 વિના પગ અતર્ વૈભવથી મુગ્ધી રહે છે, રાજાને પોતાના રાજ્યથી
 સતોષ રહેતો નથી. અને મુર્નીંદ્રને તો સદા સતોષ છે રાજાને આ
 ભવમાં તથા પરભવમા ક્લેશ સહન કરવો પડે છે, અને મુનીશ્વરને આ
 ભવ તથા પરભવમા મુલ્યની પ્રાપ્તિ થાય છે, રાજા સતારમા પ્રવૃત્તિ
 કરે છે ત્યારે મુનીશ્વર પ્રવૃત્તિનો ત્યાગ કરે છે, રાજા હાથી ઉપર ઘસી
 ઘસતરથી શોભા પામતો તીક્ષ્ણ મ્હાલને ધારણ કરે છે ત્યારે મુનીશ્વર
 સવેગ રૂપ હાથી ઉપર ઘઠા ધક્કા વ્રહ્મચર્યરૂપ ઘસતરથી શોભા પા
 મતા ધ્યાનરૂપ તીક્ષ્ણ મ્હાલાથી રાગદ્વેષ રૂપ શત્રુનો શિરચ્છેદ કરે છે,
 મુનીશ્વરને તો કોઈ શત્રુ નથી કિંતુ વ્યવહારથી શત્રુની વલ્પના
 જાણવી. પોતે પોતાના આત્મ સ્વભાવમા રમે છે ણટલે સ્વત ગગ
 દ્વેષનો ક્ષય થાય છે, રાજાને જરાપણ જ્ઞાતિ મળતી નથી, અને મુની
 શ્વરતા સદા શાન્તિમા રહે છે રાજા જ્યારે યાગવન્તુ ઉપર મમતા

राखेते त्यारे मुनीश्वर अंतर्धन उपर ममता राखेते. क्यां मेरु अने क्या सरसवनो दाणो, क्या सागर अने क्या तळाव, क्या रात्रि अने क्या दिवस एटलो तफावत आत्मज्ञानी मुनीश्वर अने राजा वच्चे जाणवो. दुनियामा आत्मज्ञानी मुनिसट्श अन्य कोइ सुखी नथी, शेठ, वकील, वारीष्टरादि लोको तच्यी विचारता सत्य मुख भोगवता नथी. सत्य मुखनी प्राप्ति तो आत्मज्ञानीने थायडे. अत ईष्टिना अभावे वाह्यदृष्टिजीवो सत्य सुखनो अनुभव करी शकता नथी. आत्मज्ञानी मुनि सदा निर्भय रहेछे, अहो ते जीवता जीवन्मुक्तनी दशाने अनुभवेछे. आत्मज्ञान विना खडनमडननी विद्वताथी आत्महित थतु नथी दुनीया ज्यारे परपरिणतिमा म्हालेछे त्यारे मुनीश्वर स्वपरिणतिमा म्हालेछे

आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति

आ वाक्यनो अनुभव पण आत्मज्ञानी मुनीश्वर करी शकेछे. शुष्कज्ञानी जीवो वाक्पटुताथी आत्मज्ञानीनो डोळ भले चतावो पण तेना अनुभवथी थतु सुख ते पामी शकता नथी आत्माना केवल ज्ञानादिगुणोनी प्राप्ति आत्मार्थिने थायडे.

ससारी जीवने ज्ञान दर्शन चारित्रादिक ऋद्धि सर्व तिरोभाव छे. ते तिरोभाव ऋद्धिनो आविर्भाव थाय, तेज आत्मानु परमात्म पद जाणवु ते परमात्मनो हु दास एटले उपासकहु ते परमात्मपद लेणे ओळख्यु अने परमात्मपदमा जेनु एकाग्र चित्तथी ध्यान वर्तेछे. तेने साधुपद ग्रन्थ एम जाणवु. अने शुद्धज्ञान पण ते पाम्यो एम जाणवु नाम, स्थापना, द्रव्य, भाव ए चार निक्षेपे साधु जाणवा.

कोइनु साधु एवु नाम ते नाम साधु, स्थापना करीए ते स्थापना साधु तथा जे पचमहाप्रत पाळे क्रियानुष्ठान करे शुद्ध आहार ग्रहण करे

ननो जेवो उपयोग जोइए तेवो उपयोग न

होय ते द्रव्य साधु जाणवा. जे भाव सवरपणे मोक्षनो साधक थइ भाव साधुनी करणी करे ते भाव निक्षेपे साधु जाणवा.

कोड जीवनो ज्ञान एहवो नाम ते नामज्ञान तथा जे पुस्तकमां अक्षररूपे लक्ष्युछे ते स्थापना ज्ञान, अने उपयोग विना सिद्धान्तनो भणवो अथवा अन्यमतिनां सर्व शास्त्र भणवा तथा शरीरादिक ते सर्व द्रव्यज्ञान अने नवतत्त्वनो नय निक्षेपाए जाणवा अने आत्म-तत्त्व आदरवु ते भावज्ञान जाणवु. ए आगमसारमां कस्युछे श्रुद्ध ज्ञाननी प्राप्ति पचमकाळमां कोइक महा पुरुषने थायछे ज्ञानना पच प्रकारछे. १ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मन पर्यवज्ञान देवर्दि वाचक कहेछे वे-पाठ से किंत मडनाण दुविह मडनाण पन्नत तजहा सुयनिस्सिय च असुयनिस्सिय च सेकिंत असुयनिस्सिय असुयनिस्सिय चउविह पन्नत तजहा उत्पत्तिया वेणइया कमिया परिणामिया बुद्धि चउविहा पन्नता.

भात्रार्थ-मतिज्ञान वे प्रकारेछे. श्रुतनिश्चित मतिज्ञान, वीजु अश्रुतनिश्चित मतिज्ञान प्रायशः श्रुतज्ञानना अभ्यास विना सहज क्षयोपशमवशे जे उत्पन्न थाय तेने अश्रुतनिश्चित कहेछे ते चार प्रकारनुछे उत्पादिकी बुद्धि, वैनयिकी बुद्धि, पारिणामिकी बुद्धि तथा कर्मजा बुद्धि

पोतानी मेळे उत्पन्न थाय ते औत्पातिकी बुद्धि अने गुरुनो विनय शुश्रूषा सेवा करता आवे ते वैनयिकी बुद्धि, कर्म करता उपजे जे ते कार्मिकी बुद्धि अने परिणामते दीर्घकालनु पूर्वापर अर्थनु अवलोकन करता उपजे ते पारिणामिकी बुद्धि

पूर्वश्रुत परिक्रमित मतिना उत्पादकालने विषे शास्त्रार्थ पर्यालोचन करतान जे उत्पन्न थाय तेने श्रुतनिश्चित मतिज्ञान कहेछे तेना

चार प्रकारछे. अवग्रह, इहा, अपाय अने धारणा तेमां अवग्रह बे भेदेछे. व्यजनावग्रह, अर्थावग्रह. किमिद् एटछे आ शुछे ? एवो (अव्यक्त) अमगट ज्ञानरूप अर्थावग्रह धायछे. तेनी पूर्वे अत्यत अव्यक्ततर (अति छानु जे ज्ञान) होयछे तेने व्यजनावग्रह कहेछे. वज्रणवग्रहचउहा=एटछे व्यजनावग्रह चार प्रकारछे. ते नीवे मुजब-मणनयण विणिंदिय चउक्का=मन तथा नयन ए ने विना वाकीनी चार ४ इन्द्रियोने आश्रयी चार भेदेछे श्री नदीमंत्र पाठ. से किंत वज्रणुग्रहे चउव्विहे पन्नत्ते तजहा, सोइन्द्रिय वज्रणुग्रहे घाणिंदिय वज्रणुग्रहे, रसेन्द्रिय वज्रणुग्रहे, फासिंदिय वज्रणुग्रहे=श्रोत, घ्राण, जिह्वा, स्पर्शेन्द्रिय व्यजनावग्रह जाणघो. मन बधा नयन ए बे इन्द्रियो अप्राप्यकारीछे. चक्षुरिन्द्रिय छे ते विषयदेश प्रति जाइने देवती नथी, तेम प्राप्त अर्थनु अवलवन करती नथी, तेम मननु पण जाणवु.

आ कइपणछे ? एवु अनिर्धारित सामान्यरूप अव्यक्तपणे अर्थनु जे ग्रहण तेने अर्थावग्रह कहेछे, ते पांच इन्द्रियो अने मने करी छ प्रकारनोछे श्रोतेन्द्रियार्थावग्रह, चक्षुरिन्द्रियार्थावग्रह, घ्राणेन्द्रियार्थावग्रह, रसेन्द्रियार्थावग्रह, स्पर्शेन्द्रियार्थावग्रह तथा मानसार्थावग्रह. अवग्रहगृहीत वस्तुने विषे जे धर्मनी गवेषणा करवी एटछे आ स्थाणुछे ? अथवा पुरुषछे ? तेमां पण हाल सध्याकालछे अने महा अरण्यछे, षष्ठी मूर्य पण आधम्पोछे, माटे पुरुष नथी. इत्यादि व्यतिरेक धर्मनु निराकरण करवु अने एने पसीओ भजेछे. वज्रमायी वांकुछे, अने कोटर सहितछे. इत्यादिक अन्वय धर्मनो अंगीकार करवो, एवु जे ज्ञान विशेष तेने इहा कहेछे. ए पण पच इन्द्रियो अने मने करी छ प्रकारछे. तथा इहित वस्तुने विषे आणुजछे, एवो एक कोटिना निश्चयरूप जे घोष तेने

अपाय कहेछे स्थाणुरेवाय इत्यात्मरूपो अपाय, तथा निश्चित
 वस्तुने रिपे अविन्ध्यतिपणे अथवा स्मृतिपणे जयवा वासनापणे
 जे धारण करवु तेने धारणा कहे छे. ते पण पंचइन्द्रियो अने मने
 करी छ प्रकारे छे एम छने चारे गुणता चौबीस भेद अने व्यज-
 नाग्रहना चार मेळवता २८ अष्टाशीस भेद मतिज्ञानना जाणवा एमां
 चार भेद अश्रुत निश्चितना मेळवता त्रीस भेद थाय छे तथा जाति
 स्मरण पण अतीत कालना सत्री पंचेन्द्रियना सरुपाता भव
 देखे. मतिज्ञाननोज ते भेद जाणवो श्री आचारांग मृगनी
 टीकामा जातिस्मरण जानने धारणानो भेद कवो छे—यतः
 जातिस्मरण त्वाभिनिर्गोधिः ज्ञान विशेषमिति कोइ एक
 सभामा घणा पुरुषो वेठाछे ते वखते शख, तथा भेरी, रणाशिगु,
 आदि वार्जात्र वागया लाग्यांश्रोनाजनोए सर्व वार्जिनो शब्द सम-
 काले सांभण्या उतां सर्वनी क्षयोपशमनी त्रिचित्रनाथी अधिक
 न्यूनानि सांभळवामा आवेछे जेमके कोइने तं शख भेरी आदि
 वार्जात्रनो शब्द भिन्न भिन्न सांभळवामां आवेछे तेना जाणवामां
 एम आवे के अमुर भेरीआं आन्दा शख वागेछे एम जणाय
 तेने बहु कहेछे १ कोइने मात्र वार्जात्र वागेछे एम जणाय
 तेने अबहु जाणवो २ तथा ते शब्दां पण कोइ-
 कने मधुर मत्त्वादि बहुपर्यायोपेते जे शखात्किध्वनि पृथक् पृथक्
 घणा मरारे सांभळवामां आवेछे तेने बहुविध कहीए ३
 कोइने एक वे पर्यायोपेत ते ध्वनि सांभळवामां आवेछे ते अबहु-
 विध जाणवो ४ कोइने तुस्त ते नाद सांभळवामां आवे
 छे ते क्षिप्त जाणवो ५ कोइक विचारी विचारी घणी वार
 पाठळयी जाणे ते अक्षिप्त जाणवा ६ ध्वजारूप लिंगेकरीजेम
 देवकुल ओळखायछे तेम लिंग सहित जाणे तेने निश्चित कहेछे. ७

कोइ उक्त प्रकारे लिंगरहीत जाणे तेने अनिश्रित कहेछे. ८

कोइने शसयरहीत सभळायछे तेने असदिग्ध कहेछे. ९

कोइने शसयसहीत सभळायछे तेने सदिग्ध कहेछे. १०

कोइके एक वेळा साभळी ग्रहण करी लीधेल्लु ते सदा सर्वदा स्मरण रहे पण वीसरे नही तेने जुव कहेछे ११. अने कोइक एरुवार ग्रहण करेल्लु सर्वदा स्मरणमा रहे नहीं तेने अधुव कहेछे. १२ एवी रीते वार भेदे ज्ञान थायछे तेने पूर्वोक्त अठ्ठावीश भेदोथी गुगतां त्रणशेने छत्रीश भेद मतिज्ञानना थाय. तथा तेमां अधुत निश्रिनना चार भेद मेळरीए तो त्रणसेने चाळीस भेद मतिज्ञानना थायछे अर्थावग्रह एरु समय प्रमाणछे. इहा अने अपाय अतर्मुहूर्त्त प्रमाणछे. धारणा संख्यात असंख्याता काल सुधीछे अथवा द्रव्यक्षेत्र कालभावथी मतिज्ञान चार प्रकारनुछे.

मतिज्ञानी आदेशथी सर्व द्रव्य जाणे पण देखे नही.

क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्र लोकालोक जाणे पण देखे नही.

कालथकी आदेशे सर्व काल जाणे पण देखे नही.

भावथकी आदेशे सर्व भाव जाणे पण देखे नही.

श्रुतज्ञान स्वरूप

श्रुतज्ञान चौद तथा वीश प्रकारनुछे चौद भेद कहेछे-

गाथा.

अखर सत्री सम्मं, साईयं खलु सपञ्जवसिय च ।

गमियं ङ, सत्तविए ए सपडिवख्वा

वर्तेछे त्यारे द्वादशांगी रूप ध्रुत होयछे, अने ते तीर्थनो विच्छेद थवाथी ते श्रुतनो पण विच्छेद थायछे. तेथी ते सादि सपर्यवसित जाणवु. महाविदेहमा तीर्थनो विच्छेद श्रुतनो पण विच्छेद थतो नथी तेथी त्या अनादि अपर्यवसितश्रुत जाणवु कालथी उत्सर्पिणि तथा अवसर्पिणीमा चोथे तथा पाचमे आरे श्रुतज्ञान होय अने छठे आरे विच्छेद थायछे तेथी सादि सपर्यवसित जाणवु. महाविदेह क्षेत्रमा एतु कालचक्र नहीं होवाने लीये त्यां ध्रुत ज्ञान पण अनादि अपर्यवसित जाणवु.

भावथी-भव्यसिद्धिआ जीवने ज्यारे सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे त्यारे आदि अने केवलज्ञाननी प्राप्ति थायछे त्यारे अत होवथी सादि सपर्यवसित श्रुतज्ञान जाणवु.

- ११ अग्यारसु गमिकश्रुत ते ज्या सूत्रना सरखा आलावा आवे ते जाणवु दृष्टिवाट मन्त्रमां जाणवु
- १२ वारसु अगमिक श्रुत भणसरखा अक्षरोना आलावा होय ते जाणवु
- १३ तेरसु अग प्रविष्ट ते द्वादशांगीरूप जाणवु.
- १४ चौदसु अग बाह्यश्रुत ते आवश्यक तथा दशरैकालिक जाणवु तथा श्रुतज्ञानना वीश भेद पण कर्मग्रथ विगेरेथी जाणी लेवा

अवधिज्ञान स्वरूप.

अनुगामी, वर्धमान, प्रतिर्पाति, अमतिर्पाति, हीयमान, अर्ननुगामी ए छ प्रकार गुण प्रत्यय अवधिज्ञानना छे. उक्तच नन्धध्ययने “ त समासओ छविवह पत्रच तजहा आणुगामिय अणा णुगामिय, वट्टमाणय, हीयमाणय, पडिवाड, अपत्ति णड्.

१ प्रथम जे ठेकाणे अवधिज्ञान उत्पन्न धयु होय ते ठेकाणु मू-
कीने बीजे देशातर प्रमुख जाय त्या लोचननी पेठे जे साथे
आवे तेने अनुगामिक अवधिज्ञान कहेछे ज्या पुरुष जाय त्या
साथे आवे ते.

२ बीजु जे ठेकाणे रत्ना अवधिज्ञान उत्पन्न धयु होय ते स्थानके
आवे तेवारेज होय. पण अन्यत्र स्थाने जाय तेवारे साथे न
होय तेने अननुगामि अवधिज्ञान कहेछे.

से किंत णाणुगामीय आहीनाण ओहीनाण तंजहा नामएगेइ
पुरिसेगममह जोइठाण काउ तस्सेव जोइठाणस्त परि पेर तेसुपरि-
हिंडमाणे परिहिंडमाणे परिघोळमाणे तमेव जोइठाण पासइ अन्न-
ध्यगए न पासइ एतमेव अणाणु गामिय ओहिनाण जध्येव समुप-
ज्जइ तध्येव सखिज्जाणि वा असखिज्जाणि वा जोयगाइ पासइ
न अन्नध्य.

भाष्यकारोप्याह-अणुगामिउ अणुगच्छइ गच्छत लोयण जहा
जहा पुरिस इयरोउ नाणु गच्छइ ठियप्पइवव्वगच्छत-इति.

३ त्रीजु जे वृद्धि पामे तेने वर्द्धमानअवधिज्ञान कहेछे, जेमके
शळगतिअग्निमां जेम जेम वलतण नाखीये तेम तेम वधती
ज्वाला थायछे तेनी पेठे यथायोग्य प्रशस्त अतिप्रशस्ततर
अभ्यवसायने लीये पूर्वावस्थाधी ते उत्तरोत्तर समय समय वधतु
वधतु जाय तेने वर्मान अवधिज्ञान कहेछे अर्थात् प्रथम
उपजती वलते अगुलन असख्यातमा भाग जेटळु क्षेत्र जाणे
देखे पश्चात् वधता वधता यावत् अलोकाकाशने विषे लोक
जेवढा असख्याता खांडवा देखे.

४ चोथु पूर्वे शुभ घणु उपजे पश्चात् तथाविध

सामग्रीनो अभाव धयाथी पडता परिणामे कगी हानि पामे तेने हीयमान अवधिज्ञान कहेछे

- ५ पाचमु सरयाता असग्याता योजन उत्कृष्टपणे यावत् समग्र लोरु देखीने पण पडे एटछे जे आव्यु जाय तेने प्रतिपाति कहेछे.
- ६ छठु जे उत्पन्न थया पडी क्षीणताने न पामे ते लोक समग्र देखीने अलोचना एरु मदेशने देखे ते अप्रतिपाति ज्ञान जाणतु ते ज्ञान आव्यु जाय नहीं

प्रश्न—हीयमान अने प्रतिपाति ए वनेना लक्षणो तो सरखांछे तेम छता जूदा वताववानु शु कारणछे ?

उत्तर—पूर्वावस्थाथी हळवे हळवे पडतु जाय एटछे क्षीणताने पामे ते हीयमान कहेवायछे अने जे विध्यात मदीपनी पेठे एरु कालने विपेज निर्मूल थायछे ते प्रतिपाति कहेवापछे अवधिज्ञानना असग्यात भदछे, वळी अवधिज्ञानना चार मफारछे तथा चार

तसमासओ चउव्विह पन्नत्त तजहा टव्वओ त्वित्तओ कालओ भावओ टव्वओण ओहीनाणी जहन्नेण अणताइ रुविदव्वाइ जाणइ पासइ उक्कोसेण सव्व रुविदव्वाइ जाणइ पासइ, त्वित्तओण ओहीनाणी जहन्नेण अगुलस्स असखेज्जभाग उक्कोमेण असखिज्जाइ अलोए लोयप्पमाण मित्ताइ खडाइ जाणइ पासइ कालओण ओहीनाणी जहन्नेण आवल्लियाए असखिज्जभाग उक्कोमेण असखिज्जाओ उम्सप्पिणी अवसप्पिणी अतीय च अणागय व काल जाणइ पासइ भावओण ओहीनाणी जहन्नेणवि अणते भावे जाणइ पासइ उक्कोसेण वि अणतेभावे जाणइ पासइ सव्वभावाण अणतभाग

अवधिज्ञानी द्रव्यथी जघ-यपणे अनतारूपी द्रव्यने जाणे देखे

उत्कृष्टपणे सर्वरूपी द्रव्यने जाणे देखे ते द्रव्ययी अवधिज्ञान.

क्षेत्रयी जयन्यपणे अगुलनो असख्यातमो भाग जाणे देखे अने उत्कृष्टपणे अलोककाशने विष लोक प्रमाण असख्यातां खाडवा जाणे देखे.

कालयी अवधिज्ञानी जयन्यपणे आवलिकानो असख्यातमो भाग जाणे, देखे अने उत्कृष्टयी असख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी पर्यंत अतीतकाल अनागतकाल जाणे देखे ते कालावधि ज्ञान.

भावयी अवधिज्ञानी जयन्यपणे अनतभावने जाणे देखे अने उत्कृष्टयी पण अनता भावने जाणे देखे ते भावावधिज्ञान जाणवु

मन पर्यवज्ञानस्वरूपं.

मन.पर्यव ज्ञानना वे भेदुडे. एक रजुमति, बीजो विपुलमति अमुक पुरुषे घट चिंतव्योडे एम सामान्यपणे मननो अ यवसाय ग्रहे ते रजुमति जाणवु

तथा अमुक पुरुषे घट चिंतव्योडे ते द्रव्ययी मुवर्णनोडे, क्षेत्रयी पाटलीपुरनोडे. कालयकी शीतकालनोडे, अने भावयी पीतवर्ग सुकुमाल द्रव्यादि विशेष ग्राहिणीमति तेने विपुलमति ज्ञान कहेछे

अथवा मन पर्यवज्ञान ४ चार प्रकारनुछे, द्रव्य, क्षेत्र, काल तथा भावयी उक्तच त समासओ चउविविह पन्नत तजटा दव्वओ खे-
त्तओ कालओ भावओ दव्वओण रिउमडण ते अगतपणसिए खवे जाणइ पासइ ते चैव विउलमइ अभ्णियतराण विमउ तराण जाणइ पासइ.

भावायर्थ-द्रव्ययी रजुमति अनत प्रदेशी अनता स्फुध जाणे देखे अने विपुलमति तेहिज स्फुध काडक अधिकेरा विशुद्धपणे जाणे

रजुमति नीचे रत्नमभा पृथ्वीनु छुळक मतर लगे

शमभाव सहित विचित्रदर्शनभेदे अपुनर्धी जे चोपु गुणठाणु तेनी जे क्रिया ते पण यद्यपि धर्मना विद्वेने कर-
नारीछे, तो पण भला भाश्य यकी अटुद्ध क्रिया करे ते पण
शुद्धकहेवाय, जेमताम्र रसानुवेने मुवर्गताने पामेछे, तेम अप्रममजनु,
अन्योऽप क्रिया, विपक्रिया, गरलक्रिया, तद्धेतुक्रिया, अमृतक्रिया
ए पच प्रकारनी क्रिया जाणवी तेमांनी आश्रम क्रिया त्याज्य
जाणवी. तद्धेतु, अने अमृत क्रियानी माप्तिथी मुक्ति घायछे, अनेकान्त
मार्गमा कदाग्रह करवो नहीं, समवासिपुनु बिंदुग्रही मकलाबु
ते व्यर्थ छे, मनःप्रग्रहप्रसमना जीवानी रागद्वेषभोगे सर्व
क्रिया दुखनु घाम एटले स्थान छे, स्वात्मोत्कर्ष मान पूजा
कीर्त्तिने माटे परात्मापरुर्षकारक क्रियावादी स्वात्महित निरपेक्ष
पणाने लीधे साधन साध्य बुद्धि रूपताथी परमात्म पद साधी
शकतो नथी, सापेक्षपणे व्यवहार निश्चय पूर्वक जिनाशा सहित
तद्धेतु अमृत क्रियानु अवलम्बन करीने भव्यान्माओ अखट निर्मलशाश्वत
सुखमय शिवस्थाननी माप्ति करे छे, जे भव्यो क्रियानु अजीरणने
निंदा तेनु सेवन करेछे ते मुक्तिपन्ना अधिकारी यता नथी, अ-
मुकमां अमुक दोषछे, अमुक तो आम करेछे, इत्यादि परभाव परिणति
ज्यां मुधीछे त्यां मुधी आत्मध्यान अने रौद्र ध्याननी क्रिया जाणवी.
अतर्हाष्टि यता धर्मध्याननी क्रिया थड शरनेछे, जगत्मा रोगी अनेक
प्रकारना होयछे, तेमज औपधो पण अनेक प्रकारनांछे, कोइने
उधरस थड होय ते अमुक औपधधी मटे अने ते उधरस कोइने ते
टवाथी मटती नथी मूर्तधी विहार करता मीपागाम आव्या, त्यां
श्री दुर्लभविजयजी साथे टीपाविजयजी तपस्वी हता तेमने उधरस
घणी हती, तेम ताव पण हतो ते गामपां मोटा मोटां मरचां खा-
वाथी उधरस मटी तो भव्यात्माओने समजयानु के भावरोगी जी-

वा अनेक प्रकारनाछे, कर्मरोग पण अनेक प्रकारनाछे, तेना उपर धर्मना औपधो पण अनेक प्रकारनाछे, कर्मरोगने टाळनार सद्गुरु वैगो पण अनेक प्रकारनाछे, कोइ जीवने कोइ धर्म औपधयी लाभ थाय, कोइ जीवने कोइ मुनीश्वर वैग्रथी लाभ थाय, माटे पक्षपात करी एकान्तमतरूप कदाग्रहनु अवलवन करवु नर्ही, पचमारके अल्पपुण्यवत बहुपापकर्मिजीवो प्रायश. धर्मनुनाम धरावी मारा तारा पणानी बुद्धि धारण करी पक्षपातरूपविपनु पान करी अनतभवभ्रमण करनारा थशे. अज्ञानरूप निद्रामा सुतेलाने तो सद्गुरु महाराज सहेलाडथी उठाडी शकेछे कितु जे मत कदाग्रह पक्षपातरूप दारुनु पान करीन अज्ञानरूप निद्रामा सुड रहेलाछे ते पुरुषने तो गुरुमहाराज पनीश लाकडीओ मारीने आत्मस्वरूपे जगाडवाने समर्थ नथी. कारणके ते विलकुल बेशुद्ध बनी गयाछे, सत्यतत्त्व समजवाने शक्तिमान्छे कितु जेणे मतकदाग्रह रूप मदि-
रानु पान कर्युंछे, एवा पुरुषनी आगळ सत्यतत्त्वनी हित शिखा-
मण गुरुमहाराजा आपेतो ते व्यर्थ जायछे, उलटु ते गुरुमहाराजने पण निग्र वचन सभळावेछे, केटलाक जीवो तो एवा होयछेके पो ताना मतमा पेठु ते खरू अन्य सर्व खोटु मानेछे तेना जीवने ज्ञानी गुरुमहाराज बहु प्रयासे सत्यमार्गे दोरेछे, व्यवहार अने निश्चय नयना जाण ज्ञानी गुरुमहाराजा क्रियावडे कर्मनो नाश करेछे, ए परमार्थ

“ दुहा ”

आत्मोपयोगी साधुने, किरिया सद्गुण धाम;

मतकदाग्रह लालचु, सहु किरिया दु.ख ठाम. ११८

जलनी उपाविथकी, जुदी अवस्था थाय,

तेवी जे जननी थती, भवमां ते भट्काय. ११९

उपादान समजे नहीं, समजे नहीं निमित्त,
कारण कार्य समजे नहीं, तच्चे शुं शुभ वित्त. १२०
द्रव्यभाव समजे नहीं, वतें बाह्याचार,
अनुपयोगिआत्मनो, पामे नहि भवपार १२१

भारार्थ-प्रथम दूहानो अर्थ उपर लखायोछे जलनी उपाधिपी जेम भिन्न भिन्न अवस्थाओ थायछे-एटले जेम जलमां छाल रंग नाखीए लाल देखायछे पीळो रंग नाखीए तो जळ पीळ देखाय छे, लीळो रंग नाखीए तो जळ लीळुनेखायछे, एटले जळ अन्यनी साथे मिश्र थरापी व्यग्रहारीपी स्वगृह रूपनो त्याग करेछे. तेम जे जीवो असत्त सगतिरूप उपाधिना योगे जेवा मळ्या तेवा थइ जायछे, ते भवमां अटकेछे, अर्थात् सारांशके-जे जीव पादरीनी सगतपी तेना उपदेशवढे इगुने पूज्यमाने, अने स्त्रीस्ति धर्म स्वीकारे, कदापि ते जीवने कोइ बौध गुन्नी सगति थइ बौधे कथु स्त्रीस्ति धर्म तो अनार्य धर्मछे, ते धर्मपी मुक्ति मळती नथी, बौध धर्म सत्यछे माटे ते स्वीकार. त्यारे तेना उपदेशपी बौध धर्म स्वीकारे, वळी तेने कोइ मुसलमान मळ्यो तेणे कथु बुद्ध धर्म तो खोटीछे, सत्य धर्म तो सुदाकाहे, बुद्ध धर्ममें तो अमुक जूटा कहाहे, ओ तो काफरोका धर्म हे, इसलिये सुदाका धर्म मानेगा तो दोसखमे पडेगा नहीं, एम मुसलमानना उपदेशपी मुसलमान धर्म स्वीकार्यो. त्यारे ते पुरुषने कोइ वेदाति मळ्यो. वेदातीए कथु सर्व धर्मनुं मूळ वेदान्त छे, वेदपी मुक्तिनी प्राप्ति थायछे इत्यादि कथनपी वेदधर्मनो स्वीकार कर्षो त्यारे कोइ कालीकाना भक्ते कथु. अरे मनुष्य तु कालिकानो भक्तया, कालिका पुत्र धन स्त्री वैभवने आपनारछि, माटे कालिका नेत्र खरीछे, वेदपी तो कइ मूख मळनु नथी,

इत्यादि कथनयी फाल्गिकानो भक्त थयो, तपारे वळी नास्तिरुवादी तेने मळयो तेणे कशु भला मनुष्य तने धर्म धुताराओ छे तरेडे केमके जे वस्तु आपणी आंखे देखती नयी. ते वस्तुनी इच्छा राखवी ते व्यर्थछे, फाल्गिका तो पत्थरनी मूर्ति छे ते कइ फल आपवा समर्थ नयी इत्यादि कथनयी नास्तिक थाय इत्यादि अवस्था जे मनुष्यनी थायछे ते कदापि आत्म सुख पापी शकतो नयी. कारण के ते अज्ञानी अभिवेकी अने श्रद्धा रहीतछे, तेयी भवभ्रमण कर्या करेछे.

वळी जे भव्यो उपादान कारणने समजता नयी अने निमित्त कारणनु स्वरूप पण जाणता नयी, अमुक कार्य अने तेनु कारण अमुक ते पण समजी शकता नयी साधन अमुक अने साध्य अमुक ते पण समजी शकता नयी एवा अनानी जीवोनु तत्त्वमा चित्त होतु नयी.

द्रव्य अने भावयी चारित्रने समजता न होय फक्त ओघ-दृष्टियी बाह्याचारमा धर्म मानी प्रवर्त्ते, आत्मतत्त्वनो उपयोग होय नहीं तेवा जीवो भवनो पार पापी शके नहीं श्री यशाविजयजी उपाध्याय कहेछे के-

दाळ.

ज्यां लों आत्म तत्त्वनुं, लक्षण नवि जाण्यु,
त्यां लों गुणठाणुं भलु, किम आवे ताण्यु आत्म-१

ए प्रमाणे विचारता आत्म तत्त्वावबोध विना क्रिया मुक्ति मार्गमतिकारणीभूत थती नयी हु क्रिया कोने माटे करुछे, क्रियायी श्रुं थायछे, क्रियानो कर्ता कोणछे ? एनी ययायोग्य समजण विना अनुपयोगताए परमात्मपदरूपमाभ्यससिद्धि थइ

શક્તી નથી, હલકુ તે અનુપયોગતાએ ત્રિયા કરી અન્ય ફલ માત્ર ફરેછે યથા વિનાયક પ્રકુર્વાણો, રચયામાસ વાનર । વિનાયકની મૂર્તિ વનાવતા વાદરો રચ્યો તેની પેટે-આત્માની અજ્ઞાનતાએ અન્યો-ન્ય, વિપ, મરલ, એ ત્રણ ક્રિયાનુ સેવન ધાયછે-અને એ ત્રણ ક્રિયાથી જીવ અશુદ્ધપરિણતિયાગે શુભાશુભ કર્મપુદ્ગલો ગ્રહી અનેક જન્મ ગ્રહતો ત્રિવિધ તાપથી પીડાતો કૃગતો દુઃખ સતતિનો ભોગી બનેછે જડ ચેતનનુ વિશેષત ભેદ જ્ઞાન થયુ નથી ત્યા સુધી સહિ-રાત્મપણુ ટલ્લુ નથી અને સહિરાત્મયોગે ચેતન જડ જેવો ભાસેછે, અને અજ્ઞાની જીવ પરવસ્તુમા અદત્વ પરિણામ ધારતો જડતા અનુ-ભવેછે-શ્રી યગોવિજયજી ઉપાધ્યાય કહેછે કે-

હુ એહનો એ માહરો, એ હુ એની શુદ્ધિ,
 ચેતન જડતા અનુભવે, ન વિમાસે શુદ્ધિ આતમ ૧
 આતમ અજ્ઞાને કરી, જે ભવ દુઃખ લહીએ,
 આતમ જ્ઞાને તે ટલ્લે, એમ મન સહહીએ આતમ ૨

આત્માના અજ્ઞાનથી જે ભવદુઃખ પરપરા પમાયછે, તે ભવ દુઃખ પરપરાનો નાશ આત્મજ્ઞાન થતાં થાયછે અર્થાત્ આત્મજ્ઞાન થતા અનાદિ કાલથી પરમા પરિણમન થયુછે તે ટલ્લેછે રાગદ્વેષ યોગે જીવ પરવસ્તુમા પરિણમેછે અને યદા રાગદ્વેષની પરિણતિ ટલ્લેછે, તદા આત્મા પરવસ્તુમા પરિણમતો નથી જ્યા સુધી સમ્યગ્ રીત્યા આત્મસ્વરૂપ જાણ્યુ નથી ત્યા સુધી જીવ રાગદ્વેષ પરિણામે મોહી બનેછે આત્મજ્ઞાનથી રાગદ્વેષની પરિણતિ હટીએ, આત્મજ્ઞાને સહજ સ્વભાવે રમતાં રાગદ્વેષની પરિણતિ નાશ પામેછે, આત્મોપયોગે સ્થિરતા થતા નિર્વિકાર અસ્વપ્ન શાશ્વત સુખ ભોગવાય આત્મોપયોગી સાધુને સર્વ ધાર્મિક ક્રિયા સુખની સ્વાનિ

भूत थायछे, अज्ञानीने सवरना हेतुओ आश्रवरूपे परिणमेछे अने स्याद्वादरूपे जेणे आत्मतत्त्व जाण्युछे एवा ज्ञानीने आश्रवना हेतुओ पण सवररूपे परिणमेछे, एम ज्ञानीओनु कथनछे—प्रथम कोइ अपेक्षाए अजीवतत्त्वनु ज्ञान करवु जोइए. कारणे अजीवने अवबोधतां सहेजे तेथी भिन्नजीव जाण्यो जायछे, जीवाजीवादि नवतत्त्वोनो सम्यगवबोध भेदज्ञान थवापा मुख हेतुछे.—

आत्मज्ञानथी मुनिवर्यो मुक्तिपद प्राप्त करेछे. कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचद्र पण कहेछे के—

श्लोक.—योगशास्त्रे

मोक्षः कर्मक्षयादेव, सचात्माज्ञानतो भवेत् ।

ज्ञानसाध्यं मत तच्च, तद्भयान हितमात्मनः १

न साम्येन विना ध्यान, न ध्याने न विना च तत् ।

निःकंप जायते तस्माद्, द्वयमन्योन्य कारणम् २

मोक्षपद प्राप्ति कर्माष्टकक्षयत थायछे, अने भवसतति वृद्धि कारणीभूतकर्माष्टकनो क्षय आत्मज्ञानथी थायछे. इत्यादियी विचारता आत्मज्ञान थवु एज सर्व शास्त्रनो स्पष्ट रहस्यभूत उद्देश समजायछे. मतिज्ञान अने श्रुतज्ञानना योगे अस्ति नास्ति धर्ममय आत्मानु ध्यान थायछे, अने ध्यान पण आत्मानु समजवु ध्यानयोगे स्थिरता प्रागटना अनत सुख अनुभवी आत्मा वनेछे, अने अनुभव ज्ञानयोगे भव्यात्मा सुखनो आस्वादी वनेछे कोइ वस्तुपर राग नहीं अने कोइ वस्तुपर द्वेष नहीं एवी आत्मानी अवस्थाने साम्य अवस्था कहेछे. मूर्धना समान ज्ञान गुणे प्रकाशी आत्मा समजवो मूर्ध अन्वथी आच्छादित थतां तेना किरणोना प्रकाशनु पण आच्छादन थायछे,

પરસ્વભાવ રમણતામા તત્પર, વહીં જેના હૃદયમાં વિષયવાસનાનો રાગ સદા વન્ધો રહેતો હોય, તેવા કુગુરુઓ કૃષ્ણસર્પસદૃશ જાણવા, તેનો ધર્મભિલાષી જીવોએ ત્યાગ કરવો જોડે. કૃષ્ણ સર્પ સગતિથી એકવાર મૃત્યુ ધાયછે, અને એના કુગુરુની સગતિથી મિથ્યાતત્ત્વોપદેશ પામતા રાગદ્વેષ પરિણતિ યોગે અનેક જન્મધારણ કરવા પડેછે. વહીં જે ગુરુ નામ ધરાવતા વ્રહ્મચર્યત્રય પાઠવાનો ઉપદેશ આપેછે. અને અતર્મા સ્ત્રીનો વાસછે એવા કૃષ્ણસર્પ સદૃશ કુગુરુની સગતિ કરવી નહીં. વિષયના જે રાગી હોયછે તેની સગતિથી આત્મા નિર્વિષયી નવતો નથી. વિષયો વિષના કરતાં વળ અતિ દુઃસ્વદાયકછે કળ છે કે-

શ્લોક.

વિપસ્ય વિપયાણા ચ, દૃશ્યતે મહદતર
ઉપચુક્ત વિપ હૃતિ, વિપયા સ્મરણાદપિ ૧

વિપ અને વિપયોનુ મહદ્ અતર્ દેખાયછે, વિપ તો સ્વાધુ છતું માણનો નાશ કરેછે અને કામાદિક વિષયોતો સ્મરણ માત્રથી આત્માના ગુણોને હણેછે તો જે વિષયના સગી હોય તેની સગતિથી આત્મહિત થતુ નથી તેવા કુગુરુઓની વળ નિંદા કરવી નહીં. મનમાં એમ ચિંતવવુ કે એ વિષયના મિત્વારી અથુદ્ધ પરિણતિયોગે હેયજ્ઞેય ઉપાદેય વિવેક શૂન્ય ચિત્તવાહ્યા થઈ ચિંતામણિ રતનસમાન આત્મધર્મનો અનાદર કરી પરપુવ્ગલરૂપ એંઠમાં રાચીમાચી રચાએ, એ તેમની મહિતવ્યતાનો વારુછે. એમ વિચારી માધ્યસ્થવળે વર્તા તેમની સગતિ ત્યાગવી કુગુરુનુ લક્ષણ જણાવવાનુ મુલ્ય કારણ એ છે કે-મન્યમીવો જેવુ આલવન મલ્લે તેવા થઈ જાયછે. સારુ , મલ્લે તો આત્મા સારા રસ્તે વળેછે અને નટારુ આલવન

मळे तो आत्मा अधोगति माक् थायछे माटे भव्यजीवो असत्य आलयननो त्याग करी सत्य सद्गुरुरूप निमित्त कारणनु अवलंबन करे, एज हिताकाक्षाछे.

“ दुहा. ”

विषय त्याग वैराग्यता, वनितानो नहि संग;
धन कचननो त्याग जास, नमीए सद्गुरु चंग. १२४
विषयाशा मनमां मटी, मन मर्कट वश जास,
भवभीरु भ्रमणा मटी, तेना थइए दास. १२५

सुगुरु लक्षण कथेछे—जेओए विषयनो त्याग कर्योछे. अने जेभनुं मन वैराग्यथी सतत वासीत थयुछे. अने जे वनितानो संग करता नथी धन कचन ए उपायिछे. तेथी विकल्प सकल्प उद्भव्हे. एम जाणी जेणे त्याग कर्योछे, एटले वहा परिग्रहनो त्याग कर्योछे. एवा सुदरगुरुने नमस्कार करीए, विषयनी आशा वृष्णाना अंकुरा जेना हृदयमा उत्पन्न थता नथी. अने जेणे मन रूप माकडु वश कर्युंछे. अशुद्ध राग द्वेषनी परिणति योगे मनमां आर्तध्यान वा रौद्रध्यान थायछे, ते मन वश करवाथी थतु नथी. चित्तने वश करता विकल्प संकल्पनो नाश थायछे. मन वश करवु ते अत्यंत दुर्जयछे कोइ धनुष्यधारी स्वबुद्धि विचक्षणताथी राधावेष सहज मात्रमा साधी शके तेवो पण मनने पोताना वशमा करी शकतो नथी.

यत श्लोक

चित्तमेवहि संसारो, रागादि क्लेशवासितं ।

तथैव तं चित्तं, भवान्त इति कथ्यते ॥१॥

वासीत चित्त तेज ससारछे, अने

दिकयी रहित मन यता भवान्त कयायछे. एवु चित्त पण जेणे वश कर्युंछे एवा सुगुरुमहामुनिराजने देखी प्राणी पण शान्त भावने पायेछे. तेमना उपदेशयी अनेक जीवोने सर्वज्ञ कथीत तत्त्वनी श्रद्धा धायछे. कोइ श्रावक प्रत अगीकार करेछे. कोइ साधु प्रत अगीकार करेछे, बळी जे सदगुरु ज्ञान दर्शन चारित्रयी मोक्ष सुख आरायेछे, ते सदगुरु मुनिराज चोराशी उपमाए विराजीग होयछे ते प्रधान्तरयी जाणवी बळी मुनिराज अनेक उपमाओने धारण करनाराछे यथा गाथा

कसे सखे जीवे, गयणे वाउय सारए सलिले ॥
 पुखवरपत्ते कुम्भे, विहण खगोय भारंढे ॥१॥

कसपात्र समान उज्जवळ, शख, जीव, गगन, वायु, शरदूक्तु जल, कमलपत्र, काचवो, पखी, खड्गी, भारडपखी, हाथी, वृषभ, सिंह, मेरुपर्वत, समुद्र चद्र, सूर्य, सुवर्ण, पृथ्वी, अग्निनी आदि उपमाओने धारण करनार मुनीश्वर जाणवा बळी मुनीश्वर लक्षण कथे छे—भवभीरु—एटले ससारमा अनेक प्रकारना दुःख भयौंछे ज्या सुधी ससारछे त्या सुधी तारिक्क सुख नहीं पुन पुनः रागद्वेषयी वीता होय माटे रागद्वेषने सेवे नहीं भ्रमणा मयी—जड वस्तुमां आत्मबुद्धि हती ते टळी हु अने मारु आवी भ्रमणारूप बुद्धि परवस्तुमा यती हती, ते भ्रमणा बुद्धिनो जेणे नाश कर्यौंछे, एवा महात्मा मुनीश्वर आत्मतत्त्व साधी शकेछे, बळी जे पुरुष शिष्यभाव तथा वैराग्ययी रहितछे एवा अनधिकारी पुरुषने प्रायः उपदेश देवा पण प्रवृत्ति करता नहीं. अ य शास्त्रोमा पण कहुंछे के—

श्लोक

नापृष्ट. कस्यचित् ब्रूया । न्नचान्यायेन पृच्छत ॥
 जानन्नपिच मेधावी, जडवल्लोकमाचरेत् ॥ १ ॥

विद्वान् मुनिवर्य प्रश्न कर्षा विना कोइनी साथे बोले नहीं, अन्यायर्षी पृच्छकने पण उपदेश करे नहीं, किंतु सर्वतत्त्वनो जाण छतो पण मेघावी जगत्प्रा जडनी पेठ विचरे वळी जे मुमुक्षु मुनिनी आत्मज्ञान तरफ धारणाछे, अनेक प्रकारनी वासनाओषी वासित चित्त ज्या सुधी होयछे त्या सुधी आत्मस्वरूप प्रतिलक्ष लागतु नथी जेम मलीन दर्पणमा प्रतिबिंब स्वच्छ पडी शकतु नथी. ज्यारे दर्पणने राख विगरेथी टटकीएछीए त्यारे तेनी अदर स्पष्ट प्रतिबिंब भासेछे तेम मनोरूप दर्पण रागद्वेष तेमज अनेक प्रकारनी वासनाओषी युक्त होयछे त्या सुधीतेनामा आत्मस्वरूप भासतु नथी, पण ज्यारे रागद्वेष इच्छा वासनारूप मलीनतानो नाश थाय छे त्यारे आत्मस्वरूप भासेछे, निर्मल चित्त जेनु थयुछे एवा मुनिवर्यो आत्मतत्त्वना अधिकारीछे. अन्य के जेना मन ममत्त्व वासनाथी मलीनछे एवा पुरुषो गृहस्थो-तत्त्व प्राप्तिमा अधिकारी नथी.

वळी मुनीश्वर निंदा वा स्तुतिथी सतुष्ट थाय नहीं. कारण के मायाना फ.दमा पडेळी दुनीया दोरंगीछे, कोइ कइ कहे अने कोइ कइ कहे, लोक कीर्त्ति अने लोकरुनी स्तुति अर्थे जे आचरण आचरवा ते मायानी वृद्धिने माटेछे पण आत्मसुख माटे नथी. माटे लोकेकीर्त्ति स्तुतिरूप वासनानो मुनि त्याग करे.—स्वकीय आत्मानु हित करवु तेज योग्य छे,

यतः श्लोक

विद्यते न खलुकश्चिदुपायः । सर्वलोक परितोपकरो यः ।
सर्वथा स्वहितमाचरणीयं । किं करिष्यति जनो बहुजल्पः ।

आ. - एवो कोइ उपाय नथी के जेथी सर्व लोक स्तुति मत्त्वाधि पुरुषे लोकरुवासनानो सर्वथा

माटे तेवा जीवो बहिर् दृष्टिपणाथी चिदानन्द आत्मामा सदा रहेला धर्मने प्राप्त करी शकता नथी जात्यभिमानि जीवनी अतर्दृष्टि यती नथी, तेतो क्षणे क्षणे हु ब्राह्मण छु, हु क्षत्रीय छु, हु वाणियो छु, छु एवी बुद्धि धारण करेछे, पण हु ब्राह्मण नथी, हु वणिर् नथी, हु क्षत्रिय नथी, एवी बुद्धि धारण करी शकतो नथी, श्री यज्ञोविजयनी उपाध्याय पण समाधिगत रुमा कहेछे के—

“ दुहा. ”

जाति देह आश्रित रहे, भवको कारण देह ॥

ताते भव छेदे नही, जातिपक्षरति जेह ॥ १ ॥

इत्यादिकथी विचारता पण जात्यभिमानि आत्मधर्म साधी शकतो नथी, माटे आत्मधर्मार्थी मुमुक्षु जनोए आत्मानु स्वरूप स मजबु, अने बाह्य जात्याभिमानरूपभ्रमबुद्धि त्यागी अतर्दृष्टिथी आत्मधर्म साधवो, परमार्थ शिक्षा इत्येव

“ दुहा. ”

लिंग देह उपर रहे, आत्मथी छे भिन्न;

तेमा शु रगाइये, रंगातां दुःख दीन. १२८

वर्णाश्रमना भेदथी, माने जे मन धर्म,

सत्य धर्म ते नवि ग्रहे, बांधे नलटा कर्म. १२९

भावार्थ—पुरुषलिंग वा स्त्रीलिंग आदि लिंग देहाश्रित छे, देह ज्यारे आत्माथी भिन्न छे, अलगत आत्मानि देह नथी त्यारे लिंग आत्मतु कहेवायज केम ? पुरुषादि त्रणे लिंगो आत्माने कर्मोपाधिना संघथीज कहेवाय छे, हु पुरुष ए अभिमान मनुष्य धारण करतो मायान्ध बनी हु असरयप्रदेशी आत्मा एवो विवेक

भूली जाय छे, पुरुष लिंग प्राप्त थयु ए कर्मना उदयधी छे, तेमा अहता धारण करवी ते अज्ञानी जीवनु लक्षण छे, पुरुष वा स्त्रीना अध्यासधी बधाता आपणु आत्मानु शुद्ध स्वरूप भूलीएछीए, हु अने मारु ए अभिमानधी त्रण जगत्मा कोइ आत्मानदानुभवी थयो नथी अने थवानो नथी माटे वस्तुत प्रियधर्मसाधकभव्यात्माओ लिंग अध्यासधी केम परमा रगावु जोइए ? अर्थात् कदी पण लिंगाभ्यास मनमा स्फुरवा देवो नहीं, अने एमा जो रगाथु तो दुःख बडे टीन एटले गरीव अवस्था प्राप्त थगे एमा सगय नथी. कोइ मर्द पुरुषने चपालाल, नपुसक कहे तो त्वरित तेना मनमा आवशे के मने नपुसक कहेनार कोण ? एम सरूप धता क्रोधनो आविर्भाप यता मुग्ध तोररा जेतु फुली जशे. बखते चपालालने त्रण चार अपजन्डो पण सभळावे, परम्पर एरु बीजानो अपरुर्प करवा बाकी गरखे नहौ, ए लिंगाभिमाननु फळ छे. माटे विवेकनयनाविघाताओए परमात्मपट्ट प्राप्त्यर्थ अन्तर्दृष्टि साधी एतादृश अभिमानने त्यजवो, ज्या सुधी लिंगाभ्यास छे त्यासुधी जीव हु परमात्मा छु एवी दृढ भावना धारण करवाना अभावे जन्म मरणनी उपाधि सचय सग्रहेछे.

वर्ण, तेमज आश्रमभेदे जे आत्मिकशुद्धधर्मनो भेद मानेछे, ते शुद्ध शाश्वत आत्मधर्म प्राप्त करतो नथी, सत्यधर्म तेवा व्यवहारजडजनथी समजातो नथी. अने कदापि तेवा पुरुषनी आगळ कोइ सत्य धर्मनु दर्शावे तोपण कदाग्रहग्रस्त यथाथी वचनामृतो पण तेने त्रिषवत् परिणमेछे, अने सत्य धर्म ते आत्मानो पोताना सहज स्वभावे सदाकाल पोतानाथी जरामात्र पण दूर नथी तेने अज्ञानान्यजीव विपरीत दृष्टिधी जाणी शकतो नथी.—जडमा आत्म धर्मना विवेकपूर्ण कर्मसंग्रहीतेना उदये अधोगति भजे छे, श्री

यशोविजयजी उपाध्याय पण समाधि शतकमा कहेछे के—

लिंग देह आश्रित रहे, भवको कारण देह,
ताते भव छेदे नर्नी, लिंग पक्षरत जेह. १

जाति लिंगके पक्षमे, जिनकू है दृढ राग,
ताते भव छेदे नर्नी, जाति पक्षरति जेह २

जाति लिंगना पक्षमा जेमे दृढ राग छे ते भवान्त कदापि करी शकना नथी आत्माने जाति नथी के लिंग नथी जेम स्वप्नमा अनेक प्रकारनी जानियो तथा लिंगो धारण करायछे, अने ते जागीने जोता कइ भासतु नथी, तेम जाति अने लिंगाध्यास पण ज्यारे आत्माभिमुख चेतना धायछे त्यारे स्वप्नवत् लागेछे. हु पुरुष वा स्त्री नथी आ मननो मनमा १००८ वार जाप जरा श्राद्ध राखीने जिज्ञासु कर, पछे तारा मनमा केवा प्रकारना विचारो आवेछे ते विचार अने पहेलाना विचारोमा केसलो फेर पढेछे ते विवेकथी विचार एरुवार आ मनप्रयोग श्रद्धाथी जे अजमावशे तेने अनुभवनी मालुम पडशे, हु चपालाल, मनसुखलाल नथी एम अर्थ कलारु पर्यंत धारणा करवाथी प्रथमनी अवस्था अने चालती अवस्थाना विचारोमा एक मोटो भेद पडतो पोताने मालुम पडशे, अने आत्म धर्म प्राप्त करवानी जिज्ञासानो उद्भव थशे. शु त्यारे जाति लिंग मानवु खोडु छे, तो कोइ पोताने अमुक जातोवाळो कहीने बोगने तो बोळवु नर्नी ? वा कोइ कहे के तु पुरुष छे के स्त्री छे ? त्यारे एम कहेवु के हु तो पुरुष वा स्त्री पण नथी आम जो वर्ताए तो चाले बेप ? तेना मन्युत्तरमा समजवानु के—अतर्थी जाति वा लिंगनो अयास धारण करनो नही ? व्यवहारथी जाति वा लिंगना व्यवहारो कगय छे तेम करवा, पण अतर्थी पोताना

मानवा नहीं. तेमज जाति वा लिंग आश्रित वर्म मानवो नहीं, धर्म आत्मानो अने धर्मी आत्मा अरूपी छे अने ते देह तथा जातिथी भिन्न समजवो. ए ज परमार्थ.

कुलाचारनी रीतमां, जे माने मन धर्म,

धर्म मर्म समजे नहीं, ले नहीं शाश्वत शर्म. १३०

भावार्थ—जे भव्यो अज्ञानदशाधी पोताना कृच्छना आचारमां धर्म मानेछे ते धर्म मर्म समजता नथी अने धर्मज्ञानना अभावे शाश्वत शर्म पामी शकता नथी. कूलाचारनी प्रवृत्ति दरेकनी भिन्न भिन्न होयछे, अने ते प्रमाणे सर्व मनुष्योनी प्रवृत्ति थया करेछे, ज्ञानी पुरुषो कूलाचारनी रीतिमा धर्म मानता नथी. प्रायः कूलाचारनी रीति जे देशमा जे धर्म चालतो होय तेनी मिश्रताथी थइ होय छे;—जैनोनी कूलाचारनी रीति जैन धर्म फीलोसोफीथी मिश्रितछे, माटे जैनोनी कूलाचारनी रीतिमा धर्मना हेतुओमानो अतर्भाव वर्त्ते छे. माटे तेनाथी विपरीत वर्तवु नहीं—जाल जीवोने कूलाचारनी रीति पण व्यवहारथी धर्म साधनमा कारणी भूतछे आ वचन बोलवामां दीर्घदृष्टिथी विचार करता घणो उडो परमार्थ समायोछे, ते अर्धदग्ध उपलक डोळ घालु जनोना जाणवामा आवशे नहीं,—जैन धर्मनी सत्यताथी ते धर्म जे लोको आचरेछे तेनी कूलाचारनी रीति पण धर्मकारणमिश्रित होयछे, माटे श्रावकना कूलाचारे पण जे धर्मनी श्रद्धा—आचार ते श्रेयस्कर छे, जेम कोइ कूवामा पाणी (जल) ना होय अर्थात् सुकाइ गयु होय तो पण ते खोदवा गाळवाथी जलनी सेरो फूटी कूवामा पाणि नीकळशे,—तेम जैन धर्म पण कूलाचारथी पाळता ज्ञानीगुरुनो सग यता तेनु रहस्य समजातां—समकीतनी प्राप्ति यशे, माटे समजु भव्यजनोए आ वावतनो विचार १. समय प्रथमना जेवो नथी, माटे जैनीओए

નહીં સમજતા પણ લોકિક દેવગુરનો ત્યાગ તેમજ દેવપૂજા-ગુરુવદન જૈન
 દેરાસરે જનુ અન્યત્ર નહોં, એ વિગેરે ઓઘથી પઝાતો આચાર પણ
 ધર્મનુ અગ જાણી ત્યાગવો નહીં, વાનિયોની દષ્ટિમાં તે દુરનો છે,
 પણ ચાલજીવોને તેથી ચઢવાનુ છે, શ્રાવક કુલમા ઉત્પન્ન થણ્ણો
 માણસ ણટલુ તો સમજશે કે અરે દુ તો જૈન હુ, મારો ધર્મ જૈન છે,
 એમ માની અન્ય ધર્મ માનશે નહીં, તેમ ગુરનો સગ થતા સમજતો
 થશે—કુલથી પણ જૈન ધર્મ પાઠનાર, કુલમાં ઉત્પન્ન થનાર વિશેષ
 ધર્મ સમજશે નહીં તો પણ મારો જૈન ધર્મ છે ણટલુ પણ ધર્માભિમાન
 આવશે માટે સાપેક્ષપણે વિચારતાં વ્યવહારનયથી શ્રાવક કુલા-
 ચારમા મવત્ત થનારને ધર્મનો પ્રાપ્તિ, અન્ય કુલમાં ઉત્પન્ન થના
 રને માટે નહીં,—એનાલ વાદીઓ કુલાચારમા ધર્મ માનેછે તેના નિ-
 વેષપર આ વચન છે જાતિ સરથી પણ અતર્ અભિમાન ત્યાગ ફ-
 રવો કોઈ એમ ચિંતવે કે આપણે વર્ણાવર્ણ ગણ્યાવિના ટેક મળી
 રીંસિત વિગેરે સર્વની સાયે લાવુ પીડુ, તેથી આપણો આત્માનો અ-
 મહાતો નથી, ત્યારે તેની સાયે લાવા પીવામા તો ટોપછે ? આમ
 કોઈ સઢેલ ધ્રુવુ ડુદ્ધિથી નદે તેનો મત્સુત્તર કે જે જાતોની સાયે
 લાવાપીવાનો વ્યવહાર નથી તેની સાયે લાવાથી જાતિ અભિમાન
 ટલ્લુ કેડ કહેવાતુ નથી, પણ અતર્મા જાતિ અભિમાન ચિલકૂલ
 નહીં રહેવાથી અભિમાન ટલ્લુ કહેવાય છે જાતિ અભિમાન
 જ્યાં ઉત્પન્ન થાયદે ત્યાંથી તેનો નાશ કરવો જોઈએ પણ મુલ્ય
 પરમાર્થછે, ક્ત્યાદિ ઘણુ કહેવાનુ છે પણ ત્રિમ્તારમયથી લલ્લુ
 નથી, દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ, માનનો વિચાર કરી ચાલવુ

हवे कुसाधु सवधी कहेछे.

“ दुहा ”

सत्य धर्म समजे नहीं, दे उलटो उपदेश,
धर्म मर्म समज्या विना, अंतरमां व्हे क्लेश. १३१

स्त्रीविपयाशक्ति घणी, त्याग विराग न लेश,
मन चचल जेनुं सदा, लजवे साधु वेप. १३२

शिष्य थइने रीसथी, वर्ते गुरुनी साथ,
आत्महित ते नहि करे, विनयी ले शिवपाथ. १३३

कपटी काळा कागडा, कुगुरु कर्मचंडाल,
सगकदो करवो नहीं, भवतस अरहट्ट माळ १३४

तत्त्वनो उपदेश अज्ञानी कुगुरुओ सत्य आपी शक्ता नथी.
अने उलटा कर्म ग्रहेछे ते जणावेछे

भावार्थ—आत्मानुं स्वरूप सम्यग् जाण्या विना जे गुरु एवु नाम धरावेछे, ते कुगुरु जाणया, धर्मनो मर्म जरा मात्र समज्या विना आत्मापरमात्मानो उपदेश आपवा तैयार थइ जायछे, जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, सगर, निर्जरा, मोक्ष, इत्यादिनु किंचिदपि ज्ञान होय नहीं, तेम छता उपदेश आपे तेवा कुगुरुओ मनमा क्लेश पामेछे, अने पोते पण वूढेछे, अने वीजाने पण वूडाढेछे, आ वचन लौकिक कुगुरु अने लोकोत्तर कुगुरुना उपदेशने उद्देशी कइछे, सामान्यनीति शिक्षण हितशिक्षा तो परस्पर मनुष्यो एक वीजाने आपेछे, तेनु आ ठेकाणे ग्रहण कर्युं नथी. फक्त धर्मना उपदेश माटे लखवानुछे, धर्मनो उपदेश आपवाने साधुओने अधिकार छे, ससारमा राचीमाची रहेला श्रावकोने तो धर्मनो उपदेश आप-

ससारी अवळा फरे, सवळा फरे फकीर,
नमो नमो ते सद्गुरु, भयभजन वडवीर १३८

भावार्थ—हे आत्मा सद्गुरु सगत्या आत्मतत्व समजी वा-
हनी एटले धन, धान्य, क्षेत्र, स्त्री, पुत्र, गृह, हाट, राज्यादि जे
पर वस्तु तेनी ममता त्यजी हे चेतन तु तारा अतर्धनने देर-ज्ञान
दर्शनचारित्र रुप अतर् धन आत्मांनी अदर रहुजे तेने हे आत्मा
निहाळ, अतर् धन ताराथी दूर वा भिन्न नथी, अतर् धननी प्राप्ति-
थी अपूर्व शान्तिनो भोगी आत्मा वनेजे, अतर्धन विना क्षायिक
सुखनी प्राप्ति कद्रो थवानी नथी दरेक ग्रथोमा आत्म स्वरूपना हि-
तने माटे विवेचन जे, सात नयथी सम्यग् आत्मानु स्वरूप जाणतु
एकात पक्षथी आत्म स्वरूप जे जाणेजे ते सम्यग् परमात्मपदनी
प्राप्ति स-सुख थइ शकता नथी आत्मानु व्यान मनन करवाथी
आत्मगुणोनो आविर्भाव थायजे, ते सयथी श्री देवचद्रजीए आत्म-
स्तुति नीचे प्रमाणे करीजे

स्तवन--ध्यानदीपिका

गुण अनत धर जीवने, वचे भवमे कर्म-धगोनिज भावना-ए टेक.

राग द्वेष सुख हि वहदद्या. शतु हणु धरी ध्यान.	धरो०	
आत्म लखी निज ज्ञानशु, वाळी कर्म अज्ञान	ध०	२
कर्म हणु तिम ध्यानशु, जेम न पडु भवमाहे	ध०	
भवज्वर अज्ञाने नडया, नधि दीठो शिव राह.	ध०	३
परमात्म जग गुरु ठग्यो, निरस विपयने सग.	ध०	
सर्वज्ञ आत्म नथी रेखीयो, भ्रम अज्ञाने रग	ध०	४
आत्म स्वरूप पिडाणवा, ज्ञान दृष्टि करी देर	ध०	
पच ध्येय अर आत्मा, ज्ञान गुण एक लेख	ध०	५

नित्य छतोळे सहज ते, केवळ गुण मुज माहि.	ध०
मोह दाह त्या पीडवे, ज्ञान अमृत ज्या नाहि.	ध० ६
कर्म उदय चउगति भमु, निश्चय सिद्ध स्वरूप.	ध०
कर्मने भजु केम हु, अनत चतुष्टय भूप.	ध० ७
तजी आशा निज शक्तिशु, हु आनद स्वभाव.	ध०
छेद अज्ञान अनादिनो, आज लहयो निज दाव.	ध० ८
एम जाणी धीरज धरी, रागादि मल खोय	ध०
-यावे आतम शक्तिशु, धर्म शुरु ध्यान होय.	ध० ९
ध्यान व्येय स्वरूपथी, ध्यावो स्ववेद ध्यान	ध०
कर्महीन सर्वज्ञता, निर्मल शील भगवान.	ध० १०
जड चेतन जीवादि ए, येय स्वभाव पिठाणि	ध०
ध्यान लहो मन स्थिर करो, ज्ञान व्याए आणि.	ध० ११
परमेश्वर परमात्मा, ध्येय अरूपी देव.	ध०
द्रव्यार्थिक नय शाश्वतो, ए परमातम सेव	ध० १२
भवद्रुम क्षयकर शुद्धछे, ज्ञान वकी पर भिन्न	ध०
जगत् सकळ आदर्श ज्यु, जीर्ण ज्योतिमय.	ध० १३
दर्शन ज्ञान आनदमय, असुर विगत-विकार.	ध०
इद्रि त्रिणु निकल गुणी, शान्त जाण शिवरार	ध० १४
शुद्ध अष्ट गुण युक्तछे, निर्मल अमेय अभेय	ध०
पर त्यागी असय गुणी, ज्ञानीने आद्रेय.	ध० १५
अणुधी पण जे मूष्मछे, धमधी पण जे वृद्ध,	ध०
जगत् पृज्य निर्भय सदा, परमातम गिर सिद्ध.	ध० १६
ध्याने कर्म सहु गळे, जगगुरु अपल अरूप.	ध०
जिण जाणे सहु जाणीये, जाय अरिया धूप.	ध० १७
तच्च धीर हुवे, जाणे निज अनुभूति.	

घने ध्येय ज्ञेय आदेय ते, अतर आतम भूत.	ध० १८
वचन अगोचर भ्रम बिता, चिंतनी सहज अनत	ध०
जास ज्ञानमें अशज्यु, भावे द्रव्य अनत	ध० १९
आत्म ज्ञानधी आत्मने, जाण्या थाये सिद्धि.	ध०
मुनि तन्मय गुण तिहा लहे, तजी ग्रहीका नहीं लब्धि.	ध० २०
लीन थइ ग्रहे एकता, ध्याता ध्यान सु ध्येय	ध०
परमात्मा अतरात्मा, एरु अभिन्न अमेय.	ध० २१
कटमे कट कर्ता तणी, दिसे दुविधा रीति	ध०
पण ध्यान येय ए आत्मा, एधी नवीय परतीत	ध० २२
भवमें भूम्यो अज्ञानधी, विण लाधा निज नाण	ध०
परम ज्योति जग दु.खहरु, तोहिज अनुभव जाण	ध० २३
भावे एम निज भावना, ध्यान बीज गुणधाम	ध०
देवचद्र सुख सागरु, ध्यान अमूलख पाम	ध० २४

श्री देवचद्रजी पण ए प्रमाणे आत्म स्वरूपनु वर्णन केगळे. गुण विशिष्ट आत्माने ससार चक्रमा वर्तता आत्मस्वरूपनी अनु-पयोगताए परस्वभावमा रमणपणाधी परपुद्गलरूप जे कर्म तेनु ग्रहण समय समय प्रति थतु जायळे, माटे हे चेतन स्वस्वरूप रम-णता रूप निजभावनानी दृढ प्रयास अने स्थिरताधी आदर कर. अनादि कालधी तु परभाव एटले पुद्गल द्रव्यना वर्ण, गंध, रस स्पर्श, मय पर्यायोनी लालचमा-तृष्णामा, ग्रहणमा, ममत्वमा, पराभिमुख चेतना करी अशुद्ध परिणति धारी, स्वमान भूली लोभायो पण परवस्तु पोतानी थइ नहीं उलटु राग द्वेषनायोगे पुद्गल द्रव्यने आ-कर्षी कर्मरूप परिणमावी अनेक योनिमा विचित्र देही धारी स्व-कृद्दिनु आच्छादन करी परपुद्गुल भोगी थइ राजा जेवो पण तु

रक्त बन्धो, राग द्वेषरूप शत्रुने हणो आत्मीय-पानमा प्रवृत्त
थाउ, अने ज्ञान शक्तियी निजस्वरूप जाणुं. आत्मज्ञान यता
परमा यथाएलो अज्ञानाध्यास स्वतः दूर थायछे, आत्मा निर्मल
यता परमात्मा कहेवायछे-तेनु स्वरूप कहेछे.

श्लोक

साकारं निर्गताकार, निष्क्रिय परमाक्षरं ।

निर्विकल्पं च निःकप, नित्य मानन्दमन्दिरम् १

आत्मा ज्ञानरूप उपयोगयी साकारछे, तथा दर्शनरूप उपयो
गयी निराकारछे तथा आत्मा निष्क्रिय निश्चय नययी जाणवो
प्रश्न-शरीरस्थ आत्मा सक्रियछे, अनेक प्रकारनी खावा पीवानी
गमनागमननी क्रिया करेछे, छता ते निष्क्रिय केम जाणवो ?
उत्तर-ज्या सुधी जीवना प्रदेशोनी साथे कर्म लाग्युछे त्या सुधी
ते सक्रियछे-अने कर्मनो नाश सर्वथा यता निर्मल सिद्ध
बुद्ध परमात्मा निष्क्रियछे. शरीरस्थ आत्मा व्यवहार नययी
सक्रियछे कर्मनो समथछे माटे, अने निश्चयनययी अक्रिय
जाणवो. वस्तुतः आत्मानु जेतु स्वरूप होय तेनु निश्चयनय वर्णवे
छे, माटे आत्मानु वस्तुतः ध्यान करता निष्क्रिय भावयो, अने छे
पण निष्क्रिय.

परमाक्षर-क्षर एट्टे खरयु, पोतानु स्वरूप उदळनु परम ए-
ट्टे सर्वोच्छिष्टपणे पोतानु स्वरूप नहि फेरवना आत्माछे, अनादि
कालयी विभाव दशाणोमे भवचक्रमा आत्मा परिभ्रमेछे तोपण
तेना असत्त्वान प्रदेशमायी एक प्रदेश पण खरी गयो नहि, तेमज
अनन्त गुणोमानो एक गुण पण खरी गयो नयी, माटे आत्मा
अक्षर, जाणवो, यद्यपि आत्माना प्रदेशानु तथा गुणानु

कर्मथी आच्छादन थयुडे तोपण प्रदेशी तथा गुणोनो नाश थयो नथी तेम पण थवानो पण नथी नग कालमा अक्षर रूप आत्माडे.
प्रश्न—परमाक्षर असग्यात प्रदेशी आत्मा कीडी अने हाथीना शरीरमा एउ सरखो केम मनाय ? कीडीनु शरीर ठोडी ज्यारे हाथीनु शरीर धारण करे त्यारे तेनो विकास थयो, अने ज्यारे हाथीनु शरीर त्यागी कीडीनु शरीर धारण करे त्यारे आत्मानो सकोच थयो, असरय प्रदेशी आत्मानो सकोच विकास थयो त्यारे ते नाना शरीरमा लघु अने मोटा शरीरमा महान् थयो त्यारे आत्मानु एकसरखु रूप रथु नहीं, देहमात्र व्यापी जीव थयो तेनु केम ?

उत्तर—

गाथा

जह पउम राय रयण, खित्त खीर पभासयदि खीर ॥
 तह देही देहथ्यो, सदेहमत्तं पभासयदि १

त्रया

यथा पद्मराग रत्न, क्षिप्त क्षीरे प्रभासयति क्षीरं,
 तथा देही देहस्थ, स्सदेह मात्र प्रभासयति १

भावार्थ—पद्मरागरत्न दग्धथी भरेला वासणमा नाखीए तो ते रत्नमा एवो गुण छे क—तेनी प्रभाथी सर्व दुग्ध तद्वर्गमय थइ रहेछे जो नानी वाटकीमा दुग्ध भरी अदर पद्मरागरत्न नाखीए तो पद्मरागना रग सरखु सर्व दूध थइ जायछे तेमज मोडु कुडु होय तेमां दूध भरी पद्मराग रत्न नाखीए तो ते रत्ननी प्रभा तेदला सर्व दूधमा व्यापी जायछे तथा ससारी जीव पण अनादि फाल्थी कपायोद्वारा मलीन थतो शरीरमारहेछे शरीरमा असख्यात प्रदेशोवडे व्याप्त थइ रहेछे, स्निग्ध पौष्टिक आद्याथी जेम जेम शरीर

दृष्टि पामेछे, तेम तेम शरीरनी अदर रहेला आत्मप्रदेशो पण तेटला शरीरमा व्याप्त थायछे, मोटा शरीरमा जीवप्रदेशो विस्तारपूर्वक रहेछे, नाना शरीरमा शरीरने व्यापी रहे तेवी रीते आत्मप्रदेशो रहेछे, असरघात प्रदेशनी व्यक्ति स्वरूप जीव जाणवो, जो के आत्मा शरीरादि परद्रव्यथी जुटोछे तोपण ससार अवस्थामा अनादि कर्म सबघथी नाना प्रकारना विभाव भाव धारण करेछे ते विभाव भावोथी नवीन कर्मवच थायछे, वळी ते बावेला कर्मोना उदयथी फरी एक देहथी देहान्तर धारण करेछे, अने तेम अशुद्धकारक चक्रथी ससारदृष्टि पामेछे, ससार अवस्थामा जीव कर्मसहित होय छे अने मोक्षदशामा कर्मरहित आत्मा सादि अनतभगें सदा समये समये अनत सुख भोगवतो वर्तेछे, ससारी यद्यपि आत्माछे तोपण तेनी सत्ताथी अक्षरछे, तथा सत्तातः निर्विकल्प आत्मा जाणवो, विकल्प सकल्प मनना योगे थायछे, विकल्प सकल्प योगे राग द्वेषमा आत्मा परिणमेछे, हु आत्मा ज्यारे विकल्प रहीतहु तो केम विकल्प सकल्प करु ? परभावमा रमता विकल्पादि उद्भवेछे, माटे परभावमा रमगता निवारवी, बाह्यदृष्टि योगे आत्मा परभावमा परिणमेछे माटे मुमुक्षु भव्यजनोए बाह्यदृष्टि प्रचार वारवा माटे अतर्हृष्टिथी आत्मधर्म तरफ क्षणे क्षणे लक्ष्य आपवु, अतर्हृष्टि यता बाह्यवस्तुमा परिणमेलो मननो वेग अटकता मन अतरात्मा प्रति वळेछे, एम प्रतिदिन सतत दृढ अभ्यास यता पोतानी ऋद्धिनो स्वय अनुभव थायन्ते कहु छे के—

श्लोक

बहिर्दृष्टि प्रचारेषु, सुद्रितेषु महात्मनः ।

अतरेवावभासते, स्फुटं सर्वाः समृद्धयः ॥ १ ॥

महात्माने बहिर्दृष्टिना प्रचारे ऋध थए उते पोताना आत्मानां

आत्माधी न्याराडे, चक्षुधी देखाता आकारो अने स्वप्नमा देखाता आकारो पुद्गल द्रव्यनाडे, अने पुद्गल द्रव्यधी आत्मा तणे कालमा निश्चयनयत' जोता भिन्नडे, माटे भिन्न वस्तुमा आत्मपणानी बुद्धि भ्राति मारडे, माटे जेवी स्वप्नमा देखाता पदार्थोमा मारापणानी बुद्धि खोत्री तेना सरस्वीज चक्षुषा देखाता पदार्थोमा मारापणानी बुद्धि खोत्री जाणवी.

प्रश्न—त्यारे चक्षुधी देखाता सर्व पदार्थो असत्य समजवा ? अने जो ते असत्यडे तो तेमा ममत्त्व भाव केम उत्पन्न थायडे ?

प्रत्युत्तर—चक्षुधी देखाता सर्व पदार्थो पुद्गलना पर्यायरूपे सत्य एटले अस्तित्व युक्त जाणवा, अने त पुद्गल पर्यायरूप पदार्थो आत्मस्वरूपे नथी एटले आत्माधी भिन्नडे, आत्मपणु तेमा रुई नथी माटे 'आत्मअपेक्षाए ते असत्य जाणवा, आत्मद्रव्यमा पुद्गल पर्यायरूप पदार्थोनु अस्तित्व नथी किंतु आत्मद्रव्यमा पुद्गल पर्यायरूप पदार्थोनी नास्तिता सदा समये समये परिणामी रहीडे, तद्रूपेतया असत्य जाणवा, अने पुद्गलरूपे ते सत्य जाणवा, माटे पुद्गल वस्तुओ ज्ञानदृष्टिधी जोता आत्माधी अत्यंत भिन्नडे तेमा मारापणानी बुद्धि अज्ञान तथा मोहधी उत्पन्न थायडे, ज्यारे अज्ञान नाश थता वान प्रगटेछे त्यारे मोहनो नाश थता परवस्तुमा थती अहममत्त्वबुद्धि नाश पामेडे

शंका—ज्यारे आ प्रत्यक्ष देखातु शरीर पोतानु नथी एम जाण्यु त्यारे फोड शरीरनो घात कर तो शु करवा देवो ?

समाधान—फोड शरीरनो घात करे तो तिलकुठ करवा देवो नही. अने उलटु शरीरनु सरक्षण करवु यत शरीरमात्र खलु धर्म

साधन प्रथम तो शरीरज धर्म साधनमां कारणीभूतछे. यतः
कष्टु छे के-

श्लोक.

शरीरं धर्मसंयुक्तं, रक्षणीयं प्रयत्नतः

शरीराज्जायते धर्मः पर्वतात्सलिलं यथा. १

भावार्थ-धर्म संयुक्त एवा शरीरनु यत्न पूर्वक रक्षण करवु,
कारण के जेम पर्वतथी नदी उत्पन्न थाय छे तेम शरीरथी धर्मनु
साधन थाय छे ने बळी कष्टु छे के शरीरच पुद्गल धर्मत्वात् आ-
हाराधार-शरीर पुद्गल रूपछे माटे ते आहारना आधारे रहेछे
कष्टुछे के-

गाथा.

देहो अ पुग्गलमओ । आहाराइ विरहिओ न भवे ॥

तय भावे नय नाण । नाणेण विणा कओ तित्थं. १

भावार्थ-देह एटले शरीर पुद्गलमयछे, अने ते शरीर आ-
हार विना होतु नथी. तेना अभावे ज्ञान नथी अने ज्ञान विना
तीर्थ नथी. पूर्वचार वर्षनी दुकाली पढी हती त्यारे आहारना अभावे
श्रुत ज्ञाननी विस्मृति घणी यइ गइ माटे आहार पण श्रुत ज्ञानना
अभ्यासमां चारित्र पालनमां कारणीभूतछे. अने आहार विना
ज्ञान नाश पामेछे, आहार पुनः बे प्रकारनोछे, सावद्य आहार अने
निरवग्राहार-जीवमय जे आहार ते सावद्याहार, अने जीव रहित
जे आहार ते निरवग्राहार-सावग्रआहार भक्षणथी फर्म वध-था-
यछे माटे मोक्षाभिलापिजीवोए निरवद्याहारनु ग्रहण करवु, तेमां
मुनिराज तो सर्वथा सावद्याहारना त्यागी होयछे, सावद्यआहारना
निमि १ . . . नरक पर्यंत गमन करेछे यतः कष्टुछे के-

गाथा

आहार निमित्तेण, जीवा गच्छति सत्तमिं पुढ्वी ।

तडुल जस आहरण, भणियं सुत्ते जिणदेहि. १

भावार्थ—आहारनो अभिलापी तडुल तत्स्य बीजा जीवोने भक्षण करवानी इच्छामात्रथी सातमी नरक सुधी जायडे. माटे भवभीरु मुनिवर्यो शुद्धआहार सयमार्थे ग्रहण करेडे, यतियोने आहार शुद्धि अति दुष्कराडे कष्टु छे के-

गाथा

आहारे खलु सुद्धी, दुल्लहा समणाण समणधम्ममि ।

ववहारे खलु सुद्धी, दुल्लहा गेहीण गिहधम्ममे १

श्रमणोंने श्रमण धर्ममा वर्तता निर्दोष आहारनी माप्ति दुर्लभछे, तेम गृहस्थोने गृहस्थावासमा वर्ततां व्यापारादिमां व्यवहार सुधी दुर्लभछे. शुद्ध आहारथी शरीरनु पोषण सयमार्थम् श्रमणो करेछे प्रसंगथी आहारनु विवेचन करी शरीर धर्मसाधनमां कारणी भूत छे एम सिद्ध कर्यु, धर्मीजीवोनु शरीर धर्म माटेछे तेम पापी जीवोनु शरीर पाप माटे जाणवु चतुरशीति लक्ष जीवयोने परिभ्रमण करता दुष्प्राप्य मनुष्य शरीर चिंतामणि रत्न जेतु पामी जे मनुष्यो खावा पीवामा तेमज विषय सुख भोगववामा, मोज मजा मारवामा शरीरनी सार्थकता समजेछे, ते जीवो मूढ आविवेकी पशु समान जाणवा देवताना शरीर करता मनुष्य शरीर अत्यत उपयोगीछे मनुष्य शरीरथी मोक्ष माप्ति थायडे, बीजा शरीरथी मोक्ष माप्ति यती नथी, माटे शरीरनु आहारादिकथी पोषण करवु रोगादिक थये छेते रोगनाशार्थ औषध दवा करवी. कोइ शरीरनो घात करेता करवा देवो नहिं कारण के शरीर बिना धर्म साधन यतु नथी

शरीर मारूँडे एम मानवु नही, कारण के ते पुद्गलछे शरीरथी न्यारो आत्मा भाववो, शरीर आत्म धर्मनी प्राप्तिमा निमित्त कारणछे एव, उपरना प्रश्नो उत्तर थयो.

प्रश्न-गजसुकुमाल मुनीश्वरे श्मशानमा शरीर घातनो उपसर्ग केम सह्यो ? केम तेमणे शरीरनो घात करवा दीथो ?

प्रत्युत्तर-गजसुकुमालेतो काउसग्ग कर्यो हतो अने एवी तेमनी श्रद्धा हती के शरीरना उपसर्गथी पण चळ्या नहीं. सर्व जीवोने माटे एवी स्थीति नथी. अतरथी भिन्नपणे आत्मभावमां वर्तवु ? व्यवहारथी तेनु भरक्षण करवु, गज सुकुमालनी एवी भवितव्यता हती. तेमज तेनी अतर्भावना प्रवर्द्धमान हती, तेथी एवी स्थीति वनी. एकात जैनमार्ग नथी तेथी शका करवी नहीं, काल, स्वभाव, नियति, कर्म, अने उग्रम ए पच कारणोथी मोक्षरूप कार्यनी सिद्धि थायछे, शरीरनी सार्थकता प्रतधारण तपश्चर्या विगेरेथी छे अते शरीर आत्मानु थयु नथी अने थशे पण नही. नित्य पर्व सम शरीरनी लालना पालना करवामात्रथी आत्महित थतु नथी पण तेथी धर्मनां कार्य करवाथी आत्महित थायछे ? त्रण धन दरेक मनुष्यनी पासे रहेछे, प्रथम बाह्य धन. सुवर्ण, रूपु, जवाहीर, रत्न, राज्य विगेरे जाणवु, ते बाह्य धन आनित्य चचल जाणवु, कोइनी पासे बाह्य धन विशेषछे तो कोइनी पासे स्तोरूछे ए बाह्य धननी अपेक्षाए गरीब तगरमा भेद पडेछे, बाह्य धनने माटे अनेक प्रकारना उपयोगो वलेशो देशोदेश परिभ्रमग आदि उपाधियो वेठवी पडेछे. किंतु ए बाह्य धननो ढगलो मरती बखते साथे लेइ गयो नथी अने लेइ जवानो नथी, बाह्य धननी ममत्राए अइ

निश्च आर्तध्यान अने रौद्रध्यानमा आत्मा परिणमी अनेक प्रकारनां कर्म बांधेछे. अने बहिर्भावे राचीमाची अनेक जन्मनी वृद्धि करेछे

जेम कुभकार चक्रने एकवार वेग आपेछे तेथी ते चक्र चकर-चकर घणी बखत सुधी भम्या करेछे तेम मनने आर्तध्यान, रौद्रध्यानना चिंतवननो एकवार वेग आप्याथी घणा बखत सुधी आर्तध्यानादिमा परिणमी रहेछे रागद्वेषनो वेग आत्माने आपवाथी घणा काल सुधी आत्मा रागद्वेष वेग जोरे ससारमां परिभ्रमण करेछे, माटे अत्र सार ए ग्रहवानोछे के-धर्मनो वेगजो आत्माने आपवामां आवे तो मुक्तिपद आत्मा पामे, तत्पद अर्थे सदाकाल एम भावबु के-देखाती वस्तुओमां हु नथी. त्यारे मारे कचन कामीनीने केम मारी मानवी ? वा मनमां तेजु चिंतन केम थवा देबु कारण के ते वस्तुओ पोतानी नथी तो निरर्थक ते सवधी विचार मारे केम करवो घटे ? हु एटले आत्मा जेमां नथी तेमां रागद्वेषधी परिणमबु मारे केम घटे. कदापि जाणोके शरीर निर्वाह आदि अर्थे ते वस्तुओनु ग्रहण करबु पडे तोपण उदासीन भावे ग्रहण करबु अतर्थी ते वस्तुओधी हु न्यारोछु एवा लपयोगनी स्थिरताए रहु पण तेमा रागद्वेषधी परिणमबु योग्य नथी. संसारनां कार्यो करु पण तेमा लपटाउ नहीं एवी रीते वर्तबु तेज आत्माने हितकारीछे, देखाती वस्तुओ पुद्गलना पर्यायो जाणवा, पुद्गलनो सडण पडण, विवसन स्वभावछे पुद्गलना पर्यायो अनेक आकाररूपे देखायछे अने पाऊ विखरी जायछे जेम सध्या समये पुद्गलना पर्यायो अनेक रगरूपे परिणमेठे अने क्षणमा नष्ट थइ जायछे तेम चक्षुधी देखाती वस्तुओ विचित्र वर्ण गंध रस स्पर्शमय देखायछे अने धत्री ते पाठी जुदा आकाररूपे परिणभी

भिन्नार्ण गध रस स्पर्शने धारण करेते शरीर पण पुद्गलते माटे ते मारू नहीं अने हु तेनो नयी, पुद्गलनी भिन्न जातिछे. अने आत्मानी भिन्न जातिछे तेनी जाति भिन्न अने जेनो धर्म भिन्न जेनी वर्तना भिन्न ते एक कदी होय नहीं. हु आत्मा पुद्गलमा त्वारे केम होंउ ? जो के संसारमा कर्मनायोगे हु पुद्गलथी वस्यो छु तो पण पुद्गलथी निश्चय नयथी जोता हु न्यारो छु. ए प्रीजा विषयनो अल्प विचार कर्यो.

चतुर्थ विषय विचार-हु कथायी आव्यो क्या जाइश ? हु आत्मा क्याथी एटले क्या स्थानमाथी अत्र मनुष्य गतिमा आव्यो, अने हवे आ शरीरनो उत्सर्ग कर्या वाद क्या जाइश ते मवथी स्थिरचितथी विचार करता एम सिद्ध थायते के पूर्व भवमा कोइ पण में सारू कृत्य करेले. सिद्धान्तमा पण कथ्युछे के-जे जीव सरल हृदयी होय, परोपकारी होय, दयालु होय, धर्माथी होय, कोइ जीवनो घात करनार होय नहीं ते जीव मरीने मनुष्य थायछे. अर्थात् शुभभावनायुक्तजीव मरीने मनुष्य गति प्राप्त करेते, तपश्चर्यावत, तृती, परोपकारी, ब्रह्मचर्यादि गुण विशिष्ट जीव देवगति प्राप्त करेते, पापी, मालिनारभी, कृतत्र, कपटी, हिंसा असत्यादिथी युक्त जीव नरक गति पामेते, कपटवत पापादि युक्त जीव तिर्यचनी गति प्राप्त करेते माटे ते उपरथी विचारतां सिद्ध थायते के पूर्व भवमा कइ सारा कृत्य करेला के जेना योगे मनुष्य शरीर ग्रही तेमा वदशो छु. जेने जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न थायते ते पोतानो पूर्वभव यथातथ्य जाणेछे, जाति स्मरण मति ज्ञाननो भेदछे, समातिराजा पूर्वे द्रुमरूनो जीव हता. मिष्टान्न भक्षण लालचथी श्री आर्य सुहस्ति आचार्यजीने साधु थवानी विनति करी, गुरु महाराजे योग्य जाणी लाभनी खातर साधु वेप समर्प्यो,

त्यांची शुभ भावना योगे मृत्यु पामी समति राजा तरीके थया, समति राजाना भवमा गुरु महाराजने देखी पूर्व भवनी यादी आवी, अनेक जिनविंब भराव्या, अनार्य देशमा जेवाके अफगानिस्तान वलुचिस्तान, इरान, अरबस्तान, तिबेट विगेरे स्थाने श्रावकोने साधु वेप समर्पिं जैन धर्मनो बोध देवा मोकल्या घणा राजाओने जैन धर्मी कर्या अवति सुकुमाल पण उज्जयिनी नगरीमा आचार्य श्री आर्य सुहस्तिना योगे जाति स्मरण ज्ञान पाम्या. हाल पण जे स्थाने अवति सुकुमाल स्वर्गस्थ थया त्या अवति सुकुमाल पार्श्वनाथ नामनु जिनमदिरछे, सुदर्शना पूर्वभवमां समलिकाहती ते तद्भवमां पच परमेष्टि मत्र श्रवण करी मृत्यु पामी सिंहलद्वीप नृप पुत्रिका थइ त्या रूपभदास शेठना मुखथी नमो आरिहताण पद सांभळी इहापोह करता जातिस्मरण ज्ञान पामी भरुअच्च नगरमां जिन मदिर तथा मुनिवर्णेने वदन करवा आवी पूर्वभवमां भरुअच्च नगरनी वाहिर् ज्यां मरण पामी हती त्यां श्री ज्ञानभानु नामना आचार्य पधार्पा हता तेमणे सुदर्शनाने उपदेश दीधो सुदर्शनाए समलिका विहार बधाव्यो, मतिज्ञाननी उत्कृष्टि स्थिति छासठ सागरोपमनी छे पाठ-कालमसख सखच धारणा मतिज्ञाननो धारणा नामनो भेदछे तेनो असख्यात सख्यातो काल जाणवो, जाति स्मरण ए धारणामा भट्टेजे, अर्थावग्रहतो एक समयनो जाणवो उत्कृष्ट अने जघन्यथी इहा अपायनो काल अतर्मुहूर्त्तनो जाणवो. समकिती जीवने मतिज्ञान होयजे अने मिथ्यात्वी जीवने मति अज्ञान होयजे सम्यग् रत्तिया तत्त्वबोध थया विना तत्त्वज्ञान तरफल्ल वळतु नथी, सम्यग् तत्त्वनी श्रद्धा विना मतिज्ञान उत्पन्न थतु नथी हवे मूळ विषय उपर आर्वाये देवता पूर्वभव जाणी शकेछे, नारकीना जीव पोतानो पूर्वभव जाणेजे, हाळना

वखतमा जाति स्मरणज्ञान उत्पन्न थवानो निषेध नथी. केटलाक सदगुरु सगतिहीन अनार्यमति अज्ञानी आत्मानो पुनर्जन्म मानता नथी एवा नास्तिक शिरोभाणि ज्ञानदृष्टि शून्य जीवो परमपद पायी शकता नथी. जीव पण अनादि कालथी आ ससारमाळे अने जीवने कर्मपण अनादिकालथी लाग्याळे ते कर्मनायोगे अवतारो ग्रहण करवा पडेळे तेनी सार्धी-तीना हेतुओ-नीचे मुजव.

- १ जोड कहेवातां छोकरा नानपणमा एक सरखा होवा छतां अने तेमने एक सरखी रीते उछेरवामा आव्या छता पाउळ-थी तेओना विचार आचारमा भिन्नता पडेळे तेनु कारण कर्म जाणवु.
- २ पिता पुत्रना देखावनु सदृशपणु छता वच्चेनी अकल अने वि-चारमा जे आसमान जमीननो तफावत जोवामा आवेळे तेनु कारण पण कर्म जाणवु.
- ३ एक माबापना वे पुत्रो छता एकने कविता घनाववानी सहेजे शक्ति उत्पन्न थायळे अने बीजो अभ्यास करता पण कम बुद्धिमान् अने कविता करी शकतो नथी तेनु कारण पण कर्म जाववु कारण के एकने ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम थयो छे अने बीजाने थयो नथी.
- ४ आ पृथ्वीमां एक दुःखी, अने बीजो सुखी एक जन्मथी अध, लुलो, लगडो, बधिर, वा भीखारीना पेटे जन्मी मरण पर्यंत दुःख पामनार थायळे, त्यारे बीजो मनुष्य देहथी सुखी सारा कुळमा पेटा थयेलो, धनथी सुखी बुद्धिमान्, तथा मान सन्मान पामनार जोवामा आवेळे तेनु कारण जीवे पूर्व भवमा करेला पाप पुण्य तेनु फल जाणवु.

એમ થવાનું કારણ ઈશ્વરના હાથમા છે એમ કહીએ તો આપણે
 ઈશ્વરને ગેર ઇન્સાફી અને દયા વિનાનો ઠેરવીએ છીએ, કર્મથી
 જ આવા અવતારો વને છે. ઈશ્વરને સુખ દુઃખ આપનારો મા-
 નવું એ ન્યાયથી વિરુદ્ધ તેમજ મહા અજ્ઞાન જાણવું. ઈશ્વર
 કોઈને સુખ દુઃખ આપતો નથી. જીવ, પુણ્ય, પાપ રૂપ કર્મ
 ના અનુસારે સુખ દુઃખ પામે છે એમ શ્રી તીર્થંકર ભગવાન
 કહે છે, તીર્થંકર કેવળ જ્ઞાની છે માટે તે સત્ય પદાર્થ સ્વરૂપ
 કહે છે. માટે તેમના વચન ઉપર વિશ્વાસ રાખવો. પુનર્જન્મ
 સિદ્ધિ સર્વ પ્રમાણ સિદ્ધ છે, ચોરાશી લાખ
 જીવોનિમાં પરિભ્રમણ કરતો જીવ મહાપુણ્યોદયે મનુષ્ય
 જન્મ પામે છે. અમૂલ્ય ચિંતામાં સમાન માનવતનું પામી ભવો
 દાધિનો પાર પામવો એ જ કર્તવ્ય છે સસારરૂપ સમુદ્ર તરવા
 મનુષ્યાવતાર એક વહાણ સમાન છે. મનુષ્યરૂપ વહાણમાં
 આત્મ રૂપ ઉતારુ બેઠો છે આત્મોપયોગ રૂપ સ્વલાસી વહાણને
 ચલવેતો વહાણ સમ્પર્ગ માર્ગે ચાલે સમુદ્રમાં તૃષ્ણા રૂપ મોટી
 ભમરીઓ આવે છે તેમાં વહાણને ઘુટવા નહીં દેતાં શુદ્ધોપયોગ
 રૂપ સ્વલાસી સમુદ્ર પાર વહાણ ઉતારે માટે હે ચેતન તું શુદ્ધો-
 પયોગનો આદર કર કે જેથી તું અનંત શાશ્વત સુખ પામે

તું કયા જાઈશ—પરભવના પુણ્યથી માનસિક શક્તિવાલું મા-
 નવ તનું પ્રાપ્ત થયું છે તે આયુષ્યની મર્યાદા સુધી અતે રહે છે. પશ્ચાત્
 તે શરીરમાંથી આત્મા જુદો પડે છે કોઈ આત્મા મહાપાપ કરી ન-
 રક ગતિમાં સચરે છે નરકો સાત છે, પહેલી કરતાં વીજી નરકમાં
 વિશેષ દુઃખ છે, વીજી કરતાં ત્રીજીમાં વિશેષ દુઃખ જાણવું. સર્વ
 કરતાં સાતમી નરકમાં વિશેષ દુઃખ ભોગવવું પડે છે, ઉત્કૃષ્ટ તેત્રીસ
 સાગરોપમનું આયુષ્ય સાતમી નરકના જીવાને છે જે જીવો હજારો
 ગાયો ભેંસો વફરાને રેંસી નાંખે છે અને તેથી પોતાનું ગુજરાન ચ-

लावेछे तेवा जीवो प्रायः नरकगतिना मेमान थइ त्यां दुर्गंधमय खरावशरीरोने पापी असह्यदुःख क्षणक्षणे भोगवेछे, विविध प्रकारनी क्षेत्र वेदनाओ भोगवेछे, जे जीवो हजारो माळलीओनु भक्षण करेछे अने रात्रिदिवस तेमने मारमानो उग्रम करी रह्याछे तेवा जीवो नरकगतिमा गमन करेछे. मरती वखते तेवा जीवोनी लेश्या घगडे छे, अने नरकमा दुःख पामता तेवा जीवोने मुकाववा कोइ जतुं नथी. त्यां नरकमा महारौख दुःख पामेछे, करेला पापोमाथी छुटता नथी जे जीवो शिकार रमी हजारो पखी पथुने मारी तेना मासथी पापी पेट भरेछे अने सदाकाल तेवा पापी शिकारकृत्यमा राचीमाची रहेछे तेवा जीवो प्रायः नरकगतिमा परमाधामीनी करेली वेदनाओ, घूमो चीसो पाडता भोगवेछे, सागरोपम वर्ष सुधी नरकमा रहेछे, ते जीवोने जरामात्र पण सुख नथी आख मीचीने उग्राडीए तेटली वखत पर्यंत पण नरकमा सुख नथी जे जीवो मासथी पापी पेट भरी आनद मानेछे तथा परस्त्री लपटी होयछे तेवा जीवो प्रायः नरकगतिमा जायछे, रौद्र-यानना चार ४ पायामा वर्ततो जीव क्रूरपरिणामयोगे नरकमा गमन करेछे. माटे हे आत्मा तु जो उपरोक्त हेतुओनु सेवन करीशतो नरकगतिमा जाइअ असख्य जीवो रौद्र परिणामने धारण करता नरकगतिमा गया अने अनेक जायछे अने जशे. तु मनथी तारू वर्तन तपासीजो, तु गत्री दिवस केवा प्रहारना विचारो धारण करेछे, तु रात्रीदिवस पापना केवा केवा कृत्य कोछ वापे तेवु उगे आ कहेवतने याद राख ते अज्ञानथी नरकगतिमा जवाय तेवा पापो कर्या होय तो इवे ते वावतनो पश्चात्ताप करवो घटेछे, अने गीतार्थगुरु पार्श्वे आलोचना लेवी घटेछे. प्रायश्चित्त विना पापनी शुद्धि थती नथी जेने भयनी भीति उत्पन्न थइ होय ते प्रायश्चित्त ग्रहेछे, मान ल-

ज्जानो त्याग थाय अने वैराग्य प्रगटे त्यारे प्रायश्चित्त लेवायछे, जे जे गुप्त पापो कर्यां होय तेने बीजानी आगळ कहेवायी जीव डरेछे वा लज्जा पायेछे पण मोक्षाभिलाषी जीवोए गुरु पासे लोकवासना त्याग करी प्रायश्चित्त ग्रहण करखु त्रतभगनु प्रायश्चित्त ग्रहनार जीव आराधक जाणवो. मनमा शल्य राखवु नहीं फट्टु छे के—

गाथा

ससल्लो जइवि कटुग्ग, घोर चीर तव चरे ।
 दिव्ववास सहस्स तु, तओपि त तस्स निप्फल १
 सल्लुद्धरण निमित्त, गीयस्स नेसणाउ उक्कोसा ।
 जोयण सयाड सत्तउ, वारस वरिसाइ २
 आलोअणा परिणओ, सम्म सपट्ठिओ गुरु सगासे ।
 जइ अतरावि काल, करिज्ज आराहगो तहवि ३
 लज्जाइगारवेण, बहुस्सुअ मएणवाविदुच्चरिअ ।
 जो न कहेइ गुरुण, नहु सो आराहगो भणिओ ४
 जह वालो जपतो, कज्जमकज्ज च उज्जुअ भणड ।
 त तह आलोडज्जा, मायामयविप्पमुक्कोअ ५
 न वि त सत्थं व विसवर, दुप्पउत्तो च कुणइ वेआलो ।
 ज त च दुप्पउत्त, सप्पो व पमाइओ कुद्धो ६

माटे उपरोक्त भावार्थ समझी सद्गुरु पार्श्व कृत पापोनी त्रत भगोनी आलोचना लेवी गुरु गीतार्थ जाणवा तेमनी पासे आलोचना लेवी सातसे योजन तथा वार वर्ष सुधी गभीर

गीतार्थ पासे आलोचना लेवानी तीत्रेञ्ज राखवी, तथा आलोचना लेनार पण आत्मार्थी तत्त्वनो अभिलाषी होवो जोइए गुरुनी पार्श्वे पापनो पश्चात्ताप करतो माणी कर्मथी हळडो थायळे अने निर्मल थयेलो निशल्य भव्यात्मा सत्पथे चालेडे, जेम कोरना उदरमा उगाड थड ते अगक्त थयो होय तो ते माणस वैद्यने नाडी देखाडेडे, वैद्य तेनी वर्तणुक पुत्री लेळे, कया कया पदार्थो खावामा आव्या हता ते पुडेडे त्यारे रोगी पण सर्व वात कहेडे पश्चात् वैद्य तेना शरीने सारु करवा प्रथम मळ शुद्धि जुलाव आपेळे. पश्चात् बीजी दवाओ आपेळे, तेम गुरु महाराज पण अनेक प्रकारना पापोनी आलोचना रूप जुलाव आपी तेनु हृदय शुद्ध करेळे पश्चात् आत्महितने माटे अन्य मार्गो, ततो वतावेळे माटे हे चेतन तु हवे विचार कर अने नरकना हेतुओ दूर कर श्रीगीरभगवान्नी मशीए माथाना वाळ जेटडा धणी रुया एम प्रभुनी पासे पश्चात्ताप कर्यो तेथी सर्व पाप जतु रहु, हे चेतन आर्तभ्यान जो मनमा करीश तो तिर्यचनी गतिमा जाइश धर्मभ्यानथी देवगति मनुष्यगति प्राप्त थायळे अने शुक्र ध्यानथी मोक्ष स्थान प्राप्त थायळे माटे चेतन-चारे गतिना द्वार तारे माटे खुलाडे, जेवां कृत्य करीश तेवी गतिमा जाइश-आयुष्य पूर्ण थता, देवता मनुष्य तिर्यच अने नरक ए चार गतिमाथी गमे ते गतिमा कर्मानुसारे तु जाइश-एक गतिमाथी नीकळी गीजीमा, बीजीमाथी नीकळी गीजीमा, एम अनादि कालथी तु चतुर्गतिमा परिभ्रमण करेडे. चतुर्गतिमा परिभ्रमण करानार कर्मळे कर्माष्टक प्रकृति रूप द्रव्यकर्म जाणवु. राग अने द्वेष रूप भावकर्म जाणवु, राग अगर द्वेषना विचारो कर्याथी जीव पुद्गल स्वरुने कर्म रूप परिणमावी ग्रहण करेडे.

केवल ज्ञान उत्पन्न थायछे तेवा तीर्थकर महाराजाओ पण चारित्र अगीकार करेछे अने गृहस्थावात्मनो त्याग करेछे. तो राजा भव्यजीवोने चारित्र विना मुक्ति श्री रीते मन्त्रे अने बगी शास्त्रमा पण न्छुछे के-

गाथा

दसण नाण जुओ विहु। न कुणइ कम्मखखय चरण रहिओ।
नाणरुइ जुओ विज्जुव्य। किरिय रहिओ अरोगत्त १

भावार्थ-दर्शन अने ज्ञानबडे सहितपण प्राणी चारित्र विना कर्मनो क्षय करतो नथी. जाणकार वैय क्रियाहीनपणाथी रोग रहित थाय नहीं तेनी पेठे-रगी रूगु छे वे-

गाथा

बहुभव कयपि कम्म। खवइ चरित्तमप्पफालंमि।
विर सचि इंधण भर। खणेण निदहइ जइ जलणो१
एग दिवसपि जीवो। पव्वज्ज मुवागओ अनन्नमणो।
जय वि न पावइ मुख। अवस्स वेमाणिओ होइ २
अत्यउ ता एग दिण। अतमुहुत्तपि चारु चरण जुओ।
खवइ असखिज्ज भव। जिजयपि जीवो बहु कम्म ३
सुइरपि चरण पिणा। न दिंति नाण च दसण सिव।
वरचरित्त जुयाइ। खणेण ताइ सिव फलाइ। ४

भावार्थ-उहु भवना कया कर्मने चारित्र अल्प फालमा क्षय करेछे घणा फालनो सचित इंधण ममूहने जेम भत्रि राजी भस्मरु-रेछे तेनी पेठे अन्यत्र चित्त नथी अने आत्मरमणतायां चित्तवाञ्छ

केवळ ज्ञान उत्पन्न थायजे तेवा तीर्थंकर महाराजाओ पण चारित्र अगीकार करेजे अने गृहस्थावासना त्याग करेजे. तो बीजा भव्यजीवोने चारित्र विना मुक्तिशी रीते मळे? अने वळी शास्त्रमा पण कहुजे के-

गाथा

दसण नाण जुओ विहु। न कुणइ कम्मखखय चरण रहिओ।
नाणरुइ जुओ विज्जुव। किरिय रहिओ अरोगत्त ?

भावार्थ-दर्शन अने ज्ञानपडे सहितपण प्राणी चारित्र विना कर्मनो क्षय करतो नथी जागरार वैय क्रियाहीनपणाची रोग रहित थाय नहीं तेनी पेठे-पत्री कहु जे वे-

गाथा.

बहुभव कयपि कम्म । खणइ चरित्तमप्पकालंमि ।
चिर सच्चि इधण भर । खणेण निद्वद्दइ जह जलणो ।
एग दिवसपि जीवो । पव्वज्ज मुवागओ अनन्नमणो ।
जय वि न पावइ सुख्ख । अरस्स वेमाणिओ होइ २
अन्यत्त ता एग दिण। अतमुहुत्तपि चारु चरण जुओ।
खवइ असखिज्ज भव । जिजयपि जीवो बहु कम्म ३
सुइरपि चरण विणा । न दिति नाण च दसण सिव ।
वरचरित्त जुयाइ । खणेण ताइ सिव फलाइ । ४

भावार्थ-बहु भवना कर्मा कर्मने चारित्र अल्प काळमां क्षय करेजे घणा काळनो सचित्त इधण समूहने जेम अत्रि वाळी भम्मरु-रेछे तेनी पेठे अन्यत्र चित्त नथी अने आत्मरमणतामा चित्तवाळ

प्रथम अभ्यासमा मनविचार करता बंध रहेतु नधी माटे तेने कर्क उग्रम तो जोइए माटे आत्मस्वरूप चिंतनमा मनने दौरतु. एटले मन बहिरनी हजारो वस्तुओमा भटकतु पोतानी मेळे बंध थशे. मनने बहिरनी वस्तुओमा भटकवाधी जेवो आनद मेळेछे तेवो पहेला मळशे नहीं. जेम नाना ठोरराने निशाळे जता जेतु कटाळा भरेलु लागेछे तेम तथा कोइ पखीने प्रथम पाजरामा पुरवामा आवेछे त्यारे जेम कटाळा भरेलु तेने लागेछे तेम पेला छोरराने ज्यारे निशाळमा भणता समजण पढेछे त्यारे कटाळो थतो नधी अने पखीने जेम पाजरामा खावो पीरानो आनद थायछे तथा तना धणीनी साये हळी मळी जायछे त्यारे स्थिर थायछे तेम मन पण आत्म यानमा प्रथम कटाळी जायछे पण ज्यारे तेने स्थिर आत्म यानमा करवामा आवेछे त्यारे कर्क स्थिर थायछे. अने अते तेना उपर वायु मेळवी शकामछे अने ते वाहना त्रिपयोमा भटकतु नधी अने शान्त जेतु थड जायछे पश्चात् निविकल्पमय आत्मस्वरूपमा स्थिर उपयोगदृष्टिनी धारा वृद्धि पामेछे तेथी भव्यात्मा आत्माना असत्यमदेशे लागेला घणा कर्म निर्जरावेछे, अने निराधार स्वपर प्रकाशक बने माटे परमपदनी चाहना करनार प्रथम मनोजय करवो आवश्यकछे श्री आनदघनजी महायोगी कहेछे के-

श्री कुयुनाथजीना स्तवनमा=

मन साभ्यु तेणें सघळु सा यु एह वात नहि खोटी.

इम कहे साभ्यु ते नवि मानु, ए कइ वात छे मोटी हो, कुयुजिन०

जेणे मन वश कर्यु तणे मुक्ति सुख वश कर्यु एम कहेतु अतिशयोक्ति भर्यु नधी माटे पहेला तो टरेक अभ्यासीए मन वायुमा राखवु, जेम घोडाओ गाडी गमे त्या घसडी जायछे माटे तेओने वायुमा राखवा पढेछे, तेम इद्रियो रूपी घोडाओ आ शरीररूपी

गाडीने पोताने गमे त्या नहिं खेंची जाय ते मारु अडर बेठेला आत्माए तेओने काचुमा राखवानाडे, प्रथम अवस्थामा मनने का-
तुमा राखवानी जेम जेम वपारे कोशेग करवामा आवेछे तेम तेम
नहीं जोइता विचारो धमधोकार थया करेछे, सारा, नठारा, उच,
धनना, स्त्रीना, वेपारना हजारो विचारोधवानु कारण समजी काढी
खप विना विचार थवा देवो नहीं, सारा सारा पुस्तको वाचवामा
आवे त्या सुधी मन ते काममा राकाइ रहेछे, अने खराब विचारो
नो नाश धायछे, खराब विचारो महारोगोना करता पण भूडाछे,
मोटा रोगो तो एक भवमा पीडा करेछे, किंतु खराब विचारोयी
माठी असरो थइ घणा चीरुणा कर्म वधाय छे, माटे अतरना ख-
राब विचारो माटे विशेष लक्ष आपवानी जरुछे अने तेवा अशुभ
विचारमय आर्त्तभ्यान अने रौद्र याननु स्वरूप शास्त्रिमा रुभ्युछे,
आर्त्त यान अने रौद्र व्याननु मूल कारण अज्ञान, रागद्वेष अने
मोहछे, अज्ञान ए मझ शत्रुछे अज्ञाननो नाश करवा सद्गुरु उप-
देश वारवार साभळवो अने तेनो विचार करवो पड्द्रव्योनु स्वरूप
धारतु. जड चेतननो विभाग करवो तेथी स्व अने परनी समजण
पडता भेद ज्ञान प्रगट थशे समकित प्रगट थवानु मुख्य कारण भेद
ज्ञानछे जड अने चेतन वे वस्तु भिन्न भिन्न छे एटला मात्रथी भेद
ज्ञान मानी खुगी थतु नहिं पण आगळ वथी अतरथी सदाकाल वे
वस्तुओ न्यारी समजवी. हवे रागद्वेष ए वे मोटा भुतछे, राग ए
चूडेलछे अने द्वेष ए जन्डछे. ए वे ज्या सुधी माणसमां छे त्यां
सुधी विचारो मनुष्य सदाकाल दु खीयो जाणवो, चूडेल जेम म-
नुष्यनु रधिर चूसी लेछे, तेम रागरूप चुडेलथी आत्मानी अनति
रुद्धि कर्मावरणथी आच्छादन थती जायछे, जन्ड जेम माणसना
शरीरमा पेसी अनेरु तोफान करेछे, माणसनु भान भूलावेछे. तेम

द्वेषरूपी जन्म आत्माने बळग्यो छतो अनेक प्रकारनां तोफान करे छे अने आत्मानु भान भुलावेछे, चूडेल अने जन्मने कोइ महा उस्ताद मन प्राप्ती काढेछे तेम आत्माने लागेलां रागरूपी चूडेल अने द्वेषरूप जन्म ते उस्ताद गीतार्थ गुरुना उपदेशरूप मनयी दूर थायछे त्यार आत्मा अत्यंत सुखी थायछे आ ठेराणे शिष्यना आत्माभा रहला रागद्वेषने काढवामा गुरु प्रलयात् निमित्त कारण जाणवा, अने उपादन कारण तो शिष्यना आत्मानी शुद्ध परिणति जाणवी आत्मानी शुद्ध परिणति वाय त्यारे आत्मा निर्मळ पडने निश्चय नययी कहेयातु जे पोतानु शुद्ध स्वरूप, तन्मय आत्मा लोक अने अलोक तेना वरलज्ञानमा प्रकाशेछे. ज्ञानाव नाश पामेछे त्यारे अनंतज्ञान उत्पन्न थायछे.

प्रश्न—ज्ञानावरणीय कर्म क्या रहेतु हसे ? अने तेनु यतु हसे ?

प्रत्युत्तर—ज्ञाननु जे आच्छादन करे ते ज्ञानाव पच प्रकारछे पच प्रकारनु ज्ञान आच्छादन वरणीय कर्म पण पच प्रकारनु जाणतु आत्मा अशुद्ध परिणतियोगे ज्ञाननु पोताना असह्य प्रदेशोनी साथे क्षीर नीरना ए उपरथी स्पष्ट समजाशे के क्षीर नीरना घेछे ज्ञानावरणीय कर्म आत्माना प्रदेशोनी ते ज्ञानावरणीय कर्मनु ग्रहण अज्ञानयोगे ग्रहण थायछे

जेम सूर्यना किरणोनो प्रकाश चाडळाना छे, तेम आत्मानु सूर्य सदृश जे ज्ञान ते ज्ञानावरणीय थायछे. तेथी आत्मज्ञान स्वपर प्रकाशरूप कार्य करी

हवे ज्यारे ज्ञानावरणीयकर्मनो नाश थायडे त्यारे अनतज्ञान उत्पन्न थायडे, दर्शनावरणीय कर्मनो सर्वथा नाश थवायी अनत दर्शन उत्पन्न थायडे. तथा ज्ञाता अने अज्ञाता वेदनीयनो सर्वथा क्षय थवायी अनत अब्याबाध सुख उत्पन्न थायडे मोहनीय कर्मनो सर्वथा क्षय थवायी क्षायिक सम्पत्त्वनी तथा चारित्रनीप्राप्ति थायडे, आयुष्य कर्मनो क्षय थवायी आत्मा साट्टि अनत स्थिति पामेछे साराश वे—आयुष्य कर्मधी मुक्त थयेलो जीव सिद्धशिलानी उपर एक योजनना २४ चौवीस भाग करीए तेमाना त्रेवीम भाग मूकी चौवीसमा भागे एक समयमा सिद्धिस्थानमा जीव विराजेडे त्या गयानी आट्टिछे पण त्याधी पडवानु नधी माटे अत नधी माटे साट्टि अनतमा भागे सिद्धमा मुक्त थएल मुक्तात्मा रहेडे. नामकर्मना नाशधी आत्मा पोतानु अरूपीपद आविर्भावे करेडे गोत्रकर्मना नाशधी आत्मा अगुरु लघुगुण प्राप्त करेडे अतराय कर्मना नाशधी आत्मा सद्व्रज जे अनतवीर्य तेने प्रगट करेडे एम ए जाठ कर्मना नाशधी आत्मा अष्टगुणने प्रगट करेडे अने परमात्मरूपे थायडे, पचमीगति मोक्ष तेनी प्राप्ति कर्मना क्षयधीडे, एम जीवने चारे गतियोमा जवाना कारणो वताव्या तेमज पचमीगतिमा जवानो मार्ग याने उपाय वताव्यो आत्मा जेवु वर्तन चलावणे तेवी गतिमा जशे ए स्पष्ट बात छे क्याधी आव्योने क्या जाडश ? ए सवरी विचार लग्यो, हवे पचम विषय सवधी विचार लखेडे

पचमविषय—मनुष्य जन्मनी साफल्यता ज्ञाधी—पचमगति साय कर्वाधी मनुष्य जन्मनी साफल्यता थायडे पुण्यपापप्रान्मुक्ति पुण्य अने पापना क्षयधी मुक्ति पद मळेडे शुभ कर्मने पुण्य रूपेडे अने अशुभ कर्मने पाप रूपेडे. शुभ वा अशुभ कर्म पौद्गलिक छे, ते प्रकारना कर्मने पण आश्रव कहेछे, शुद्धपुण्य-

गाथा.

कुंडल विगमो मउडु प्पाओ कणगं अवठियं जहा ॥
तहसव्वेवि पयत्था, जीवोनेओ पुणो एव ॥ १ ॥

कुंडलरूप पर्यायपणे सुवर्णनो नाश अने तेनो ज्यारे मुकुट
उनाव्यो त्यारे मुकुटरूप पर्यायपणे सोनानो उत्पाद, अने सुवर्णपणे
त्रौव्यता कुंडलमा तेम मुकुटमा पण उनी रहीडे, सोनु कायम
वनी रहुडे सुवर्णमा सुवर्णना पर्यायोनो एटले आकारोनो उत्पाद
व्यय थया करेछे. तेम अत्र जीवद्रव्यमा पण अनत गुणोनो उत्पाद
व्यय समये समये थया करेछे. एम धर्मास्तिकायद्रव्य, अर्थास्ति
काय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय अने उपचारे कालमा पण
उत्पाद व्यय थया करेछे, अने ध्रौव्यतापणु सदा अवस्थित छे,
पद्द्रव्य द्रव्यार्थिकनयापेक्षया नित्य जाणवा अने पर्यायार्थिकनया
पेक्षया अनित्य जाणवा, जीवे धारण करेला मोटा शरीरमा वा नाना
शरीरमा आत्माना असख्यात प्रदेशो सरखा जाणवा-ते वात
दृष्टातथी दहावेछे-

गाथा

सकोय विकोएहिं, पईवकतिव्व मल्लगगिहेसु ॥
ह्थिस्सव कुथुस्सव, पएससखा समाचेव ॥ १ ॥

मृत्तिकाना नाना वा मोटा कुडामा दीपरुनी काति सकोच अने
विकागे करी युक्त जेमछे. एटले नाना कुडामा दीपरुनी काति स-
कोचपणे रहेछे, अने तेज पाठी दीपरुनी काति मोटा कुडामा विका-
शपणे रहेछे, तेम जीव पण हाथीनु शरीर पामना तेमा आत्माना
प्रदेशोना विकागथी सर्व शरीरने व्यापी रहेछे तेम कुथुवानु शरीर
जीव ज्यारे ग्रहेछे त्यारे तेटला शरीरमा जीवना असख्यातप्रदेशो

ભાશ્રવ કહેવાય છે અને પાપને અશુભાશ્રવ કહેવાય છે આત્માને
 અનાદિ કાલથી આશ્રવ ઇટલે કર્મ લાગ્યુ છે, ક્ષીરનીરવત્ આ
 ત્મા અને કર્મનો સરથ થયો છે. આત્માના અસંગ્યાતા પ્રદેશો
 છે તેમાં પ્રતિ પ્રદેશે અનતિ કર્મની વર્ગના આ લાગી છે એકેક
 વર્ગના મંયે અનતા પુદ્ગલપરમાણુ છે એમ અનતા પરમાણુ જીવ
 સાથે લાગ્યા છે વર્ણગઘરમ અને સ્પર્શમય પરમાણુઓની
 વર્ગનાઓ જાણવી, જીવદ્રવ્યને લાગેલા પરમાણુધર્મી અનત
 ગુણા પરમાણુઓ છૂટા છે—કર્મ સહિત આત્મદ્રવ્ય પણ સત્તાથી
 સિદ્ધ પરમાત્મા સમાન છે. જીવ દ્રવ્ય નિત્ય પળે અને અનિત્ય
 પળે કશુ છે કે—

ગાથા

નિચ્છાનિચ્છ સરૂવા, ભાવા સવ્વેવિ તાવ તિયલો એ ॥
 ઉપ્પાય વિગમ ઠિદ્ધ ધમ્મ, સગયા તે પુણો એવ ॥૧॥
 પુવ્વભવપજ્જણ, વિગમોદ્દહ ભવગણ ઉપ્પત્તી ॥
 જીવ દવ્વેણ ઠિદ્ધ, નિચ્છા નિચ્છત્તમેવતુ ॥ ૨ ॥

નિત્ય અને અનિત્ય સ્વરૂપી સર્વે પદાર્થો તિલ્લોરૂપા વર્તતા ઉ
 ત્પાદવ્યય અને ધ્રૌવ્યતા ધર્મમય જાણવા, એક પદાર્થમા ઉત્પાદવ્યય
 ધ્રૌવ્યતા કેવી રીતે થાય છે તે ઘટાવે છે—

યથા જીવદ્રવ્યમા પૂર્વ ભવના પર્યાયનો વિનાશ અને આભવના
 પર્યાયથી ઉત્પાદ અને જીવ દ્રવ્યત્વપણે ધ્રૌવ્યતા એમ ત્રણ ધર્મમય
 જીવ પદાર્થ જાણવો, જીવ દ્રવ્યમાં ગતિપર્યાયથી ઉત્પાદવ્યય ધ્રૌવ્ય-
 તા દર્શાવી, આત્માના સસારાવસ્થામા અશુદ્ધપર્યાય જાણવા વગી
 સ્ફુલ્લદૃષ્ટાંતે ઉત્પાદવ્યય ધ્રૌવ્યતા વર્ણવે છે—

वादी तने केवलज्ञान थयुडे के एम कही शके. ना. त्यारे असरयात प्रदेश आत्माना ठे एम श्रद्धा कर. मति कल्पनाथी कइ काम थतु नथी वळी हे शकावादी मृक्षमद्विथी समज के ज्या आत्माना प्रदेशोडे ते आत्माना प्रदेशोने व्यापीने ज्ञान अनतघणु रळुडे, प्रति प्रदेशे अनतु ज्ञान रळुडे. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अविज्ञान, मन पर्यवज्ञान अने केवलज्ञान ए पचमानु कोडपण ज्ञान आत्माना प्रदेशोने त्यागीने रहेतु नथी. हवे आत्मानो असरयात प्रदेश न मानीए नहींतो एक मोटो विरोध आवेछे.-

शिष्य -हे सद्गुरो आत्माना असग्यात प्रदेशो मानीए नहीं तो मोटो शो विरोध आवेछे-ते कृपा करीने कहो.

सद्गुरु-प्रथमतो केवली केवलीसमुद्रयात करेडे. लोकाकाश प्रमाण आत्माना प्रदेशो कर्मनु परिशाटन करवा विस्तारेछे अने कर्म भोगवी लेडे ते वातनो विरोध आवेछे एक प्रदेश लोकाकाश प्रमाण विस्तारातो नथी तेथी शी रीते कर्मनु परिशाटन करे नागो पलाळे शु अने नीचोवे शु एवी वात थइ, वळी बीजो विरोध ए आवेछे वे-ज्यारे चतुर्दशपूर्वी शका पुडवा माटे आहारकशरीर, लब्धिथी वनावी सीमधर स्वामी पासे मोरुलेडे त्या जड ते शरीर शका पुच्छी तीर्थकर सीमधरस्वामी पासेथी उत्तर लेइ जलडी आवेछे. हवे कहो के-घउदपूर्वाए वनावीने मोरुलेळु जे आहारक शरीर तेमा आत्माना प्रदेशो ररा के नहि ?

शिष्य- हा सद्गुरो ते आहारक शरीरमा आत्माना प्रदेशो होवा जोडए- जो ते आहारक शरीरमा आत्माना प्रदेशो न होयतो ज्ञान विना भगवान्ने प्रश्नशी रीते पूडे. अने भगवान्

વ્યાપીને રહે છે. કર્મ સયુક્ત સસારી જીવ શરીરમા વસ્યો છે તેની અપેક્ષા નાનામા નાનુ અગુલના અસરયાતમા ભાગનુ શરીર ધારણ કરે છે માટે અગુલ અસરયાતમા ભાગ જેવડો આમા કહેવાય છે અને કેવલી સમુદ્રાત કરતા જીવ લોકરૂપમાણ અસલ્યાત પ્રદેશો વિસ્તારે છે માટે તદ્રૂપેશાથી લોકરૂપમાણ આત્મા કહેવાય છે મોવ દશમા આત્મા અક્રિય થવાથી એકરૂપે આત્માની મ્યીતિ રહે છે શુદ્ધચુદ્ધ સિદ્ધ પરમાત્મામાં પણ ઉત્પાદિ વ્યય ધ્રીવ્યતા નથી રહે છે.

પ્રશ્ન—હે સદ્ગુરો! સસારાવસ્થામાં શરીર પ્રમાણે આત્માના પ્રદેશોનો સંકોચ વિકોચ થાય છે ત્યારે આત્માના પ્રદેશો એક વીજા પ્રદેશથી જુગ પડતા હશે કે કેમ—

પ્રત્યુત્તર—તેથી સ્થિતિમા જો કે આત્માના પ્રદેશોનો સંકોચ વિકાશ થાય છે તોપણ પ્રત્યેક પ્રદેશો એક વીજા પ્રદેશોની સાથે નિત્ય સમયે સંવધિત છે તેથી આત્માના પ્રદેશો સંકોચ વિકાશ ગતાને પામે છે તોપણ એક વીજાથી જુગ પડતા નથી. અગ્નિના તળાવોની પેઠે સર્વથા ભિન્ન આત્માના પ્રદેશો જો પડે તો અસરયાત પ્રદેશ મળીને એક આત્મા કહેવાય નહીં, અને આત્માપણુ નદિ થઈ જાય માટે અરૂપી આત્માના પ્રદેશો સંકોચવિકાશને સસારી અવસ્થામા પામે છે તોપણ તાદામ્ય સમયે સમધીત હોવાથી કોઈ કાળમાં જુદા પડ્યા નથી અને પડશે પણ નહીં. એવો પ્રદેશોમા સ્વમાન રહ્યો છે તે કેવલીના જ્ઞાનગમ્ય છે, અનુભવીઓ એ વાતને સમ્યગ્ અનુભવે છે

પ્રશ્ન—આત્માના અસરયાત પ્રદેશને ઠેકાણે એક પ્રદેશ માનીએ તો કઈ હરકત આવે,

ઉત્તર—હા હરકત આવે છે, શ્રી સર્વજ્ઞ મહારાજે આત્માના અસરયાત પ્રદેશ દીઠા છે તેથી એક પ્રદેશ કેમ માની શકાય, હે શક્ત

पण घटे नहीं. एम पण सिद्ध थयु. चउदपूर्वीना आहारक शरीरना दृष्टातयी वने शरीरमा आत्मप्रदेशो असरयाता छे एम सिद्ध थयु अने एरु प्रदेशआत्मानो मानवामा बाध आवेछे ते पण सिद्ध कर्यु. युक्त अने युजान योगियो पण अनेक शरीर धारण करे छे तेमा पण आत्माना असख्य प्रदेशो जाणवा तीर्थर महाराजे लोकाकाश प्रमाण आत्माना प्रदेशो रुद्याले ते वात पण सिद्ध ठरी, अने ते सिद्ध ठे. हवे आत्माना प्रदेशो सबी वर्णन करेछे. आत्माना एकेक प्रदेश अनता पर्याय रह्याछे, ज्ञान पण प्रति प्रदेशे अनतु सदाकाळ शाश्वत समये समये वर्तेछे.

प्रश्न—आत्माना दरेक प्रदेशे जुदु जुदु अनतज्ञान छे एम मानीए तो एक प्रदेश जुदु जाणवारुप कार्य करे. त्यारे आत्मानो कइक जुदु जाणवारुप कार्य करे. त्रीजो प्रदेश वळी कइ जुदु जाणे. त्यारे एरु जाणनार आत्मा रह्यो नहीं.

उत्तर—जो के आत्माना प्रत्येक प्रदेशे अनतज्ञान सत्ताभावे रह्युछे तो पण असख्यात प्रदेशो मळी एक उपयोग वर्तेछे, पण प्रत्येक प्रदेशनो जुदो जुदो उपयोग वर्ततो नहीं ते कइ वाच आवतो नहीं असख्य प्रदेशो मळी एक आत्मा कहेवायउ, माटे आत्मापणु नष्ट थतु नहीं. असख्यप्रदेशो मळी एक समये निर्मल सिद्धात्माने एक उपयोग होवछे तेथी एकन आत्मा जाणवो.

कोइक आचार्य युगपत् उपयोग मानेछे, तथा चतत्पाठः
गाथा.

केइ भणंति जुगव, जाणइ पासइ केवलीनिअमा ॥
अन्ते एगतारिअं, इच्छति सुउव्वएसेणं ॥ १ ॥

वाणीथी उत्तर आपे ते आहाररु शरीरमा आत्माना प्रदेशोना होयतो समजी शकाय ते विना उत्तरनो अर्थ शी रीते समजे अने उत्तर असुक्त प्रसारनो छे ते कोण धारण करी शके-माटे अवश्य आहारक शरीरमा आत्माना प्रदेशो मानवाज जोइए श्री तीर्थकर भगवाने जे बात कही छे ते सत्यज छे-अनतज्ञानी सर्व पदार्थनु वरावर स्वरूप जाणेउे

सुगुरु-ज्यारे चउदपूर्वीए आहाररु शरीर अन्नधी वनावी महाविदेह क्षेत्रमा मोकल्यु त्यारे-उ शरीर थया एकतो चउदपूर्वीनु सात धातुधी उनेलु औदारिक शरीर अने गीजु महाविदेह क्षेत्रमा मोकलेलु आहाररु शरीर

हवे वने शरीरमा आत्माना प्रदेशो खराके नहीं-

शिष्य-हा गुरुजी वने शरीरमा आत्माना प्रदेशो छे औदारिक शरीरधी तो चउद पूर्वी व्याख्यान वावेछे ते समजनु त्या पण ज्ञान छे नहीं तो व्याख्यान शी रीते बचाय बळी समजनु के-यत्र यत्रज्ञान तत्र तत्र आत्म प्रदेजा, ज्या ज्या ज्ञाननो सदभाव छे त्या त्या आत्माना प्रदेशो जाणवा उने शरीरमा जो आत्मप्रदेशो होय नहीं तो उने शरीरमा ज्ञान होय नहीं माटे वने शरीरमा ज्ञानधी आत्माना प्रदेशो छे एम नवी यथार्थ सिद्ध स्पष्ट मालुम पड्यु -

सुगुरु-हवे ते वने शरीरमा आत्मप्रदेशो छे एम सिद्ध थयु हे समजो के एम प्रदेशो आत्मा होय तो वने शरीरमा ज्ञाननो सदभाव शी रीते होय, एक प्रदेश जो आत्मानो होत तो एवो उनाव उने नहीं अने लक्षिधी बीजां शरीर धारण करवामा बाधो आवे वैक्रिय शरीर पण धारण करी शकाय नहीं आत्माना असरय प्रदेशो मान्या सिवाय वने शरीरमा जाणवा-

शत एटले सो तातणानो छेते आविभागपणे छता पर्यायछे अने ते दोरढायी अनेक कार्य थाय, अनेक वस्तुओ बधाय अने ते अनेकने आधार थाय. तेने सामर्थ्य पर्याय कहाए, छतिरूप जे पर्याय तेतो वस्तुरूपछे अने सामर्थ्य पर्याय तो प्रवर्तन रूप एटले कार्यरूपछे तेम अत्र ज्ञानना छति पर्याय-मा अने सामर्थ्य पर्यायमा पण समजवु-

जिज्ञासु—श्री सर्वज्ञे पड्द्रव्यनी वहार कोइ वस्तु नथी एम कथ्यु छे अने नैयायिक शोळ पदार्थ कहेछे. तेनु केम ?

सुगुरु—पड्द्रव्यरूप छ पदार्थोनी अदर शोळ पदार्थनो समावेश थायछे तेथी छ पदार्थ सत्य जाणवा. प्रथम नैयायिक प्रमाणने भिन्न पदार्थ कहेछे ते युक्त नथी कारण के प्रमाण जेटलाछे तेटला ज्ञानछे अने ज्ञानतो आत्मानो गुणछे तेने भिन्न पदार्थ कहेवाय नहि. प्रमेयपणु पण पड्द्रव्योनी वहार नथी. बीजा प्रयोजन मिद्धातादिक ते सर्व जीवद्रव्यनी प्रवृत्ति जाणवी माटे भिन्न पदार्थ कहेवाय नही,

जिज्ञासु—वैशेषिक द्रव्यगुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय अने अभाव ए सात पदार्थ कहेछे. तेनो पड्द्रव्यनी अदर समावेश थायछे के पड्द्रव्यथी भिन्न पदार्थछे तेनी यथार्थ स्पष्ट समजण आपो.

सुगुरु—हे जिज्ञासु स्थिर दृष्टि राखी साभळ गुणने पदार्थ बीजो कहेवाय नही. गुण तेतो द्रव्यमा रहाछे. तेथी गुणने भिन्न पदार्थ कहेवाय नही, तथा कर्म ते द्रव्यनु कार्यछे तथा सामान्य विशेष ए वे तो द्रव्य मये परिणमनछे. वळी समवायने पण द्रव्यमा समायछे, अने अभावतो अउताने कहेवाय ते अउताने पदार्थ मानवो घटतो नथी अभावछे

કેચિત્ સિદ્ધસેનાચાર્ય વગેરે કહેઠે કે—યુગપત્ એકકાળા વચ્ચેદન કેવલ જ્ઞાની જાણેછે દેખેછે—અન્યે જિન મદ્રવમાશ્રમણ વગેરે એક સમયે કેવલ જ્ઞાની જાણેછે અને વીજા સમયે દેખેછે. ઇટલે એક સમયે જ્ઞાનાપયોગ અને વીજા સમયે દશનાપયોગ એક ક્રમવર્તિતપણે ઇચ્છેછે—આગમના અનુસારે તેમ ઇચ્છેછે આ વે પક્ષની નદિસુત્રમાં ઘણી ચર્ચાછે ત્યાથી વિસ્તાર વિશેષ જોડ લેવો.

જિજ્ઞાસુ—કેવલ જ્ઞાન વિના મતિજ્ઞાની, શ્રુતજ્ઞાની, અવધિજ્ઞાની, મન પર્યવ જ્ઞાનીને એક સમયે જ્ઞાનોપયોગ અને વીજા સમયે દર્શનોપયોગે હોય કે ગદી

સુગુરુ—કેવલજ્ઞાની વિના વીજા જ્ઞાનવાલ્લઓને એક સમયે જ્ઞાનોપયોગ અને વીજા સમયે દર્શનોપયોગ વ્યક્ત હોતો નથી

જિજ્ઞાસુ—આત્મજ્ઞાનના છતિપર્યાય અને સામર્થ્ય પર્યાય કેવી રીતે સમજવા ?

સુગુરુ—આત્માના અસરયાત મદેશ પૈકી પ્રતિમદેશે છતાપણે અનત અનત જ્ઞાન રહ્યું છે તે જ્ઞાનનો ત્રિકાલમા કદીપણ નાશ થનાર નથી તે જ્ઞાનના છતિપર્યાયનાણવા, અને જ્ઞાનમા જ્ઞેય પદાર્થનો ભાસનપણો તેથી જ્ઞાનના સામર્થ્ય પર્યાય જાણવા જ્ઞેયપદાર્થો અનતાછે અને તે સમયે સમયે જ્ઞાનમા ભાસેછે, માટે જ્ઞેય જે અનત પદાર્થો તેની ભાસતા કાર્ય કરણશક્તિવાલા જે જ્ઞાનના પર્યાયો તે જ્ઞાનના સામર્થ્ય પર્યાય જાણવા છતિ પર્યાયથી સામર્થ્ય પર્યાય અનત ગુણ વિશેષ જાણવા સામર્થ્ય પર્યાય તે કાર્યરૂપછે તથા ચ મહાભાષ્યે—યાવતો જ્ઞેયા તાવત એવજ્ઞાનપર્યાયા તે ચ આસ્તિરૂપાઃ પ્રતિવસ્તુનિ અનતા તત્તોપ્યનતગુણા સામર્થ્યપર્યાયા. જેમ એક દોરહો

भावार्थ—सकलशास्त्रमा पक्ष वेडे. १ जातिपक्ष २ बीजो व्याक्तिपक्ष जाति एटले मामान्य अने व्यक्ति एटले विशेष. एवा वच नथी जाणवु सामान्ये एटल जातिपक्षमा सर्व पदार्थोनु नित्यपणु जाणवु कारणके जातिपक्ष सत्तानु प्रतिपादन करवामा तत्परछे ते हेतुयी जेभके गोत्व, अश्वत्व, गायपणु अने अश्वपणु ए नित्यडे. पण व्यक्तिरूप जे गौ घोडो ते अनित्यडे जे आ जातिपक्षडे ते जैनोनो द्रव्यार्थिक नयडे. अने जे व्यक्तिपक्षडे. तेज जैनोनो पर्यायार्थिक नयडे. जातिपक्ष द्रव्यनुं ग्रहण करेडे अने व्यक्तिपक्ष पर्यायोनु ग्रहण करेडे जातिपक्ष ए सामान्य अने व्यक्तिपक्ष ए विशेष छे माटे ते वेनो नयमा समावेश थवाथी सामान्य विशेष पद्द्रव्यथी भिन्न पदार्थ नथी.

जिज्ञासु—पृथिवी, अप, तेज, वायु, ए चार त्रिना वाकीना पच नित्य कहाछे. तो जैनोना स्याद्वादपक्ष प्रमाणे नित्य अनित्य ए वे पक्ष प्रत्येक द्रव्यमा घट्या नहीं. ने तमो घटावोछे ते केवी रीते ते समजावो

सुगुरु—हे भय्य साभळ, प्रत्येक वस्तुमा ज्ञानदृष्टिथी जोता नित्य अने अनित्यपणु रह्युडे. पृथिवी, अप, तेज अने वायु कार्यरूप न्यायशास्त्रमा अनित्य कथाडे अने परमाणुरूप नित्य कहाडे. आकाश स्वस्वरूपे त्रणकालमा एकरूपडे माटे तदपेक्षया नित्यडे अने=पटाकाशोनष्टः पटाकाशोनष्टः) घटाकाश नष्ट थयु पटाकाश नष्ट थयु, एवी रीते घटपटनी उपाधिथी अनित्य पक्षपणु आकाशमा आव्यु. दिशाकालमा पण तेवी रीते नित्यानित्यपणु घटयु=आत्मापितस्यमते सचदेहेन्द्रियव्यतिरिक्त' विभुर्नित्यश्चेति वचनात् तत्र कौण्डिन्य न्यायेन पारिशिष्योनुमानेन देहाश्रितोऽनित्यएवेति=आत्मा

તે વસ્તુનો વ્યતિરેક ધર્મ છે માટે વૈશેષિક મતપણ પદ્મદ્રવ્યમાં સમાઈ જાય છે. વહી વૈશેષિક દ્રવ્યના પૃથિવી અપ, તેજ વાયુ આકાશ, કાલ, દિશા, આત્મા, મન એ નવ ભેદ કહે છે તે સરખી સમજતુ કે-પૃથ્વી, અપ, અગ્નિ વાયુ एतो एकोट्रिय जीव जाणवा, पृथ्वीरूप शरीर धारण करी जे जीवो रखाछे ते पृथ्वीकायना जीवो समजवा, अने शरीरतो पुद्गल द्रव्यमां आव्यु एम ए चार पण आत्मद्रव्य ठयी पण कर्म-योगे शरीर भेटे नाम जुदा पडयाछे दिशीतो आकाशमां मळी जायछे अने आकाश ए आकाशास्तिकाय द्रव्य जाणतु मनंत आत्मानु ससारीपणामा उपयोग प्रवर्तवानु द्वारछे तेयी ते भिन्न द्रव्य कहेवाय नहीं वैसेषिक मतवाणी सामान्य विशेष ए वेने भिन्न पदार्थ मानेछे ते पण युक्त नहीं-

गाथा

तथाहि सकलशास्त्रे पक्षद्वय,
जातिपक्षो व्यक्तिपक्षश्च तत्रजाति.
सामान्य व्यक्तिस्तुविशेष.
इतिवचनात् सामान्येतुसर्वेपामेव
नित्यत्वं सत्ताप्रतिपादनपरत्वात्
यथागोत्वाश्वत्वादिक नित्य नतु गौर
श्वोवानित्य व्यक्तिपक्षेत्वनित्यमेव
यस्तुजातिपक्ष सत्वस्माक
जैनानां द्वयार्थिकनय व्यक्तिपक्ष.
स्त्वस्माक पर्यायार्थिकनय

अनित्य तेम अस्तित्व नास्तित्व तथा उपादेय, अनुपादेय तेमज अभिलाष्य अने अनभिलाष्य धर्मनो समावेश, ए विरुद्ध धर्मोनी स्थिति तेनु नाम स्याद्वाद जाणवु.

ए प्रमाणे स्याद्वादनु लक्षण कही प्रस्तुतविषय वर्णन करीए.

तथा वेदाती सारय ते एकज आत्मा अद्वैतपणे एकज द्रव्य मानेछे, ते पण युक्ति युक्त नयी केमके शरीरजे आ चर्मचक्षुर्या देखायछे वा औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस अने कार्मण ए पच प्रकारना शरीर तो पुद्गलास्तिकायपणेछे माटे रूपीछे, तेमज पुद्गल द्रव्यना स्फुटो जे जुदी जुदी आकृतिरूपेछे ते एक केम थाय. तथा आत्मा अने शरीरनो आधार ते आकाश जाणवु अवगाहो आगास इति वचनात् बीजा द्रव्योने रहेवा अवकाश आपवो ते आकाशनु लक्षणछे अने ते सर्वत्र प्रसिद्धछे. ते आकाश द्रव्यने जुदु मानवु जोइए आत्मा भिन्न ठर्यो पुद्गलद्रव्य भिन्न ठर्यु. आकाशद्रव्य भिन्न ठर्यु. तो एकज आत्माछे आत्मा विना अन्य वस्तु नयी. एवो अद्वैतवाद सिद्ध ठर्यो नहीं वळी अद्वैतवादमा एकज आत्माछे. पण अनेक आत्मा नयी एवु मनायछे. तो अनेक आत्मानो शास्त्र युक्ति, अनुभवधी सिद्धि आगळ करवामा आवशे. अद्वैतवादी आत्मानु अस्तित्व मानेछे माटे ते वादनो समावेश आत्मद्रव्यमा करवामा आवेछे, माटे पद्द्रव्यनी बाहार कोइ वस्तु नयी एम सिद्ध ठर्यु.

पद् द्रव्यनी अदर वौद्धदर्शननो समावेश.

वौद्धदर्शनने समये समये नवा नवापणे आकाश १ काल २ जीव ३ पुद्गल ४ ए चार द्रव्य मानेछे. ते वादी प्रति कहेवानु के-जीव अने पुद्गल एकज क्षेत्रे केम रहेता नयी. ते तो चळनादिभाव पामेछे. माटे तेना अपेक्षाकारणरूप, धर्मास्तिकाय अने अधर्मा-

पण वैशेषिकना मतमा देहयक्ती भिन्न जे आत्मा ते विश्व
 अने नित्यते त्या कांडि-य न्यायबट्टे जोता देहमा रहेलो आ-
 त्मा अनित्य कसोठे स्याद्वाद मतमा अशुद्ध पर्याये तथा
 शुद्धपर्याये आत्मामा नित्यानित्यपणु स्वीकार्युंते मनमा पण
 नित्यानित्यपणु रद्युंते. देहना अनित्यपणायी मननु पण अ-
 नित्यपणु जाणतु. देहाश्रितमनः देहाश्रित मनते माटे, पुद्ग-
 लरूपे देहनु पण नित्यपणु ते तेम मननु पण पुद्गलरूपे नि-
 त्यपणुते पुद्गल परमाणुओमा पण द्रव्यार्थिकनयनी अपे-
 क्षाए नित्यपणुते कारण के-परमाणुरूप पुद्गलनो कती
 त्रिकालमा पण नाश यतो नथी तेप पुद्गलरूप परमाणुओमां
 पण वर्ण, गन्ध, रस अने स्पर्श समये समये कर्या करेछे माटे
 पर्यायाधिकनयनी अपेक्षाए तेमा अनित्यपणु जाणतु

जिज्ञासु—स्याद्वाद एतदे हेतु ? ते समजावो.

सुगुरु—एकस्मिन् वस्तुनि विरुद्धधर्मद्वय समावेशः स्याद्वाद. एक
 वस्तुमा परस्पर विरुद्ध चे धर्मनो समावेश ते स्याद्वाद जाणवो
 अथवा वस्तु स्वल्प प्रतिपादन परः श्रुतविकल्प स्याद्वाद.
 भावार्थ-वस्तुनु यथार्थ स्वल्प प्रतिपादन करवामा पर एवो
 श्रुतनो विकल्प स्याद्वाद जाणवो अथवा विरुद्धधर्मद्वय प्रति-
 पादन परोवक्तुरभिप्राय विशेष स्याद्वाद अथवा तो एक
 वस्तुमा विरुद्ध धर्म बेने प्रतिपादन करवामा तत्पर एवो व-
 क्तानो अभिप्राय विशेष तने स्याद्वाद जाणवो. तथा एक-
 स्मिन् जीवाजीवान् विरुद्धधर्म द्वय नित्यानित्यामित्त्व
 नास्तित्वोपादेयानुपादेयाभिलाष्यानभिलाष्यादि लक्षण तस्य
 समावेश समाश्रय. न्याद्वाद इत्यर्थ

तथा जीव अजीव, आदि पदार्थमां विरुद्ध जे धर्मद्वय-नित्य

अनित्य तेम अस्तित्व नास्तित्व तथा उपादेय, अनुपादेय तेमज अभिलाष्य अने अनभिलाष्य धर्मनो समावेश, ए विरुद्ध र्मोनी स्थिति तेनु नाम स्याद्वाद जाणवु

ए प्रमाणे स्याद्वादनु लक्षण कही प्रस्तुतविषय वर्णन करीए.

तथा वेदाती सारय ते एकज आत्मा अद्वैतपणे एरुज द्रव्य मानेछे, ते पण युक्ति युक्त नथी केमके शरीरजे आ चर्मचक्षुर्था देखायछे वा औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तजस अने कर्मण ए पच प्रकारना शरीर तो पुद्गलास्तिकायपणेउे माटे रूपीउे, तेमज पुद्गल द्रव्यना स्वरुधो जे जुदी जुदी आकृतिरूपेछे ते एक केम थाय. तथा आत्मा अने शरीरनो आधार ते आकाश जाणवु. अवगाहो आगास इति वचनात्. बीजा द्रव्योने रहेवा अवकाश आपवो ते आकाशनु लक्षणछे अने ते सर्वत्र प्रसिद्धछे. ने आकाश द्रव्यने जुद्दु मानवु जोडए आत्मा भिन्न ठर्यो. पुद्गलद्रव्य भिन्न ठर्यु. आकाशद्रव्य भिन्न ठर्यु तो एकज आत्माउे आत्मा विना अन्य वस्तु नथी. एवो अद्वैतवाद सिद्ध ठर्यो नही. वळी अद्वैतवादमा एकज आत्माछे. पण अनेक आत्मा नथी एवु मनायउे. तो अनेक आत्मानो शास्त्र युक्ति, अनुभवथी सिद्धि आगळ करवामा आवशे. अद्वैतवादी आत्मानु अस्तित्व मानेउे माटे ते वादनो समावेश आत्मद्रव्यमा करवामा आवेउे, माटे पद्द्रव्यनी वाहार कोइ वस्तु नथी एम सिद्ध ठर्यु.

पद् द्रव्यनी अंदर बौद्धदर्शननो समावेश.

बौद्धदर्शनने समये समये नवा नवापणे आकाश १ काल २ जीव ३ पुद्गल ४ ए चार द्रव्य मानेउे. ते वादी प्रति कहेवानु के-जीव अने पुद्गल एकज क्षेत्रे केम रहेता नथी. ते तो चलनादिभाव पामेछे. माटे तेना अपेक्षाकारणरूप, धर्मास्तिकाय अने अधर्मा-

स्तिकाय. ए वे द्रव्य पण मानवां जोइए तथा वेदव्याक सत्तार
 चक्रनो कर्त्ता एक परमेश्वर मानेछे ते पण मृपा समजतु. निर्मल
 राग द्वेषातीत प्रभु, विभु, परमात्मा, परना मुख दुःखनो कर्त्ता
 थाय नहीं. बळी जगत्कर्त्ता इश्वर नहीं. एनो विस्तार अग्रे कर-
 वामां आवशे हाल तो आत्मानु स्वरूप वर्णवनां प्रसंगे अन्य चर्चा
 चाली. ह्वे आत्म स्वरूप विषयनु वर्णन करीए आपणे नदी स-
 मजतु के आत्मद्रव्य बीजा पचद्रव्यथी न्यारुछे अनादि कालधी
 अशुद्ध परिणतियोगे पुद्गलद्रव्यने परमाणुओ तेना स्क्रुधो कर्मरूप
 परिणामी आत्मानो साथे क्षीरनीर पेठे परिणम्युछे मन, वाणी,
 लेश्या, शरीर, सस्थान ए सर्व पुद्गल समजतु अष्टकर्मनी वर्णना-
 ओ पण पुद्गलछे.

अष्ट वर्णानु स्वरूप लेखेछे

औदारिकवर्णना, बैक्रियवर्णना, आहारकवर्णना तेजसवर्णना,
 भाषावर्णना, श्वासोश्वासवर्णना, मनोवर्णना, कर्मणवर्णना, वे पर-
 माणु भेगा थाय त्वारे द्वयणुक स्क्रुध कहेवायछे. त्रण परमाणु भेगा
 थाय त्वारे त्र्यणुक स्क्रुध थाय एम सरयाना परमाणु मिले त्वारे
 संरयाताणुकस्क्रुध थाय तेमज असग्याता परमाणुआ भेगा
 थाय त्वारे असरयाताणुकस्क्रुध थायछे, तथा तेमज अनतपरमा
 णुओनो स्क्रुध थायते अनताणुकस्क्रुध थाय, एटला सर्व स्क्रुध ते
 जीवने ग्रहण करवा लायक नहीं, पण ज्वारे अभव्यथी अनतगुण
 अधिक परमाणुओ भेगा थइ जे स्क्रुध थाय त्वारे तेनी औदारिक
 शरीरने लेवा योग्य वर्णना थाय

एमज औदारिकथी अनतगुणा अधिकवर्णनामा दल भेगा
 थाय. तेवारे बैक्रियवर्णना थाय. बळी बैक्रियथी अनतगुणा परमा-
 णु मळे त्वारे आहारकवर्णना थाय एम, सर्व वर्णाना एकेकवी

अनतगुणा अधिक परमाणु मले त्यारे उपरनी वर्गणाओ अनुक्रमे थाय एटले पहेलीथी वीजी वर्गणा. वीजीथी त्रीजी, त्रीजीथी चोथी, अने चोथीथी पाचमी, अने पाचमीथी ङ्ही, ङ्हीथी सातमी, मनोवर्गणा थी आठमी कार्मण वर्गणामा अनतगुणा परमाणुआ अधिक जाणवा आठवर्गणाओमा औदारिक, वैक्रि, आहारक, अने तैजस, ए चार वर्गणाओ वादरछे ए चारवादर वर्गणाओमा पाच वर्ण वे गध, पांच रस, अने आठस्पर्श, ए वीश गुण जाणवा तथा भाषावर्गणा. श्वासोश्वास वर्गणा तेम मनोवर्गणा ए चार वर्गणा मूर्क्षमडे, ए चार मूर्क्षमवर्गणामा पाच वर्ण, वे गध, पाच रस, अने चार स्पर्श, ए सोल गुण रदाछे, अने एक परमाणुमा एक वर्ण एक गध, एक रस, अने वे स्पर्श, ए पाच गुणडे ए अष्ट वर्गणा ससारी आत्माने लागीडे. अने तेमां पण समये समये उत्पाद व्ययधुवता परिणमी रहीडे. ते वर्गणामा पण अगुरु लघुथी पङ्गुण हानिवृद्धि समये समये परिणमी रहीडे. ए आठ वर्गणामा आत्मानु कडनथी पुद्गलद्रव्य अने आत्मद्रव्य वे भेगा थड परिणमेछे—पुद्गल परमाणुआ अनतछे. हवे मसगे पुद्गलनु स्वरूप लखेछे—

पुद्गलस्वरूप,

वर्गादिक गुणो वृद्धि पामे. गळी जाय. खरी जाय एवो जेमा स्वभावछे. तेने पुद्गलास्तिकय द्रव्य जाणतु मूलद्रव्य पुद्गलास्तिकय परमाणुरूप अवबोधवु—द्वयणुक आदि जेटला स्कथछे तेनु मूल कारण जाणवु. एटले घट, पट, ढड, चक्र, वल्ल, पात्र, कपाट, डट, पत्थर. आदि पुद्गलनी आकृतियोनु मूल उपादान कारण परमाणुओ छे. तेवा रूपे परमाणुआ परिणम्याछे, बीना पण तेमां निमित्त आदि कारणो मळेछे. छ मकारना पुद्गल स्कथो छे ? वादरवादर २ वादर ३ वादरसूक्ष्म ४ सूक्ष्मवादर ५ सूक्ष्म ६ सूक्ष्मसूक्ष्म

- ૧ પુદ્ગલપિંડના ને સ્વદ કર્યા પોતે ફરી મળે નહીં તે કાષ્ટ પા-
પાણાદિક વાદર ત્રાદર ભેદ મથમ જાણવો
- ૨ પુદ્ગલ સ્કથ સ્વદસ્વદ કર્યા પોતાની મેઢે પરસ્પર એકમેક થઈ
જાય એવા દુગ્ધ, ઘી, તેલ ગેરેને વાદર કહેજે.
- ૩ જે પુદ્ગલ સ્કથો દેખવામા સ્મૃલ હોય—સ્વદસ્વદ કરવામાં
આવે નહીં હસ્તાદિકર્થાગ્રહણ થાય નહિ, એવા ધૂપ, ચટ, ચાદની,
આદિપુદ્ગલવાદરમૂસ્મ કથાયજે ઝાયાતમ પુદ્ગલો પળજાણવાં
- ૪ જે સ્કથો મૂસ્મજે ક્ષિતુ સ્વલોપલભ હોય સ્પર્શ, રસ, ગધ
વર્ણ, શબ્દ વિગેરે મૂસ્મ ત્રાદર જાણવા.
- ૫ જે પુદ્ગલ સ્કથો આતિ મૂસ્મજે ઇન્દ્રિયોના ગ્રહવામા, આવતા
નથી એવા કર્મવર્ગનાદિક મૂસ્મપુદ્ગલ કહેવાયજે
- ૬ કર્મવર્ગનાઓથી પળ અતિમૂસ્મ દ્વયણુકસ્કથ આદિ મૂસ્મમૂસ્મ
કહેવાયજે.

પૂર્વોક્ત સ્કથોનુ મૂલકારણ પરમાણુજે, પરમાણુ શબ્દરહીતજે
જોકે સ્કથોના મિલાપથી શબ્દરૂપ પર્યાયને ધારણ કરેજે તો પળ
વ્યક્તરૂપ શબ્દપર્યાયથી રહીતજે વઢી પરમાણુ અવિભાગી પટલે
ભાગ રહીતજે પૃથિવી, અપ અગ્નિ, ત્રાયુ એ ચારનુ કારણ
પરમાણુઓએ અર્થાન્ પૃથિવી અપ અગ્નિ ત્રાયુ એ ચાર ભૂતો પળ પર-
માણુઓથી પેદા થાયજે વઢી પરમાણુ પરિણમન સ્વભાવવાઢીજે.
પરમાણુ અશબ્દ છે તોપળ શબ્દનુ કારણજે પરમાણુ પોતે દ્રવ્યજે
અને તેમા વર્ણ, ગધ રસ અને સ્પર્શ એ ચાર ગુણોજે અને તે મૂર્ત
કહેવાયજે પૃથિવી જાતિ પરમાણુઓમા ચારે ગુણોની મુખ્યતાજે.
જલમાં ગધ ગુણની ગૌણતા, અને વાકૃતિ ત્રણ ગુણોની મુખ્યતાજે
અગ્નિમાં ગત્ર અને રસ ગુણની ગૌણતાજે, અને સ્પર્શ વર્ણની મુખ્ય-
તાજે વાયુમા ત્રણ ગુણોની ગૌણતાજે, અને સ્પર્શ ગુણની મુખ્યતાજે

इन्द्रियो वडे उपभोग्य पदार्थो, तथा पाच प्रकारनी द्रव्येन्द्रिय तथा औदारिक वैक्रिय आहारक तेजस अने कामण ए पच प्रकारना शरीर तथा पैद्गलीक द्रव्य मन तथा द्रव्यकर्म नोकर्म विगेरे मूर्त पदार्थ पुद्गल द्रव्य जाणवु ए पुद्गल द्रव्य द्रव्यार्थिक नययी शाश्वतडे, अने पर्यायार्थिक नययी अशाश्वतडे वस्तुतः पुद्गल द्रव्ययी आत्मा न्यारोडे. परपरिणति परिणामी यता पुद्गल ग्राहक पुद्गल भोगी थए उते प्रति समये नवा कर्म बाधवे ससारी थयाडे, ज्यारे आत्मा स्वस्वरूप ग्रहक तथा स्वस्वरूप भोगी थाय त्यारे सर्वकर्म रहीन थड परम ज्ञानमयी-परम दर्शनमयी परमानन्दमयी सिद्ध, बुद्ध अनाहारी, अहारीरी, अयोगी, अलेगी, अनाकारी, निःमयासी, अविनाशी, अज, अविचल, विमल स्वरूप, सुखनो भोगी सिद्ध परमात्मा थाय, माटे सर्व जगत् जीवनी अँठतुल्य पुद्गलना भोगनो त्याग करी स्वआत्मा स्वरूप भोगी पणाना रसीया थइ स्वस्वरूप अनुयायी चेतना योगे निजगुण स्थिरतारूप चारित्रनी प्राप्ती करवी. एज मनुष्य जन्म पाप्मानी साफल्यता जाणवी. पष्टविषय--धर्म क्या रहेडे अने तेना हेतुओ कोण,

विचार-ससाररूपी कूपमा पडता प्राणिओने धारी राखे तेने

धर्म कहेडे. धर्मना वे भेदडे व्यवहारधर्म अने निश्चयधर्म,

प्रश्न--ज्यारे धर्म एकजडे, त्यारे तेना वे भेद केम कथन कर्या

उत्तर--जोके आत्मामा स्थित धर्मरूप कार्य निश्चयता कारण विना यती नथी. माटे सर्वज्ञ मभुए व्यवहार धर्म अने निश्चयधर्म एवे प्रकारनो धर्म कथ्योडे. व्यवहारधीजे धर्मडे ते निश्चय जे शुद्ध आत्मिक धर्म तेने मगटाववामा कारणडे. व्यवहार धर्म ते साधनडे अने आत्मिक धर्म ते साधकडे माटे धर्मना पण कारण कार्यती सापेक्षता ए वे भेदडे.

प्रश्न-निश्चय नयथो शुद्ध आत्मानोज ज्यारे धर्मते तो व्यवहार धर्म आदरवानु शु कारण छे, एक फक्त निश्चय आत्मिक धर्म आदरवो जोइए.

उत्तर-व्यवहारधर्म विना निश्चयधर्म प्रगट थतो नथी जेमक-वा जरीना टाणापा उगयानी घणी सारी शक्ति रहीडे तोपण ज लनो सयोग थता उगी नीरुळेडे, तेम व्यवहारधर्म विना निश्चय धर्मनी प्राप्ति थती नथी-

प्रश्न-मरुदेवी माताए व्यवहारधर्म आदर्यो नहोतो, तेम छता केम तेमने निश्चय आत्मधर्मनी सिद्धि थइ

प्रत्युत्तर-कारण विना कार्यनी निष्पत्ति थती नथी, तेतो अवश्य समजवु जोके मरुदेवी माताए देशयीना सर्वयी चारित्र शुद्ध नहोतु तोपण व्यवहारधर्मने अवलव्यो हतो तेथीज निश्चय आत्मिक धर्मने प्रगटाव्यो

जिज्ञासु-हे सद्गुरो मरुदेवी माताए कयो व्यवहार धर्म आदर्यो हतो, ते समजावो.

सुगुरु-मरुदेवी माता प्रथम श्री रूपभदेव भगवान्ना दर्शन करवा चाल्या ए पण व्यवहारधर्मते तेमज मरुदेव माताए मनवचन अने काया ए व्रण योगनी गुप्ति करी, एटले मनवचन अने कायाना व्यापारोने परभावमां जता अटकाव्या, धर्म ध्यान ध्यावु ते रुप व्यवहारधी उत्तम ध्याने चडया, शुद्ध ध्यानध्यायी अतकृत् वैधली थइ मोक्षमा गया-पुत्रप्रेम नाश थवानु कारण मरुदेवी माताने समयसरण थयु ते पण व्यवहार, तेमज तेथी ससारनी असारता उद्भववी, ते पण व्यवहारधी उत्पन थइ मनवचय कापीना खरान आश्वना व्या पार रोक्या, अन्वत धर्मभ्याना दि यावता रोकणा, पश्चात् शुद्ध ध्यान भ्यावतां निश्चय आत्मिक धर्म प्रगटयो, ते आत्मिक धर्म

रूप कार्यमा मनवचन कायानी गुप्ति तथा धर्मभ्यानरूप व्यवहार धर्म मरुदेवी माताने थइ गयो, मनोगुप्ति वचनगुप्ति अने काया गुप्तिरूप तथा धर्मभ्यानरूप व्यवहारधर्मने कारणता निश्चयधर्म रूप कार्यमाछे, व्यवहारधर्म घणा प्रकारेछे. तेनी विचित्रता सुगुरुना मुखथी साभळी अनेकातधर्मग्रहवो. वळी भरतराजाने पण धर्मभ्यानरूप व्यवहारधर्म केवल ज्ञान प्रगटवामां निमित्त कारणीभूत हतो. निश्चय धर्मतो अरूपीछे, ते व्यवहार धर्मनी मद्रतथी प्रगट थायछे. उपादान कारणनी शुद्धिमा निमित्त कारण बलवत्तरछे. एम समजवु साराश के मरुदेवी माता वा भरत चक्रवर्ति पण नीचला गुणठाणानु छोडवु अने उपरना गुणठाणे चढवु ते रूप शुद्ध व्यवहार पाम्या हता.

जिज्ञासु प्रश्न--जो एमछे तो व्यवहारधर्म कोने कहेछे ते समजावो.

सुगुरु--पच महाव्रत उचरवा. सर्व विरतिधर्म देशविरतिधर्म अलवत साधुधर्म. श्रावकधर्म ए व्यवहारणी धर्म जाणवो. ए व्यवहारधर्म निश्चयधर्मनी प्राप्ति करावी आपेछे. निश्चयथी संपूर्ण निरावरण परमात्मपदनी प्राप्ति कराव्या राद व्यवहार रहेतो नथी.

शिष्यप्रश्न--आत्मा परमात्मारूप थाय तेमा कया कया कारणोनी जरुछे.

सुगुरु--उपादान कारण. अने असाधारण कारण अपेक्षाकारण निमित्तकारण. ए चार कारणथी कार्यनी सिद्धि थायछे.

शिष्यप्रश्न--आत्मा सिद्धपणु पामे तेमा पामे तेमां उपादान कोने समजवु

सुगुरु--सिद्धतारूप कार्य ते आत्मानु अमेद स्वरूपछे. सिद्धतारूप कार्यनो कर्त्ता आत्मा पोतेजछे अने सिद्धपणु आत्मानु कार्य समजवु. अधुना सिद्धता प्रगटावची तेज कर्त्तव्यधर्मछे. सिद्ध-

यथा

घटस्थ उत्पत्तो अपेक्षा कारण व्योमादिं अपेक्षते तेनविना
तद्भावाभावात् निर्व्यापारं अपेक्षाकारण इति तत्त्वार्थवृत्तौ
हवे आत्मा कर्मक्षय करी मुक्तिपद पामे तेमा अपेक्षा कारण
दर्शावेछे.

मनुष्यगति प्रथम बजरूपमनाराच सघयण, पंचेन्द्रियपणु इत्यादि
सिद्धिरूप कार्यनु अपेक्षाकारण जाणवु

निमित्त कारणनी माप्ति विना अपेक्षाकारण लेखे आवतु नथी.
जे भव्यजीवे निमित्तकारण आचर्युं नथी तेनी मनुष्यगति अपेक्षा-
कारणमा गणाती नथी. श्राद्धेवगुरुना पुष्ट निमित्ते उपादानकारणने
तरतमयोगे प्रगटावतो असाधारण कारणताए चढतो मनुष्यादिक
अपेक्षा कारणपणे करी तत्त्वानदरूप कार्यनो कर्त्ता आत्मा थाय.

उपादानादिक त्रणनी कारणता निमित्तना अवलम्बनथी प्रगटे
छे माटे भव्यमाणी निर्दोषपणे शुद्ध निमित्तकारणने सेवे. अने
शुद्ध निमित्त कारणीभूत शुद्ध देव, तथा सुगुरूना सेवनथी कर्त्ता-
पणु स्मरे, अने कर्त्तापणु स्मरण करी स्वकार्य करे

श्री आत्ममीमांसामां त्रण कारण कथ्यांते

समवायासमवायि निमित्तभेदात्

समवायी कारणते अपेक्षाए उपादानकारण जाणवु अने असम
वायि कारणते नामातर असाधारण कारण कहेवायछे तथा निमित्त
कारणना वे भेद जाणवा एक निमित्तकारण वीजु अपेक्षाकारण-
वनी कारणना वे भेद शास्त्रमा कदाछे एक उपादानकारण. वीजु
निमित्तकारण जाणवु घटदृष्टातमा घटरूप भिन्न कार्यनो कर्त्ता
कुभकार घटथी भिन्नछे, तेम सिद्धतारूप अभिन्न कार्यनो कर्त्ता
पण कार्यथी अभिन्नछे ज्ञाननो कर्त्ता आत्माछे तेम सपूर्ण

मिद्धतारूप कार्यनो कर्त्ता पण आत्माडे कर्त्ता आत्मा ज्यारे कारणनीयोगवाइ पामे त्वारे कार्यनी सिद्धिनीपजावे एरुलो कर्त्ता कारण सामग्री विना कार्य करी शके नहीं एवी स्वभावता जाणवी.

उपर प्रमाणे आत्मा परमात्मपद पामे तेमा जे जे कारणो जो-इए. तेनु यत्किंचित् स्वरूप दर्शाव्यु

शिष्य--हे सुगुरो ! पूर्वोक्त कारणोमाथी व्यवहार धर्मरूप फेटला

कारण जाणवा

सुगुरु--हे शिष्य स्वस्थ चित्तथी साभळ--जे कारणो कार्य सिद्धि यता रहेता नथी. अने कार्य सिद्धिमा अवश्य कारणी भूत छे, ते कारणोनी प्राप्तिने व्यवहार धर्म कहेछे. निमित्त कारणनी सेवना तथा असाधारण कारणनी प्रवर्तना पण व्यवहार धर्म कयायछे नीचेना गुणस्थानकनु छोडवु अने उपरना गुणस्थानकनु आदरवु ते शुद्धव्यवहार धर्म जाणवो. वळी साधुधर्म वा श्रावकधर्म पणव्यवहार नयथी धर्म कयायछे व्यवहार धर्म कारणछे, अने निश्चय धर्म कार्यछे कारण अनेक छे अने कार्य एकछे माटे असख्ययोग जिनेश्वर भगवाने कथ्याछे. तेमां पण नवपदनी मुख्यता जाणवी. जेजे अशे निरूपाधिपणु तेते अशे धर्मनी प्राप्ति जाणवी.

शिष्य--मनुष्यगति विना आत्मा सिद्धतारूप कार्य अन्य गतिमां प्राप्त करी शके के नहीं.

सुगुरु--मनुष्यगति विना सिद्धतारूप कार्यनी सिद्धि यती नथी. प्रथमतो एकेंद्रियमा अपेक्षाकारणरूप नरगति प्रथम सघयणनथी. तथा निमित्त कारण पण नथी. द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, मां अपेक्षा कारण नथी. पंचेंद्रियना चार भेदछे. प्रथम देवतां समाकृती होयछे तेमने क्षयोपशमभावनु मतिज्ञान तथा श्रुत-

परपरिणतिना द्वार रोकेछे. आत्माना गुण पर्यायनु चितवन करेछे पोताना आत्मामा अनन्तबुद्धि शोधेछे उज्ज्वल ध्यान ध्यावेछे, अने ज्ञानीओ मनमां थता अनेक सकल्पविकल्पो दूर करी आत्मस्वभावमा मग्न रहेछे, मतिदिन उचास्थितिने भोगवेछे, सहज शानियी थतु तास्विक सुख ते प्राप्त करी शकेछे मननी थती चचलतानो त्याग करवो मनसबधी प्रथम घणु कहेवामा आव्युठे तेधी अत्र नि शेष वर्णन करवु योग्य नथी तोपण प्रसंगवशात् कहेवानु के मन चचल अने आस्थिरछे ते ज्या जाय त्याधी पाट्टु काळीने आत्मानी साथे वश करवु

मन ज्या सुधी स्थिर रहे नही त्या सुधी शास्त्रोक्तक्रिया जेटली करीए तेटली सफल थाय नहि. श्रीपशोविजयजी उपाध्याय कहेछेके-

श्लोक

या निश्चयैकलिनानां, क्रिया नातिप्रयोजना ॥

व्यवहार दशास्थानां ताएवाति गुणावहा ॥ १ ॥

भावार्थ-जेनु मन निश्चयमा लीनछे तेने क्रियानु प्रयोजन नथी व्यवहार दशावाळाने क्रिया अति गुणकारीछे. मन वश करवाधी बधाना कर्म अटकेछे, ज्ञानी थइने फरता एवा पुरपोधी पण मन जीतातु नथी अभ्यासथी मन जीतायछे, महा अनुभवी योगीओना शिष्यो मन वश करी शकेछे पुस्तक, पोथी, पुराण, वांचवाधी पण जे मन वश थतु नथी, ते मन मुगुरु महागजनी गुप्त अर्पली कुचीओधी धीरे धीरे वश थायछे पुस्तक सिद्धातमा लखे ला विषयोने जाणी मुगुरुए परिणामिकी बुद्धिथी जे अनुभव मे-च्छयो होयछे ते शिष्यो के जे गुहना सदाने माटे विश्वासी होयछे तेने मजेछे. माटे मुगुरुनु शरण करी आत्मिक धर्मनी प्राप्ति करवी.

कर्मनो क्षय करता आत्मिकधर्मनी आविर्भावता थायछे. काया पुद्गलछे, वचन पुद्गलछे, मनपुद्गलछे, धर्म तो निश्चयथी चेतनगत जाणवो, आत्मामा धर्म रहेछे ते आत्मिक धर्म आत्मस्वभावे स्थिर थता प्रगटेछे. निश्चयथी आत्मा अरूपीछे, अने आत्मामा रहेलो धर्म पण अरूपीछे. असख्य प्रदेश आत्माना छे, प्रति-प्रदेशे अनत अनत धर्म व्यापी रह्योछे, तात्त्विक आत्मिक धर्मथी अनत मुखनी प्राप्ति थायछे कर्मनो क्षय करी जे भव्यो सिद्धिपद पाय्याछे तेमने शुद्ध आविर्भावे आत्मिक धर्म प्रगट्योछे, जे जीवो कर्म सहीतछे तेमने तिरोभावे अगत्मिक धर्म जाणवो जे वस्तु मूळमा वस्तुतः सत्पणे नथी तेनी उत्पत्ति थती नथी. कारण के-

नासतो विश्रतेभावो

साराश के-असत्नु उत्पन्न थवापणु नथी.

शिष्य-जेम असत्नु उत्पन्न थवापणु नथी. तेम सत् जे वस्तु त्रिकालमा वर्तती होय तेनी उत्पत्ति रहेवी ए पण अयुक्तछे कारण के-जे वस्तुनो उत्पाद थाय ते वस्तु प्रथम होय नहीं. यथा पट तेनो उत्पाद थयो तो ते प्रथम नहोतो. तेम जो आत्माना धर्मने सत् मानवामा आवे तो ते त्रिकालमा विश्रमानपणथी तेनी उत्पत्ति थइ एम रहेवु असत्य ठरेछे अने जो आत्माना शुद्ध धर्मने असत् कहेवामा आवे तो तेनी उत्पत्ति असत्य ठरेछे माटे हे सुगुरो कृपा करी यथार्थ स्वरूप समजावशो

सुगुरू-हे शिष्य ! एकाग्र चित्तथी श्रवण कर. असत् पदार्थनी तो त्रिकालमा पण उत्पत्ति थती नथी, हवे सत्त्वस्तुनो विचार,

प्राप्ति थायि नहीं कारण के तेमा जैन दर्शननी भजनाडे एक अग-
नय पक्षथी पायीए पण सर्वांगे प्राप्ति थाय नहीं जेम सघजी नदीओ
समुद्रमां होय पण नदीओमां समुद्रनी भजना जाणवी सारांश वे-
जे नदी समुद्रमा मळी तेमा समुद्रनी भरतीओटनु पाणी आवें एवी
रीते नदीओमा समुद्र एकदेशे सभवेछे, तेवी रीते समुद्रनी उपमां
धारण करनार जिनवरनां ए पइदर्शन ते अग जाणवा, एकाते
नयनु कथन करता मिथ्यात्व लागे—कह्यु छे के—

एगते होइ मिच्छत

एकाते मिथ्यात्वपणु होय—माटे हितशिक्षा निर्ग्रथ प्रवचन कये
छे के—एकातपक्ष आत्म हितकारक नथी व्यवहारनय अने निश्चयनय
अवलथी आत्म धर्मरूप सा यना साधक उनु साभ्यनी सिद्धि करवी
मुश्केलछे घातो करवी सहजछे माटे आत्मिक हितेच्छुओए प्रमाद
त्याग करवो अने व्यवहार निश्चयधर्मनु साधन करनु. सप्तनय सप्त-
भंगी चारनिक्षेपा पइद्रव्य, गुणपर्याय—उत्सर्ग अपवादथी परिपूर्ण
स्याद्वादमतने कोइ वीरला भव्य पुरुषो सम्यग रीत्या जाणी शकेछे.
वेदलाक विचित्रमार्गनी भ्रमणाओमागोथां खायछे वेदगुरु ज्ञान ज्ञान
पोकारीज्ञानी नाम धरावी शुद्ध धर्मरूप क्रियातरफ अरुचि मार्ग दर्शावे
छे अने क्रियानु उध्यापन करेछे, तेथी स्वआत्मानो उद्धार करी शकता
नथी सप्तनयोथी परिपूर्ण वीतराग धर्मने सत्गुरु अने सत्श्रद्धा विना
अवगाहवो मुश्केलछे माटे भव्य पुरुषो प्रभुना धर्मनो मार्ग समजी
निश्चयदृष्टि हृदयमा धारण करी व्यवहार मार्गे चालेछे

श्रीयशोविजयजी वचनामृत.

निश्चय दृष्टि चित्त धरीजी—चालेजे व्यवहार—इत्यादि

श्री यशोविजयजी

विद्वाने इता. सवत् १७४०

नी लगभग द्वि

दर्शनना वाच्या

हता. अभ्यात्मज्ञानदृष्टि पण धरावता हता, जेमणे शास्त्रवार्ता समु-
 क्षय आदि शतग्रथ वनाव्या ते महा पुरुष पण निश्चय दृष्टि हृदयमा
 धारण करी व्यवहार मार्गे चालवानी खास भलामण करेछे. शु
 हालमा अ यात्मनी किंचित् वात साभळी व्यवहार मार्गथी विरुद्ध
 चाली डोळघालु अभ्यात्मी वनी जनाराओ करता विशेष ज्ञानी
 नहोता. एम केम कहेवाय ? ना तेओ महा ज्ञानी हता. माटे व्य-
 वहार धर्म मार्गनु यथाविधि यथाशक्ति आराधन करता हता-

भगवान् सर्वज्ञानी कहेछे वे-

जइ जिणमयं पवज्जह, तामा ववहारनिध्यए सुयह,
 ववहारनओ छेए, तिथ्युच्छेओ जओ भणिओ ?

जो तु जिनदर्शनने अगीकार करे तो व्यवहार अने निश्चयने
 मूकीश नहीं. कारण के-व्यवहार नयनो उच्छेद कर्याथी तीर्थनो
 उच्छेद कर्यो कहेवायछे, माटे महात्मा थवानी इच्छा होय तो प्रभुनी
 शिक्षा धारवी. मानवी,

वेद्व्याकृ ज्ञाननी आकांक्षा विना अध श्रद्धावाननी पेठे क्रिया
 करेछे. ते क्रिया जइ जाणवी तेमनो धर्मव्यवहार फोनोग्राफवत् जाणवो.

कोड एम कहेशे के-उरावर वस्तुनु स्वरूप समजीने अमे क्रिया
 करीशु-ज्या सुधी ज्ञान नथी त्या सु गी क्रिया शाकामनी ? प्रच्युत्तरमां
 समजवानु-एम वोठवामा पण समजवानी घणी तारतम्यता समाडछे.
 प्रथम विकल्प थशे के रुया ज्ञाननी प्राप्तिथी क्रिया करवी. मति-
 श्रुतज्ञाननी प्राप्तिथी वा केवलज्ञाननी प्राप्तिथी

मतिश्रुतज्ञान थया वाद क्रिया करवी एम कहेता पण विचा-
 रवानु के-गणधरोना जेवु मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, तंजु ज्ञान हालना
 वखतमा नथी त्यारे कहो के चउदपूर्वी वा दशपूर्वधारी जेजु मति
 ज्ञान तेजु ज्ञान पण हालना वखतमा नथी त्यारे हालमां मतिज्ञान

श्रुतज्ञान तरतमताए थोडु अपेक्षाए कहेवाय हरे ज्ञाननेज माननारा कहे के, केवु ज्ञान थयार्थी क्रिया करसो, ते वतावो, वा कहे के, क्या मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान होय त्या क्रिया होय के नहीं. अने वळी विचारो के मतिज्ञानी अने श्रुतज्ञानी क्रिया विना थु को माटे क्रियानो स्वीकार करवो योग्यछे क्रिया विना एरुलु ज्ञान थु करे क्रिया ज्ञानिनी पास होयछे शास्त्रमा पण-

ज्ञान क्रियाभ्या मोक्ष

ज्ञान अने क्रियायी मोक्षछे, ज्ञानाभ्यासरूपक्रिया विना ज्ञाननो पण क्षयोपशम यतो नथी. त्या पण क्रियानी जरूरछे. कोइ एम कहेसे के, मति वा श्रुतज्ञान थयु एम प्रत्यक्ष जणाशे एटले क्रिया करीथु. तेना उत्तरमां समजवानु केवलज्ञान प्रत्यक्षज्ञानछे, मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान परोक्षज्ञानछे. मति वा श्रुत छे के नहीं ते अनुमानयी जाणी शक्या केवलज्ञानी कइ कहेवातो कोइ आवनाना नथी. माटे भव्य जीवोए ज्ञान श्रद्धायी जाणी धर्मभ्यानादि कारक क्रियामां प्रवर्तवु-

श्रालेखक-कोइ स्थळे ज्ञाननी विशेषता वा क्रियानी न्यूनता लखे तोपण ते कोइना आदरभणीया कोइना निषेध भणी नथी किं तु बन्नेना स्वीकार माटेछे एम समजवु एकज स्थळे सर्वनु स्वरूप एकज वखते वर्णवी शक्यातु नथी तेथी जेजे स्थळे जेनु जेनु स्वरूप वर्णन करवामा आवे ते नथनी सोपेक्षताए ते ग्रहण करवु व्यवहार धर्म अने निश्चयधर्म सदा जययता वर्तेछे सद्गुरुरूपासेथी एनु स्व रूप समजवु. मति मदतायी शक्यादि उत्पन्न थायतो पण सर्वन वीरना वचनमां सत्यता भगीछे मतिदोष काढी सत्शास्त्रनो गुरूा मतां पूर्वक अभ्यास करवो केटलीक वातोमां तो श्रद्धाज राखवी पडेछे. केवलज्ञानयी जाणेला पदार्थोनु स्वरूप तेने अल्पमति ज्ञानी

जीव वरावर शी रीते समजी शके, माटे जिनवचनमां जरा मात्र शकानो अवकाश नथी एम श्रद्धा करवी मोक्षार्थी जीवने घटेछे.

उपर प्रमाणे यथा मतिलेशथी व्यवहार निश्चयधर्म वा धर्म क्या रहेछे ते दर्शाव्यु.

सप्तम विषय.

हु ससारमा जन्म मरण पामुठु तेनु शु कारण ?

प्रत्युत्तर—कर्म, कर्म ए आत्मा नथी आत्माथी भिन्न द्रव्यछे. आत्मानी साथे अनादिकालथी लाग्गुछे. जेनी आदिनथी तेनो अनादिकाळ समजवो—

प्रश्न—कर्म आत्मानी साथे पोते पोतानी मेळे लाग्यांछे वा कोइए लगाड्याछे

उत्तर—कर्म पुद्गल स्वरूप स्वरूपछे. जडछे खरवा मिठवा रूपक्रिया करेछे अनादिकालथी आत्मानी अशुद्धि परिणतियोगे कर्म ग्रहायछे, परमात्मा आत्मानी साथे कर्म लगाडतो नथी अर्थात् आत्मा पोते अशुद्ध भावथी कर्मने ग्रहेछे अशुद्ध परिणति आत्माथी न्यारी नथी तेथी आत्माज पोते कर्मनो कर्त्ता तथा भोक्ता कहेरायछे.

आत्मानी साथे अन्य कोइ कर्म लगाडतु नथी केटलाक जीवो इश्वर जीवनी साथे कर्म लगाडेछे एम मानेछे पण ते युक्तिहीन तथा सर्वज्ञनामन त्रिरुद्ध वानछे. कारण के परमेश्वरने शु प्रयोजन छे के ते जीवोनी साथे कर्म लगावे. अलवत रागद्वेष रहीत प्रभुने कइपण प्रयोजन नथी के ते जीवोनी साथे कर्म लगाडी शके वळी परमेश्वर कहे के परमात्मा सिद्ध, तेओए कर्मनो नाश कर्योछे, कर्मनो नाश नता भिद्ध परमात्मा कहेवायछे, त्यारे

समजवानु के, जे सिद्ध, परमेश्वर कर्मातीतछे अक्रियछे कोइपण प्रकारनी क्रिया करता नथी. ते बीजाने कर्म लगाइवानी क्रिया करे ते शशशृगवत् असत्यवात ठरेछे

प्रश्न—त्यारे शु सिद्ध परमात्मा कोइपण प्रकारनी क्रिया नथी करता.

प्रत्युत्तर—ना, पौद्गलिक कोइपण प्रकारनी क्रिया सिद्ध परमेश्वर करता नथी, पोताना शु धम्बभावे तेमनी सदाकाल स्थितिछे कर्मछे ते तो पौद्गलिकछे. पौद्गलिक भावयी भिन प्रभुयाने सिद्धछे भिन पुद्गलद्रव्यनी क्रियाने प्रभु परमेश्वर करता नथी, प्रभुतो अरूपीछे एवा प्रभुयी कर्म जीवोने लगाववु त्रिकालमा पण वनेज नहीं

सिद्ध परमात्मा शु ध स्वस्वभावे सक्रियछे एटले स्वभाव रमणतारूपवा षड्गुणगुणहानिटुद्धिरूपक्रियाना कर्ता सिद्धात्माछे

प्रश्न—सिद्ध परमेश्वर, जीवो कर्म सारां वा नठारा कर्म करेछे तेनो इन्साफ आपेछे के नहीं

प्रत्युत्तर—सिद्ध परमात्मा वा जेने निरजन निराकार ब्रह्म वा इश्वर कहेछे ते कर्म मपचथी अत्यत भिन्नछे ने तेथी ते जीवोने कर्मा कर्म प्रमाणे इन्साफ (न्याय) करी सुखदुख आपता नथी सारांसे जीवोए जे कर्म कर्मा छे तदनुसारे सुख दुख भोगाववा जीवोने सारा खोटा उच्चपथु, पत्नी, माणस, अघादिना अवतार परमेश्वर आपता नथी

प्रश्न—त्यारे जीवो साग वा खोटा कर्म करे ते पोतानी मेळे शी रति भोगवे.

उत्तर—जे क्रियानो कर्ता जीव पोतेछे ते क्रियानु फल भोगवनार पण जीव पोते जाणवो, जेम कोइ मनुष्य तालपुट विष भक्ष-

णनी क्रिया पोत करे तो ते क्रियाथी प्राणनाशरूप यतु फल
 पग पोते भोगवेडे. हवे कहो के तेमा न्याय कर्त्ता कोण इश्वर
 वा क्रियानो कर्त्ता, इश्वरे मनुष्यना प्राणनो नाश कर्यो वा
 तालपुट विषे प्राणनो नाश कर्यो अलगत कहेवु पडशे के
 विषमांज एवी शक्ति रहीछे के ते प्राणनो नाश करेछे, प्रत्यक्ष
 ते सि ध वातछे. इश्वर न्याय करेछे एम मानवु ते केवल
 मृषा, प्रमाणविरुद्ध कल्पना मात्रछे, निरजन निराकार इश्वर
 सिध्यात्माने शु प्रयोजन छे के कर्मना फलोदयने भोगवावे.
 वळी ते उपर वे विकल्प करीएछीए के कर्म पोते फल आ-
 पवामा स्वतत्रछे के परतत्र प्रथम पक्षमा कर्म पोतेज सारू वा खोडु
 आपवामा स्वतत्रछे. एम स्वीकारता इश्वर जीवोने कर्याकर्म प्रमाणे
 न्याय आपेछे ते वात खोटी आकाश कुसुमवत् ठरी कर्ममा ज
 सारू वा नटारुं फल आपवानी शक्ति रहीछे तो ते प्रमाणे कर्मथी
 सुख दुःख फल मळशे. पोतानी मेळे जेम पुरुषनु वीर्य अने खीनु
 रेतम् ए वेन असयोगमा गर्भ उत्पन्न करवानी शक्ति रहीछे तथा जेम
 आमिमा स्वाभाविक दाहकशक्ति रहीछे तेथी अग्निनो अगारो हाथमां
 लइएतो पोतानी मेळे हाथ वळे, हाथने वाळवामां दाहकत्वरूप
 न्याय पोते करेछे. तेमा इश्वर कइ न्याय करतो नथी. तेम कर्म पोते
 स्वतत्र रीत्या फल आपवा समर्थछे त्या इश्वरने न्याय कर्त्ता मा-
 नवो केवल भ्रमणा अने अज्ञान अने मिथ्यात्व समजवुं कर्ममांज
 शातावा अशातारूप फल आपवानी शक्ति छे एम सत्य छे,
 अने एम ज्ञान दृष्टिथी देखायछे. सर्वज्ञने असन्य
 वदवानु कइ कारण नथी हवे वीजो पक्ष लइए, कर्म फल आप-
 वामां परतत्र छे एटले ते इश्वरना तात्रामांछे. इश्वरनी इच्छा प्रमाणे
 कर्म फल आपी शकेछे एम मानीएतो इश्वर अन्यायी प्रपची दया-
 हीन ठरेछे

आज्ञांका तेम करता इश्वर अन्यायी दयाहीन प्रपची शीरीते ठरे वारु?

समाधान—कर्म फल आपवामा परतत्रछे तेम लागवामा पण परतत्र, जे परतत्र होय ते सदाय फलोदयमां तथा लागवामां परतत्रज रहेछे, जेम तरवार चीजाने लागवामां तथा तेनो प्राण लेवामा सदाय परतत्र रहीने कार्य करेछे मनुष्य हाथमां तरवार ग्रहीने अन्यने मारे त्यारे तेना माणनो नाश थायछे, तरवार पोतानी मेछे उची थइ मारवानी क्रिया करी शक्ती नथी, कारण के ते कर्त्तारी प्रवर्तेछे माटे परतत्रछे तेम कर्म इश्वरना तावामा रही प्रवर्तेतां होय तो प्रथम जीवोने इश्वरे कर्म लगाडया एम कहीएतो पहेला जीव कर्मरहीत हता त्यारे तेमने शा माटे कर्म लगाड्यां ? कइपण अपराध विना कर्म लगाड्याथी इश्वर अन्यायी पातकी ठरे, वळी कर्मरहीत पहेला जीवो हता तेओने कर्म लगाडवाथी इश्वर प्रभुनु शु कल्याण थवानु हतु अलवत कइ नही, वळी इश्वरनामा जीवोने कर्म लगावानी शक्ति नित्यछे के अनित्यछे, जोते कर्म लगाडवानी शक्तिने नित्य मानीए तो सदाय इश्वरजीवोने कर्म लगाडया करशे जीवो कदी कर्मरहीत यशे नहीं तो प्रभुने भजवु इयादि सर्व व्यर्थ कल्पना मात्र थइपडे वळी इश्वरमां कर्म लगाडवानी शक्ति अनित्यछे एम कहीए तो अनित्य शक्तिनो आधारी भूत इश्वरपण अनित्य ठरेछे, निराकार साकार इश्वर मानवामां कोइ प्रमाण नथी निराकार इश्वर सिधने मानतां निराकार इश्वरने कोइपण जातनी इच्छा नथी तेथी ते कर्म लगाडवानी उपाधिमां केम पडे

वळी निराकार इश्वरने जो इच्छा कहीए तो इच्छा अधुराने होयछे, पण पूर्णने होती नथी इच्छा मानवाथी इश्वरनी पूर्णतानो

नाश थायछे. वळी समजवानु के-इच्छा राग विना होती नथी अने ज्या राग होयछे त्यां सदाय द्वेष रखोछे. रागी द्वेषी होयते कर्म सहीत होय अने कर्म सहीत होयते संसारी कहेवायछे, संसारी थवाथी इश्वरपणु नष्ट थयु, कर्म कलरु नाश करी निरजन निराकार पद पामवाथी इश्वरताछे- कर्म ए कइ बोलवा मात्र शब्द नथी, कर्म पुद्गल परमाणुओनो स्कधथी वनेछुछे. अने ते रूपीछे. कर्म लागवाथी आत्माना गुणो ढकायाछे. हवे कहो के-कर्मथी रहीत एवा इश्वरमां कर्म लगाडवानी शक्ति मानवी ए केटली भूलनी वातछे, जे पोते कर्म रहीत थयाछे ते बीजाने केम कर्म लगाडे, कर्म लगाडवानी शक्ति इश्वरमा कल्पवी ते आकाश कुसुमवत् असत्य कल्पना मात्रछे. तेमज इश्वरनामा सुख दुःख भोगाववानी शक्ति मानवी ते पण कल्पना मात्र शश शृंगवत् वातछे.

कर्म पोतानी मेळे लाग्यां एम मानता इश्वर कर्ता हर्ता नथी एम सिंथ थयु. हवे जीवने कर्म पोतानी मेळे लाग्यां एम मानतां तर्क थशेके-कर्म लगाडया विना पोतानी मेळे शी रीते लाग्यां अने ते क्यारथी लाग्यां-तेनु समाधान मूक्ष्म विचारथी थशेके-कर्म अनादि काळथी जीवने लाग्याछे. जीव अनादि काळथीछे, जेनी आदि होय उत्पन्न थवापणे ते वस्तुनो अत पण हायछे, जे वस्तुनो आदि अने अतछे. ते अनित्य होयछे अने जे अनित्य हायछे ते कार्यछे अने जे कार्य पणे वस्तुछे ते विनाशीछे जेम घट उत्पन्न थयानी आदिछे तो तेनो अत पटछे नाश होयछे, आत्मा कहा कंचेन वा जीव तेनी उत्पन्न थवानी आदि नथी अर्थात् आत्मा द्रव्याधिकृत्यापेक्षाथ फोडनाथी उत्पन्न थयो नथी, अने जे वस्तु उत्पन्न थइ नथी ते अनादि काळथीछे, जेम आकाश जे वस्तु अनादि काळथीछे तेनो पण नथी, माटे अनादि बनछे. आत्माना

प्रदेशमय व्यक्ति द्रव्यार्थिक नयनी अपेक्षाए अनादि अनतछे, कोइ पण कालमा आत्माना असरयात प्रदेश पैकी एक प्रदेश पण सरवानो नथी, आत्मा कहो के जीव ते त्रिकाठमा पोताना रूपे सत्छे अने जे वस्तु सत्छे ते नित्यछे, आत्मा सत्छे माटे ते नित्यछे,

प्राग्भावाप्रतियोगित्व नित्यत्व

प्राग्भावनु जे अप्रतियोगी होयते नित्य जेट्ला कार्य रूप पदार्थो घट पट टडादिकछे ते पर्यायाधिक नयनी अपेक्षाए अनित्य जाणया—कारणके घटपटादिक पदार्थो प्राग्भावना प्रतियोगीछे, आत्मा वा चेतन प्राग्भावनो अप्रतियोगीछे माटे आत्मा नित्य जाणवो—द्रव्यार्थिक नय द्रव्यत्व पणाने ग्रहेछे माटे द्रव्यार्थिक नयनी अपेक्षाए आत्मा नित्यरूप जाणयो ससारमा चार गतिमा परिभ्रमण करनारा अनत आत्माओनु द्रव्यपणु त्रिकाठ एक स्वरूपछे माटे ते द्रव्यार्थिक नयनी अपेक्षाए नित्य जाणया, हवे आत्मा अनादि अनत नित्यछे, तेम सिध कर्युं, ते आत्माने अनादिकाळधी कर्म लाग्याछे ते वातनु विवेचन करायछे आत्मा अनादिकाळधी छे एम सर्वज्ञ श्री वीरप्रभुना वचनथी जाण्यु तेम कर्म पण अनादिकाळधी आत्माने लाग्युछे एम सर्वज्ञ श्री महावीरना वचनथी जणायु, वीर प्रभु सर्वज्ञ अने रागद्वेषथी सर्वथा रहित हता माटे तेमना वचननो पूर्ण विश्वास भव्यजीवने धाय एमा रुइ आश्चर्य नथी,

आप्तोक्त वाक्य प्रमाण

श्री वीरप्रभु त्रिकाल सर्वज्ञानी आस हता, माटे तेमनु वाक्य प्रमाणीभूत जाण्यु कर्म अनादिकालधी जीवने लाग्यां एमां आगम प्रमाण पण सिध्य ठर्युं कोइ जीव राजा थायछे, कोइ ररुथायछे, कोइ जन्मथी अथा वधिर अउतरेछे कोइ—रोगीतो कोइ—भोगी इत्यादि सर्व पुण्यपापनु फल प्रत्यक्ष देखवामां आवेछे माटे तेमां

प्रत्यक्ष प्रमाण पण सिद्ध करेछे. (भोगायतन शरीर) सुख दुःख भोगववानु स्थान शरीरछे, अने ते प्रमाणे दरेक जीव क्षणिक सुख तथा दुःख शरीरादिकथी भोगवेछे एम प्रत्यक्ष जोवामा आवेछे. तो ते सुख दुःखनु कारण कर्म-पुण्य पापरूप, आत्मानि साये लाग्यु छे एम अनुमान थायछे जेम कोड शहेरपासे नदीछे तंमा जलनी रेल आवीछे. शहेरनी आसपासतो मेघ वरस्यो नथी. ते उपरथी एम अनुमान थायछे के-ज्या त्या अत्यत मेघनी वृष्टि थवी जोइए. कारणके नदीमां रेल रूप कार्य देखायछे ते मेघनी वृष्टि विना होय नहीं अहीं तो मेघनी वृष्टि थइ नथी. तेथी अनुमान थायछे के पर्वतमा दूरे खुन मेघ वृष्टि थइ हसे, तेम कर्मनी वाततमा पण अनुमान थायछे के- भोग रोग सुख दुःख रूप कार्य, फलतो प्रत्यक्ष देखवामा आवेछे माटे तेनु कारण कर्म होनु जोइए. पुण्य पाप विना शाता तथा अशाता वेदनीय होय नहीं, ए अनुभव सिद्ध वातछे, वळी कहेछे के-जेम कोइ वृक्षना कोटरमा अग्नि सळगेछे अदरना भागमां अग्नि वळेछे गहिर देखाती नथी गहिरतो फक्त धूम देखायछे ते उपरथी अनुमान थायछे के-

यत्रयत्र धूम स्तत्रत्र वन्हिः

ज्यां ज्यां धूम होयछे त्या त्यां अग्नि होयछे, वृक्ष अंदरथी धूम बहिर निकळतो देखायछे माटे वृक्षना कोटरमा अग्निछे एम अनुमान थी सिद्धि थायछे. तेम सुख, पूर्णेच्छा, भोग, रोग, शोक, वियोग, अधत्व, वधिरत्व, दरिद्रत्वरूप, कार्यरूप, फल देखायछे माटे तेनु कारण पुण्य पापरूप कर्म आत्मानि साये लाग्युछे एम सिद्ध थायछे, सर्व विद्वानो कर्मनु अस्तित्व स्वरूपरेछे तेम कर्म ग्रथमा कर्मनु स्वरूप विस्तारथी ज्ञानीए वर्णय्युछे तेमज कम्मपयडी, भगवतीमूत्र, पन्नवणामूत्र, विपाकमूत्र विगेरे मूत्रो तथा ग्रथोथी कर्मनु यथातथ्य स्वरूप सम-

જાયઁ અને તે અનુભવમા આવેછે. કર્મની પ્રકૃતિનુ સ્વરૂપ નિમ્નષ્ય પ્રવચનમાં સૂક્ષ્મપણે વર્ણન કર્યુંછે તેજુવર્ણન અન્ય દર્શનમાં તે પ્રમાણે પરિપૂર્ણ પળ નથી કોડ કર્મને કિસ્મત કહેઁ, કોડ કર્મને પ્રકૃતિ કહેઁ, પણ કર્મનુ અસ્તિત્વ માન્યાવિના છુટકો થતો નથી.—

શ્લોક

કૃતકર્મક્ષયોનાસ્તિ, કલ્પકોટીશૈતૈરપિ ॥

અવશ્યમેવ ભોક્તવ્ય, કૃત કર્મ શુભાશુભ ॥ ૧ ॥

કૃતકર્મનો ક્ષય નથી કોટીકલ્પશતોષ્ણ પણ કર્મ અવશ્ય શુભાશુભ ભોગવવુ પહેઁ, જન્મજરા અને મૃત્યુ પણ કર્મથી થાયછે ચોરાશી લાખ જીવયોનિમા અવતરવુ પણ કર્મથી થાયછે એકેન્દ્રિય, દ્વીન્દ્રિય, ત્રીન્દ્રિય, ચતુરિન્દ્રિય, પચેન્દ્રિયના અવતાર પણ કર્મથી થાયછે, કર્મ અનેક પ્રકારેઁ, કર્મના મૂલ આઠ મેદ્છે તેની ઉત્તર પ્રકૃતિ એકશતઅઠાવનઁ દેવગતિ, મનુષ્યગતિ, તિર્યચગતિ, નારકગતિ, ઇંચાર ગતિમા અવતાર પણ શુભાશુભ કર્મથી છે કશુછે કે—

ગાથા

જજેણ કચકમ્મ, પુવ્વભવે ઇહભવે વસતેણ ॥

ત તેણ વેઈઅવ્વ, નિમિત્તમિત્તો પગે હોઈ ॥ ૧ ॥

જે જીવે પૂર્વભવમાં તથા આભવમાં વસતા જે કર્મ કર્યાંછે, તે કર્મ તે જીવે ભોગવવા યોગ્યછે સુખદુઃખમા પરજીવ તો નિમિત્ત માનઁ કર્મનો કર્તા પણ જીવછે તેમ કર્મનો ભોક્તા પણ જીવછે દેવો સૂયઙ્ગમૂત્ર-સમ્મતિતર્કમાં પરભાવમાં રમતો જીવ પરનો કર્તા તથા ભોક્તા બનેલોછે—વેટલાંક કર્મ ભોગવીને સ્વેચ્છે અને જીવ વેટલાંક કર્મ નવાં પ્રહણ કરેછે—એમ અનાદિ કાલથી જીવ કર્મને પ્રહણ કરતો તથા કર્મને છુટતો વર્તેછે, માતાનુ રુધિર અને પુરુષના

वीर्य संयोगे गर्भमा जीवन्तु उत्पन्नं यद्वु अने प्रतिदिन वृद्धि पामवु
इत्यादि सर्व कर्मनो प्रपंचे गे गर्भमा पण जीव ओजाहारग्रहे
प्रश्ने-गर्भमा जीव शत्रुदे आहार ग्रहण करेछे.

प्रत्युत्तर-आहार त्रण प्रकारनाछे १ ओजाहार, २ लोमाहार,
(रोमाहार) कवलाहार-पूप एटले मालपूआने ज्यारे घीमा
तळेछे त्यारे मालपुओ सर्वथी घीनी साये परिणमी जायछे
तेम गर्भमा जीव आहारने खंची शरीररूपे परिणमावी
शरीरनी वृद्धि करेछे. रोमथकी जे आहारने ग्रहण करवो ते
रोमाहार कहेवायछे. हवानु ग्रहण शरीरमा रोमथी थायछे,
शुक्लथकी जे आहारनु ग्रहण करवु. ते कवलाहार कहेवायछे,
मनुष्य पशु परी जलचरने कवलाहार प्रत्यक्ष देखवामा आवे
छे, एम गर्भमा ओजाहारनु ग्रहण छे.

प्रश्ने-केटलाक भोळा लोको अज्ञानताथी एम मानेछे के-गर्भमाथी
वाहिर नीकल्या वाद-जीव शरीरमा प्रवेशेछे अने पश्चात्
छद्वा दीवसनी रात्रीए सरस्वति चालरनु भविष्य कपालमां
लखेछे अने कहेछे के-छठीना लेख लरया मटे नहीं तेनु वेम?

प्रत्युत्तर-गर्भमाज जीव उत्पन्न थायछे. ते माटे प्रवचन सारोद्धार
नवतत्त्व विगेरे ग्रथो जोवा छठीना लेख सरस्वति लखेछे एम
मानवु पण मिथ्या कल्पनामात्रछे-कर्म साये वध पामेळो जीव
गर्भमां उत्पन्न थायछे, अने त्या वृद्धि पामी नव मास थया
वाद वाहिर नीकळेछे, कोड गर्भमाज मरण पामेछे. इत्यादि
सर्व

प्रश्न—कर्मनो क्षय थवाथी मुक्तिपट मळेजे त्यारे जेटला जीव कर्मनो क्षय करेछे ते परमेश्वर कहेवाय के नहीं

प्रत्युत्तर—हा, जेटला जीव, कर्मनो क्षय करेछे तेटला जीव परमात्मा सिद्ध, बुद्ध, कहेवायजे, कर्मधर्मी सर्वथा प्रसारे रहीं थवु तेनु नाम मोक्ष कहेवायजे

प्रश्न—कर्म सहित जीव मोक्षमा जाय के नहीं ?

प्रत्युत्तर—कर्मसहित कोइ जीव मोक्षमा गयो नथी अने जगेषण नहीं.

शिष्य—हे सद्गुरो—कोइ मति अज्ञानीयोए नवीन कल्पना उत्पन्न करी एम रुहेजे के मुक्तिमा वेटराक कर्प मृधी जीव रही पश्चात् ससारमा आवे जे आ चारत थु समजतु

सद्गुरु—मुक्तिमा गया पाट जीव पुनर्ससारमा पाछो आवतो नथी जीवने एर स्थानथी अन्यत्र लेइ जनार कर्मछे अने ते कर्मनो सपूर्ण नाश थाय त्यारे मुक्ति स्थानमा जीव सिद्ध रूपे धीराजेजे त्यांथीससारमा आरी शकतुज नथी कारण के जीवनी साये कर्प सख छता गमनागमनजे कर्मना अभावे मुक्ति स्थित मुक्तात्मानु गमनागमन थतु नथी, श्री वीरप्रभु एम सर्वज्ञ दृष्टिथी वदेजे—चक्रलाचकलीनी पेठे मुक्तिना जीवो गम नागमन करता नथी—मुक्त जीवो अक्रियावतजे माटे ते गम नागमननी क्रिया करता नथी

प्रश्न—मुक्त आत्मामा सर्वशक्तिमानपणु छेके नहीं,

उत्तर—हा मुक्तात्माना पोताना स्वरूपथी सर्व शक्तिपणु रहजे पण पुद्गल द्रव्यनी शक्तिथी मुक्तात्माना शक्ति भिन्नजे आकाश द्रव्य अरूपीजे आकाश जेम अनत प्रदेशीजे अने ते जेम स्व स्वरूप स्थिर वनेजे तेम सिद्ध परमात्मा स्वस्वरूपे शुद्ध थया जता स्थिर वनेजे. स्थिरवर्तवाथी आत्मिक सर्व शक्तिपणु जर

मात्र घटतु नहीं. गमनागमन परमाणुओनु ठे. परमाणुओना संबंधी थएला पुद्गल स्कंधो कर्मरूप परिणामी आत्माना प्रदेशोनी साये लाग्याडे ते ज्यारे कर्म नाश थायछे. त्यारे मुक्तात्मा सिद्धबुद्ध कहेवायछे मुक्तात्मानाी सर्व शक्ति-आत्माना असरय प्रदेशोनी व्यापीने रहीछे मुक्तात्मानाी शक्ति स्वद्रव्य बाहिर जती नहीं. माटे आत्मस्वभावे सर्व शक्तिपणु सदा बनी रह्युडे, सिद्ध अक्रिय होवाथी गमनागमननी क्रिया करे नहीं

प्रश्न—कोइ एम कहेडे के-इश्वर अवतार लेड टैत्योनी नाग करेडे ए वात ररी के खोटी-

उत्तर—कर्म रहीत निर्मल परमात्माने इश्वर कहेवामा आवेडे ते परमात्मा अवतार ग्रहण करता नहीं कारणके कर्मातीतने अवतारतु आदि उपाधि नहीं-पण कर्म सहित जे ससारी जीवडे ते अवतार ग्रहण करेडे अने जन्म जरा मरणना दुःख पामेडे.

प्रश्न—त्यारे इश्वरना लक्षण कहे

प्रत्युत्तर—जेनामा रागद्वेष सर्वथा होतो नहीं तेनेइश्वर कहेछे वळी इश्वरना चार प्रकारछे—नाम इश्वर, स्थापना इश्वर, द्रव्य इश्वर, अने भावइश्वर इश्वर एवु गुणी वा निर्गुणीनु इश्वर एवु नाम स्थापनु ते नाम इश्वर, तथा कोइ पण वस्तुमा इश्वरनो आरोप करवो ते स्थापना इश्वर—जे जीवमा इश्वरपणु आविर्भावे वर्ते नहीं ते द्रव्येश्वर—जे जीवमा रागद्वेषना क्षयथी इश्वरत्व आविर्भावे वर्तेछे ते भावेश्वर, ए चार भेद इश्वरनाडे तेमाथी पूर्वोक्त जे इश्वर भावइश्वर तरीके कथायछे ते इश्वरनु संसारमा पुन-रजन्मवु थतु नहीं जीव ते पण इश्वर सत्ताएडे. इश्वरपणु कर्मा च्छादितपणे होवाथी कर्म महीत ससारी जीव ससारमा जन्म जरा मरण करेडे अने चतुरशीति लक्ष जीवयोनिमा पुन पुन परि-

भ्रमण करेछे-जीव पोते कर्म करेछे अने तेनो भोक्तो पण पोते एकलोछे. कछुछे के-

गाथा

एको करेइ कम्म, फलमवि तम्मिक्कञ्च समणुवेहइ
एको जायइ मरइय, परलोय एकउजाइ ॥ १ ॥

भावार्थ सुगम होवायी लग्यो नथी, व्यवहारनये जीव कर्मनो कर्ताछे-शुद्धनिश्चयथी स्वस्वरूपे रमतो जीव परनो एटछे द्रव्यकर्म तथा भावकर्मनो कर्ता नथी.

ज्ञानी शुद्ध आत्मस्वरूपमा रमतो कर्मनो नाश करेछे-जे आश्रवना हेतुओ छे ते ज्ञानीने सवरूपे परिणमेछे कछुछे के-

श्लोक

यथा प्रकारा यावत् ससारावेश हेतव.
तावत्तस्तद्विपर्यासा निर्वाणवेशहेतव

कर्मना वे भेदछे एक शुभाश्रव वीजो अशुभाश्रव प्रथम शुभाश्रवने पुण्य कहेछे, अने अशुभाश्रवने श्रीजिनेन्द्रदेव पाप तरीके कथेछे पुण्यनी वेतालीस प्रकृतिछे अने तेम पापकर्मनी ८२ व्यासी प्रकृतिछे आत्माना शुभ परिणामथी पुण्य तथा अशुभ परिणामथी पापकर्म बधायछे रागद्वेषने भावकर्म कथेछे रागद्वेषनो जय करवो ए सूरु पुरुषतु कृत्यछे रागद्वेष जीत्या विना देवपणु कथातु नथी चतुर्दश रज्ज्वात्मक लोकमा सर्व समारी जीवोमा रागद्वेष व्यापो रगोछ महादेव वरीसीमा कछु उ के-

श्लोक

रागद्वेषौ महामलौ, दुर्जितौ येन निर्जितौ,
महादेव तु त मन्ये, शेषा वै नामधारका.

आ ससारमा दुर्जय रागद्वेषरूप महामल्ले। तेवा महामल्लेने जेणे जीतराजे तेने महादेव मानुछु, ाकीना तो नामना महादेवजे। रागद्वेषने जीतवाधी वीतरागता भगटेजे, सत्यतात्त्विक सुख वीतरागावस्थामाजे। रागदशाधी दुःखजे अने वीतरागदशाधी सुखजे। एम सर्वज्ञ वीरपरमात्मा सारमा सार कयेजे श्रीवीरभुए ध्याननी तीक्ष्णताधी रागद्वेषनो क्षय करीजे श्रीमसन्नचंद्र राजर्षिण रागद्वेष शत्रुनो आत्मध्यानधी क्षय करी। रागद्वेषज ससारनु मूळजे। ज्ञान दर्शन अने चारित्रगुणनी क्षायिकभावे प्राप्ति रागद्वेषना क्षय विना नधी। द्वेष करता पण रागनी सत्ता विशेषतः प्रवर्तेजे। कारण के जड वस्तुपर पण रागदशाधी ममत्वभाव उत्पन्न थायजे। आत्मिक ज्ञानयोगे मोहनीय कर्मनो उपशमभाव वा क्षयोपशमभाव वा क्षायिकभाव भगटेजे। ज्ञानावरणीय कर्मना, क्षयोपशमभाव वा क्षायिकभ वना प्रादुर्भावने मोहनीय कर्म अटकावेजे।

कर्मवधमां पण रागद्वेषनी प्राधान्यता समयमा वर्णवीजे। चार घातीकर्ममां पण मोहनीय कर्मनी सत्ता प्रबलपणे प्रवर्तेजे। देवगुरु धर्मनी श्रद्धा सम्यक्त्व पण मोहनीय कर्मना, उपशम, क्षयोपशम तथा क्षायिकभावधी थायजे, मोहनीय कर्म पण द्विधा प्रवर्तेजे। दर्शन मोहनीयना क्षयधी दर्शन भगटेजे अने चारित्र मोहनीयना क्षयधी चारित्र भगटेजे। वेदनीयकर्म, आयुष्यकर्म, गोत्रकर्म अने नायकर्म एह चार कर्म अघातीयाजे, ए चार कर्ममा औदयिकभाव फक्त प्रवर्तेजे। औदयिकभावे अघातियां चार कर्म भोगवीने आत्मा स्वरवेजे। प्रत्येक भवमां इव्य, क्षेत्र, काल, भावधी औदयिकभावनी जीव जीव प्रति भिन्नता वर्तेजे। इन्द्रिय, गतिकायनी अपेक्षाए औदयिकभावमा जीव जीव प्रति असंख्यभेदे भिन्नतानी तारतम्यता प्रवर्तेजे। औदयिकभावे चार अघातीयां कर्मनी कर्मवधनमां निमित्त

કારણતા વર્તે છે. માધ્યાનતા રાગદ્વેષની કર્મવધનમાટે. માહનીય કર્મની વધસ્થિતિ ઉત્કૃષ્ટી સિત્તેર કોઢાકોઢી સાગરોપમની જાણવી મોહનીય કર્મ મદિરા સમાનઠ જેમ મદિરાપાનથી મત્ત થયેલ મનુષ્ય અત્રિવેકી બની કૃત્યાકૃત્ય જાણી શકતો નથી તેમ મોહના ઉદયથી મૂઢ થયેલ મનુષ્ય કૃત્યાકૃત્યને સમજી શકતો નથી, ભક્ત્યાભક્ત્યમા પ્રવર્તે છે, પરભાવમા મદોન્મત્તપણે પ્રવર્તે છે અને પાપકર્મયોગે આત્માને કર્મદલિકથી ભારે કરે છે મોહોદયથી કોઈની હિતશિક્ષા શ્રવણે મુળતો નથી યુગાવસ્થામા તો મોહોદયતા અતિશય વર્તે છે. મોહનીય કર્મરૂપ ઘાજીગર-સસારી જીવોને પૂતળાંની માફક નચાવે છે અને જન્મ, જરામરણ, રોગશોક, તપા, ધુધા, છે-દનખેદનના દુઃખ આપે છે. છતા જીવો મૂઢતાથી સસારમા સાર પાની રાગદશામાં મસ્તાન થઈ વર્તે છે અહો કેટલી અજ્ઞાનતા. ક્ષણિક સુખમા ચિંતામણિ રત્ન સમાન મનુષ્યભવ જીવ હારી જાય છે અને પુનઃ પુનઃ સસારમા પરિભ્રમણ કરે છે કર્મરાજા સસારરૂપ નગરમાંથી જીવને જરા માત્ર સ્વસયા દેતો નથી અનત શક્તિધારી આત્મા પણ કર્મ પિંજરમા રહ્યો છે ક્યા પુદ્ગલની શક્તિ અને ક્યા આત્મની શક્તિ તેનો તો હે ભવ્યો વિચાર કરો—

પ્રશ્ન—હે ગુરુ મહારાજ કર્મ એ પુદ્ગલ દ્રવ્ય છે કે પુદ્ગલ દ્રવ્યના પર્યાય છે.

ઉત્તર—કર્મ એ પુદ્ગલ પરમાણુ દ્રવ્યના પર્યાયરૂપ સ્ક્રયો છે અને તે આત્મ પ્રત્તેશોની સાથે ક્ષીરનીરની પેટે પરિણમે છે—પુદ્ગલ દ્રવ્યનો સ્ક્રધ રૂપ પર્યાય કર્મ જાણવું—કર્મ જડ છે પણ તેનાથી આત્માના ગુણો ઢકાય છે તેથી આત્મા દુઃખ પામે છે.

પ્રશ્ન—અનાદિકાલથી જે કર્મ આત્માની સાથે લાગ્યું છે તેનો સ્ત્રી રીતે અંત આવે

उत्तर—कर्म बधननी मूल सत्ता जे रागद्वेषे तेनो क्षय करवायी कर्मनो अत आवेछे. मतिश्रुतज्ञानना क्षयोपशमभावे कोइक भव्यजीव पद्द्रव्यने जाणी जीवद्रव्यने अन्य पचद्रव्यथी भिन्न जाणी सम्पक् शुद्ध बोधथी आत्मध्यानमा प्रवर्ते अने रागदशाना हेतुओने त्यागी सयम आदरी निश्चयथी स्वस्वभाव स्वगुण स्थिरतारूप चारित्रमा उपयोगथी वर्ते तो जीव कर्मनो क्षय करेछे. अन तीर्थकरोक्त परमपदनी प्राप्ति करेछे. अनत जीवो कर्मनो सक्षय करी परमपद पाम्या अने पामशे. एम श्री प्रवचन वदेछे.

जे भव्यो वीतरागना पथने चाहेछे ते भव्यो रागद्वेषनो क्षय करी ते पदने पामेछे अने पामशे. कर्मनो ग्रहण कर्ता पण जीवछे अने तेनो नाशकर्ता पण जीवछे.

परमा रागद्वेषनी परिणतिथी कर्मबधन अने स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल अने स्वभावथी आत्मगुणमा प्रवृत्ति करवायी कर्मनो नाश थायछे. मिथ्यात्व, अविरति, कपाय अने योगथी कर्मबधन थायछे. अनादि कालथी जीव ससारमा परिभ्रमण करेछे तेनु कारण कर्म जाणतु. भेदज्ञान थवायी आत्मा अने परनो भेद थायछे. अने भेदज्ञानथी समाकित प्रगटेछे. ज्ञानभाव विना मोहोदयतानो नाश थतो नथी. कह्यु छे के,

श्लोकः

ज्ञानेन भिद्यते कर्म, छिद्यते सर्व संशयाः

आत्मीयध्यानतो मुक्ति, रित्येव कथित जिनैः॥१॥

ज्ञानथी कर्मनो नाश थायछे. अने सर्व संशयो छेदायछे अने आत्म यान पण ज्ञान विना थतु नथी. माटे ज्ञानथी आत्म यान करता मुक्तिनी प्राप्ति श्रीजिनेश्वरोए कथीछे. ज्ञानथी वैराग्य-

थायछे अने वैराग्यथी चारित्र जीव आदरेछे, अने तेथी जीवकर्मनो क्षय करी मोक्षमा जायछे माटे मुक्तिमार्गमा ज्ञाननी तथा तेनी साथे वैराग्यनी पण मुख्यताछे शास्त्रमा कहु छे के-

श्लोक.

ज्ञानस्यैवहि सामर्थ्यं, वैराग्यस्यैव वा किल,
यत्कोऽपि कर्मभि कर्म भुजानोऽपि न वध्यते. १

ज्ञानतु एतु सामर्थ्य छे के वा वैराग्यतु खरेखर एतु सामर्थ्य छे के जेथी कोइपण कर्मोवडे कर्म भोगवतो छतो पण कर्मथी बंधातो नथी तात्पर्य के ज्ञान अने वैराग्यथी कर्म भोगवतां पण कर्मबंध यतो नथी

माटे कहैछे के-

ज्ञानीको भोग सवि निर्जराको हेतु हे.

ज्ञानीनो सर्वभोग निर्जरार्थछे औदयिकभावे प्राप्त थएला पंचेंद्रिय विषयभोगोने भोगवता पण ज्ञानी कर्मनी निर्जरा करेछे, अने अज्ञानी उलटा बघायछे हु ज्ञानीछु एम मानी वेसवाथी कइ ज्ञानीपणु आवतु नथी वा कोइ एम कहेशे के आ ज्ञानी नथी एम कथवाथी ज्ञानीपणु टळतु नथी ज्ञानीपणु ज्ञानीगम्य वा ज्ञानीना अनुभवमा समजायछे

ज्ञानना पण घणा भेदछे आत्मज्ञान विना कर्म फलक टळतु नथी. ज्ञाननो महिमा अनतछे

कृष्ण अर्जुनने कहैछे के-

ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरतेऽर्जुन.

हे अर्जुन ! ज्ञानरूप अग्नि सर्व कर्मने वाली भस्म करेछे ज्ञान विना चारित्र नथी अने चारित्र विना मुक्ति नथी क्रिया पण ज्ञानिनी पासेछे ज्ञान विना श्रुतप, श्रुक्रिया माटे आत्मतत्त्वनु ज्ञान

करवु श्रेयस्करछे. आत्मज्ञान विना कोइ तर्या नथी अने तरशे पण नहीं, राजा, करोडाधिपति, आदि सर्व करता ज्ञानीनी महत्वताउे ज्ञानी सूर्य करता पण मोटोउे. कारण के सूर्य बाह्य प्रकाश करेछे किंतु अंतर्प्रकाश करी शकतो नथी. अने ज्ञानी तो अंतर्प्रकाश करे छे. ज्ञानीनी सर्व क्रिया, वर्तन सापेक्षपणे वर्तेउे अने अज्ञानीनु वर्तन निरपेक्षतया वर्तेउे. ज्ञानी अवश्य चोथाठोणे गुणे तो होयछे अने अज्ञानी धी. ए. एल. एल. वी आदि पद्विओधी दुनीयादारीमा महा विद्वान् कहेवातो होय तो पण समकित विना पहले गुणठाणे वर्तेउे. ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयोपशमभावथी वा क्षायिकभावथी ज्ञाननो आविर्भाव यायछे. सम्यक्तत्त्व श्रद्धान् विना ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशमभाव पण मिथ्यात्वरूपे परिणमेउे. एम श्रीवीर मभुनु कथनउे.

ज्ञानावरणीय कर्म पचप्रकारेछे—मतिज्ञानावरणीय कर्म १, श्रुतज्ञानावरणीय कर्म २, अवधि ज्ञानावरणीय कर्म ३, मनःपर्यव ज्ञानावरणीय कर्म ४, केवल ज्ञानावरणीय कर्म ५

ज्ञानावरणीय कर्ममा उपशम भाव नथी. ज्ञानावरणीय कर्मनो औदयिकभावछे. ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम विचित्र असख्य प्रकारे तरतमयोगथी वर्तेछे. द्वादशांगीनु गुथन गणधरजी क्षयोपशमभावे करेछे

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यवज्ञानमा क्षयोपशम भाव लाभेछे. केवलज्ञान क्षायिकभावे उत्पन्न थायउे ज्ञानावरणीय कर्म अष्ट कर्ममा प्रथमउे तेनु कारण के विशेषतः ज्ञानावरणीय कर्म आत्मानु भान भूलवेउे ज्ञान विना तत्त्वनु भान थतु नथी, माटे प्रथम तेनो निक्षेप कर्योछे. ज्ञान विना जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, सवर, निर्जरा, वः अने मोक्षनु स्वरूप जणातु नथी.

પદ્મદ્વય, સાતનય, સપ્તમગી, પ્રમાણ નિસેપત્તુ યથાતથ્ય સ્વરૂપ જ્ઞાન વિના સમજાતુ નથી. જ્ઞાન વિના ધર્મ અધર્મનુ સ્વરૂપ જણાતુ નથી. જ્ઞાન વિના ચારિત્ર શુ છે તેનુ પણ ખાન થતુ નથી.

મતિ જ્ઞાનાવરણીય અને શ્રુત જ્ઞાનાવરણીય કર્મનો સયોપશમ સર્વ જીવોમા સરસ્વો લાગતો નથી કોઈએક વસ્તુનુ સ્વરૂપ વિશેષ સમજેતે કોઈ સમજતુ નથી ત્યા મતિ જ્ઞાનાવરણીયકર્મની સયો-પશમતાજ કારણીભૂતજે પૂર્વભવમા જે પ્રકારે મતિજ્ઞાન અને શ્રુત જ્ઞાનનુ આરાધન કર્યું હોયજે તે પ્રમાણે આ ભવમાં મનુષ્ય જન્મ પામી શરીરની રચના, મગજની રચના જ્ઞાનતત્તુની પ્રચલતા આત્મિ સામગ્રીસાધન મતિજ્ઞાનાવરણીય કર્મના સયોપશમભાવમાં પ્રાપ્ત થાયજે અને તે સાધનોદ્વારા ઉત્તમ કર્મચારી મતિજ્ઞાનની વૃદ્ધિ થાયજે.

મતિજ્ઞાનના અષ્ટાવિંશતિ અને ૩૪૦ ગ્રણસો ચાતુશ્ચ મેટ નદિમૂત્રમા પ્રરુપ્યાજે જ્ઞાનની વ્રાહ્મી લીપી જે શ્રુતજ્ઞાન અખરસ્વ-રૂપેજે તેની આશાતના ફરવાથી જ્ઞાનાવરણીય કર્મ યથાયજે આ શાતનાના હજારો મેટજે તે ગીતાર્થને વિનયથી પૂછીસમજણ લેવી સુવર્ણના પ્યાલામા જલના જેટલાં વિંદુ પડેજે તેટલા કાયમ રહેજે તેમ યોગ્ય સસ્કારી જીવ જેટલુ ગુરુદ્વારા શ્રુતજ્ઞાન મેલવેજે તેટલુ તેને શુદ્ધરૂપે પરિણમેજે અને તેનુ સ્મરણ રહેજે

જેમ તપાવેલા લોહના ગોગા ઉપર જન્મિંદુ ગ્રણ ચાર દશ બાર પડે તો કદ તેનુ જોર ચાલતુ નથી તેમ મૂઠ અજ્ઞાની જીવના હૃદયમા સદ્ગુરુ વચનામૃતનો વાસ થતો નથી ઉલ્ટો તેનો નાશ થાયજે

એક શિક્ષક શિષ્યોને એકજ વગવતે સરસ્વી રીતે કોઈ વિષયનો ઘોષ આપેજે તેમા કોઈ વિગ્રાધિને તો તિલ્કુલ તેની યાત્રી રહેતી નથી કોઈને યત્નિચિત્ રહેજે મોડને પૂર્ણ યાત્રી રહેજે ત્યાં શ્રુત

भणीने स्मरणमां राखेछे कोइ एक कलाकमा पांच श्लोक भणेछे. कोइ पचीश श्लोक कोइ शतश्लोक कोइ सहस्रश्लोक एक कलाकमा याद करेछे कोइ आखा दीवसनो एक श्लोक पण याद करी सकतो नथी. त्या श्रुतज्ञानावरणीयकर्मनी क्षयोपशमताज कारणीभूतछे हालना समयमा कोइ शतावधानी कोइ द्विशतावधानी देखवामा आवे छे. तेनु पण कारण मति अने श्रुतज्ञानावरणीय कर्मनी क्षयोपशम-तानी विचित्रताछे अने ते प्रमाणे मगजनी रचना ज्ञानततुनी प्रव-लता अने अप्रवलतानी तारतम्यताए घटना थायछे. अने ते प्रमाणे द्रव्य क्षेत्र कालभावथी प्रवल अप्रवल् साधनोनी प्राप्ति थायछे. श्रुत-ज्ञानना अभ्यासथी तथा श्रुतज्ञानीनो विनय भक्ति बहुमान करवाथी श्रुतज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम थायछे. श्रुत अने श्रुतज्ञानीनी आशातना करवाथी तथा उत्सृत्रभापण करवाथी श्रुतज्ञाना-वरणीय कर्मनो वध थायछे माटे भव्य जीवोए क्रोध लोभ मान पूजा स्वार्थादिक आवेशथी उत्सृत्र भापण करतु नहीं. उत्सृत्र भापणथी जमाली तथा मरीचिनी पेठे भवपरपरानी प्राप्ति थायछे. अल्पतानणोगे उत्सृत्र भापण थयु होय तो ज्ञान थता मिथ्या दुष्कृत देवु पण मान पूजा लज्जादिकथी मिथ्यादुष्कृत देता प्रमाद करवो नहि. भवभीरु भाग्यवत जीव अनेकात पथने समजी प्राणाते पण मिथ्याप्ररूपणा करतो नथी उत्सृत्र भापण समान कोइ पाप नथी. माटे कटी अल्पज्ञपणाथी उत्सृत्र प्ररूपणा करवी नहि, कलियुगमा सूत्रोनी प्ररूपणामा गुरुगम विरह, मान, पूजा, स्वार्थ, मताधपणाथी, उत्सृत्र भा-पण करी अज्ञानी जीवो अनेक प्रकारना मत उठावेछे अने कुगति कुश्रुतयोगे कुतर्क करी भिन्न भिन्न पथनी काली दृष्टि रागी जीवोने समजावीने वीरप्रभुना सत्य वचननो लोप करी आत्माना अजाण-पणाथी भवपरपरानी वृद्धि करी जन्मजरा मरणना दुःख विविध योनिमा अवतार ग्रही भोगववा प्रयत्न करेछे.

धर्म श्रवणधी भेदज्ञान थायडे अन तेथी स्वपरनो विभाग करता सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाशडे. तेमा श्रुतज्ञाननो महा उपकार समजवो, त्रिफाल सर्वज्ञ वीरभ्रुए केवलज्ञानधी सर्व पदार्थोने जोया अने वाणीधी ते पदार्थोनु स्वरूप कथ्यु ते भगवान्नी स्वपर प्रकाशक वाणीनेज श्रुतज्ञान मूत्रसिद्धातरूप रूपेडे हालपण भगवान्नी वाणी जयवती वर्तेडे

आसन्नभव्यी भगवद्वाणीरूपगगा प्रवाहमा स्नान करी सारना तापधी शांति पामेडे अने पामशे.

महाविदेह क्षेत्रमा अनाट्टिकाळधी समन्तश्रुत अने मिथ्याश्रुत वर्ते डे.

मुश्रुतनो हे भव्यो आठर करो वखत वही जायछे, वखत अमूल्यडे गयो वखत पश्चात् आवनार नथी भव्य जीवोए वारवार श्रुतज्ञाननो अभ्यास करवो

अवधिज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम थवाधी अवधिज्ञान उत्पन्न थायछे. अवधिज्ञानना पद्भेदडे अने वळी असख्यात भेदे प्रवर्तछे मन पर्यवज्ञानावरणीय कर्मना क्षयोपशमधी मन.पर्यवज्ञान उत्पन्न थायछे, मनपर्यवज्ञान रे प्रकारेडे

केवलज्ञान क्षापिरुभावे उत्पन्न थायडे शुकु यानना बीजो पायो ध्यावता वारमे गुणठाणे केवलज्ञानावरणीयकर्मनो सत्ताधी पण सर्वथा क्षय थाय डे

मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान परोक्षडे अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञान देण मन्यक्षणे केवलज्ञान सर्वधीप्रत्यक्षडे

आ प्रमाणे ज्ञाननी प्राप्ति थतां आत्मा परमात्मस्वरूप बनेडे. ज्ञाननी प्राप्ति थतां दर्शनावरणीयाणि कर्मनो सर्वथा क्षय वायन्ते. जे जे कर्ममट्टिनो जे जे गुणठाणे क्षय थवानो होयडे ते ते गुण-

ठाणे तेनो क्षय थायठे ज्ञानप्ररूपणा नटिमूत्रमा हेतु न्याय पूर्वक
दर्शावीठे. माटे आत्मार्थि जीवोए त्याथी विशेष अधिकार समजवो
अहाज्ञाननी वेवी शक्ति ।। चमुद्वारा देखेला पदार्थोनो मनमां केवो
विचार थायछे वीजानामनना विचार पण ज्ञानथी जाणी शकाय
छे ज्ञाननी एकनी एकथी वीजा जीवमा विशेषता देखवामा आवेछे.
केवलज्ञानमा सर्वज्ञाननो समावेश थायठे सप्रतिकारुळे ज्ञाननी क्षी-
णताछे. अने तेथी मतभेद घणा थया अने थशे जेम ज्ञाननी अ-
ल्पता तेम मतमतातर विशेष अने ज्ञाननी वृधि तेम मतमतातर
अल्प जाणवा. मतभेदना कदाग्रह बिना जे जे वांचवु. साभळवु.
मनन करवु ते सफळठे

क्षयोपशमभावे अयुना मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान समकृती जी-
वोने वर्तेठे. एम कथवु अनुभवगम्य सप्रमाणछे, मति अज्ञानी अने
श्रुत अज्ञानी जीवो आ क्षेत्रमा विशेषठे मति अने श्रुत ज्ञानी
जीवो अल्प अने तेमा पण प्रिति पाम्या जीवो अल्प अनुभवगम्य
सिद्धांतानुसारठे.

हे भव्य मति ज्ञान अने श्रुतज्ञाननो गहन विषयछे अल्पज्ञ-
पणाथी मूस्म तत्त्वरूपम्प निगोद स्वरूप समजी शकाय नहीं तो
तेमा ज्ञानावरणीय कर्मनो दोष समज. ग्रथकर्त्ताने दोष आपीश नहीं
मूस्म तीक्ष्ण मति ज्ञान बिना मूस्म वातनो बोध थतो नथी. एम
कहेतु सप्रमाणठे. केवलज्ञान अने केवल दर्शनथी जे पदार्थ स्वरूप
जाणवा देखवामा आवे तेनु स्वरूप मतिज्ञानथी यथार्थ साक्षात् कडी
जाणी शकाय नहि. एम अनुभवथी ज्ञानीओ कथेछे. माटे शरु
मनमा लावीग नहि जिन प्रचनपर आस्था राख. जिनेश्वरे जे
वचनो कळ्याठे ने अन्यथा नथी एम श्रद्धा कर. अने आत्मा
नुभव सद्गुरुद्वारा कर केजेथी शक्तिमार्गनो अधिकारी थाय. पूर्वो-

क्त मोहनीय अने ज्ञानापरणीय कर्मनु स्वरूप तथा तेना नाशथी
 आत्मगुणोनो लाभ देखाडी हवे प्रस्तुत कर्मविषयनुज वर्णन कर-
 वामां आवेछे कर्म सवयी सामान्य वर्णन कर्युं कर्म जडठे अने
 ते आत्माना गुणोनो घातकर्त्ता छे सर्व जीव कर्मासक्त छे. कर्मनो
 नाश करवो एज कर्तव्य छे कर्मनु स्वरूप समज्या विना कर्मनो
 नाश थतो नथी श्रीवीरमधुए घोर परिसह सहन करी कर्मनो क्षय
 कर्यो तो तेमनी वाणीना आधारे आपणे पण ज्ञान दर्शन चारि-
 त्तु आराधन करतु, लक्ष्यमा राखतु मोक्ष मार्ग प्रिकट छे प्रमाद
 घणो, उपयोग अल्प, आयुष्य अल्प, दुःपमसमय, सत्समागम अ-
 ल्प, धर्म साधनो अल्प, कर्मसाधनो विशेष, अहो बेबी दुर्दशा, क-
 र्मनु जोर विशेष, धर्मभ्याननु जोर अल्प. आ शु थयु, शु करवु हे
 वीरमधु तारी वाणीनु शरण, जगत्मां तमारो वेटलो उपकार ! ता-
 रो आधार, तारो विश्वास कर्मनी दु खमदविचित्रप्रकृतियोनो
 नाश करवा बेवा प्रकारनु लक्ष्य जोइए ? अधमता अने प्रमादथी
 जीवो क्याथी स्वस्वरूप पामे ? धर्म उग्रम अल्प छे कर्मोपार्जन
 उग्रम अहर्निश चाल्या करेछे तपासोतो खरा ! रागनु जोर तमा-
 रामां विशेष छे वा वैराग्यनु, जोर विशेष छे, कर्मनी कठीनग्रथीनो
 भेद आत्माथी पुरुष पुरुषार्थथी करेछे. कर्मनु क्षेत्र चतुर्दश रज्वात्म-
 क प्रमाण छे, अर्थात् कर्मनी राजधानी चउद राजलोकमां छे तां
 पण कर्मथी डरवानु नथी कर्म नाश थवानु नथी एम स्वप्नमां पण
 विचारवु नहि, कारणके तम मानी बेसवाथी उलटु कर्मनीज वृद्धि
 थापठे माराथी राग छुटवानो नथी वा मारा कर्ममां लरवु हशे ते
 प्रमाणे थशे. एम प्रमादनी वृद्धि अर्थे वा सरागदशानी वृद्धि अर्थे
 वचन वदशो नहि अनुग्रमनां वचनो जे घोलयामां आवेछे ते चा-
 रित्र मोहनी आदिना उदयथी समजवु जरा सूक्ष्मदृष्टिथी विचारो के

उग्रमयी कयु कार्य सिद्ध थतु नथी ? अलवत उग्रमयी सर्व कार्य सिद्ध थाय ते. हवे ते कर्म सबधी विशेष विवेचन करीए छीए.

- १ कर्मराजा -
- २ कर्मराजानो प्रधान मोह
- ३ ससारनगर
- ४ कर्मराजानो पुत्र अज्ञान
- ५ कर्मराजानी पुत्री निंदा

कर्मराजाना सुभटो—मिथ्यात्व, अविरति, क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, अरति, कलह, भय, अभ्याख्यान, अशुभयोग, आर्तभ्यान, रौद्रभ्यान, इर्व्या विगेरे कर्मनु कार्य ए छे के दरेक ससारी जीवो उपर सत्ता चलाववी. हवे एरु दीवस कर्मराजा पोते ससारनगर तरफ यान आपी जुएछे के ससारी जीवो हाल केवी हालतमा ठे अने ते आपणी आज्ञामा ठे के नहीं ? जोतां जोतां कर्मराजाने मालुम पडयु के, अरे हाय वीतरागना भक्तो तथा तेमनी वाणीरूप आगमोधी घणा जीवोए मारु स्वरूप जाणी लीधु. अने ते जीवो मने ते शत्रु तरीके लेखवी मारी नगरीमाथी नीकलवानो उपाय श्रीवीतरागना भक्तोने पुठेठे अने मोक्ष नगरी के जे धर्मराजानी राजधानी त्या जवा इन्ठेछे वेटराके मोक्ष नगरी तरफ जवा सार प्रयाण शरु कर्युंछे. अरे मारा नगरमाथी जीवो वेटराक काले सर्वे जता रहेशे. केम करु, एम उदा विचारमा गुम थइ पेठो छे त्यारे तेनी पासे मोहप्रधान आवी पूठेठे के, हे कर्मराजा तमे केम उदास थइ पेठा त्रि ? मारा जेवो प्रधान छतां तमने शी मोटी चिंता आवी पडीछे ते कृपा करीने रहो.

कर्मनृपतिभाषण

कर्मराजा मोहप्रधानने कहेछे के, अरे हवे मारा राज्यमाथी

क्त मोहनीय अने ज्ञानावरणीय कर्मनु स्वरूप तथा तेना नाशयी
 आत्मगुणोनो लाभ देखाडी हवे मस्तुत कर्मविषयनुज वर्णन कर-
 वामां आवेछे. कर्म सत्रयी सामान्य वर्णन कर्युं कर्म जडछे अने
 ते आत्माना गुणोनो घातकर्त्ता छे सर्व जीव कर्मासक्त छे कर्मनो
 नाश करवो एज कर्तव्य छे कर्मनु स्वरूप सामान्या विना कर्मनो
 नाश थतो नथी. श्रीवीरमभुए घोर परिसह सहन करी कर्मनो क्षय
 कर्यो. तो तेमनी वाणीना आधारे आपणे पण ज्ञान दर्शन चारि-
 त्रनु आराधन करतु, लक्ष्यमा राखतु मोक्ष मार्ग विकट छे प्रमाद
 घणो, उपयोग अल्प, आयुष्य अल्प, दु पमसमय, सत्समागम अ-
 ल्प, धर्म साधनो अल्प, कर्मसाधनो विशेष, अहो वेगी दुर्दशा, क-
 र्मनु जोर विशेष, धर्मभ्याननु जोर अल्प. आ शु थयु, शु करवु हे
 वीरमभु तारी वाणीनु शरण, जगत्मां तमारो वेटलो उपकार ! ता-
 रो आधार, तारो विश्वास कर्मनी दु खप्रदविचित्रमकृतियोनो
 नाश करवा वेवा प्रकारनु लक्ष्य जोइए ? अधमता अने प्रमादयी
 जीवो क्याथी स्वस्वरूप पामे ? धर्म उग्रम अल्प छे कर्मोपार्जन
 उग्रम अहर्निश चाल्या करेछे तपासोतो खरा ! रागनु जोर तमा-
 रामां विशेष छे वा वैराग्यनु, जोर विशेष छे, कर्मनी कठीनग्रथीनो
 भेद आत्मार्थी पुरुष पुरुषार्थयी करेछे, कर्मनु क्षेत्र चतुर्दश रज्वात्म-
 क प्रमाण छे, अर्थात् कर्मनी राजधानी चउद् राजलोकमां छे ता
 पण कर्मथी डरवानु नथी कर्म नाश थवानु नथी एम स्वप्नमां पण
 विचारवु नहि, कारणके तम मानी पसवाथी उलटु कर्मनीज वृद्धि
 थायछे माराथी राग छुटवानो नथी वा मारा कर्ममां लख्यु दशे ते
 प्रमाणे थशे. एम प्रमादनी वृद्धि अर्थे वा सरागदशानी वृद्धि अर्थे
 वचन बदशो नहि अनुग्रमनां वचनो जे बोलयामां आवेछे ते चा-
 रित्र मोहनी आदिना उदयथी समजवु जरा मूत्सदृष्टिथी विचारो के

उग्रमयी क्यु कार्य सिद्ध थतु नथी ? अलवत उग्रमयी सर्व कार्य सिद्ध थाय ते. हवे ते कर्म सवधी विशेष विवेचन करीए छीए.

- १ कर्मराजा
- २ कर्मराजानो प्रधान मोह
- ३ ससारनगर
- ४ कर्मराजानो पुत्र अज्ञान
- ५ कर्मराजानी पुत्री निंदा

कर्मराजाना सुभटो—मिथ्यात्व, अतिरति, क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, अरति, कलह, भय, अभ्यारयान, अशुभयोग, आर्तभयान, रौद्रभयान, इर्ष्या विगेरे कर्मनु कार्य ए छे के दरेक ससारी जीवो उपर सत्ता चलाववी. हवे एक दीवस कर्मराजा पोते ससारनगर तरफ यान आपी जुएछे के ससारी जीवो हाल केवी हालतमा छे अने ते आपणी आज्ञामां छे के नहीं ? जोतां जोतां कर्मराजाने मालुम पड्यु के, अरे हाय वीतरागना भक्तो तथा तेमनी वाणीरूप आगमोथी घणा जीवोए मारु स्वरूप जाणी लीधु. अने ते जीवो मने ते शत्रु तरीकं लेखवी मारी नगरीमांथी नीकळवानो उपाय श्रीवीतरागना भक्तोने पुच्छेछे अने मोक्ष नगरी के जे कर्मराजानी राजधानी त्या जवा इच्छेछे वेटलाके मोक्ष नगरी तरफ जवा सारु प्रयाण शरु कर्युछे अरे मारा नगरमाथी जीवो वेटलाक काले सर्वे जता रहेशे केम करु, एम उडा विचारमा गुम थइ पेठो छे. त्यारे तेनी पासे मोहप्रधान आगी पूछेछे के, हे कर्मराजा तमे केम उदास थइ पेठा छो ? मारा जेवो प्रधान छता तमने शी मोटी चिंता आवी पडीछे ते कृपा करीने रुहो.

कर्मनृपतिभाषण

कर्मराजा मोहप्रधानने कहेछे के, अरे हवे मारा राज्यमांथी

દિનપ્રતિદિન જીવો મોક્ષ નગરીમા ચાલ્યા જાયઁ.

ધર્મ રાજાના સુભટો આપણી નગરીના જીવોને સમજાવી પોતાની નગરીમા રેંચી જાયઁ મુરુચતાએ તેમા મોટો ભાગ જીવોને મોક્ષ નગરીમા લડ જનાર તીર્થકરોનોઁ અને તેમના કાયદા પ્રમાણે વર્તનાર સાધુઓ એવા તો કાંઈલઁ કે-તે સાધુઓની આગલ આપણા ક્રોધાદિક શત્રુઓનુ રૂઢ ચાલતુ નથી આપણા સુભટોને પણ હરાવી જીવોને પોતે મોક્ષ નગરીનો માર્ગ જણાવી આપણી નગરી ખાલી કરેઁ. હાય, હવે શુ કર અરે ઓ મોહ પ્રધાન તુ જલદી આપણા સુભટોને તથા મારા પુત્રને પોલાવ, અને અત્રિવેક સભામાં કચેરી ભર, મોહપ્રધાન કર્મરાજાનુ વચન અગીકાર કરી સર્વ સુભટોને ઘોલાવી સભાની વેઠકુ કરી કર્મરાજા સભામા આવી મમતા સિંહાસન ઉપર વિરાજમાન થયા હવે કર્મરાજા પોતાના સર્વ સુભટોને તથા પુત્રપુત્રીઓને નીચે મુજબ વચનો રહેઁ કે-

અરે મારા મોહ પ્રધાન તુ મારો પ્રિય પ્રધાનઁ હિંસાતો મારી વેનઁ નિંદ્રા મારી પુત્રીઁ, અજ્ઞાન મારો પુત્રઁ, ચંડરાજ લોકનુ રાજ્ય આપણા તાત્રામાંઁ આપણુ રાજ્ય અનાત્રિકાઁથી સસાર નગરમા ચાલેઁ સર્વ જીવોને આપણે પોતાના વશમા રાહી ધર્મ રાજાની મોક્ષ નગરીમા લેડ જવા દેવા નહિ તે તમારી મુન્ય ફરજઁ આપણુ રાજ્ય ઘટે નહિ તે તમારુ ધ્યાનમા લેતુ જોડાએ

મારા સુભટો સામલો ! આપણો મોટો શત્રુ ધર્મ રાજાઁ જ્ઞાન દર્શન ચારિત્ર એ ત્રણ એના પુત્રઁ ધર્મ રાજાનો ઉપયોગ રૂપ પ્રધાન ઁ, ક્ષાંતિ, આર્જવ, માર્જવ, મુક્તિ, સયમ, સત્ય, શોચ, આર્કિંચન, એ દશ ધર્મ રાજાના અત્યંત વઢવાન સુભટોઁ, સમક્રિત રૂપ ધર્મ રાજાનો પુત્ર એવો તો વઢવાનઁ કે જેનાથી આપણો મિથ્યાત્વ સુભટ રણ સપ્તામમાં ભાગી જાયઁ, પંચ મહાદુત રૂપ જોડાઓ એવાતો વઢવા-

नछे के अविरति नामना आपणा योद्धाने थरथरावेछे. आपणा नगरनो भग करनार श्री चोवीस तीर्थकरो तथा तेमनाथी उत्पन्न थयेला १साधु २सा'वी ३श्रावक ४श्रावीका रूप चतुर्विध सघ आपणाथी छुट्टी पडी धर्म राजाना नगरमा जवा उपडयोडे तीर्थकरना भक्तो, साधु महाराजाओ, आपणा ससार नगरमा रहेनार ससारी जीवोने एवातो उपदेश आपेछे के-ते उपदेश साभज्या पडी आपणा नगरमा ते जीवो रहेता नथी, अने ससारने ते स्मशान सरखो गणेडे, आपणी मायाना अने कुटुंब परिवारने बंधन समान गणेछे, मायाना पास त्रोडी वैराग्य रूप बस्तर धारण करी ससारनो त्याग करेछे, अनादिकाळथी आ प्रमाणे आपणा नगरमाथी जीवो मोक्ष नगरमा चाल्या जायछे. ते जोड मने अत्यत चिंता थायछे. धर्म राजानु मोक्ष नगर आपणा ससार नगर करवा नानुछे ते चौट राज लोरुने अते ओखेछे ते नगरमा रहेनारा जीवो अत्यत सुखी होयछे मोक्ष नगरीमा गयेला जीवोना आपणाथी कशो भय रहेतो नथी.

मोक्ष नगरमा गया जीवो पाडा आपणा नगरमा आवी शरता नथी आपणु तेमना उपर क्रुध जोर चालतु नथी अरे मारी नगरीनी खराव अवस्था थइ गट' तमो आटला बधा सुभटो छता मारी आवी दशा थई, हवे मारे थु करबु, कोनी आगळ जइ पोकार करवो

आ प्रमाणे कर्म राजाना वचनो साभळी मोह प्रधान आस्वासना आपेछे

हे कर्म राजा तमो केम चिंता करोडो, कर्म राजाजी तमारु नगर कटी ग्वाली थट गरुवानु नथी अनादिकाळथी तमारी एवी सत्ता नेठेलीछे के प्राय. कोदरु जीव मोक्ष नगरीमा जइ शके, आपनो हु प्रधान तथा अज्ञान नामनो पुत्र, पदली तो ससारी जीवो

उपर सत्ता चलावेछे के, विचारा जीवने ससार एज सार मान्या विना छुट्ने थतो नथी. कर्म राजाजी अमारां दरेकनां पराक्रम नीचे हुजवडे ते सामळो.

हु मोह प्रधान अनादि कालधी आपनी कृपाद्रष्टि तळे हाजरछु. परभावरूपी ब्राह्मण दरेक ससारी जीवने मे फसावी दीधाडे. एकेंद्रिय जीवो उपर पण मारी सत्ता व्यापेली छे, द्वीन्द्रिय जीवो उपर पण मारी सत्ता व्यापेलीछे, त्रीन्द्रिय जीवो उपर पण हु सत्ता चलावुछु चतुरिन्द्रि जीवोपर पण मारा वशमाडे, पंचेद्री जीवो चार प्रकारनाडे ? देवता मनुष्य शरीर्येच धनारकी ए चार प्रकारना जीवो पण मारा आधीनछे, देवताओ पण देवीओ उपर मोहना पासथी आशकरहेछे. आ मारी देवी, आ प्रीजानी देवी, एवी मोह धशा करावतारछु मारी उत्कृष्टि स्थीति मोहनीय, कर्मनी सिचेर मोडामोडी सागरोपमनीछे, नानु बाळक तेनामा पण हु व्यापिलु युवावस्थावाळा जुवान पुरुपोमा तो हु निर्भय पणे व्याप्त छु जो मोहना होय तो दरेक मनुष्यो ससारमा सार मानेनई, रात्री अने दीवस हु दरेक जीवोनी साये व्याप्तछु, मोह मथी घेला थयेला जीवो जाणी शकता नथी के अमो मोहना पा समा उपढायाठीए-एवी मारी सत्ताछे जोगी जती, सयासी, गोसाड, अतीत, फकीर विगेरे कहेछेके मोह खरायछे, मोह करना नहि एम प्रीजाने उपदेश आपेछे तेवा पुरुपोने पण हु मारी मोह ब्राह्मण फसावी उछु

फकीर फकीराइ लेइ नेडा होयछे तोपण धन मीनामा हु प्रवेश करी तेने उठवावी ससारमा पावु राजाओ के जे शूरवीरो कहेवायछे तेने पण स्त्री, धन, पुत्र, राज्य, विगेरेना मोहमां फसावी देउछु जे राजाओ सिंह समान शूरा होयछे, अने जे रणसंग्राममा हजारो मनुष्योने कापी नाखेछे तेवाने पण हु पुत्र मोहमां फसावी

रोवर, बुधु, सिंहसमानरूरा राजाओने पण मोहमा फसावी स्त्रीओना पगे लगाडुडु, हजारो सुभटोना वाण वागता पण जेनी चयुमाथी अथु आव्या नथी एरा राजाओनी चयुमाथी स्त्रीना मरणथी अथु कढाबुधु जो हु राजाओमा व्यापी नहि रहु तो तेओ आ ससार माजीवनी हिंसा विगेरे नेम कुकर्म करे? पृथ्वीना लोभथी परस्पर राजाओने हु लडाउडु, स्त्रीना मोहथी परस्पर राजाओने लडावनार अने दुनीआमा जीवोनो नाश करनार हु मोह प्रधान छु. ज्या मारो सचार होयछे त्या क्रोधादिक सुभटो पण वास करेछे. मोक्ष नगरीमा जता अगीयारमा गुणठाणा सुधी मारु प्रयल जोरछे. कोइ विरलो जीव माराथी वची जायछे. अरे तपो तीर्थकरना भक्तो साधुओने पूत्रोके तपो कोनाथी विशेष डरोछे प्रत्युत्तर मळशे के- मोहथी अमो डरीए छीए जुओ चक्रो, चरुली, मोर, पोपट, कनु-तर, सिंह, शृगाल, विगेरे विर्यच जीवो पण मोहावेशथी केवी स्थिति प्राप्त करेछे.

चकलो, चरुली, पोताना इडापर केवो मोहधारण करेछे. मयूर मयुरीनो विरह थता केतु आक्रड करेछे. गौमाहिपी पोताना उच्चाने जुओ मोहना आवेशथी केवा चाटेछे. कृती कुरकुरीयाने पोताना मानी केतु हेतवारण करेछे बळी धनना मोहथी प्राणीओ मरी परभवमा मूपरु सर्प विगेरेना अवतार धारण करेछे. पुत्रना मरणथी मातपिताने अत्यत रुदन करावनार हु छु स्त्रीना मरणथी तेना पतिने शोक करावनार हु छु सत्यनेपण असत्य तरीके दे-खाडनार हु छु. मारा वशमा आवेला जीवोने चोराशीलाख जी-वायोनिमा भटकावनार हु छु मारा वशमा पतित प्राणीओ हिंसा करेछे. असत्य वदेछे. चोरी करेछे. परस्त्री सेवन करेछे. इत्यादि सर्व मारी सत्ताथी थायछे.

पृथुगजे स्त्रीना मोहयी जयचंद्र साथे भारे लेश कर्षो पृथु-
राज उपर शाहचुद्दीन घोरी चढी आव्यो, तेमा अते मृत्यु पांम्यो
कर्णधेलाए स्त्रीना मोहयीराज्यखोयु, मनुप्यपरदेशभ्रमण करेछे. जळमां
प्रवेशेछे इत्यादि सर्व मार कार्यछ अत जीवने हु ससारमा
अनादिकाळ्यी भटकावु छु अने भटकारीश धर्मर. जानो विवेक
रूपी योद्धो पण मारयी वीवेछे कया जीवमा हु व्यापीरह्यो नथी.

वीतरागदेवना साधुओने लाग सार्थी मारा फदमा फसावी
दउछु जुओ मारी केवी शक्ति जीवने ससारमा सार देखाडी चा
रित्र लेवरावतो नथी सर्व जीवने ससारमा अनादिकाळ्यी फेरवु
छु अने वळी फेरवीश अर्थां वनावुछु अनेक मरारतो वेपो करी
जीवोनो हु माराफदमा फसाउ छु कोडनामा व्यक्तपणतो कोडनामा
अव्यक्तपणे हु वमुछु, सर्व ससारी जीवनेहु पतळानीमाफक नचावु
छु, मारी घेनमा सर्व जीवो मुझाणाछे ज्यां त्या हु मोह व्यापी रह्यो
छु मोह घाटीनु भेदन करवु महा दुष्करछे एम दरेक महात्माओ पु
स्तकमा लखेछे दरेक जीवनु भान भूलावनार अने परस्वभावमा
रमण करावनार हु मोह जीवोमा पेटो के ते वीचारा परवश थइ
जायछे मारा आगळ सर्व जीवो कांटरु समानछे, मार्ग शक्तिथी
ज्ञानीओ पण गभरायत्रे, हु सदाकाल चोराशी लाख जीवयोनिमां
रहेला जीवोनी पासे रहुछु महादेव सरखाने पण पार्वतीना मोहमा
फसावनार मारा विना जीजा कीणो देशाभिम नथी दुनीयानी म-
जाने परस्पर बैर करावनार मारा विना जीवो फोड नथी मोह
गर्भित बैराग्यमा पण मारु अस्तित्त्वछे, मतमतातर मिथ्यात्वादिनी
वृद्धि मारयी थायछे जुओ मारी शक्ति !!!

आवा मोह सचिबना वचन सभळी कर्मराजाए मोह प्रधानने
शाबाशी आपी कष्ट के धन्यछे मारा खरा मोह प्रधान मारे तारा

जेवो बीजो कोइ मिय नथी.

हवे कर्मनृपतिनो पुत्र अज्ञान स्वकीय स्वरूप सभा समक्ष कयेडे अरे हु मोहराजानो पुत्रहु. अज्ञान मारु नामछे, पडित लोक मारा बैरीछे. चउद राजलोक मारु स्थानछे. सर्व जीवोने में अध कर्याछे. ज्ञानावरणीय कर्म करी हु सर्व जीवोमा वसुछु, धर्मराजा तथा मोक्षनगरीनु भान हु थवा देतो नथी सत्यासत्यनु स्वरूप जीवोने जाणवा देतो नथी, सत्यदेव गुरुधर्मनु ज्ञान मारी सत्ताथी जीवो करी शकता नथी.

तीर्थररना मूत्रो तथा तेमनी आज्ञा प्रमाणे मोक्ष नगरी प्रति-गमन करनार मुनिवरो पण मारा वशमा रहेला जीवोने समजावी शकता नथी जे समजुछे तेने साधुओ समजावी शके, पण हु ज्या वसु हु त्या तेओ गमे तेदलो उपदेश आपे तोपण उखरभूमा वर्षा-नीपेठे निष्फळ जायछे. चारगतिना जीवो मारा वशमाछे. पशुपखी आदिजीवोनी में केवी अवस्था करीछे, माटे हे कर्मनृपति मारा जेवा पुत्रो छता आपने चिंता करवी योग्य नथी.

अज्ञान पुत्र आ प्रमाणे कहीने मौन रह्यो, त्यारे कर्मनृपतिनी निंदा नामनी पुत्री सभासमक्ष फहेवा लागी के—

निंदाभाषण

हे पिताजी ! हु आपनी निंदा नामनी पुत्री छता आप केम उदास थाओछो. सर्व जीवोने हु वश करुछु अदेखाइ नामनी मारी माताए जन्म आप्योछे सर्व जीवोना गुणोने हु तेमा पेसता भस्म करुछु, ज्यां माता अदेखाइनो प्रवेश थयो त्या हु त्वरित हाजरी आपी प्रवेश करुछु.

मुनियो पडिनो के जे अमृत सरखा वचन वदेछे तेना मुख-मांथी खराब वचनोरुषी निष्ठा कढाउछु. जे मनुष्यो परपुरुषना

गुणनी प्रशस्तरूप जळयी पोताना आत्माने पवित्र करेछे ते पुरुषो मारा वशमा थवाथी परनिंदारूप कर्मकादबधी तेओने मलीन करु छु निंदा चतुर्थ चडालछे एम सर्व लोको जाणेछे छता निंदा कर्या विना छूटको थतो नथी

सामासामी एक बीजानी निंदा करावी परस्पर वैर कगबुछु, लडाबुछु, अन नरक निगोदमा जीवोने घसडी लेड जाउछु लोको सर्वना करता मने विशेष वज्रान् गणेछे, कारण के परस्पर एक बीजानी निंदा करवाथी एक बीजानां मस्तकोने पण दडानी माफरू मनुष्यो उडावी टेछे, माटे हे कर्मराजाजी!!! तमारी पुत्री छता तमो केम चिंता करोछो

आधा निंदाना वचन साभळी अदेखाइ नामनी कर्मराजानी स्त्रीनो पुत्र कुसप नामनो हतो ते बोलवा लाग्यो के—हे पिताजी मारा जेरो आपणा सुभटो उता धर्मराजाना सुभटोनु कइ चालवानु नथी चार गतिना जीवोमा हु व्यापी रखाडु, मारा सरखु फोइनु वळ नथी, वकीळ वकीलने कुसप, राजाराजाने कुसप, मुनि मुनिने कुसप, बेश्या बेश्याने कुसप, भीखारी भीखारीने कुसप, वेपारी वेपारीने कुसप, कुरा कुरा नाने कुसप एम सर्व जीवोने माहोमाहे कुसप करानार हु छु, हे कर्मराजाजी हु कुसप नामनो महायोदो हिंदुस्तानना रहेवाशीओमा पेठो त्यारथी हिंदुस्तानना लोकनी दुर्दशा थइ गइछे

जयचंद्र अने पृथुराजने लडारी मारनार पण हुछु मुसल मानोए द्रिळीनी गादी लीधी ते पण मारा प्रतापथी कारण के ज्यारे हिंदुस्तानना राजाओने माहोमाहे कुसप थयो त्यारे मुसलमानोए हिंदुनु राज्य सर कर्षु मोक्षमार्गमा चालनार साधुओनो पण कुसप करावी कुमार्गे चलावनार हुछु ज्या पेठो कुसप त्यां

मारा नहि जप, ए वचन हु सत्य करुछु. कुसपयकी माहोमाहे मनु-
प्य लडेउे एरु बीजाना मस्तक उेदेउे, एक बीजानी निंदा करेछे,
क्रोध, मान, माया अने लोभ पण ज्या हु कुसपछु त्या वासो करे
छे, चौरासी लाख जीवयोनीना जीवोने हु अनादिकाळथी मारा
वशमा राखुठु. हाल हिंदुस्तान देशनी नवळी स्थािति करनार पण
हुठु. ज्या में प्रवेश कर्पो त्याथी सप नामनो योद्धो पण पोवारा
गणी जायउे, कोइ वखत कोइ देशमा वधारे रहुठु अने कोइ वखत
कोइ देशमा थोडो रहुठु, जीवो विचारा सप करवाने वणी महेनत
करे, कोन्करन्स भरेउे, सभाओ स्थापेउे अने प्रजाओने कहेछे, के
भाइओ सप करो पग मारु मूल काढवु पणु मुश्केलउे, ज्याथी कु-
सप काढवानी तैयारी सप योद्धाओनी होय त्या तो कुसप भय-
रहीत रहेउे मोटा मोटा मुनिराजो भापगो आपीने थाक्या पण
मारु मूल कोइ उखेढी शक्यु नहि. वखते मुनिओमा पण हु लाग
जोइने पेसी जाउठु अने मुनि मडळमा पग कुसपनी सत्ता चलावु
छु, जे जीवो मारा वशमाउे तेमने काणनी पृथळीनी पेठे चारगातिमा
नचावुछु, मारी अदेखाइ माता विना हु एकलो रही शकतो नथी.

अमेरिका इगलाड बगेरमा कुसप नथी तो ते लोको मुखीउे
पण ज्यारे हु त्या पगला भरिश त्यारे ते लोकाना वार वगाडीस,
सपीने जीवो वर्ते ते मने सारु लागतु नथी नव्य मनना माणस
उपर हु विशेष मत्ता चल वुछु विशेष थु. पर्वत उपर, रणमा, अग्नि
विगेरेमा हु जीवोने प्रवेश करावुछु हे कर्मराजाजी मारा जेवो पुत्र
छता आम क्रम चिंता करोओ.

आवु कुसपनु वचन साभळी अदेखाइ नामनी तेनी माता सभा स-
मक्ष भापग करवा लागी के, हे माग प्रागभिय तपो मारा छता
केम चिंता करोओ.

अदेखाइ परस्पर करावरी ए मारो धर्मते गुणीना गुण देखी
माणसो अदेखाइ करेछे चारगतिना जीवोमां हु आदिर्भावे वा
तिरोभावे वसुद्ध

बेपारी बेपारीने, राजा राजाने, वकील वकीलने, साधु सा-
धुने हु माहोमाहे अटेखाइयी कर्मरथ फळ प्राप्त करावुद्ध.

मारा वश थएला जीवो तरक निगोटमा जइ टारुण भोगयेछे
इत्याद अदेखाइना वचन माभळी कर्मराजा गुणी ययो तेरामां
सभामा पिराजमान मिः यात्व नामनो कर्मराजानो योद्धो बोली उठयो
के, हे कर्मराजाजी मारा छता आप केम चिंता करोछो हु मि-
ध्यात्व नामनो योद्धो ससारमा मग्यातहु, कर्मरथ जीवोने कराव-
नार मुख्यताए हु छु, मारी सत्ता ससारी जीवोपर सारी रीते
बेटेलीते मार मुख्य काम ए छे के, भव्य जीवोने शुद्ध देव शुद्ध
गुरु अने शुद्ध धर्मनी श्रद्धा धरा देयी नहीं, कोइ विरला माणी
तीर्थकरनो फहेलो सत्य मार्ग जाणी शक्तेरे, जुआं में फेटला जी
वोनी पवी ता युद्धि करी नाखी छे के ते विचारा पच महाभूत
स्वरूप जीवते ते थकी अन्य आत्मा नथी एतु विचारा मानी चार्वा
किमतरूप राक्षसना मुखमा प्रवेश करेछे

में फेटलाक जीवोने एवा तो फसाव्याछे के- ते पामर
जीवो जीव अजीव पुण्य पापने स्वीकारता नथी, मोक्ष मानता
नथी खातु पीवु, हरतु, फरतु इत्यादि कार्यमा धर्म मानेते-फेट-
लाक जीवोने एवा तो में फसाव्याछेके-अज्ञानपणामा मुख मानेते
अने तेभो अज्ञानवादी भ्रमायेतेरे-अज्ञानमा मुख्यते भ्रानथी राग
द्वेष उत्पन्न थायते एम मानी पामर चतुर्गति ससारमा अनतश
परिभ्रमण करेछे

बली में फेटलाक जीवोने एवातो फसाव्याछे के- बोध धर्म

स्त्रीकारी पोताने सुखी मानेछे अने ते पामर प्राणी मारा पासमा थी छूटी शकवाना नथी

वळी में केटलाक जीवने एरी रीते फसाव्याछे के ते इशुए चढावेला इशुएरीसन धर्मरूप अन्याय कूपमा गाडरीया मवाहनी पेटे टपोट्टप कृत्री पडेउ अने त्या अत्यंत दुःख भोगवता सदा काळ जीवन गुनारेछे. वळी में केटलाक जीवने एवा तो मुझाव्याछे के बीचारा धनना, स्त्रीना, पुत्रना लोभमा तत्त्व मानेछे अने ते पोताना आत्मानु हित साधी शकवा नथी वळी में केटलाक जीवने एवा तो फसाव्याछे के-सत्य जैनधर्म पाम्या उता पण तेमा शकादिक करी आपगी सत्तामा वर्तेछे. वळी हु तत्त्व समज्या जीवने पण मिथ्यात्वमा घेरुछु जेटला ससारमा मतमतातर उत्पन्न थायछे ते मारी सत्ताधीज थायछे ससारी सर्व जीवने हु मारा वशमा राखुछु माराथी उटकी कोइ गीरपुरुष मुक्तिमा जड शकेछे हु सर्व जीवोमा व्यापीने रखोछु. इत्यादि मिथ्यात्व योद्धाना वचन साभळी कर्मराजा हर्ष पाम्यो तेवामा अविरतिनामना मोहरानाना योद्धाए भापग कर्यु के अरे सभाजनो हु कोने ससारमा भटकावतो नथी चोथा गुणठागा सुधी तो मार स्वतंत्र राज्यछे देवताओ तथा नारकी जीवो तथा निर्यच जीवो मायः सर्व मारा वशमा वर्तेछे. मनुष्योमा पग आर्यजनो कोइ मारा अपाटामाथी बची गया हशे आयु अविरतिनु बोळु साभळी कपाय नामनो योद्धो छानी ठोकीने बोली उठयो के, अरे ज्या सुधी कपाय एतु मारु नाम दुनियामा विप्रमानछे तगा सुरी कोटनो भय राखवो नहीं, मारु रहेठाण चौद राजठोरुमाछे, हु कोइ जीवने मुक्तिनगरीमा जवा देतो नथी, सर्व जीवो कपायना जग थइ पोतानु आत्महित करवु शकेछे. सामासामी जीवने हु लडावी मारुट एरु गीजाना मस्तक

कपाबुद्धु सामासामी वेर कराबुद्धु, माता, पुत्र, स्त्री विगेरनो निकट सबध करावी आपनार हुद्धु ससारी जीवोने उपरना गुणठाणे च-
दवा देनो नथी. ससाररपी वृक्षनु धीज हुद्धु हु अनादिकाळथी
ससारमा वसुद्धु कोडपण काळेससारमांथी मारु रहेठाण दूर यवानु
नथी आ प्रमाणे कपाय सुभटना वचन साभळी कर्मराजा खुशी
बयो. त्यारे योग नामनो सुभट वोल्यो के मारु पराक्रम कोण नथी
माणतु हु सर्व जीवोने पाप वधावी चोराशी लाख जीवयोनिमां
भटकाबुद्धु हु सूक्ष्म रीते दरेक जीवोने व्यापीने रहुद्धु हु
आत्मानी परमात्मादशा यता विस्वूटो पडुद्धु, माटे हे कर्मराजाजी
तमो जरा मात्र पण भय पामशो नहि इत्यादि सुभटोनु बोलवु सां-
भळी कर्मराजाने जुस्सो चदयो हिंमत आरी

सर्व सुभटोने कर्म राजाण हुक्रम र्या के तमो हवे सर्व स-
सारी जीवोने वशमा राखो के जेथी धर्मराजाना सुभटोनु रुइ पण
चाली शके नहि अने सर्व जीवोमा व्यापी ससारी जीवोने धर्म
करतां अटकावो

आवा कर्मराजाना वचन साभळी सर्व सुभटो जुस्साभेर पोत
पोतानु कार्य वजाववु तत्पर थया

हवे आ वखते धर्म शु करेउे ते कीचे मुजब -

धर्मराजा

विवेकसभा, दयामाता, धैर्यपिता, शातिस्त्री, उपयोगमत्री, सम-
कितसेनापति, क्षमापुत्री, ब्रह्मचर्यपुत्र, क्षमादिधर्मनृपतिनासुभटो,
मुक्तिनगरी

एरुदीवस धर्मराजा विचार करेउे के-अहो हु सर्व जीवोने
मुक्तिनगरीमां वयारे लेड जइश अनादिकाळथी हु ससारी जीवोने
मुक्तिपुरीमां लेड जाउद्धु. तोपण अत्रापि पर्यंत पार आवतो नथी.

कर्मराजाना सुभटो जीवोने एवातो सपडावेछे के-भाग्ये जावो मारा नगरमा आवी शके-सर्व जीवोमा कर्मराजाना सुभटो व्यापी रखाछे. कर्म सुभटोए ससारी जीवोने एवी रीते अध कर्याछे के-ते जीवो मुक्तिनगरीमा आववा इच्छा पण करता नथी अरे हवे केम करवु. आम धर्मराजा उडो विचार करी चिंता करेछे.

त्यारे उपयोगमत्रीए इगिताकारथी जाणीने पूच्छयु के-हे प्रभो आज आप मोठी चिंतामा पड्या होय तेम देखाओओ. ते चिंता शीछे ते कृपा करीने कहो—

एम उपयोग मत्रीनी प्रार्थनाथी धर्म नृपतिण सर्व हकीकत कही समजावी—

त्यारे उपयोग मत्री गेल्यो के-हे प्रभो मारा छता आपने चिंता करवी घटे नहि. विवेकसभा भरावी धर्मराजा निस्पृह सिंहासन उपर विराजमान थया. सुर्य उदेशथी धर्म राजाए वातचर्ची अने कष्ट के-हे सुभटो तमो आळसु थइ केम वेशी रखाओ कर्म राजाना सुभटो सर्व जीवोने भमावीचारगतिमा परिभ्रमण करावेछे. सत्यमोक्षमार्गनी समजण पडवा देता नथी तमो मारा खरा सुभटो होय तो कर्मराजानो नाश करी भव्यजीवोने मुक्तिपुरीमा लेइ जाओ आ मारी सभा समक्ष हितशिक्षाछे आवा नीतियुक्त मिष्ट वचनामृतनु श्रवण करी धर्मराजानो अनादिकाळनो उपयोग मत्री गभीर वाणीथी सभा समक्ष कहेवा लाग्या के-

हे धर्मनृपति, हु निरंतर आपनी सेवामा हाजरछु. ज्या आप धर्मराजा त्या हु उपयोग अवश्य

आपनो सर्व कारभार हु करछु. माटे कहेवायछे के-उपयोगे धर्म-उपयोगिना आप धर्मनृपति नथी. एम अनुवाद प्रसिद्धछे. हु आविर्भावे तथा तिरोभावे आपनी साये सदाकाळ जीवोमा वसुछु

મારી શક્તિ પ્રગટ થતા મોહાન્તિ ગુરુઓ નાશ પામેટે જીવને ક્ષપક શ્રેણિ ઉપર હુ ચઢાવુદુ ક્ષપક શ્રેણિ ચઢતા કર્મશત્રુનો નાશ થાયટે મોક્ષપુરીમા પણ પ્રત્યેક આત્માની સાથે મિત્રામિત્ર સ્વરૂપે હુ વસુડ મારાથી દરેક આત્માઓ સ્વપરને જાણી શકને મારો નાશ કોઈથી થતો નથી. માટે હે ધર્મરાજાજી આપ જરામાત્ર ચિંતા કરવો નહિ આવાં ઉપયોગ મત્રીના વચનો સાંભળી ધર્મરાજા ગુસ્સી થયો, ત્યારે ધર્મરાજાનીમાતા દયા સભા સમક્ષ વોલ્યા ગામી કે-હુ જ્યાં સુધી વિગ્રમાનહુ ત્યાં સુધી મોહનુ રૂડ ચાલનાર નથી હુ સર્વ જીવોમા પ્રથમ વાસવરુદુ હુ જ્યાં હુ ત્યાં તારી દયાનીટે દ્રવ્ય અને ભાવથી મારુ વે પ્રસારે વસતુ થાયટે દયા, ધર્મની માતા જગન્મા કહેવાયછે તુ મારો પુત્રટે હુ જ્યાં હુ ત્યાં તારી દયાની રહેવાયને, મારાથી દિંસા વિગેરે કર્મ રાજાનો પરિવાર દૂર નાગેટે, સર્વ માણીયોમા ઘાડી ઘણી સ્થિતિ કરુહુ, અને મોક્ષપુરી જીવો ન પમાડુ, માટે હે પુત્ર સુલેખી રાજ્યધુરા ધારણકરો. ઇત્યાન્તિ દયાના વચનો શ્રવણ કરી ધર્મરાજાના મનમાં ધૈર્ય સ્ફુર્યુ તેવામા ધૈર્ય પિતા ધર્મપુત્ર ઉપર સ્નેહદષ્ટિ રૂપાવતા વચનામૃતનો પ્રસાદ વરસાવવા લાગ્યો હે ધર્મપુત્ર ધૈર્યથી તારી ઉત્પત્તિ ળતા તમે વેમ અધીરા પનોહો કર્મશત્રુઓ સાથે હુ હિંમતથી લડી જીવોને ક્ષપક શ્રેણિ પ્રાપ્ત કરાવી આપુટુ હે ધર્મ તારા મુખટોને ધૈર્ય આપુટુ અને રણસગ્રામમા કર્મનો પરાજય કરુટુ, કર્મરાજાની સાથે યુદ્ધ થાયછે, અને તેના નગરમાથી અનેક જીવોને શુક્તિનગરીમા લેઈ જઈ છીયે માટે ધૈર્ય ધારણ કરો ત્યારવાદ શાંતિ સ્ત્રી પોતાના સ્વામી ધર્મરાજાને નમ્રતાપૂર્વક વિનયથી કહેવા લાગી કે-હે મ્યામિનાથ આપ ચિંતા કેમ કરોહો, મારો હુ ધર્મ સદામાત્ર વજાવુટુ, હુ સર્વ જીવોને મોક્ષ નગરી તરફ લેવુટુ સર્વ જીવ કર્મના આધીન થયા છે તોપણ મારી સગત કરવા ઇચ્છે હુ તેમને શાંતિ મેલવવા લલ-

चावी कर्म प्रपचथी दूर रहेवा वारवार मनोद्वारा कहुतु जे जीवो
ससारनी हवाथी दूर रहेछे अने ससारने उल्ला अग्नि समान
गणेछे ते जीवोमां हु वास कहुतु अने ते जीवोने शाश्वतपद प्राप्त
करवामा स्थायी बनुतु. घणा जीवो मारी स्थायथी मुक्तिनगरीमा
गया जायछे अने जशे. माटे आप निश्चित रहो. त्पारवाद सकल
धर्म सेनानो उपरी “ सम्यक्त्व सेनापति ” धर्मराजाजीने नमन
करि मधुरवाणीथी समाजनने आश्चर्य पमाडतो कहेवा लाग्यो के
हे धर्मराजाजी आपनी सेनानो हु उपरीतु. मारो वास सकल भव्या-
त्माओपांछे. मारा विना कर्मना राजा योद्धाओ रणभूमिमाथी पाछा
हठता नथी, सकलकर्म सैन्यनोहु नाश कहुतु. जे आत्मामा हु उत्पन्न
थाउछु त्याथी मिथ्यात्व योद्धो नाशी जायछे पछी भव्यात्मा सरल-
ताए गमन करतो छतो मुक्ति नगरीमा पहुँचेछे मिथ्यात्वनो नाश
करवो एज मारु मुख्य कामछे जे जीवो मिथ्यात्वना जोरे दुनीया
परमेश्वरे बनावीछे, पाछो मलयकालमा दुनीयानो नाश थायछे पर-
मेश्वर जीवोने सुख दुःख आपेछे एम मानी चारगतिमा भटकरानारा
जीवोने सुखदुःख आपेछे ते जीवोनो हु उद्धार कहुतु हु ते जीवोमा
वास करी तेमनी सारी बुद्धि करुतु परमेश्वर जगत्नो बनावनार
नथी, जगत् अनादिकाळथीछे जीवो सर्व परमात्मा सदृशछे, कर्मना-
योगे जुदी जुदी गतिमा भमेछे जीवोने कर्म अनादिकाळथी लाग्युछे
जीवो अनतछे अनादिकाळथीछे कर्म नाश थता जीवनी मुक्ति थायछे
आ प्रमाणे जीवोनी सारी बुद्धि करी मिथ्यात्वनो सग दूर करावी
मोक्षनगरीतरफ गमन करावुतु. केटलाक जीवो मिथ्यात्व योद्धाना
ससर्गे ब्रह्म ब्रह्म स्वीकारी अन्यने माया तरीके कल्पी भवब्रह्माडमा
भटकेछे. तेमने हु शुद्धशुद्धा अपि आत्महितार्थे आत्मा अने तेने

મટકાવનાર કર્મછે એવી શ્રદ્ધા કરાવી કર્મ નાશ કરવા તરફ તે
 જીવોની વૃત્તિ લશુરુ વળી હુ ડગ્-પરમેશ્વરનો ડીકરોછે તેને સંવો
 તે તારજે ડ્યાદિ ધ્રમપાશમાં ફસાણા જીવોને ત્રિવેકચશુ આંપ
 સત્ય મોક્ષમાર્ગ દેલાડી આત્મતત્ત્વનુ ધાન કરાવી શુદ્ધ
 બુદ્ધિથી પરમાત્મપદ પ્રાપ્ત કરે તેમ યોજુરુ, વળી હુ વેટલાક જીવોને
 આત્મા ડણિકઠે. ડણમાં ડણમા જુગે જુગે આત્મા ઉત્પન, ધાયછે.
 એમ માનનારા જીવોનુ મિથ્યાત્વ સઢરી સત્યમતિ અર્પી આત્મા ડણિક
 નથી આત્મરૂપ ઢ્યક્તિનો નાશ થતો નથી જ્ઞેયના પલટવે જ્ઞાનનુ
 પલટાવવુ ધાયછે તેથી આત્મામા ધતો ઉત્પાદ વ્યય તેની અપેક્ષાએ પર્યા-
 યાર્થિક નયમતે આત્મા અનિત્યઠે એમ સમ્યક્ધોધ જીવને અર્પુરુ અને
 દ્રવ્યાર્થિક નયની અપેક્ષાએ આત્મા નિત્યછે એમ શુદ્ધવોધ સમર્પી ધવ્ય
 જીવોને મુક્તિ નગરી હુ માપ્યા પ્રાપ્ત કરાણુરુ વળી હુ વેટલાક જીવો
 મિથ્યાત્વ મુમટનો સગ પામી પચમૂત વિના વ્યતિરિક્ત આત્મા નથી
 એમ સ્વીકારીછે તેવા જનોને શુદ્ધ શ્રદ્ધા સદ્ગુરુ સગે કરાવી આ-
 ત્મા પચમૂત ધક્કી ન્યારોછે મુ વ દુ લ્લ મોક્તાઠે કર્મનો કર્તાઠે એમ
 સમ્યક્ત્વ રત્ન અર્પી મોક્ષ માર્ગ વાઢી કરુરુ વળી જે જીવો નિત્ય
 ણકાત આત્મતત્ત્વ માની આત્માને કર્મવ્ય સ્વીકારતા નથી આત્માકર્મનો
 કર્તા નથી અને મોક્તા નથી ડ્યાત્તિ વક્તાઓને ણ અપેક્ષાએ સત્ય
 સમજાણુરુ કર્મનો કર્તા અને મોક્તા આત્માછે, આત્મા ણકાત
 નિત્ય નથી ણકાત નિત્ય વમ્તુ આત્મા જો હોય તો પડી નાના વિધ
 શરીરમાં વશનારા જીવો મુલ્કી હુ સ્ત્રી અવસ્થાવાલા દેલાયછે તે વેમ
 વની શકે, માટે આત્મા ણકાત નિત્ય નથી, જો ણકાત નિત્ય આત્મા
 માનીએ તો પડી શિર્વમુઢન ઢ્રતારોપ વિગેરે ણ જ્ઞા કારણથી
 કરુરુ જોડએ માટે આમા સ્વવ્યમિત્રી નિત્યછે અને

पर्यायना पलटवे करी अनित्यछे नित्य अने अनित्य एवे धर्मवाळो आत्माछे तेने कर्म लागेछे कर्मपण मिथ्यात्व अत्रिरति कयाययांगे करी लागेछे ए कर्मनो नाश यता आत्मा परमात्मपद प्राप्त करेछे ए आदि शुद्धज्ञान अर्पी सा य मुक्तिपदार्थे जीवोनेमेरुहु अने स्वस्वरूपने प्राप्त करावुनु केटकाऊ जीवो स्त्री पुत्र धन आदियी पोताने मुखी मानेते ते जीवोनी दृश्य क्षणिक पदार्थोपायी सुखनी बुद्धि दूर करी अदृश्य आत्मस्वभाव सुखछे एम शुद्धबोध देइ आ क्षणिक पदार्थोमा मिथ्या भ्रम यतो दूर करावुनु अने काम क्रोध लोभ भय हास्य शोक विगेरेथी जीवोने पृथक् करी स्वस्वरूपे निष्ठा करावुनु

अहिनमा हितबुद्धि अने हितमां अहित बुद्धिरूप जेमिथ्याज्ञान तेनो हु नाश करुनु दरेक जीवोने हु सम्यग्ज्ञान अर्पुनु एम अनता जीवोनु भूतकाले मुक्ति प्रति लक्ष दोषु अने वर्तमानकाले लक्ष दोरुनु अने भविष्यकाले दोरीश हु दरेक जीवव्यक्तिमा वसुनु मिथ्यात्व सैन्य मारथी ना भाग करेउ जेम मर्यनो उदय यतां अधकारनो नाश थाउछे अने ते अन्तार क्या गयो ! तेनी जेम मालूम पडती नथी तेम मर्यसम मारा मकाशथी मिथ्यात्व भागी जायछे हु भव्य जीवोमा सग वसुनु सम्पत्त्व विना कोई माणस मुक्ति पामी शकतो नरी कर्मराजानु सैन्य मारथी दूर नासेछे माटे हे धर्मराजाजी ! तमो मुखेथी निश्चित रहो आ प्रमाणे सम्यग्त्व सेनापति वया बाद धर्मराजानी क्षमा नामनी पुत्री सविनय पिताजीने नमन करी मधुर भाषाए कहेवा लागी के-हे धर्मपिताजी हु एक आपनी नानी पुत्रीनु आपनी पवित्र सेवा हु दरेक आत्माओमां स्थिति करती वजावुनु हु अनादिकाळथी भव्य जीवोमा वसुनु ॥

વ્યવહારે કરી દ્રવ્યક્ષમા ભાવક્ષમા ઉપકારક્ષમા અપકારક્ષમા इत्यादि
 રૂપાંતરે કરી ઓઠરાણુ તીર્થરુર મહારાજાણુ મુક્તિમાર્ગ પ્રરૂપ્યો
 તેમાં મને યતિના ગુણોમાં મુગ્ય કરી સ્થાપીઝે પુલ્લિંગતાથી ઓઠ-
 સ્વાતો ક્રોધ નામનો સુખટ મારાથી નાશ પામેઝે. અનેક કર્મના યો-
 દ્ધાઓ મારાથી સમૂલા નાશ પામેઝે જે જીવોમા મારો વાસઝે, ત્યાં
 ક્રોધ અહકાર અદેસ્વાઈ દિંસા વિગેરેનુ જોર ચાલતુ નથી દુનીયા-
 મા હુ સત્પુરુષોમા વાસ કરુઠુ અને માગથી દરેક જીવો પ્રતિષ્ઠા
 પામી કર્મદલ હળી ક્ષપરુથ્રેણિ માસુ કરી સમ્યક્ત્વ સેનાપતિદ્વારા
 મુક્તિપુરીમાં સુવે પહોચેઝે મુક્તિનગરીમા જવાની ઇચ્છાવાઝા પહેલાં
 મારુ સેવન કરેઝે અપરાધી જીવોપર ગુસ્તે યતા નથી અને તેમના
 અપરાધો માફ જીવો કરેઝે તે પળ મારા પ્રસાદથીજ સમજવુ ક્ષમા
 થકી જીવો શાન્તિને પામેઝે ક્રોધનો નાશ થાયઝે દરેક જીવો
 ઉપર દયાના આર્દ્રભાવ થાયઝે પરસ્પર જીવોના વૈર વિરોધને હુ
 ટાલુઠુ ટરેક મનુષ્યનુ પ્રમનમુલ્ક રાત્વુઠુ, અને મુક્તિનગરીમાં જવા
 માટે મારાથી ઘને તેટલુ અવશ્ય કરુઠુ મારી સ્હાયથી અનતા જીવો
 મુક્તિ ગયા, જાયઝે અને જશે માટે હે પિતાજી ! તમો હર્ષાઓ
 અને શોક ત્યાગો આ પ્રમાણે ક્ષમા પુત્રી ચોલીને તુળ્ણીમાત્રને પામી
 ઘાદ જ્ઞાન નામનો મહાવલવાન રાજ્યધુરાધાહી યથાયોગ્ય વિનયપૂ-
 વેક પિતાત્રીને નમન કરી હર્ષચિત્તે મસાવદને ગમીર વાળીથી
 સમાને ચમત્કૃતિ પમાડતો ચોલવા લાગ્યો કે-હે પિતાજી ! અને હે
 સમાજનો ! હુ ધર્મરાજાનો પુત્રતુ એમ આ રાઝગોવાઝ સર્વ જગત્ત્રિ-
 વાસીઓ જાણેઝે. માર વઝ કેટલુઝે તે રૂઝ વિશેષ સ્વમુલ્કે કહેવાથી
 શુ ? તોપણ હુ સ્વફરજો કેરી રીતે અદા કરુઠુ તે સમા સમક્ષ
 નિવેદન કરુઠુ, હુ દરેક જીવોમાં આરિર્ભાવે કરી વા તિરોમાવે

करी स्थिति करुतु हु अनादिकाळधी आत्मव्यक्तिओमां वसुतु, ज्ञानावरणीय कर्मना घणा जोरयी पण नरकानगोद तिर्यचादि भवोमां हु समूळ नाश पामी शकतो नयी. तेम हु पण जेमा सदाकाळ रहुदु. एवु आत्म व्यक्तिरूपस्थान असग्य प्रदेशी कदापि नाश पामी शकतु नयी. तेम आप पण आत्मस्थानमांथी नाश पामना नयी. काळ लब्धियोगे हु ज्ञानावरणीयादि कर्मने हठावतो मारु शुद्ध स्वरूप तथा आत्मानु शुद्ध स्वरूप समजी कर्मनो नाश करुतु आकाशस्थित मूर्धमकाशधी प्रत्येक वस्तुओ स्पष्टपणे भासे छे. तेम मारी शक्तिी लोकालोक स्पष्टपणे भासेछे हु प्रत्येक वस्तुओनु यथातथा स्वरूप जाणुदु अने मारी सत्ता यथा वाद कर्मना सुमटोनो समूळधी नाश करुदु कर्म आठ प्रकारनाछे. १ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय, ३ वेदनीय, ४ मोहनीय, ५ आयुष्य, ६ नामकर्म, ७ गोत्रकर्म, ८ अत्रायकर्म ए प्रोक्त कर्म रागादिक योगे आत्मा आकर्षेछे कर्म जडछे, चतुर्गति भ्रामककर्म छे जगत्मा आत्माओ अनताछे प्रत्येक आत्मांमां अनति शक्ति रहीछे, शाश्वत, अज, अमर, निर्लेप, निस्सग आत्मस्वरूपछे.

जीव तथा अजीव तत्त्वने हु जाणी शकु छु हु व्यवहारे करी मतिज्ञान २ श्रुतज्ञान ३ अवधिज्ञान ४ मन.पर्यवज्ञान ५ केवलज्ञान आदि रूपांतरो पासु छु मारु शुद्ध स्वरूपतो केवलज्ञान रूपछे. लोकालोकनु स्वरूप पण हु जाणुदु कर्मनो नाश पण हु करु छु स्याद्वाद धर्म आत्मांमां रहेलोछे तेपण माराधी जगाय छे. मिथ्यात्व ते पण हु जाणी तेनो त्याग करी आत्माने कर्म धकी जोडावु छु मिथ्यात्व, अविरति, राग, अने योग पण मारी प्रवळ सत्ताधी नासेछे इच्छा, मोह, माया, क्राम, क्रोध, लोभ, पण मारा ती नाश

पामेछे हू पोतानो पण पोतानी मेळे प्रकाश केल्लु माटे लोको सूर्यनी उपमा मने आपेछे, कर्म रिपु सकळ सैन्यनो हू रुन्यांत फाल वायुनी पेठे क्षणमां नाश करुट्ट. में अनता जीवोने मुक्ति नगरी प्राप्त करावी, करावुट्ट, ने करानीश, माटे हे पिताजी ! मारा येठो आप चिंता करो ते अनुचितछे, आ प्रमाणे ज्ञानपुत्रे भापण कर्युं. त्पारवाद ब्रह्मचर्यनामतो धर्मराजानो पुत्र मश पराकमी मख्याति पामेल सविनय पिताजीने नमन करी गभीर वाणीधी वो यो के आ दुनियामां-ब्रह्मचर्य नामे करी हू प्रसिद्धताने पाग्यो छु

परस्पर मैयुन सवरनो हू त्याग करावुट्ट हू अनाद्रिकाळी जीवोमां पास करुट्ट ज्या मारो विरति नामतो नेता वसेछे तेनी साये हू पण वसुट्ट नान तथा वैराग्य मित्र मने साहाय्य आपेछे नवविध ब्रह्मचर्य गुप्ति धारक जीवो कामतो पठकमा पराजय करे छे मारा वासथी प्रत्येक मनुष्योना शरीरनी आरोग्यता वृद्धि पामेछे, धर्म कृत्यमां धैर्यता मेरक हुट्ट सर्व व्रतोमां समुद्रनी उपमाने हू धारण करुट्ट मारा वासथी मनुष्यो वचन सिद्धि कीर्तिपान् अष्ट सिद्धि आदि प्राप्त करेछे मोटादि शत्रुभो पराङ्मुख थायछे आसन्न भव्य जीवोमां ह विशेषत वास करुट्ट, मारु अवलंबन करी अनत जीवो मुक्ति गया जायछे अने जशे, माटे हे पिताजी ! आप चिंतात्यागी धैर्य धारण करो अने सर्व सुभटोने धैर्य आपो

आम ब्रह्मचर्यना कथन पश्चात् सवरसहक महारथि योध शौर्य वाणीधी सभा समझ बोल्यो के-हे धर्म राजाजी ! हू सत्तावन रूप करी कर्मरिनो समूलत नाश करुट्ट जे उिद्र द्वारा कर्म सैन्य जीवोमां प्रवेशेछे ते उिद्रोनो हू रोध करुट्ट तेथी कर्म सैन्यनु कड

चालतु नथी, मन वचन अने कायाना व्यापारो जे अशुद्ध परिण-
तिमां परिणम्याछे तेनो हु नाश करुटु

मारी ह्यातीमा पाप अने पुण्य आत्माने लागी शकता नथी.
कर्मनो पराजय करी क्षयरु श्रेणि उपर चढावी त्रयोदशम गुणस्था
नक प्राप्त करावी मुक्ति नगरमा प्रवेश करावुछु मारो वास पंचेन्द्रिय
गर्भज मनुष्योमां विशेषतः आविर्भावेछे. क्रोध, मान, माया, लोभ,
अने हास्यपटूकनो त्वरित नाश करुटु आर्तयान अने रौद्रध्यान
रूप योद्धाओनो हु क्षणमा नाश करुटु कृष्ण लेश्या, कापोत लेश्या,
नीळ लेश्या, विगेरेनो समूलतः नाश करुछु, आत्मानो हु शुद्ध स्व-
भाव अर्पुटु, कर्म रहीत करी जीवोने शिवस्थान प्रति मोहलवानु
हु कार्य वजावुटु, मारा अवलवनथी अनतजीवोमुक्तिपद पाम्या अने
पामरो, पण अभय जीवोने हु मुक्तिपद पमाडी शकतो नथी निरु-
पाधिमय मारो स्वभावछे, माराथी कर्मशत्रु थरथर धुजेछे ज्या मारो
प्रवेश त्या उपशम विवेक विनय शांति विगेरेनो प्रचार थायछे, इ-
त्यादि वाणी वदी सवरयोद्धो तुष्णीभाव पाम्यो त्यारे निर्जरानामनो,
महायोद्धो विनयपूर्वक धर्मराजाने नमन करी बोस्या के-हे धर्मरा-
जाजी ! आप सेवरुनी वाणी प्रसन्नचित्तथी साभळो हु आपनो योद्धोछु

हु आपनु कार्य सदाकाल वजावुछु, बाह्य अने आभ्यन्तर एवै रूपा-
तरने हु पामुटु अनतकर्मनो नाश हु क्षणमा करुटु. निकाचित कर्म
पण माराथी क्षय पामेछे आत्माओमां मारु रहेवानु स्थानछे. काष्ठस-
मूहने जेम अग्नि शळी भस्म करेछे तेम कर्मरूप काष्ठसमूहने पण
हु शळी भस्म करुछु. तदुभव मुक्ति पामनार तीर्थकरो पण मारो-
आश्रय करी कर्म नाश करे छे. नरसुरपट्टीओनां मुख पण मारा आल-
वनथी पमायछे, माराथी मनुष्यो अष्टमिद्धि अने नवनिधि प्राप्त करेछे.

पण याद राखतु के जे जीवो मने सेवेछे तेभोनां क्रोध, छिद्र, देख्या करेछे, अकाम अने सकाम ए ये भेदे मारु प्रवर्तनछे. चार इत्याकारक जीवोनो पण माराथी उद्धार धायछे, अनताजीवो कर्म क्षपात्री मुक्तिपद पाख्या अने पामशे तेमां मारो प्रभाव जाणवो माटे हे धर्मराजाजी ! आप स्वस्थ थाओ, आपणु सैन्य एवुतो बलवान् छे के त्यां कर्मराजानु याइ चालवानु नथी

आ प्रमाणे धर्मराजाना सुभटोए पोतपोतानु पराक्रम वर्णव्युत्यारे धर्मराजा अत्यंत हर्षायमान थयो अने मनमा समज्यो के मारु सैन्य प्रलछे

आ प्रमाणे अत्र धर्मनृपनी सभामा वृत्तात चालेछे त्यारे कर्मराजानी सभामां ते प्रमाणे धामधूम चाली रहीछे मिथ्या चेतना नामनी कर्म राजानी दासीए कर्मने धर्मनी सभामां बनेली सर्व हकीकत कही त्यारे सम्पक् चेतना दासी धर्मनी अग्रे कर्म नृप सभामां बनेली सर्व हकीकत कही परस्पर युद्ध कार्यनी सर्व सामग्रीओ तैयार थवा लागी धर्मनृपे पोताना सुभटोने बहुके-मारापिय सुभटो ! तमो शत्रु सैन्यनो पराजय करो, मारनाम अपर राखशो, बन्नीत-मारा जेवा शूरा सुभटोनु पराक्रम रण सग्राममा मालुम पडशे माटे चतुराईथी युद्ध करतु

ते प्रमाणे कर्म राजाए पण सर्व सुभटोने वीर रसनां वाक्यो कही शूर चढाव्यु सुभटो पण परस्पर पराक्रम बताववा आतुर थइ रखा-परस्पर युद्ध चाल्यु तमा थ्रहा रूपी सुभटे मिथ्यात्व रूपी योद्धाने हराव्यो. समन्त सेनापतिए मोह प्रधाननी शक्तिनो नाश कर्यो, क्षमा पुत्रीए क्रोधनो नाश कर्यो, जीव चोथा गुणठाणा आदि गुणस्थानक चढवा लाग्यो विरतिए अविरतिनी शक्ति नाश करी

ज्ञाने अज्ञाननो नाश कर्षो. दयाए हिंसानो नाश कर्षो, क्षा-
तिथी तृष्णा नाश पामी कर्म राजानु सैन्य नाश पामतु पाळु हटवा
लाग्यु. ब्रह्मचर्य पुत्रे अत्रह्मचर्यनो सर्वथा नाश कर्षो—पगुण प्रशसाए
निद्रानो नाश कर्षो. ज्ञाने कषायनो पण स्थिर परिणामने साहाय्य
आपी नाश करारव्यो धर्म ध्यान रूप योद्धाए आर्तध्यान अने
रौद्र ध्याननो नाश कर्षो. सतोपे तृष्णानो नाश कर्षो, क्षायिक सम-
कृत पामी जीव स्वस्वभाव शक्ति पामी आत्म रूप प्रकाशवा लाग्यो.
हास्य, रति, अरति, भय, शोक, दुगळा, स्त्रीवेद, पुरपवेद, नपुसक, वेद
रूप कर्म सैन्यनो नाश अममाद तथा ध्यान योद्धाए कर्षो. पंच
प्रकारनी निद्रानो तथा चक्षु दर्शनावरणी आट्टिचारनो तथा ज्ञाना
वरणोय कर्मनो तथा अतरायनो नाश उपयोग मत्रीनी साहाय्यथी
शुक्रध्याने कर्षो. आत्मा तेरमे गुणठाणे जइ अनत चतुष्टयथी शो-
भवा लाग्यो. अते अघाती कर्मनी प्रकृतिनो पण नाश करी मुक्ति
पुरीमा गयो. एम धर्म राजानो जय जयकार थयो अने कर्म राजानु
सैन्य नाश पाम्यु आत्मा परमात्म दशा पामी निर्भय थयो अनत
जीवो एम कर्मनो नाश करी मुक्तिमा गया अने अनागत काले अ-
नत जीव मुक्तिमा जशे. कर्मनो नाश उपयोग दशाए अनता जीवो
करेछे अने करशे. जीव कर्मनो नाश करतो क्षायिक भावनी नव-
लब्धियो पामेछे.

क्षायिक भावनी नव लब्धियोना, नाम

१ क्षायिकसमकृत, २ क्षायिकचारित्र, ३ अनतज्ञान, ४ अनत
दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग अने वीर्य ए रीते नवल-
ब्धियोनी प्राप्ति गुणठाणानी हट प्रमाणेछे

हवे सबध दर्शावता कथायछे के—उग्रमथी कर्मनो क्षय थायछे,
उपशमभाव क्षायिकभावनी प्राप्ति पण उग्रमथी

થાયઠે શાસ્ત્રાભ્યાસનો ઉપયમ કરતાં પચમકારે સ્વાધ્યાય કરતાં જ્ઞાનાવરણીયકર્મનો ક્ષયોપશમ થાયછે, તેમ પ્રત્યેક ઘાતીકર્મનો નાશ ઉપશમથીઠે ધર્મધ્યાન અને શુદ્ધધ્યાનરૂપ ઉપશમથી જ્ઞાનીઓ કૃત્સ્ન કર્મનો ક્ષય કરેઠે ચારિત્રનો સ્વપ કરતાં ચારિત્ર મોહનીયનો પણ નાશ થાયઠે માટે પચમકાલમા પણ ભવ્યજીરોણ પુરુષાર્થ કરવો, પુરુષાર્થના પણ અનેક ભેદછે માટે સત્યપુરુષાર્થ ગ્રહવો જોઈએ. સમક્રિતની પ્રાપ્તિ વિના સગ્લી પરિણતિ થતી નથી અને સમક્રિત વિના પુરુષાર્થ નિષ્ફળ જાણવો સમક્રિત મોક્ષનગરનુ દ્વારછે સમક્રિતવિના કોઈ જીવ મોક્ષમા ગયો નથી અને જવાનો નથી સમક્રિત વિના જ્ઞાનાવરણીય કર્મનો ક્ષયોપશમ પણ અજ્ઞાન તરીકે લેવાયઠે ઇટલે મતિજ્ઞાનાવરણીય કર્મનો ક્ષયોપશમ મનિ અજ્ઞાન તરીકે ગણાયછે શ્રુતજ્ઞાનાવરણીય કર્મનો ક્ષયોપશમ શ્રુતઅજ્ઞાન તરીકે લેવાયછે અને અવિજ્ઞાનાવરણીય કર્મનો ક્ષયોપશમ વિભગ જ્ઞાન તરીકે ગણાયછે અને જ્યારે સમક્રિતની પ્રાપ્તિ થાયછે ત્યારે તેનો ક્ષયોપશમ સવલ્લો પરિણમેઠે અને તે મતિજ્ઞાન શ્રુતજ્ઞાન અવધિ જ્ઞાન તરીકે ગણાયછે સમક્રિત વિના અભવ્ય જીવ મુક્તિ પામનો નથી બાહ્ય ચારિત્ર પાલોને અભવ્ય જીવ નવગ્રૈયેયક પર્યંત જાયછે ક્રિતુ સમક્રિતવિના ભાવચારિત્ર પામી શકતો નથી અને તેથી તે ચતુર્ગતિમા પુન પુન પરિભ્રમગ કરેછે, સમક્રિતનો મહિમા અપૂર્વછે, પચ પ્રકારના મિથ્યાત્વનો નાશ થવાથી સમક્રિતનો ઉત્પત્તિ થાયઠે. પચ પ્રકારના મિથ્યાત્વનો નાશ જિનાગમ સામબલ્લાથી થાયછે, સદ્ગુરુની શ્રદ્ધા ભક્તિથી ઉપદેશ શ્રવણ કરતા મિથ્યાત્વ નાશ પામેછે, સમક્રિતની પ્રાપ્તિ માટે આગલ પદ્ધ્યાનક કહેવામાં આવશે સમક્રિતના પચમકારે

૧ ઉપશમ સમક્રિત, ૨ ક્ષયોપશમસમક્રિત, ૩ ક્ષાયિકસમક્રિત,

४ वेदसमकित, ५ सास्त्रादनसमकित, अनतानुवधी क्रोध, मान, माया अने लोभ तेमज समकित मोहनीय मिश्र मोहनीय, मिध्यात्व, मोहनीय ए सात प्रकृति सर्वथा क्षय थता क्षायिक समकितनी प्राप्ति थायछे

श्री जिन वचनज तत्त्वरूपछे बीतराग होवाथी एम सामान्य रुचिवाळा जीव ने द्रव्य सम्यक्त्व पणु स्फुट थायछे. अने नय निक्षेप प्रमाणना विचारथी तत्त्व श्रद्धावाळा जीवने भाव सम्यक्त्व पणु स्फुट थायछे आहें द्रव्य शब्दार्थ कारणता अने भाव शब्दार्थ कार्यता रूप जाणवो एम श्री हरिभद्रसूरि कहेछे

१. श्री उत्तराभ्ययन सूत्रानुसारे दशविध सम्यक्त्व कहेछे.
- १ सत्य अर्थनी साये समतिवडे जीवाजीवादि नव पदार्थ सबधी जे रुचि ते निसर्ग रुचि जाणवी.
- २ परोपदेशवडे प्रयुक्त जीवाजीवादि पदार्थ विषयनी जे श्रद्धा ते उपदेशरुचि कहेवायछे
- ३ रागद्वेष रहित एवा पुरूपने आज्ञा वडे धर्मानुष्ठानमा रुचि थाय तेने आज्ञारुचि समकित कहेवायछे.
- ४ सूत्रना अभ्ययन तथा अभ्यासथी उत्पन्न थएला विशेष ज्ञान वडे जीवाजीवादि पदार्थना विषयमा रुचि थाय तेने सूत्र रुचि समकित कहेछे.
- सूत्र रुचि उपर गोविंदाचार्यनु दृष्टत जाणवु.
- ५ एकपद वडे अनेरुपदतथा तेना अर्थना अनुसधान द्वारा जलमा तेलना विंदुनी जेम रुचि प्रसरि जाय तेनीरुचि सम्यक्त्व कहेवायछे.
- ६ जेने सर्व सूत्रना अर्थनु ज्ञान उत्पन्न थाय ते अभिगम रुचि सम्यक्त्व कहेवायछे, त्यारे अत्र शका थशे के अभिगम रुचि-

અને મૂત્રમા શોકેર-પ્રત્યુત્તરમા સમજવાનુ કે-આ અભિગમ રુચિ અર્થ સહિત મૂત્રના વિષયમા આવેછે અને તે મૂત્રરુચિ કેવલ મૂત્રના વિષયમાજ આવેછે ઇટલો તે વસ્ત્રેમાં મેદછે. કેવલ મૂત્ર મૂલ કથાયછે

- ૭ સર્વ પ્રમાણ તથા સર્વ નયથી ઉત્પન્ન થઈ સર્વ દ્રવ્ય અને સર્વ ભાવના વિષયની રુચિને વિસ્તાર રુચિ સમ્યક્ત્વ કહેવાયછે તેથી વિશેષ લાભ પ્રાપ્તિ થાયછે
- ૮ જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર, તપ અને વિનયવૈયાટ્ય આદિના આચરણ સવધી રુચિ તે ક્રિયારુચિ કહેવાયછે
- ૯ જેને કુદૃષ્ટિનો અભિગ્રહ કર્યો ના હોય અને જે પ્રવચનમા મવીણ ન હોય તેવા પુસ્તકને માત્ર નિર્વાણ પદ સવધી રુચિ તે સક્ષેપ રુચિ જાણવી જેમ ઉપશમ સવર અને વિવેક આ વ્રણ પદની રુચિ ચિલાતી પુત્રને થઈ હતી તેમ સમજવુ
- ૧૦ ધર્મપદ શ્રવણથી ઉત્પન્ન થઈ જે ધર્મપદવાચ્ય સર્વથી રુચિ તે ધર્મરુચિ કહેવાયછે

સમાકિતરત્નની પ્રાપ્તિ દુર્લભછે-સમાકિત પામ્યા પશ્ચાત્ સસાર સમુદ્ર ચુલુક પ્રમાણ સમજવો આ સસારચક્રમા અનતશ પરિભ્રમણ કરી અનતવાર અનતદુઃખ પામ્યો અનેક દેહો ધારણ કર્યા પ્રત્યેક ભવમા અનેક દુઃખ મેગવ્યા જન્મ જરા મરણાદિ દુઃખોનો ભોક્તા ઘણીવાર થયો પણ પાર આવ્યો નહિ જીવ પુનઃ પુનઃ પરસ્વભાવમા રમણ કરી કર્મ ગ્રહેછે આત્મસ્વભાવમા રમણ કરવાથી કર્મ નાશ પામેછે કમ્મપયદો આદિ ગ્રથોમાથી વિશેષ સ્વરૂપ જાણવુ કર્મનો નાશ કરી મોક્ષનગરમા જવાનો ઇચ્છા હોય તો અનુભવ જ્ઞાનનો સ્વપ કરો મતિનુત જ્ઞાનનુ ઉત્તર ભાવી અને કેવલજ્ઞાનનુ પૂર્વભાવી અનુભવજ્ઞાનછે, દૃષ્ટાત જેમ સૂર્ય કેવલજ્ઞાનછે

अने सूर्योदय यथा प्राक् जे अरुणोदयडे ते, दृष्टाते अनुभवज्ञान जाणवु. अनुभवज्ञान साक्षात् परमात्मपदनी प्राप्ति करावेडे. भव्य-जीवो अनुभवज्ञानधी जाणेछे अनुभवज्ञान साक्षात् सूर्य समानछे. शास्त्रोनु अभ्ययन करता, ध्यान करता अनुभवज्ञाननी प्राप्ति थाय छे अनुभवज्ञानीओ उपयोग पोताना आत्माना असख्यात प्रदेशे स्थायी पुद्गलवस्तुमा उंपेछे मारो शुद्ध आत्मस्वभाव तेज मारु धनछे. वाकी आ बाह्य देखातु धन मारु नथी. एम भिन्नता पाडी शुद्ध गुणमा परिणमेछे अनुभवज्ञानी सिद्धातनो साररूप मकरंद पीवडे. अनुभवज्ञानी समता भुवनमा मदा मुखमा म्हालेछे अरुपी आमाने दृष्टिगोचर करवानु स्थान अनुभवज्ञानछे माटे सम्यग् ज्ञानना अर्थी जीवोए पुनः पुनः सत्शास्त्र अने सद्गुरूनो परिचय करी अतर्कृत्ति करी बाह्यवृत्तिनो त्याग करवो

कह्यु छे के-

बाह्यवृत्तिए गुणठाणे चडवु, ते तो जडना भामा,
सयमश्रेणि शिखरे चढावे, अतरग परिणामारे. लोका भो-
ळवीया मत भूलो. १

ए उपरधी सार लेवानो जे-बाह्यवृत्ति नाम वहिरात्मदर्शाधी गुणस्थानके चडवु एम तो जडजीवोनी भ्रमणाछे, अतरग परिणामरूप अतर्कृत्ति सयमश्रेणिना शिखरे चढावडे माटे भव्य लोको भोळवीया तमे भूलो नही सत्य तत्त्वमा रक्षण करो अने ज्ञाननी डच्छा करो. आत्मगुणनी विचारणा करगे आत्माना स्वभावमा ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्यादि अनतगुणछे, वळी गुण गुण मति भिन्न भिन्न स्वभाव आत्मामा रखाछे, ज्ञाननो जाणवारूप स्वभाव, दर्शननो देखारूप स्वभाव, चारित्रनो स्थिरतारूप अने वीर्यनो स्फुरणा शक्तिरूप स्वभाव एम अनतगुणो आत्माभा तिरोनाय रखाछे पण-

શક્તિભાવથી આત્માનુ કાર્ય સરે નહીં જેમ અરણિ કાષ્ટમા શક્તિ
ભાવે રહીછે પણ અરણિના કાષ્ટને વાથ મીડવાથી ટાઢ નાશ પામે નહિ
તે દૃઢતાના અનુસારે શક્તિભાવે રહેલી આત્માનો ધર્મ જ્ઞાનથી જા-
ણી વર્ચથી પ્રગટ કરીએ તો 'ચતુર્ગતિના અનતશ' જન્મ જરા મરણ
ટલી જાય આત્માના ગુણ પર્યાયનુ વ્યક્તિરૂપે પ્રગટતુ તેજ સ્વભાવ
લાભ જાણવો

પ્રશ્ન-ઘાતીકર્મનો નાશ શાવડે ત્વરિત થાય

ઉત્તર-જ્ઞાન અને યાનથી પ્રમાદના ત્યાગપૂર્વક આત્મોપયોગે
સ્થિરતાથી કર્મનો નાશ થાયછે પર્વતની ગુફામા નિવિડ
અધકાર હોયછે તેનો નાશ દીપકથી થાયછે તેમ અજ્ઞાન તથા
કર્મનો નાશ પણ આત્મજ્ઞાનથી થાયછે મોટી ઠળની ગઝી
પણ અગ્નિના સ્વલ્પ કળીયાથી નાશ ક્ષણમા પામેછે તેમ અનત
ભવોપાજિત ઘાતીકર્મનો નાશ પણ આત્મજ્ઞાનથી સ્વલ્પકાલમા
થાયછે. શ્રીપાલના રાસમા દેશનાની ઢાલમા કહ્યુ છે કે-

શ્રી પશો વિજય ઉપાધ્યાય.

ક્ષણ અર્થે જે અઘટલે, તેન ટલે ભવની કોડીરે,
તપશ્યા કરતાં અતિચળી, નહીં જ્ઞાન તળીઝે જોડીરે

જ્ઞાની પુરુષ અર્થક્ષણમા જે પાપનો નાશ કરેછે તે કોટી ભવ
પર્યંત કઠીન વિચિત્ર છટ અઠમ માસ બે માસ વિગેરેની તપશ્ચર્યા ક-
રતાં ટલે નહીં માટે જ્ઞાનની કોડ જોડી ણટલે તે સમાન કોડ નથી
માટે આત્મજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ કરવા પ્રયત્ન કરવો જ્ઞાન રૂપી અગ્નિ
સર્વ કર્મને ચાલી મસ્મ કરેછે પદ્મદ્રવ્ય સાત નય તથા નિક્ષેપ દ્રવ્યા-
દિકના જ્ઞાનથી સ્વપર વિભાગ થાયછે અને પોતાના ઘરમાં પ્રવેશ
કરેછે અર્થાત્ અસર્ય પ્રદેશરૂપ જે ઘર તેમા આત્માઉપયોગપણે
પરિણમી અશુદ્ધતાનો પરિહાર કરેછે, પોતાના ઘરમા આવતાં આ-

त्माए अनुभवदृष्टिथी सर्व सिद्धि जोइ त्यारे विचार्यु के-अहो में अनत भवचक्र काळ अज्ञान रूप निद्रामां निर्गमाव्यो मारी भूले हु जन्म जरा मरणना दु ख पाम्यो हवे भ्रांति भागी आ शरीररूप नगरीमा असख्य प्रदेशी आत्मानी प्रतीति थइ, असख्य प्रदेशीरूप आत्मा हु अरूपी छु श्वेत, पीत, रक्त, कृष्ण, ए पुद्गलरु रूप छे पण हु तो पुद्गलथी भिन्नरु माटे रूपातीतहु, मारामा गर स्पर्शनथी शब्दथी मारु ज्ञान थाय छे पण हु शब्दथी न्यारो उ मारु कोइ नाम नथी तेथी हु अनामी कहेवाउउ.

हु कीर्ति वा अपकीर्तिवाजो नथी-कारण के रहिरात्मदशामा कीर्तिनी वासना जीवने रहेछे अने तेथी ते अनेक प्रकारना कीर्ति माटे उग्रमो करेछे. पण तेथी ऊड कल्याण थतु नथी जेम वयाने स्वप्नानी अदर पुत्रनो प्रभव थयो. अने ते पुत्रने मोटा थता परणाव्यो. वया बहु आनद पामी एवामा व यानो पुत्र मरण पाम्यो त्यारे वया रोत्रा पीटवा लागी केश तोडवा लागी वयानी आख उघडी गइ अने जुवे छे तो ऊड नथी. मिथ्याभास थयो एम जाण्यु तेम अज्ञानी जीव साधु वा गृहस्थना वा कोइपण अवस्थामा कीर्तिनी वासनाथी अनेक कार्या करेछे किंतु आल मोंचाया वाद कइ पण तेमानु देखातु नथी. माटे ज्ञानयोगी आत्मा कोइ कीर्ति करे वा कोइ अपकीर्ति करे तोपण समभावे रहेछे. कारण के-ज्ञान योगी आत्मा जाणेछे के कीर्तिनाम कर्मना बधनथी जगत्मा कीर्ति प्रसरेछे. अने अपकीर्तिनाम कर्मोदयथी अपकीर्ति प्रसरे छे-माटे ते कीर्ति अने अपकीर्ति बने पौद्गलिकछे कीइनी कीर्ति प्रसखाथी ते धर्मी कहेवातो नथी. तेम अपकीर्ति प्रसरवाथी ते अधर्मी कही शक्यतो नथी. अतरग शुद्धात्म वृत्तिथी धर्मी कहेवायछे. अने अतरग अशुद्धात्म वृत्तिथी अधर्मी जाणवो. मान पूजा आदि पास-

नाओधी पण आत्मा भिन्नते कारण के मान अने अपमान एह
 बहिरात्मा दशावाळाने एटले जेणे दुनीयादारीमा सुखदुःखनी बुद्धि
 धारण करीछे तेवा जीवने वर्तेते, पण जेणे शरीरयी भिन्न आत्मा
 निराकार ज्योतिमय जाण्योते तेवा अतरात्म दशावाळा जीवने
 माननी वासना रहेती नथी शुद्धात्मा सदा मानवतते पुद्गलरूप
 देह कइ मान्य योग्य नथी वळी कोइ अपमान करे तो समजे के-
 देहनु अपमान के तेनी अदर रहेला आत्मानु अपमान नथी. देह तो
 जडते अने आत्मा तो अदृश्यते, तेथी तेनु अपमान थड शकतु नथी
 माटे ज्ञानयोगी महात्माने मान अपमान र सरखाते वळी ज्ञान
 योगीनी कोइ निंदा करे वा कोइ वदन करे तोपण ते समभावमा
 वर्ते छे कारणके ज्ञानी जाणे ते के-मारो आत्मा अलक्ष्यछे.
 पोताना स्वभावे शुद्ध निर्लेपते एम उपयोगमा वर्ततो कोइना उपर
 राग वा कोइना उपर द्वेष करतो नथी कनक अने पापाणने पण
 ज्ञानी आत्मा सरखा जाणेते, कनक अने पापाण पृथ्वीकायनां
 ठळीया पौद्गलितते अने ते कनक पापाणरूप अचित्त पुद्गल
 स्वरूपीते अने हु आत्मा तो अरूपीहु कनक पापाण पुद्गल
 स्वरूप जडते अने हु आत्मा तो ज्ञान गुणमयहु, मारी अने एनी
 भिन्न जातिते वळी कनक पापाणमां सुख नथी तो ते उपर केम
 दृष्टि आपु ? एम समजी ज्ञानी आत्मार्थी समभावमा रहेते अने शुद्धा-
 त्म स्वरूपमा उपयोग दृष्टि आपेते

ससारना ससर्गमा आवतो पण ज्ञानी आत्मा जलमा कमलनी पेते
 भिन्नपणे वर्तेते, हर्ष शोक धारण करतो नथी एम ममादस्थाननु
 निवारण करतो विरतिप्रत अगीकार करतो अतरथी द्रव्यक्षेत्र का-
 लभावधी आत्म स्वरूप विचारतो अने तेम आत्माना गुणपर्यायने
 भिन्नाभिन्नपणे विचारतो मति अने श्रुतज्ञानना क्षयोपशमे वीर्य श-

क्ति फोरवतो सयम श्रेणि आरोहण करतो घातीकर्मनो क्षय करी यावत् अघातीकर्मनो क्षय करी पचम गति जे मुक्तिस्थान तेमां सादि अनतमा भाग बिराजे छे. त्या मुक्तिस्थानमा शरीरनो त्रीजो भाग टाळी वे भागनी अवगाहना रहेछे. मुक्तिमा स्वामी सेरुभाव नथी, मुक्तिमा गएल आत्मा पश्चात् संसारमा आवतो नथी, अने तैथी जन्म जरा मरणना दुःख पामतो नथी, आ प्रमाणे कर्मना नाशे मुक्ति पासेत्ती पासेछे किंतु आत्मध्यानरूप पुरुपार्थमा प्रमाद थवाथी पुनः पुनः संसारमा परिभ्रमण करबु पडेछे मन, वचन अने कायाना योगो स्थिर करी आत्म स्वरूपमां स्थिर थबु अने ब्राह्म मार्गमा वृत्ति देता आगळ व-या करबु. तेम करवाथी आनदनी खुमारी प्रगट थशे अने स्थिरता योगे चारित्र मोहनीयनो नाश थशे, अने आत्मा मतिज्ञान अने श्रुतज्ञानना क्षयोपशमये गे प्रत्यरु गुण स्थानरुनी ह्द विचित्र अनुभव प्रगट करतो देखाशे अने आत्मतत्त्वनो निर्धार भास थशे. आ अचळ सिद्धातनी श्रद्धा तथा तेनो आदर जे आत्मा अल्पभवमा मुक्ति जवानोछे तेने प्राप्त थायछे. अने परमपद प्राप्तिनी तीत्रेच्छा प्रगट थया विना तेना उपर लक्ष्य लागतु नथी अने ते प्रति लक्ष्य लाग्या विना आत्म कल्याण नथीज जे भव्यने जे वस्तुनी इच्छा होयछे ते प्रति तनो उत्तम वर्तेछे. सर्व करता शुद्ध स्वरूपनी इच्छा श्रेष्ठ गुणावहा जाणवी. हवे ते आत्मगुणनी प्राप्तिरुवा मन शुद्ध करबु जोइए मननी शुद्धता थया विना सच्चिदानंद प्रति बलण थतु नथी, प्रथमतो मन इन्द्रियोना निपथमां भटकतु होयछे तेने पालु बालबु अने आत्मरमणमा जोडबु एम थवाथी राग द्वेषादिक श-श्रुओ तेनी मेळे नाश पामशे. आम वर्तन करवाथी गुणोनी प्राप्ति थायछे कोइ भव्यो मोलवामा एबु बोलै के-जाणे महा तत्त्वज्ञान

प्राप्त यद्यु पण अतरमा कइ होतु नथी, माटे घर्तन आत्म स्वभावमा
 यद्यु जोइए, एम करवाथी अनुक्रमे आत्मा कर्माष्टकनो नाश करी
 मुक्तिपद पामेछे अतीत फाळे अनत जीवो मुक्ति गया जायछे अने
 जशे इति सप्तम विषय संपूर्ण

८ अष्टमविषय.

संसारमा आत्मा क्यारथीछे-- ?

संसारमा आत्मा अनादिकाळथीछे जेनी आदि होयछे ते
 उत्पत्तिमान पदार्थ होयछे. अने जे उत्पत्तिमान् होयछे ते कार्यरूप
 कहेवायछे, अने जे पदार्थ कार्यरूप होय ते समवाय निमित्तआदि
 कारणोनी सामग्रीद्वारा उत्पन्न थायछे अने तेथी ते कार्यरूप पदार्थ
 अनित्य कहेवायछे अने जे पदार्थ अनित्य होयछे ते विनाश पामे
 छे आत्माने कोइए उत्पन्न कर्यो नथी अने तेथी ते अनादि कहेवायछे

जे पदार्थनी आदि नथी तेनो अतपण नथी. ते प्रमाणे आत्मा
 अनादि छे अने अनतछे. जे वस्तुनो कोइ बनावनार नथी ते वस्तु
 नित्य कहेवायछे तेम आत्मा तेनो बनावनार कोइ
 नथी तेथी आत्मा नित्य कहेवायछे जे नित्य वस्तु होयछे ते ब्रण
 कालमा नाश पामनी नथी तेम आत्मा पण नित्यछे तेथी ब्रणे
 कालमा नाश पामतो नथी, जे वस्तु उत्पन्न थायछे ते कारण पूर्वक
 होयछे, जेम घटवस्तु मृत्तिका दड चक्र कुलालादि पूर्वकछे. अने
 जे वस्तुनो कोइ उत्पन्न कर्ता नथी ते कारण विना स्वय सिद्ध
 होयछे जेम आफ्फाश ते प्रमाणे आत्मा पण कारण विनानोछे. अ-
 र्यात् ते कोइनाथी बन्यो नथी

ईश्वरवादी—सर्व जीवोंने ईश्वरे बनाव्याछे तो जीवोंने कर्ता ईश्वर कारणी भूत मानवो जोइए.

तत्त्ववादी—जीवोंने कर्ता ईश्वर नहीं, ईश्वर अरूपीछे रागद्वेष-रहीतछे, संसारनी खटपट रहीतछे. तेवा ईश्वरने जीवो बनाववानु शु प्रयोजन ते वतावो अने ज्यारे ईश्वरे जीवो नहोता बनाव्या ते पूर्वे ईश्वर शु करतो हतो वळी वतावो के जीवोनु उपादान कारण कोण अने जीवरूप कार्यनु निमित्त कारण कोण ?

प्रथम सामान्य माध्यस्थ बुद्धिथी विचारतां पण मालुम पडेछे के रागद्वेष रहीत एवा प्रभु वा जे ईश्वर सिद्ध तेमने जीवो बनाववानु कइ प्रयोजन नहीं, एकने सुखी बनाववो अने एकजीवने दुःखी बनाववो एवु अन्यायनु कार्य ईश्वर करतो नहीं. जीवो बनाव्या बिना पूर्वे ईश्वरने गमतु नहोतु ते पण कइ कही शकातु नहीं, अने जीवो बनाव्या पूर्वे ईश्वर कर्तृत्व शक्ति रहीत हतो के केम ते कही शकातु नहीं. कर्तृत्व शक्ति ईश्वरनी अनादिनी मानो तो जीवो पण अनादि ठर्या. त्यारे वदतोव्याघातदूषण प्राप्त ययु. कर्तृत्व शक्ति ईश्वरनी जो अनादि न मानो तो शक्तिनी अनित्यताए ईश्वर पण अनित्य ठर्यो. वळी जीवोनी पूर्वे ईश्वर छे ते पण सिद्ध यतु नहीं. वळी जीवोनु उपादान कारण पण ईश्वर कही शकातो नहीं, कारणके उपादान कारणथी कार्य भिन्न नहीं. यथा ततवः पटस्य जेम पटनु उपादान कारण ततु ते पटरूपज छे तेम जो जीवोनु उपादान कारण ईश्वर मानीए तो सर्व जीवोथी अभिन्न ईश्वर ठर्यो. अने ज्यारे सर्व जीवमय ईश्वर ठर्यो त्यारे राजा पण ईश्वर पापी पण ईश्वर चोर पण ईश्वर विडाल पण ईश्वर सर्व पण ईश्वर पोतानी मेळे ईश्वर उपाधिमय वन्यो कोनु भजन करवु. कोनु

बंधन, कोनी मुक्ति, ते पण असत्य ठर्युं, तप जप दान क्रिया सर्व असत्य ठरी. माटे जीवोनु उपादान कारण ईश्वर सिद्ध यतो नथी तेम निमित्त कारण पण ईश्वर फही शक्तातो नथी, कथा कथा मसाला लावोने ईश्वरे जीव बनाव्यो जो कदेशो के पचभूतरूप मसालायी जीव बनाव्यो तो ते वात पण आराग कुमुमवत् असत्य ठरेछे कारण के पचभूततो जडछे. अने आत्मा तो ज्ञान गुणी छे माटे ते पचभूतनु कार्य नथी माटे जीवनु उपादान कारण पचभूत कदी ठरता नथी अने निमित्त कारण जीवतो ईश्वर ठरतो नथी. माटे जीव अकारण होवाथी नित्य सिद्ध ठर्यो अने तेथी ते अनादिकाळथी छे एम सिद्ध ठर्यो. श्री केवलनाथी वीरमभुए जीवो अनादिकाळना छे एम सत्य कथ्युछे हवे ब्रह्ममायी जीवोनी उत्पत्ति माननाराओ प्रति मश्र पूर्वक तेमनी भूल दूर करायछे

शिष्य—हे सद्गुरुगे कोइ एम कहेछेके आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत् अर्थ आ दुनीयामा प्रथम ब्रह्म एकज हतु अने तेमाथी आ सर्व प्रपच बन्योछे आ वातमा थु सत्य समायुछे. ते कृपा करीने कदेशो ?

सद्गुरु—हे सौम्य श्रवण कर ब्रह्ममायी जीवो माया विगेरे सर्व प्रपच बन्यो एम मानतु युक्तिहीनछे ते नीचे मुनन. ब्रह्मथी दुनीयागे प्रपच भिन्न मानशो तो एकांत भिन्न प्रपचरूप वस्तु ब्रह्मकी उत्पन्न थायछे तेम मानतु मडूक जटावन् असत्य ठरेछे, कारण के जेम घटकी एकांत भिन्न पटनी उत्पत्ति जोचामां आवती नथी एम प्रत्यक्ष विरोध आवेछे, वळी ब्रह्मकी एकांत अभिन्न जगत् रूप प्रपच मानशो तो ते पण युक्ति, विकल आकाश कुमुमवत् असत्य ठरेछे,

ब्रह्मयी एकांत अभिन्न जगत् प्रपञ्च ब्रह्मस्वरूप ठर्यो, त्यारे
 माता, स्त्री, पुत्र, सर्प, सिंह, आदि सर्व ब्रह्मरूप ठर्युं, त्यारे तेना-
 थी भिन्न वा तेथी मुक्कन थवांशेज नहि, वळी अमो ब्रह्मवादीने पुंठी
 ए छीए के-ब्रह्म जे ते जगत् प्रपञ्चनुं उपादान कारणठे के निमित्त
 कारण ? प्रथम पक्षमां जो ब्रह्मने उपादान कारण मानवामा आवे
 तो कारण जेवु होय तेवु कार्य थाय जेम पटनु उपादान कारण ततु
 रक्त होय तो पट पण रक्त थायछे. तेम जो ब्रह्म सत्ते अने
 उपादान कारणठे तो उत्पन्न थनार जगत् प्रपञ्चरूप कार्य
 सत् थवु जोइए. अने ते कदी नाश पण पामे नहि, पण जगत् प्र-
 पञ्च सत् नथी एम प्रत्यक्ष विरोधापत्ति प्राप्त थती देखायछे वळी
 ब्रह्मने रूपी वा अरूपी मानता विरोध दर्शावैठे प्रथम पक्ष ब्रह्मने
 रूपी मानतां आगम विरोध आवेठे द्वितीय विकल्पमा ब्रह्मने अ-
 रूपी मानता ब्रह्मयी उत्पन्न थनार जगत् प्रपञ्च रूप कार्य अरूपी
 थनुं जोइए पण घटपटाटि वस्तुरूपी देखायछे ए पण महाविरोध
 आवेठे वळी ब्रह्मने नित्यमान ता ब्रह्मयी उत्पन्न थनार जगत्
 प्रपञ्च पण नित्यपणे उपलब्ध थवो जोइए पण जगत् प्रपञ्च तेथी
 उलटो विनाश पामतो देखायछे, तेथी तेम मानता पण विरोध प्राप्त
 थायछे, माटे जगत् उपादान कारणपणे मानेलु ब्रह्म नित्यपणे पण
 कहीशकातु नथी ब्रह्मने अनित्य मानता आगम विरोध आवेठे
 वळी ब्रह्मने एक अने ते सर्वत्र व्यापकठे एम मानशोतो जीवोनो
 बंध मोक्ष मानवो असत् ठरेठे तेम सुख दुःख पण असत् ठरशे
 इत्यादि विकल्पोथी ब्रह्मनी मिद्धि पण थती नथी तो वळी ब्रह्म-
 मायी जीवो उत्पन्न थया तेम मानतु ते तो सर्वथा अमत्य ठरेठे
 प्रश्न-आनन्द ब्रह्मगो विद्वान् नविभेति कुतश्चन-ब्रह्मना आनन्दने
 जाणनार पुरुष कशाथी भय पामतो नथी, एम वृद्ध आर-

प्यक् तथा तैत्तिरीय श्रुतिमा षड्गुणे तेषु केम ?

उत्तर-ब्रह्म शब्दार्थनु सम्यग् ज्ञान न यवाथी तत्त्वनी प्राप्ति थती नथी. केडलारु वादीओ ब्रह्म रिपे सर्व- जीवोनो लय थायडे. अने वळी ब्रह्ममाथी सर्व जीरो उत्पन्न थायडे एम सभजी तत्त्व पापी शरुता नथी कारणके-सम्यग् ज्ञान विना सम्यग् क्रिया थड शरुती नथी अने ते विना भवात थतो नथी. अर्थात् फर्मनो नाश करी मुनितपद् पमातु नथी पण आत्मारूप ब्रह्मनो भावार्थ ज्ञानथी सम्यक् समजनार व-शाथी भय पामतो नथी. माटे सम्यग्दृष्टिपणु प्राप्त थता ए-कात दृढ टळेछे

प्रश्न-श्लोक भिद्यते हृदयग्रथी त्रिद्यते सर्वं शसया

क्षीयते चास्य कर्माणि, तस्मिन् दृष्टे परावरे. १

ब्रह्मने साक्षात्कार जाणवाथी हृदय ग्रथी भेदायडे अने सर्व सशयो छेदायडे कर्मो नाश पामेडे ते ब्रह्मने देखता-आम मुडको पनिषद् विगेरेथी जणायडे तोब्रह्मने असत्य केम कहेवाय?

उत्तर-हेभव्यजीव हजी अमारु कथन तमाराथी समजायुनथी— ब्रह्मशब्दनेो अर्थ ज्ञानयान् आत्मा अनेते ज्ञानीजीव प्रतिशरीर भिन्नभिन्न-तेमज फर्मरहीत ज्ञानीजीवो-व्यक्तिथी भिन्नभिन्नछे तेगारुपे अमो ब्रह्मने सत्य मानीएछीए—पणजे एक ब्रह्म अने तेमांथी जगत् पेद्रायवु तेवा ब्रह्मशब्दना अर्थने अमो सत्यरुपे मानतानथी तेनासयधे अत्रसभापण थायडे -अत्रसभजयानुके-सर्वत्र ब्रह्मछे, ब्रह्मथकीअन्य कोइपदार्थ नथी एम मानवु ते ज्ञानविरुद्धछे-अने एम कोइमानेतो तेमा अन्यनु जोरनथी-पण समजयानुके—उपरना श्लोकथी द्वैतपणानी षटळे वे तत्त्व-जीव अने अजीव तेनी सिद्धि थायछे—अस्य

कर्माणि क्षीयन्ते—आना कर्म नाशपामेछे. आना एटले आत्माना आत्मानी साथे ज्ञानावरणीयादी अप्ठकर्म अनादिकाळधी क्षीर नीरवत् लाग्याछे. ते कर्म, आत्मानु स्वरूप स्याद्वादपणे देखी आत्म स्वभावमा रमवाधी नाशपामेछे. आत्मा अने कर्म एम बे वस्तुनी सिद्धि थइ, एक आत्मद्रव्यनी द्वितीय कर्मरूप पुद्गल द्रव्यनी अनायासे सिद्धि थइ, कर्मजड अने, अजीवउं, तेथी जीवतत्त्व एम बे तत्त्वज्ञानी प्रभुश्रीमहावीरस्वामीए कथ्या छे तेनी सिद्धि थइ कदापि सामो प्रश्न एम करवामा आवे के कर्म पण ब्रह्मधी भिन्न नथी अने ते ब्रह्मस्वरूपउं. तो उत्तर तरीके कहेवामा आवशे के कर्म ज्यारे ब्रह्मस्वरूप ठर्युं त्यारे कर्मनो नाश यता ब्रह्मनो पण नाश थशे.

वळी विचारोके कर्म छे ते ब्रह्मयत्ती भिन्न छे अभिन्न? प्रथम पक्षमा ब्रह्मयत्ती कर्मएकांत भिन्न मानता पटथी एकांत भिन्न घटनी पेटे बे पदार्थ ब्रह्म अने कर्म भिन्न छे तेनी सिद्धि थइ, द्वितीयपक्षमा ब्रह्मयत्ती कर्म अभिन्न छे एम मानता ब्रह्म अने कर्म एक स्वरूप थइ जशे अने कर्मनो नाश पण थशे नहि

वळी विचारो के कर्मसत्त्वे के असत्त्वे. कर्म असत् मानवामा आवे तो सत्ब्रह्म अने असत् कर्मनो सयोग थाय नहि, कारण के सत्नी साथे जे वस्तुरूपे ना होय तेनो सयोग घटे नहि अने बेनो सयोग मानवामा आवशे तो बे पदार्थ भिन्न स्वभाववाळा भिन्न ठर्या, त्यारे एक एव ब्रह्म आवावयनो नाश थयो एम अवश्य सिद्ध ठरेछे. स्याद्वादपणाधी तो ते सर्व जिन दर्शनमा ययार्थ घटेउं अने आत्मानी सिद्धि थायउं अने कर्मनी सिद्धि थापउं. आत्मा ज्ञानादिके करी सत्त्वे अने कर्मरूप पुद्गलनी अपेक्षाए असत्त्वे. पण पुद्गल द्रव्य पोताना स्वरूपे सत्त्वे. आत्मा अने कर्मनो सयोग अनादिका-

ळयी छे. आत्मा अने कर्म वे क्षीरनीरवत् परिणामीछे, आत्मा ज्यारे स्वस्वभावमा रमण करेछे त्यारे कर्मरूप पुद्गलो आत्माना प्रदेशोधी विखरेछे, अने आत्मामा रहेलु अनतज्ञान आविर्भावे प्रकाशेछे. अने आत्मा परमपद पामता अचल थायछे. जन्म जरा मृत्युनो नाश करी अजरामर पद पामेछे तेपा नपुनराट्ति शिव अर्थात् मोक्ष पामेला जीवो ससारमा पाजा आवी जन्म धारण करता नथी. वळी सर्व जीवो ब्रह्मना अशुछे एम मानीएतो पुण्य पाप उध मोक्ष आदि घटी शकतु नथा कारण के—सर्वस्य ब्रह्मस्वरूपत्वात् सर्व पदार्थने ब्रह्मस्वरूप मान्याथी धर्म अधर्म भुक्ति विगरे असत्य ठरेछे तेपा आ वाक्य प्रयोग पष्ठीना उहु वचननोछे, तेथी आत्मा अनतछे एम प्रतिपादन कर्युछे. ने करीथी ससारमा आवता नथी एम कहेवाथी प्रलय काळ थया वाद केटलाक मानेछेके भुक्तिमाथी ससारमा जीव पाजा आवेछे तथा दयानंद सरस्वति जे आर्य समाजनो प्रकाशकछे ते स्वकल्पनाथी एम मानेछेके भुक्तिमाथी जीव ससारमा पाछो आवेछे एम ते वादियोनु मानयु असत्य ठरेछे अने ते मिथ्या ज्ञानउ एम सिद्ध कर्यु. वळी नीचेनी वेदश्रुतियो पण सम्यग्ज्ञान विना असमजस भासेछे.

तथाच

इद सर्वं यदयमात्मा, सर्वं खल्विदं ब्रह्म ॥

अयमात्मा ब्रह्म, अहं ब्रह्मास्मि ॥

इत्यादि वेद श्रुतियोपण सम्यग्ज्ञान विना प्रमाणीभूत नथी सर्व एटछे सर्व खडु एटछे निश्चयथी आ ब्रह्मछे घट, पट, डड, घक, वृक्ष, सर्प, जगत् सर्व ब्रह्मछे तो सिद्ध थयु के स्त्री पण ब्रह्म स्वरूप. माता पण ब्रह्मस्वरूप पुत्री पण ब्रह्मस्वरूप. पोते वक्ता पण ब्रह्मस्वरूप त्यारे कोने नमस्कार करवो ? कोनु स्मरण करयु ? अने वळी स्मरण करवानु शु प्रयोजन ? तेनी सिद्धि ठरती नथी. आ पण

ब्रह्मस्वरूप, अने विष्णु पण ब्रह्मस्वरूप. सर्प पण ब्रह्मतो प्रत्येकने नमस्कार करवो जोडए पण ब्रह्मवादी पण सर्वने ब्रह्मस्वरूप मानी भेदभाव राखेउते ते आकाश जेवडी मूल गणाय, माटे ब्रह्मने एक मानता पूर्वोक्त दूण प्राप्त थायउते. सम्यग्दृष्टि तेवोज अर्थ सम्यग्पणे ग्रहण करेछे. आ सर्व जगत् अनतजीवोधी परिपूर्ण व्यासछे, अने जे आ शरीरमा उे ते आत्माछे, अने आत्मा ज्ञानमयछे दुनीयानी सर्व वस्तुओ ज्ञानमा विपयीभूत थायउते. अनतज्ञेयनो ज्ञाता अनत ज्ञानमय आत्माउे तेने ब्रह्म कहो वा चैतन्य कहो वा परमात्मा कहो, नामभेद पण अर्थतो एकनो एरुछे—सिद्ध परमात्माओ सदृश शरीरमा रहेलो आत्मा पण सर्व रुद्धिमयउे पण कर्मावरणधी सर्व रुद्धि तिरोभावेउे—आत्मा जजउे अविनाशीउे. अनादि अनत, अक्षय, अक्षर, अनक्षर, अचल, अटल, अमल, अगम्य, अरूपी, अरुर्मा, अनधरु, अनुदय, अनुदरीरु, अयोगी, अभोगी, अरोगी, अभेदी, अवेदी, अछेदी, अलेपी, अखेदी, अरुपाइ, अलेशी, अशरीरी, अणाहारी, अव्यावाध, अनवगाही, अगुरुलघुपरिणामी, अप्राणी, अयोनि, अससारी, अमर, अपर, अपरपर, ज्ञानगुणापेक्षाए व्यापक अनाश्रित, अरूप, अनाश्रव, अशोकी, असगी अनाहारी लोकाशोक ज्ञायरु, अनत सुखमय, आदि गुणोधी तिराजमान प्रत्येक शरीरमा रहेजा आत्माओ छे. किंतु कर्मनायोगे सर्व रुद्धि ढकाणी छे, आ शरीरमा पण कर्मधी बधाएल हे आत्मातुछे जेवा सिद्ध भगवान् उे तेवो तु छे एम सम्यग् अर्ग ग्रही प्रयत्न करायतो मुक्तिपद पामी शक्याय. पण सम्यग्ज्ञान विना ससारी जीवो मोहमायामा मस्तान धइ ससारमा परिभ्रमण करेछे. माटे सत्य तत्त्वनी प्राप्ति करवी एज मोक्षमार्ग जाणवो. श्री सर्वज्ञ प्रभुए धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशाग्नििकाय, पुद्गलाग्नििकाय, जीव द्रव्य ॥

અને કાલ આ પદ્ધત્ય વચન ડર્યાંઠે વેવઝ્ઞાનમાં જેતું જાણ્યુ તયા વેવલ દર્શનમા જેતુ સામાન્યોપયોગથી ઢેર્યુ. તે પ્રમાણે પદાર્થોનુ પ્રતિપાદન કર્યુંઠે તેનુ જ્ઞાન થવાથી સત્ય આત્મતત્ત્વની પ્રાપ્તિ યાયઠે. મિથ્યાજ્ઞાનથી મિથ્યાત્વની વૃદ્ધિ થાયઠે -યત ઉક્ત

શ્લોક

નમિથ્યાત્વસમ શત્રુ, નમિથ્યાત્વસમવિપ ॥

નમિથ્યાત્વસમોરોગો, નમિથ્યાત્વસમતમઃ ॥ ૧ ॥

દ્વિપદ્વિષતમો રોગે, દુઃખમેકત્ર ઢીયતે ॥

મિથ્યાત્વેન દુરતેન, જતોર્જન્માનિજન્મનિ ॥ ૨ ॥

વર જ્વાલાકુલે ક્ષિપ્તો, દેહિનાત્મા હુતાશને ॥

નતુ મિથ્યાત્વસયુક્ત, જીવિતવ્ય કદાચન ॥ ૩ ॥

મિથ્યાત્વ સમાન કોઈ શત્રુ નથી કારણકે મનુષ્યરૂપ શત્રુઓ વાશરદ્ધિ વા વાશમાણનો નાશ કરેઠે અને મિથ્યાત્વરૂપ શત્રુ તો આત્માની અનતિરુદ્ધિનો નાશ કરેઠે અને મિથ્યાત્વ સમાન કોઈ મોટુ વિપ નથી અને મિથ્યાત્વ સમાન કોઈ રોગ નથી અને મિથ્યાત્વ સમાન કોઈ અધકાર નથી જ્વાલાથી દેહીપ્યમાન અગ્નિમા વઢી મરવુ તે સારુ રિંતુ મિથ્યાત્વપણાથી જીવવુ સારુ નથી, વઢી ઉપરના વીજા શ્ચેરૂમાં જનાવ્યુ વે-શત્રુ વિપરોગ તેથી તો ંકાર દુઃખ પમાયઠે અને દુઃખ કરી જેનો નાશ થાયઠે ંવા મિથ્યાત્વથી તો ભવોભવ દુઃખની પરપરા પ્રાપ્ત થાયઠે, માટે સમ્યજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ માટે પ્રયત્ન કરવો, શ્રીવીરમશું જીવો અનાદિકાઢનાઠે ંમ કેવલ-જ્ઞાનથી જાણી પ્રરૂપણા કરીઠે તે સન્ય માનવી શ્રદ્ધા કરવી

९ नवमविषय.

आत्मा निर्मलपद (मोक्ष) शांती पामे,

ज्ञान दर्शन चारित्राणि मोक्षमार्गः ज्ञान दर्शन अने चारित्र
मोक्षनो मार्गछे श्रीतत्त्वार्थसूत्रमा ज्ञान दर्शन चारित्रनु विशेषतः
प्रतिपादन कर्तुंछे त्याथी जिज्ञासुजनोए तेनु स्वरूप गुरुगमद्वारा
धारयु अत्र ए त्रणनो विशेष विस्तार करवाथी ग्रथ गौरवता वृद्धि
पामे माटे कर्तुं नथी. पूर्वे ज्ञाननु सामान्यतः वर्णन कर्तुंछे. दर्शननुं
पण वर्णन कर्तुंछे. चारित्रनु पण सामान्य स्वरूप आगळ रुहेवाशे
अष्टकर्मना समूहनो जे नाश करे तेने चारित्र कहेछे. चारित्रना वे
प्रकारछे व्यवहार चारित्र द्वितीय निश्चय चारित्र तेमा व्यवहार
चारित्रना वे भेदछे. १ देगविरतिरूप-द्वितीय सर्व विरतिरूप

तेमा श्रावकना धारत्रत अगीकार करवा तथा तेनु पालन
करयु तेने देगविरति चारित्र कहेछे

सर्वथी पचमहात्रतनो शास्त्राज्ञापूर्वक स्वीकार करवो अने
वीतराग आज्ञा प्रमाणे वर्तन करयु तेने सर्वथी चारित्र कहेछे-सर्व
विरतिरूप भागवती दीक्षाथी कर्मनो नाश थायछे-शास्त्रोपा दीक्षानु
बहु माहात्म्यछे कर्तुंछे वे-तथाच

श्लोक

सर्वेषामपि पापानां, प्रव्रज्या शुद्धिकारिका ॥

जिनोदिता तत्र सैव, कर्तव्या शुद्धिमिच्छता ॥१॥

ददति ब्राह्मणादिभ्य, एके पाप विशुद्धये ॥

गोदान स्वर्गदानच, भूमिदानान्यनेकथा ॥ २ ॥

आत्मशुद्धयर्थमेवान्ये, कारयति नतानपि ॥
 जुह्वत्यग्नौ पशूस्तत्र, अश्वार्दींश्च सहश्रजः ॥ ३ ॥
 अमेध्यभुग् गवामेके, पृष्ठभाग स्पृशतिच ॥
 गवां मूत्र पिवत्यन्ये, अन्ये पचगव तथा ॥ ४ ॥
 शुद्धयर्थ स्नाति तीर्थेषु, प्रविशत्यन्ये हुताशने ॥
 तथापि नैवशुष्यति, विनादीक्षां जिनोदिता ॥५॥
 किंच शौच विनाशुद्धिं, जायते न कदाचन ॥
 सर्वाहिसादिक तत्र, यत् प्राहुर्मनीषिणः ॥ ६ ॥
 सर्वजीवदयाशौच, शौच सत्यप्रभाषण ॥
 अत्रौर्यं ब्रह्मचर्यंच, शौच सतोप एवच ॥ ७ ॥
 कषायनिग्रह शौचं, शौचमिन्द्रियनिग्रहः ॥
 प्रमादवर्जन शौच, ध्यान शौच तथात्तम ॥ ८ ॥
 दुष्टयोगजयः शौच, शौच वरविवेकिता ॥
 तपो द्वादशधाचैवं, शौचमाहुर्मनीषिण ॥ ९ ॥
 सर्वज्ञोक्तदीक्षाया, एतत् सर्वदयादिक ॥
 शौच सपूर्ण मेवास्ति, सदांतरात्मशुद्धिकृत् ॥१०॥

भावार्थ-सर्व पापोंनी शुद्धिकारिका दीक्षाछे माटे जिनेश्वरे
 क्येली दीक्षा आत्मशुद्धि इच्छनारे अगीकार करवी दीक्षा अगीकार
 करवायी सर्वथा प्रकारे रुमनो नाग थायछे

केचित् जीवो ब्राह्मण विगेरेने स्वर्णदान गोदान भूमीदान वि-
 गेरे आपेछे अने वेदलाक आत्मानी शुद्धिने माटे ततो करेछे अने

करावेछे. अने होममा पशुओने होमेछे. वेटलाक आत्मकल्याण माटे गायनु अमेभ्य भक्षण करेछे, तथा तेना पृष्ठ भागने स्पर्शेछे अने वळी गायनु मूत्र पीवेछे, तथा पचगवनु भक्षण करेछे. वेटलाक आत्मशुद्धि माटे गंगा यमुना आदि तीर्थोमा स्नान करेछे. वेटलाक अग्निमा प्रवेश करेछे, तोपण तं अज्ञानपणाथी आत्मशुद्धि प्राप्त करता नथी पण ज्यारे वीतराग सर्वज्ञे कवेली भागवती दीना अगीकार करवामा आवेछे त्यारे ज्ञान्मा निर्मल थायछे.

वळी ते भागवतीदीशामा शौचविना शुद्धि थती नथी हवे ते शौच दर्शावेछे. सर्वजीवदयाशौच-सर्व जीवोनी दया करवी तेने शौच कहेछे. दया विना धर्म होतो नथी. अहिंसा परमोधर्म अहिंसा मोटो धर्मछे. अने शास्त्रमा पण कथुछे के-

नय तिहुअणेवि पाव, अन्न पाणाडवायओ गरूयं ॥

ज सव्वेविय जीवा, सुहेसिणो दुस्कभीरूय ॥ १ ॥

त्रगलोकमा हिंसा करता मोटु कोड पाप नगी. सर्वे जीव सुख इच्छेछे अने दुःखयी बीवेछे

श्लोक.

नसादीक्षा नसाभीक्षा, नतद् दान नतत्तप. ॥

नतत्ज्ञानं नतद्ध्यान, दयायत्र न विद्यते ॥ १ ॥

भावार्थ-एवी कोइ दीक्षा, भिक्षा, दान, तप के ध्यान नथी के-जेमा दया नहीं होय.

श्लोक

अहिसैव मता मुख्या, स्वर्गमोक्ष प्रसाधनी ॥

अस्याः न्यायार्थं च, न्याय्य सत्यादिपालन

स्वर्ग अने मोक्ष आपनारी दयाज ()
पणे मनायलीडे अने एने राखवा माटे
व्याजरी गणायडे वळी आचाराग मूत्रमा फ

सेनेमि जेअइया जेय पडुपना जे आ
वतो ते सव्वे एर माइरखनि, एरभासति, ए
सव्वेपाणा, सव्वेभूया, सव्वेजीवा, सव्वेसता, न
व्वा, नपरितावेयव्वा, नउव्वेयव्वा, एमरम्मे सु
समिचलोप खेयवेहि पवेडय

आचारांगमूत्र भावार्थ

हु कहु तु के जे तीरकर भगवान थइ गया अने जे हाल वर्ते
छे, अने जे आवना फालमा थसे ते सर्व आ रीने कहेने
जणावेछे तथा वर्गवे छे के सर्वमाण, सर्वभूत, सर्वजीव, अने सर्व
सखने हणवा नहि, तेमना उपर हकुमन चडाववी नहि तेमने रु-
वजे करवा नहि तेओने मारी नाखवा नहि, अने तेओने हेरान
करवा नहि, आवो पवित्र अने नित्य धर्म लोकोना दु खने जाणनार
भगवाने वताव्योडे

अने वळी कहु छे वे-

जयचरे जयत्रिडे, जयमासे जयसए ॥

जय भुजतो भासतो, पाव कम्म न बवइ ॥ १ ॥

श्री शक्यशमभरि कहेछे के यतनाथी चान्दु जीवनी दया
सचवाय तेम उभा रहेवु यतनाथी भेसवु, अने यतनाथी मूहु. अने
यतनाथी सोळु, एम फरतां पाप कर्म उधासे नहि वळो कहुडेके-

गाथा

मल मइल पक मइला. धूली मइला नते नरा मइला

जे पावपक मइला, ते मइला जीवलोयामि ॥ १ ॥
 खणमित्तःसलिलेहि, सरीरदेसस्स शुद्धिजणगंजं
 कामगति निसिद्ध, महेसिणत नणु सिणाणं ॥२॥

भावाथी=मलथी मेला, काढवथी मेला थएला, अने धूलथी मेला थएला माणसो मेला नहि गणाय. पण जे पापरूप वरुथी मेला थएल होय ते जीवो आ लोकरुमा मेला जाणवा-

वळी स्नानमा जलवडे क्षणभर शरीरना बहिर्भागनी शुद्धि यायडे, अने जे जल स्नान कामनु अग गणायडे ते जलथी महर्षियोने स्नान करवानो निपेपछे—

उक्तच श्लोक

स्नान मददर्पकर, कामांग प्रथम स्मृत ॥

तस्मात् कामं परित्यज्य, नैव स्नांति दमे रताः १

स्नान ए मद अने विषयाभिलापनु कारण होवाथी कामनु प हेळु अग गणायडे. माटे कामने त्याग करनार अमे इद्रियोने दमवा तत्पर थएला यतिजनो वीलकल स्नान नथी करता. वेटलाक लोको समज्या विना एम बोलेडे के जैनना मुनियो स्नान करता नथी. तेमने कहेवानु के जैनना साधु शास्त्राज्ञा मुजव वर्तेछे तेथी विषयाभिलापजनक स्नाननु तेमने कड प्रयोजन नथी. ब्रह्मचारी सदासुचिः ब्रह्मचारी पुरुष सदा पवित्रेडे तेने दातण स्नाननी कड जरूर नथी वळी श्रीकृष्ण, पाडु पुत्रने नीचे मुजव उपदेश आपेछे.

श्लोक.

आत्मानदी सयमतोयपूर्णा, सत्यावहा शीलतटा दयोर्मिः
 तत्राभिपेकं कुरु पाडुपुत्र, नवारिणा शुद्धयति चांतरात्मा १

भावार्थ—आत्मारूपी नदीछे तेमा सयमरूपी पाणीपरिपूर्ण भरेलछे, त्या सत्यरूप शीठरूप तेना तटछे, त्या दयारूप तरगोछे मोटे हे पाडुपुत्र तेमा स्नान कर. कारण के शरीरनी अदर रहेलो अरूपी आत्मा कइ पाणीथी शुद्ध थतो नथी हवे त्यारे पवित्र कोण कहेवाय ते जणावेछे

गाथा

अखडिय वयनियमा, गुत्ता गुत्तिदिया जियकसाया
अइशुद्ध बभचेरा, सुइणो इसिणो सयानेया १

भावार्थ—अगीकार करेला व्रत अने नियमने अखडित राखनारा अने जेणे पोतानी इन्द्रियो वश करीछे तथा बळी क्रोध, मान, माया, लोभ, ए चार रुपायोने जीतनारा तथा निर्मल ब्रह्मचर्य पाळनार मुनियो (ऋषियो) सदा पवित्र जाणवा.

तथा बळी कछुछे वे—

श्लोक

नोदकक्लिन्नगात्रोऽपि, स्नात इत्यभिधीयते,
स स्नातो योदमस्नात स बाह्याभ्यतर शुचि १

भावार्थ—पाणीथी भीजायल शरीरवाळो कइ न्हाएलो नहि कहेवाय किंतु जे पोतानी पात्र इन्द्रियोनो वश करनारो थइ अभ्यतर अने बाह्यथी पवित्र होय तेज न्हाएलो कहेवाय बळी कछुछेके—

श्लोक

त्रित्तमतर्गत दुष्ट, तीर्थस्नानैर्न शुद्धयति,
शतशोऽपिजलैर्धौत, सुराभाडमिवाशुचिः १

भावार्थ—अंतरनु दुष्ट चित्त कइ तीर्थ स्नानथी शुद्ध यतु नथी
 केमके मदिरानुं वांसण सेंकडो पाणीथी धोइए तोपण ते अपवित्र
 ज रहेछे. माटे साराश के—जलथी मात्र स्नान कर्याथी पवित्रता
 प्राप्त यती नथी. परतु दयारूप शौचथी पवित्रपणु प्राप्त थायछे.
 माटे दीक्षा अगीकार करी प्रथम अहिंसा प्रतनु पालन करवु जो-
 इए. कोइ पण जीवनी हिंसा करवी नहि. मुनिने वीस वशानी
 दया होयछे. अने श्रावणने सवावशानी दया होयछे. मांसनु
 भक्षण करनार, मांस पेचनार. जीवो, पापी जाणवा ससारनो
 त्याग करनारा मुनीश्वरो अहिंसा प्रतनु पालन करी शिव पाम्या अने
 पामशे. जीवनी हिंसा करवाथी थएल दारुण दुःख यशोधर चरि-
 षथी जाणवु हवे दीक्षा अगीकार करी त्रीजु सत्य गोलवु, मृपा-
 वाद एटछे जूठु रुद्री बोलवु नहि. तद्रूप सत्यप्रतनु परिपालन क-
 रवु. त्रीजु महाप्रत अगीकार करी कोइनी नजीवी वस्तु पण कक्षा
 विना लेवी नही पोतानी या पारकी सर्व स्त्री वर्गनो त्याग करवो.
 मनमा पण भोग भोगवशानी इच्छा करवी नहि स्त्रीना सामु स-
 राग दृष्टिथी जोतु नहि नव प्रकारे ब्रह्मचर्य प्रतनी गुप्ति पाळवी
 अने मैथुननो सर्वथा त्याग करवो तेने चोयु ब्रह्मचर्यव्रत कहेछे.
 सर्व प्रतो नदीओ समान छे अने ब्रह्मचर्यव्रत समुद्र समानछे, ब्र-
 ह्मचारी पुरुषोनी कीर्ति वधेछे. ज्यां जायछे त्या तेने मान मळेछे.
 देवताओ पण ब्रह्मचारी पुरुषोने साहाय्य करेछे. मत्रनी सिद्धि
 पण शीलव्रत पाळनारने तुरत फळेछे. देवताओ, यक्षो, राक्षसो
 पण ब्रह्मचारी मुनिने नमस्कार करेछे. ब्रह्मचारी मुनीश्वरने वचन
 सिद्धि सप्राप्त थायछे, ब्रह्मचारी पुरुषनो सकल्प सिद्ध थायछे.
 कोइ मनुष्य सुवर्णना मोटा देरासर करावे अने कोइ ब्रह्मचर्यव्रत
 अगीकार करे तो पण ब्रह्मचारी पुरुषनी वरोबर सुवर्णना देरासर

કરાવનારને ફલ થતુ નથી ચારિત્રનુ મૂઠ્ઠા બ્રહ્મચર્યત્રતે જ્યા
 બ્રહ્મચર્યત્રત નથી ત્યાં ચારિત્રની શુદ્ધિ ક્યાથી અર્થાત્ બ્રહ્મચર્યવિના
 ચારિત્ર નથી ગ્રહસ્થ પુરુષ પળ પોતાની સ્ત્રી વિના અન્ય સ્ત્રીનો
 ત્યાગ કરેતે. બ્રહ્મચર્યમા ઘણા ગુણ સમાયાહે, મુદર્શનશેઠને સૂત્રી
 પળ સિંહાસનરૂપે થઈ તેમા બ્રહ્મચર્યનુ માહાત્મ્ય જાણવુ. નવનારદ
 બ્રહ્મચર્યના પ્રતાપથી સન્ય મુલ્લીલા પામ્યા. વઢી પારકી સ્ત્રીના
 ઉપર રાગ કરનાર રાવળને લક્ષ્મણે માર્યો, અને રાવળ મરીનરકમાં
 ગયો. અને સીતા સતીનો યશ જગત્માં ગવાયો. વિષય લપટી
 જીવો સદાકાલ આકુલ વ્યાકુલ દુઃખી રહેછે. લપટી જીવો આ
 ભવમાં પળ દુઃખ પામેછે અને પરમવમા પળ દુઃખ પામેછે લપટી
 જીવોની જગત્માં અપકીર્તિયાયછે અને વિષયલપટી જીવો પઠ્ઠાયા
 છે તો સરકાર તેનો મોટો દડ કરેછે. અને જગત્માં તેનુ અપમાન
 યાયછે વિષય લપટી જીવો ઈવા તો આંધળા હોયછે કે-તેમને
 ધર્મ વા અધર્મની સમજળ પડતી નથી માટ મલ્લ જીવોએ બ્રહ્મચ-
 ર્યત્રતનુ સમ્યક્ પરિપાલન કરવુ વારવાર મનુષ્ય જન્મ મલ્લનાર
 નથી સ્ત્રીનુ શરીર સાત ધાતુથી ભરેલુછે તેના શરીરમા લોહી
 માસ, હાડકા, મેદ, મજ્જા, મૂત્ર, વિષ્ટા ભરેલીછે નાક્રુપાથી લીટ
 વઢા કરેછે આત્મા પીયાના થોકુ ઝાનેછે કૈશમા જુઓ, લીલો-
 ના સમૂહ પહ્યા કરેછે શરીરદ્વારોથી અશુચિ વઢા કરેછે,
 વઢી જુવાન અવસ્થા ઉતર્યા વાદ વૃદ્ધાવસ્થા યાયતે ત્યારે
 શરીર લરાલ લાગેછે શરીરનો રગ ઉતરી જાયછે. અલગત તેના
 સામુ પળ જોવાનુ મન થતુ નથી ઈવી સ્ત્રીના શરીરમા શો સારછે
 કે તેના ઉપર રાગ યાય. વઢી સ્ત્રી જાતિ કપટથી ભરેલીછે. મત્-
 હરિ જેવા રાજાને મૂકી તેની રાણી ચાકરની સાથે સગવઢાઢી
 થઈ હતી તે વાત જ્યારે મર્ત્વહરિરાજાએ જાણી ત્યારે મનમા ઘણો

खेद थयो अने विचारवा लाग्यो के—अहो जे पिंगलाने हु पटराणी तरीके मानतो हतो अने जे मारी प्राणामिया हती. अने हु जेना उपर पूर्ण विश्वास राखतो हतो ते पिंगलाराणी पण अते मारी थड नहि. अने तेणीए कामना आवेशथी नीचनी साथे सबध कर्यो माटे तेने धिक्कार थाओ. अहो जगत्ना जीवो कामावेशथी पुण्य पाप गणता नथी. एवा कामने पण धिक्कार पडो अने आ ससारमा हु जेने सारभूत मानतो हतो एवी पिंगला पण मारी थड नहि. अहो ज्ञानीओए ससारने असार कह्योडे तेमा जरा मात्रपण असत्य नथी. एम चिंतवी तापसी टीक्षा अगीकार करी पर्वतनी शुक्रामा चाल्यो गयो, अने तेमणे भर्तृहरि शतकनी रचना करी. माटे सवारमा सारभूत धर्म विना अन्य कथु जणातु नथी. माटे भव्यजीवोए पण सासारिक मोहमायाथी दूर रही आत्मिक धर्मारधनमा तत्पर थड धर्मारधन करवु, अने स्त्रीविषयाभिलाषनो त्याग करवो. शास्त्रमा विषयने विपनी उपमा आपीडे त्यारे वळी एरु महात्मा कहेडे के, विषयने विपनी उपमा आपवी ते योग्य नथी कारण के, विष तो एरु भवमा भक्षतां प्राण हरी दुःख आपेडे अने विषयो तो अनेरु भव पर्यंत परिभ्रमण कगवी दुःख आपेडे माटे विषना करता पण मोटी उपमा आपवी जोइए. विषयथी वतु सुख स्वप्नसुख समान मिव्या कल्पना मात्रडे.

तथाच श्लोक

स्वप्ने दृष्टं यथापुसः क्षणमात्रं सुखायते

प्रबुद्धस्य नतत्किंचित् एव विषयज सुखं. १

स्वप्नमा देखेलो पदार्थ पुरूपने क्षणमात्र सुख आपेडे अने ज्यारे ते मनुष्य जागेडे त्यारे कइपण देखातु नथी ए प्रमाणे विष-

पनु सुख क्षणमात्र आभास मात्रछे अते यन्तुतः विचारतां कइ सुख
नथी. बळी विपयी पुरुषोनी केवी स्थिति थायछे ते जणावेछे.

श्लोक

विपयेषु विपीदतो, न पश्यति हितहित
शृण्वति न हित वास्य, अथ बधिरसनिभा १

विपयोमां विपाद पामेला जीवो हित वा अहितने देखता
नथी. तेम बळी हितवाक्य सोइ कहे तो ते साभळता नथी. खरे
खरविपयलालचु जीवो अध अने बहेरा सरखाछे. अने बळी कहेछेके,

श्लोक

विपयेषु स्तोजीवः, कर्म बध्नाति दारुण
तेनासौ क्लेशमाप्नोति, भ्राम्यन् भीमे भवोदरे २

विपयोमा आसक्त थणल जीव दारुण कर्म राधेछे अने तेथी
ते जीवो भयकर ससारमां परिभ्रमण करतो क्लेश पामेछे. बळी
विपयमां मोह पामेला जीवो थु करेछे ते कहेछे

श्लोक

अहो मोहस्य माहात्म्य, विद्वासोऽपियतो नरा
मुह्यति धर्मकृत्येषु रता कामार्थयोर्दृढ १

अहो मोहन प्रानल्य केवु छे के जे विद्वान् मनुष्यो पण काम
अने अर्थमां आसक्त थया छता धर्मकृत्यमा मुझायछे. आवु मोहन
जोर तोडी श्रीजबुकुमार कोटी धन, स्त्री, परिवारनो त्याग करी
दीक्षा अगीकार करी तेमज धन्नाकुमार तथा शास्त्रीभट्टे मोहनो
नाश कर्यो श्री स्थुलीभद्र के जे पाटलीपुरमा शकटाल मनीना
पुत्र हता अने जे वार वर्ष वेश्याना पैर रखा हता. तेमणे स्त्रीनो
त्याग करी दीक्षा अगीकार करी अने, वेश्याने, गृहे चातुर्मास

कर्युं. त्या वेड्याए पोतानु शरीर देखाय अने विषयाभिलाष थाय तेम नाच कर्यो, कामोत्पादक अनेक प्रकारना गायनो गाया तो पण मुनिर्यश्री स्थुलीभद्र जरा चलायमान थया नहीं अने विषयमा रागी एवी वेड्याने पण वैगगी रनागी. अने ते वेड्याने श्रावकना चार त्रत उचराव्या. अहो आश्चर्यनी बात ठे के, कामनो नाश करवा महामुनियो पर्वतनी गुफाओमा तथा एकात जग्याओ मा गया, केमके त्या काम आगी शक्रे नहि माटे. त्यारे स्थुलीभद्र मुनिवर तो कामना गृहमा प्रवेशी कामनो नाश कर्यो अहो केटलु तेमनु सामर्थ्य ? एवी रीते भव्यजीवोए उत्तम चरित्र श्रवण करी विषय, काम, मोहनो नाश करवो अने ते प्रति जरा मात्र पण इच्छा करवी नहीं अने मन, वचन, कायाथी शुद्ध ब्रह्मचर्य त्रत पाळु.

हवे पाचमु सर्वतः परिग्रह परिमाण विरमण त्रत कहेछे श्री मुनीश्वर महाराजा धनधान्यादिक नव विध परिग्रहनो त्याग करे ठे, कारण के विकल्प सरूपनु कारण परिग्रहछे. परिग्रहथी क्रोध, मान, माया, लोभनी उत्पत्ति थायठे. जेम वहाण अतिशय भारथी समुद्रमा बुडेठे परिग्रहनी वृद्धिथी रागद्वेषनी वृद्धि थायछे. परिग्रहथी दुनीयामा मनुष्य एटली वधी शुचवणमा आवी पडेछे के तेने जरामात्र पण शांति मळती नथी. वळी धनधान्यादिकनी वृद्धिथी मोटाड वयेठे. मनमां मान आवेठे. वळी अदेखाइ पण प्रगट थायठे. वळी परिग्रहनी प्राप्तिना कारणथी प्राणातिपात, असत्य, चोरी, आदि पापस्थान कोनु सेवन करी कर्मार्जन करी जीव अधोगातिमा अवतरती त्या छेदन भेदन ताडन तर्जन शोक, वियोग धुग, तृषा, आदि विविध दुःखो भोगवेठे. वळी परिग्रहथी अज्ञानीजीव र्म साधन करी शकतो नथी परिग्रह मेळववामां केवळ

दुःखज समायुजे, बळी परिग्रह धन उपर ममता भाव राखी मनु-
प्य मरण पामी सर्प, उदर, गीरोलीना अवतार पामेजे बळी परि-
ग्रहनी ममताथी मातपिता भाड परस्पर लडी मरेछे बळी परिग्रह
धनरूप वृद्धि पामेजे त्यारे तेने माचववानी पण चिंता रहेछे.
रत्नेने चोर विगेरे लड जाय एवी चिंता तेना मनमां रहेवाथी
सुखे करी उपपण आरती नथी, परिग्रहथी आरभ, समारभ करी
कर्म्मोपार्जन जीव करेजे परिग्रहधारी खरेखर जडवस्तुने पोतानी
मानी जेतरायछे माटे बैरागी आत्माथी जीवो परिग्रहनो त्याग
करी दीक्षा ग्रही पचमहाव्रत अर्गाकार करेछ अने पुत्र स्त्री मातपिता
विगेरे ससारी कुटुवनो सग्रह जोडेजे अने स्वस्थ चित्ते हु एकलो
छु. आत्माथी अन्य मारु नथी अने हु कोडनो नथी एम अदीन
मना थइ आत्माने शिखामण आपेजे सदगुरूने धारण करेछे.
सयमनी रक्षा अर्थे बस्त्र, पात्र, पुस्तक, रजोहरण, मुखवासिका, धारण
करेछे सयमना उपकरण राखमाथी परिग्रह कहेजातो नथी कहुछे के
मुच्छापारिग्रहोवुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा,

श्री ज्ञानपुत्र वीरमभुए मूर्च्छाने परिग्रह ग्रहोजे माटे हठ क-
दाग्रह करवो नहीं. एम मुनीश्वर परिग्रहनो त्याग करी निर्विकल्प
मन करी आत्मज्ञानमां मग्न रहेजे, अने मुनीश्वर विचारे के आ
वाद्य परिग्रह त्यागी मुनि आत्मानी रुद्धि तरफ लक्ष आपी जुनेजे
तो त्यां अनतज्ञान, अनत दर्शन, अनत चारित्र, आदि रुद्धि भरेली
छे अने ते रुद्धि अविनाशीछे. पोतानाथी कटी जुटी पडवानी
नथी अने ए रुद्धि प्राप्त थवाथी सहज शांति अनुभवायजे, एम
आत्मा ए जाण्यु त्यारे आ वाद्य जड रुद्धिरूप परिग्रहनो त्याग
करो. अने आत्मिक रुद्धि मेठववा मयत्न करवा लाग्या, ध्याना-
दिकनो अभ्यास करवा लाग्या, ए पांचम परिग्रह विरमणव्रत दी-

क्षा अगीकार करी मुनिवर्यो मनत्रचन अने कायाधी परिग्रह धारण करयो नहीं परिग्रह धारण कराववो नहीं. अने परिग्रह धारण करता होय तेनी अनुमोदना करवी नहीं.

छट्टु रात्रीभोजन विरमणत्रत रुहेडे. रात्रीना समयमा मुनीश्वर अशनपान, खादिम अने स्वादिम ए चार प्रकारना आहारनो त्याग करेछे थीवीरप्रभुए रात्रीभोजनमा महा दोष कथ्योछे, माटे आत्मार्थी जीव रात्रीभोजन करे नहि. योग शास्त्र, वर्धमान देशना, आदि ग्रथोमा तथा सूत्रोमा रात्रीभोजन करवाधी महादोष वताव्याछे. वळी अन्य दर्शनीओना शास्त्रमा पण रात्रीभोजन करवाधी दोष वताव्याछे माटे मुनिवर्यो दीक्षा ग्रही रात्रीभोजननो त्याग करेछे. ए रीते पच महात्रत अने छट्टु रात्रीभोजन विरमणत्रतनु अत्रतो सक्षेपथी स्वरूप प्रसंगोपात देखाड्यु. आ प्रमाणे मूल व्रत अगीकार करे, अने चरण सित्तरी करण सित्तरीरूप उत्तर भेदनु जाराधन निर्ग्रंथ मुनिवर्य करे. थीसिद्धसेन दिनाकरसूरिकृत प्रवचन सारोद्धारमा चारित्रना मूळ भेद उत्तरभेदनु तथा चारित्रना उपकरणोनु विशेषत वर्णन कर्णुछे त्यांथी जिज्ञासुए विशेष अधिकार जाणवो हवे दीक्षा अगीकार करी कपायना निग्रहरूप शौच मुनीश्वर धारण करेछे क्षमाधी क्रोधनो पराजय करेछे अने नम्रताभावधी माननो पराजय करेछे अने सरलताधी मायानो नाश करेछे. अने सतोपधी लोभनो नाश करेछे वळी पाच इट्रियोना विषयो जीतवारूप शौच मुनीश्वर धारण करेछे प्रमादनो त्याग करवो ते रूपशौचने दीक्षा अगीकार करी धारण करेछे. प्रमादथकी चौद पूर्वी पण ससारमा पडया माटे आलस्य, निद्रा, विकथा, पारकी निंदा आदि प्रमादनो नाश करी मुनीश्वर अपमत्तपणे रहेछे वळी मुनीश्वर व्यानरूप शौच जे

સર્વ શૌચોમા ઉત્તમઝે તેને ધારણ કરેછે. ધર્મધ્યાન અને શુદ્ધધ્યાન એ બે ધ્યાન આત્મકલ્પાણકારીઝે. તેમા શુદ્ધધ્યાન મુક્તિ પ્રદાતાછે મન વચન અને કાયાના દુષ્ટ યોગનો જય કરવો તેને શૌચ કહેઝે વહી હેય, ક્ષેય અને ઉપાદેયનો ત્રિવેક તેને સત્તમ વિવેક કહેછે. તે શોચને ત્રીક્ષા અગીઝાર કરી મુનિવર્યો ધારણ કરેઝે. ઘાર પ્રકારે તપ કરવો તે પળ શૌચ જાણવો, શ્રી સર્વત્ર કથિત ઢીક્ષામા દયાદિક સર્વ કૃત્ય શૌચરૂપ શરીરની અડર રહેલા આત્માની શુદ્ધિ કરનારઝે. નિશ્ચય ચારિત્ર આત્મસ્વભાવમયછે ણટલે આત્માર્થી ભિન્ન નથી તે ચારિત્રની પ્રાપ્તિ માટે વ્યવહાર ચારિત્રમારણીભૂતછે.

આ સસારમા ક્ષેટલાક જીવો ધર્મનુ નામ પળ જાણતા નથી અને તદનુકૂલ પ્રયત્ન પળ કરતા નથી સસારમા મોટા કહેવાળા ણટલે પોતાને ધન્ય માનેછે પળ પોતે જીવાદિક તત્ત્વ જાણતા નથી અને સાંસારિક કાર્યોમા અહર્નિશ શુયાયા રહેછે, પળ ધર્મારાધન પરાયણ થતા નથી ધર્મનુ આરાધન કરી આત્માને ધર્મન ધનથી છોઢાવવો એજ ઉત્તમ પુરુષોનુ લક્ષણ છે વાકી ધન, પુત્ર, લક્ષ્મીની વૃદ્ધિથી પોતાની વૃદ્ધિ માની અહભાવમા વર્તવુ તે તો અધમ પુરુષોનુ લક્ષણઝે ળી ભરતરાજા, રામ, પાંઢવો વિગેરેએ અતે આ સસારને અસાર સમજી આત્માહિતમા પ્રવૃત્તિ કરી તેમ મવ્ય જીવોએ પળ અધુના સારમા સાર ઢીક્ષાનુ અચલવન કરવુ જોડે ઢીક્ષા ગ્રહ્યા વિના આશ્રવમાર્ગનો રોધ થતો નથી આ સસારને જ્ઞાની પુરુષોષ વહતા અગ્નિ સમાન કહોઝે, વાજીગરની વાજી જેતુ આ સસારનુ સ્વરૂપ જાણી વિવેકી મનુષ્ય ચારિત્રમાર્ગ ગ્રહણ કરેઝે મારુ માર માનતા એવા અનેક જીવો માયાના વશ જ્ઞાનલક્ષ્ય સત્ય આત્મસ્વરૂપ મૂહી ચમરાજ વશ થયા અને વાયઝે. જેમ સમુદ્રમા પાણીના અનેક તરંગો ઉત્પન્ન થાયઝે અને પશ્ચાત્ વિલય

पामेछे तेनी पेठे अनाटिकालथी आससारसमुद्रमां देव मनुष्य तिर्यच अने नारकीतरगे करी जीव अनेकशः शरीर उडतो अने अनेकशः शरीर धारण करतो वर्तेछे. पण अज्ञान दशाथी पामर जीवनी मुक्ति थड नहीं. पण ज्यारे आत्मानु स्वरूप जाणवामा आवेछे त्यारे आत्मा सयममार्गयोगे धर्मना आविर्भाव अर्थे प्रयत्न करेछे, ज्यारे चारित्रमोहनीय प्रकृतिनो क्षय धायछे त्यारे चारित्र आत्मामा प्रगटे छे. कोइ जीव चारित्र मोहनीयने उपशमावेछे. कोइ चारित्र मोहनीयनो क्षयोपशम करेछे. कोइ जीव क्षायिकसमकितयोगे आठमा गुणठाणाथी क्षपकश्रेणि आरोहण करी चारित्र मोहनीयनो क्षायिक भाव करेछे. कोइ जीव उपशम श्रेणि चढी चारित्र मोहनीयरूपनी प्रकृतिने अंगीयारमा गुणठाणे उपशमावेछे अने त्याथी पाडा पडे छे. अने यावत् मिथ्यात्व गुणठाणा सुधी आवेछे.

कोइ उपशम समकित पामी आठमागुणठाणाथी उपशमश्रेणि चढेछे अने कोइ क्षायिक समकित पामी आठमा गुणठाणाथी उपशम श्रेणि चढी अंगीयारमे गुणठाणे जइ मरे तो अनुत्तर विमानमा जायछे. अने कोइ उतरता गुणठाणे पण मरण पामेछे. अनतानुपयी क्रोध, मान, माया अने लोभ तेमज समकित मोहनीय अने मिश्रमोहनीय अने मिथ्यात्ममोहनीयनो क्षायिकभाव कर्या पूर्वे आवता भवजु आयु रागी पाउळथी क्षायिक समकित पाम्यो होय ते जीवने बढायुक्षायिक समकित जाणवु. आयुष्य बधनी अपेक्षाए आवु क्षायिक समकित कहु छे, तच्चवात बहुश्रुतवा केवळी जाणे. ते अशुद्ध क्षायिक समकित जीव उपशम श्रेणि करे एम कहेवायछे. क्षायिक समकित जीव दशमा गुणठाणे यथारयात चारित्र पामी वारमा गुणठाणे ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, अने अतरायरूपनो क्षायिकभाव करी अनतज्ञान, अनंतदर्शन, अनतवीर्य अने क्षायिकभावना

पचलब्धि पामेछे. ते नीचे मुजव, अनतदानलब्धि, अनतलाभलब्धि, अनतभोगलब्धि, अनतउपभोगलब्धि अने अनतवीर्यलब्धि समाप्त थायछे अतरायकर्म क्षय थयुठे एवा परमपरमेश्वर पुरप सदा सुखी छे मुख्यपणे तो ते लब्धियोनी प्राप्ति आत्मस्वभावेछे केमके तेनी क्षायिकभावे प्राप्तिछे. अने जे अनत सामर्थ्य आत्मामा अनाद्वितीय शक्तिरूपे हतु ते व्यक्तिरूपे थइ प्रकाशेछे, अने आत्माना अनत-गुणोनो आविर्भावतेरूप दान, आत्मा पोते पोताने आप्पु ते दान-लब्धि जाणवी. तेमज अनत आत्म सामर्थ्यनी समाप्तिमां किंचित् मात्र वियोगनु कारण रहु नथी तेथी अनतलाभ लब्धि कहेवायडे

वळी अनत आत्मसामर्थ्यनी समाप्ति सपूर्णपणे परमानन्द स्वरूपे अनुभवायडे. तेमां किंचित् मात्रपणे वियोगनु कारण रहु नथी तेथी अनतभोगलब्धि जाणवी.

तथा अनत आत्म सामर्थ्य सपूर्णपणे परमानन्द स्वरूपे समये समये परिणमेछे तोपण तेमा किंचित् मात्र पण वियोगनु कारण रहु नथी. तेथी अनत उपभोगलब्धि कहेवा योग्यछे. तेमज अनत आत्मसामर्थ्यनी प्राप्ति सपूर्णपणे थया छता ते आत्मसामर्थ्यना भोगथी आत्मशक्ति थाके के तेनु सामर्थ्य न श्नीली शके, वहन न करी शके, एम छेज नहीं सदाकाल ते सामर्थ्यछे तेमां जरा मात्र पण न्यूनाधिकपणु थवानु नथी. एवी जे वीर्य शक्ति त्रिकाल सपूर्णपणे वर्तेछे ते अनतवीर्यलब्धि कहेवा योग्यछे.

क्षायिकभावनी दृष्टिथी जाला उपर कथा प्रमाणे ते लब्धिने परमपुरुषने उपयोग होयछे. वळी ए पाचलब्धि हेतु विशेषथी सम-जावा अर्थे जुदी पाडीछे नहीं तो अनतवीर्यलब्धिमां पण ते पावेनो समावेश थइ शकेछे. एम तेरमा गुणठाणे क्षायिकभावनी नवलब्धि भोगवतो परमपुरुष शैलेशीरुरण करी चउदमा गुणठाणे अघा-

તીર્કર્મની તે ગુણઠાણે સ્વવાવવા યોગ્ય જે પ્રકૃતિયો બાકી રહી હતી તે ચતુર્દશા ગુણઠાણે સ્વપાવી સિદ્ધશિલાની ઉપર એક યોજનના ચોવીસ ભાગ કરીએ તેના ત્રેવીસ ભાગ નીચે મૂકી ચોવીસમા ભાગે અવગાહનાએ સયુક્ત તે મોક્ષસ્થાનમાં આદિઅનતમે ભાગે વિરાજમાન થાયછે, ચારિત્રથી પૂર્વોક્ત મોક્ષસ્થાનની પ્રાપ્તિ થાયછે.

અથ દશમવિષય.

૧૦ કર્મનો કર્તા તથા ભોક્તા આત્મા, કર્મનો નાશ શી રીતે કરે ?

પ્રત્યુત્તર—આત્મા સ્વરૂપમા રમણ કરે તો કર્મનો નાશ થાયછે, પરસ્વભાવમાં રમણ કરતો આત્મા કર્મ વાપેછે અને, સ્વસ્વભાવમાં રમણ કરતો કર્મનો નાશ કરેછે, અનતજીવોએ મૂતકાલમા કર્મનો નાશ કર્યો અને અનતજીવો મરણકાલે કરશે, જીવ વે પ્રકારનાછે. ૧ મવ્યજીવ ૨ અમવ્યજીવ.

જેનામા મોક્ષ જવાની યોગ્યતાછે તેને મવ્યજીવ કહેછે. અને જેનામાં વિલકુલ મોક્ષ જવાની યોગ્યતા નથી તેને અમવ્યજીવ કહેછે. અમવ્ય જીવ કદી મોક્ષ પામી શકતો નથી.

આત્મા કર્મનો નાશ શી રીતે કરે તેનુ ઘણુસ્વરૂપ વિવેચન પૂર્વે પ્રાયઃ કથ્યુછે તેથી અત્ર સ્થલે વિશેષ વિવેચન કર્યું નથી. હવે વિચારોકે—મોક્ષતત્ત્વ વંધવિના સમભવે નહીં. અને જેવડે વધ તે કર્મ એમ આત્મા અને કર્મનો સવધ જેવો જિનદર્શનમા ઘટેછે. તેવો અન્યત્ર ઘટતો નથી. કર્મથી મુક્ત આત્મા સિદ્ધસ્થાનમા સાદિ અનતભગીએ રહે છે, ત્યાં પરમાત્મપણે સમયે સમયે અનંતમુખનો ભોક્તા આત્મા રહેછે. કોડ દર્શની દુઃસ્વાત્યતાભાવરૂપ મુક્તિમાનેછે પણ તેમ નથી. આત્માને કર્મનાયોગે દુઃસ્વ થાયછે. તે વિભાવિકછે

एटले विभाविक वस्तु स्वरूप जे दुःख ते आत्माथी दूर थायछे अने आत्मामां सुखउते ते स्वभाविकउते. स्वभाविक वस्तु कदी टळती नथी. तेम आत्मामा जे सुखउते ते स्वभाविकउते एटले आत्मानो सुख शुद्धगुणउते अने आत्मागुणीउते माटे तेनाथी दूर थतो नथी. कोड वादी जडस्वरूप मुक्ति मानेछे मुक्तदशामा आन्माने कोइपण वस्तुनु भान नथी जाम त वादीनु मानवुउते ते अज्ञान विशिष्टउते. कारणके-जडस्वरूप मुक्ति होत तो कोइ मुक्ति पामयानी जरामात्र पण इच्छा करे नहीं. परतु स्याद्राद सत्यदृष्टिथी समजो के मुक्तिपद पामेलो आत्मा केवलज्ञानथी दरेक पदार्थने जाणेउते. समस्त वस्तुनु ज्ञान सिद्धात्मामा समये समये प्रवर्तेउते, वळी सामान्य उपयोगरूप केवलदर्शनथी सिद्धात्मा सर्वजगत्ने देखेछे अने मुक्तात्मा अव्या-वाधगुणथी अनन सुख भोगवेउते, माटे जडस्वरूप मुक्ति नथी. ज्ञान स्वरूप जे आत्मा ते जडरूप वनी जाय तो ते मुक्ति कहैवाय नहीं, वळी आत्मा ज्ञानगुणथी भिन्न थाय नहीं कारणके-आत्मानो स्वभाविक ज्ञानगुणउते ते ज्ञानगुण आत्माथी त्रिकाले पण जुदो पडे नहीं.

वादी-जो मुक्तिमा आत्माने ज्ञानगुणवाळो मानीए तो मुक्तात्मा ज्ञानथी सर्व जगत्जीवोने थतु दुःख जाणे, त्यारे ते दुःख मुक्तात्माने थाय, माटे ज्ञानगुण मुक्तिमा मानवो अयुक्तउते

सुगुरु-हे सत्य तत्त्वाकाक्षी भव्य-जरा विचार करशो तो मालुम पडशे के-मुक्तात्माने अनतज्ञानथी तेमा किंचित् विरोध आवतो नथी जेम दृष्टात-कोइ मनुष्य कोइस्थाने पडेछु तालपु-टविप जाणे अने तेने देखे तेथी तने कइ दुःख थतु नथी, तेम सिद्धपरमात्मा केवली भगवान्ने पण जगत्ना जीवोने दुःखी जाणयाथी ते दुःख पोताने लागतु नथी तेम जगत्ना जीवोमा शातावेदनी जोसुथोते शातावेदनीय कइ सिद्धमभुना

आत्माने लागती नथी—कारणके वस्तुओ थकी पोतानो आत्मा न्यारोडे, तेथी ते विरोध सिद्धभगवान्मा घटतो नथी.

आशका—सिद्धात्माओ अनत सुख समये समये भोगवेछे ते केवल ज्ञानथी के, केवलदर्शन गुणथी—

समाधान—सिद्धात्माओ केवलज्ञानथी सर्व वस्तु जाणेछे अने केवलदर्शनथी सर्व पदार्थोने देखेछे अने सिद्धात्माओ सुख भोगवेछे ते अव्यापक नापना गुणथी भोगवेछे तेथी पूर्वोक्त विरोधनो सर्वथा नाग थायछे.

ते उपरथी सि ध स्पष्ट भासेछे के जडस्वरूप मुक्ति नथी परंतु शुद्ध चैतन्य स्वरूप मुक्तिछे.

कोइवादी आकाशनी पेठे सर्वत्र व्यापिनी मुक्ति मानेछे ते पण यथार्थ घटना उहिरु छे. कारणक, मुक्तआत्मा आकाशनी पेठे सर्वत्रव्यापक नथी. सर्वत्रव्यापक आत्माने मानता वध मोक्ष व्यवस्था घटती नथी जेम आकाश सर्वत्र व्यापक छे तो ते कोइनाथी वधाय पण नही अने उधावाना अभावे मोक्ष पण घटे नहीं. तेम आत्माने कर्मपण सर्वत्र व्यापक मानताथी वधाय नही अने वधाभावे मोक्ष पण कहेवाय नहि एम दोष स्पष्ट भासेछे, माटे सर्वत्र व्यापिनी मुक्ति सिद्ध ठरती नथी सर्वत्रव्यापिनी मुक्ति मानता प्रथम सर्वत्रव्यापक आत्मा मानवो पडशे. अने सर्वत्रव्यापक एना आत्माने वध मोक्ष घटतो नथी वळी सर्वत्रव्यापिनी मुक्ति मानवामा अनेक विरोध आवेछे, माटे त्रिशलातनये श्री सर्वज्ञमहावीरे प्ररपेली मुक्ति यथातथ्य सत्य छे अने ते प्रमाणे मानवामा कोइ जातनो विरोध आवतो नथी

वळी कोड मतवादी मुक्तिमा स्वामी सेवक भाव स्वीकारेछे ते पण मुक्तिहीनछे, कर्म खप्याथी सर्व आत्माओ मुक्तिमा सरखा

छे. सर्व आत्माओ पोतपोताना स्वरूपे परमानंद सुखविलासी छे. सर्व सिद्धात्माओमा कवलज्ञान अने करलदर्शन छे. कोड नानु मोडु नथी. अष्टकर्म स्वप्याथी अष्टगुण सिद्धना जीवोमा प्रगट्या छे पोताना गुणना कर्ता प्रत्येक सिद्ध भगवान् छे. विभावदशाथी रहित स्वस्वभावभोगी थयाछे माटे परनु कर्तापणु लेश मात्र नथी. वळी सिद्धना जीवोने शरीर नथी, लेश्या नथी, मन नथी, काया नथी, एक पुद्गल परमाणु सरखो पण सिद्धना जीवोमा रहो नथी अलेशी, अशरीरी, अचल, सिद्धना जीवोछे.

एम मानेछे के, मुक्तिमा वेदलाक वर्ष पर्यंत रहीने जीव पाछे ससारमा आवेछे पण ते योग्य नथी. कारणके कर्मनो नाश थता सिद्ध स्वरूपता प्रगटे छे ते अवस्था सादि अनतमें भागेछे पटले सिद्धमा गयानी आदि छे पण अनत नथी अर्थात् सिद्ध थया पछी ससारमा आवता नथी. ससारमा आववानु कारण कर्म छे ते कर्मनोतो प्रथमथीज नाश करी मुक्ति गयाछे माटे ससारमा अवतार लेवानु काम निलकुल नथी. वळी कोइ कहेशेके, सिद्धना आत्माओने नवां कर्म लागे ते पण ज्ञानहीन वचनछे कारणके, कर्म लागवानु कारण आत्माने राग अने द्वेष छे अने रागद्वेषनो सर्वथा नाश करी सिद्धात्मा थया छे माटे नवां कर्म पण सिद्ध परमात्माने लागता नथी सदाकाल शुद्ध स्वरूपे निज भोगवेछे, तेथी सिद्धना आत्माओ कदापि काले ससारमा पाछा जन्म धारण करता नथी सिद्धना जीव अनवतारी छे कोइ एम कहेशेके ज्यारे ते परमात्मा थया अने सिद्ध शिला नी उपर सिद्ध क्षेत्रमा रखाछे अने त्याथी पाछा दुनीयामा आववा ना नथी अने जगत्ना लोकोने दुःखमाथी वचावता नथी त्यारे तेमणे शो परोपकार कर्पो कहैवाम, तेना उत्तरमां समजवानु के,

सृक्तात्मा ने प्रकारनाछे एक केवलज्ञान संपादन करी आयुष्य विशेषे रहेला अने बीजा चउदसु गुणस्थानक स्पर्शी सिद्ध स्थानरुमा गयेला. हवे तेरमा गुणस्थाककवर्ती केवलज्ञानी महात्माओ भाषा वर्गणाना पुद्गलयोगे उपदेश आपी तत्त्वस्वरूप समजावी जगज्जीवोनु कल्याण करेछे. अने सिद्धमा गया वाद सिद्धस्वरूपे धर्ता जगत् जीवो सिद्धनु ध्यान करी स्वस्वरूप प्रगटावेछे एटले तेमा पण कल्याण प्राप्तिमा जगज्जीवोप्रति सिद्ध परमात्मा निमित्त कारणीभूत छे, ते विना द्रव्यदयारूप उपकार करवा अर्थे ते सिद्ध परमात्मानि स्वाभाविक शक्ति नथी कारणके ते बीतराग थयाछे, सर्वजीवना कल्याणमा उपादान कारणनी अपेक्षाएतो पोतेज कारणछे, अन्य तो तेमा निमित्त कारण छे. आ वात सूक्ष्मदृष्टिथी सद्गुरु पासे समजता यथातथ्य समजाशे.

कोइ जीव तो इद्र आदिदेवतारूपे थबु तेनेज मुक्ति मानेछे. कारण के तेनाथी आगळसूक्ष्म ज्ञानदृष्टिथी जोवायु नहि तेज कारण छे, जेम के इशुस्त्रीस्ति आदि मतवाला एम मानेछे के परमेश्वर सुवर्णना सिंहासन उपर बेठोछे अने तेना मस्तके मुकुट विगेरेछे एम कहेवाथी समजायछे के ते देवयोनि पैकी कोइ देवने परमेश्वर मानी विश्वासयोगे एममाने छे. कारण के पूर्व भवनो रागी अने सबधी कोइ देव आ प्रमाणे करी शके अने तेथी भ्रातिमा फसावु पडे. एम स्त्रीस्ति धर्ममा होय तो ते अप्रमाण कही शक्याय नही, माटे सर्वांशे परिपूर्ण अनुभवगम्य जिनदर्शनमा जे मुक्तिस्वरूपउ ते सत्यछे.

मुक्तिमां अनंत सिद्धोनी अवगाहना भेगी होयछे.

शिष्य-हे गुरो ! अवगाहनानु शु स्वरूपछे अने ते अवगाहनारूपी छे के अरूपी ?

ગુરુ-હે વિનેયશિષ્ય ! આત્મા જ્યારે શરીર ત્યાગીને મુક્તિમાં જાય છે ત્યારે શરીરના ત્રણ ભાગ કરીએ તેમાંથી એક ભાગ ત્યાગીએ. ૨ પ્રમાણમાન શ્રાક્ષાશમદેશમા આત્મા અસરય પ્રદેશથી વ્યાપ્તિને રહે છે તે અવગાહના જાણત્રી. અને તે અવગાહના અરૂપી છે.

શિષ્ય-એક સિદ્ધક્ષેત્રમા અનત આત્માઓ કેમ કરી સમાય ?

ગુરુ-એક ઓરડામા એક દીપક કરીએ છીએ તો પણ તેની જ્યોતિ સમાય છે તેમ હજારો દીપક કર્યાં હોય તો તે દીપકોની જ્યોતિ (પ્રકાશ) પણ સમય છે તેમા કંઈ હરકત પડતી નથી. વહી દીપકના પ્રકાશના પુદ્ગલરૂપી છે તો પણ સમાઈ જાય છે તો અરૂપી એવા અનત આત્માઓ સિદ્ધક્ષેત્રમા સમાય તેમાં કિંચિત્ પણ વિરોધ જણાતો નથી.

શિષ્ય-ત્યારે સિદ્ધાત્મા ત્યાગી અલોકમા કેમ જઈ શકતો નથી,-

ગુરુ-સિદ્ધાત્મા અક્રિય છે ગમનાગમન ક્રિયાથી વિરામ પામ્યાં છે તેથી ઉપર જઈ શકતા નથી કારણ કે અક્રિયપણ છે અને અલોકમા ધર્માસ્તિમાય પણ નથી માટે સિદ્ધ ત્મા જઈ શકતા નથી ધર્માસ્તિમાય તો ફક્ત ગમનમા પ્રવર્તેલા પદાર્થોને સાહાય્ય આપી શકે છે.

શિષ્ય-ત્યારે આ આધિવ્યાધિપાધિમય જગતમા શું સાર છે. શાથી અનત દુઃખ નાશ પામે ?

ગુરુ-શિવપટ આરાધ્ય, જગત્મા સમજતું અને તેજ સાધ્ય કરવા લાયક છે. તે પદની સમાપ્તિથી જ સર્વ અલક શાશ્વત સુખની માપ્તિ થાય છે. શ્રી ગુણસ્થાનક ક્રમારોહમા વધુ છે. યથા

શ્લોક

યદારાધ્ય ચયત્સાધ્ય, યદ્ધચેય યત્તદુર્લભ,
ચિદાનદમય તૈત્તે. સપ્રાપ્ત પરમ પદ.

भावार्थ—जे शिवपद आराध्य, साध्य, ध्येय, दुर्लभछे. ते पद ने ज्ञानीओए शुद्ध्यानथी प्राप्त कर्युछे.

आत्मा तेज ब्रह्मस्वरूपछे. आत्माज शिवस्वरूपछे, आत्माज परमात्मरूपछे. सिद्धत्वपणु आत्मानो शुद्ध पर्यायछे, सम्यग् मोक्ष स्वरूप वीतराग वचनोथी प्रतीत थायछे, ज्यारे बधतत्वनो नाश थायछे. त्यारे मोक्षतत्त्वनी उत्पत्ति थायछे. मोक्षतत्त्वथी आत्मा भिन्न नथी. मोक्षमयी आत्माछे. ज्ञान, दर्शन अने चारित्र्यथी मोक्ष प्राप्तछे. ज्ञान, दर्शन अने चारित्र्य गुणमय आत्माछे.

अज्ञानी जीव आत्मानो शुद्ध स्वभाव नहीं जाणतो छतो राग द्वेषादि करेछे, त्यारे ज्ञानी जीव आत्मस्वभाव जाणतो छतो राग द्वेषनो त्याग करी कर्मथी रहीत थइ मोक्षपद प्राप्त करेछे. ज्ञानी आत्माना स्वरूपमा सदाकाल रमण करी अखडानदानुभव प्राप्त करेछे. जेम हसने मान सरोवरमा रतिछे तेम आत्मज्ञानीने आत्मस्वरूपमा रति होयछे. जेम चक्रोर चद्रमाज प्रीति धारण करेछे. तेम आत्मज्ञानी आत्मस्वभावरमणतामा प्रीति धारण करेछे. सीतानी जेम राममा प्रीति तेम आत्मार्थीनी आत्मस्वरूपमा प्रीति रमणता भासनता वर्तेछे. आत्मज्ञानीने शास्त्ररुर्त्ता श्रमण कयेछे. श्रीआनंदघनजी महाराज पण रुहेछे के—

आतमज्ञानी श्रमणरुहावे, बीजा तो द्रव्यलिंगीरे

बळी श्रीयशोविजयजी उपाध्याय कहेछेके, समाधिशतकमां—

यथा

केवल आतम बोधहे, परमारथ शिव'पंथ

तामे जिनकु मगनता, सोहि भाव निग्रंथ.

परमार्थ शिवनो पथ केवल आत्मज्ञान छे तेमा जे भव्यात्माने मग्नताछे ते भाव जाणवा. निक्षेप भेडथी निर्ग्रंथ चार म-

કારનાછે ૧ નામ નિર્ગ્રંથ ૨ મ્યાપના નિર્ગ્રંથ ૩ દ્રવ્ય નિર્ગ્રંથ ૪ ભાવનિર્ગ્રંથ પૂર્વોક્ત ચાર નિર્ગ્રંથમા ભાવ નિર્ગ્રંથસર્વત. મોક્ષસાધક જાણવા. કારણકે, ભાવનિર્ગ્રંથપણાની પ્રાપ્તિ વિના કદાપિ કાલ્ મોક્ષપદની પ્રાપ્તિ થતી નથી સર્વપર વસ્તુ ત્રિપયોયી મનને સેંત્રી આત્મસ્વરૂપના ધ્યાનમાં મનને સ્થિર કરે. શ્વાસોશ્વાસે આત્માનુ સ્મરણ કરી ભવ્ય જીવો કર્મ સ્વપાવી પરમાત્મપદ પ્રાપ્ત કરેછે જ્ઞાની પુરુષ આત્મમાત્ર સ્થિરતા કરે. અને આત્મભાવના સદાકાલ ભાવી અનત સુખમય પોતાને છેલ્લે નીચે પ્રમાણે આત્મભાવના ભાવે.

ગાથા.

एगो मे सासउं अप्पा, नाण दंसण सजुओ,
सेसामे वाहिराभावा, सव्वे सजोग लस्सणा,

ભાવાર્થ—એક મારો આત્મા શાશ્વત છે. ત્રિજાતમાં પણ આત્માનો નાશ થતો નથી વળી આત્માનુ સ્વરૂપ દર્શાવેછે. જ્ઞાનતર્જન સંયુત જ્ઞાન અને દર્શનાદિ અનંતગુણમય આત્માટે

આત્માથી દૃશ્યમાન સર્વ પદાર્થો મિનઝે સર્વ પૌદ્ગલિક પદાર્થો સંયોગ વિનાશી ધર્મવાલાટે તે પૌદ્ગલિક પદાર્થમાં મારાપણું કંઈ નથી રૂપીપદાર્થથી મિત્ર હુ આત્મા શુદ્ધચૈતન્યમય લક્ષણ સ્થિતિદુ. આત્માનો પ્રકાશ કરવાને અન્ય પદાર્થની જરૂર નથી. આત્મા પોતાની મેલે પોતાના સ્વરૂપનો પ્રકાશ કરેટે. કત્તુકના ત્યાગથી જેમ સર્પ નષ્ટ થતો નથી. તેમ શરીર નાશથી આત્મા નષ્ટ થતો નથી. ત્રિકાલમાં આત્મા પોતાના શુદ્ધ સ્વરૂપથી ભ્રષ્ટ થતો નથી

મૂર્ત મૂઢ મનુષ્ય શુક્તિમાં રજતની ભ્રાતિ ધારણ કરી જેમ મિથ્યાપ્રયાસ ધારણ કરેછે તેમ વહિરાત્મા, પરપુદ્ગલ્યસ્તુમા આત્મત્ત શુદ્ધિથી ભ્રાતિ ધારણ કરી મિથ્યા ચતુર્ગતિ ભ્રમણરૂપ દેશ પાત્ર બનેછે.

सहज स्वाभाविक आत्मिक गुणानंतनी आविर्भावतारूप सिद्ध-
 तानु हेतु सम्यग्ज्ञानछे सम्यग्ज्ञाननी प्राप्ति विना भवसततिनो उच्छेद
 थतो नथी तेम सम्यग्दर्शननी प्राप्ति विना सम्यग्ज्ञान कही शकतुं
 नथी. अनेकात स्याद्वाद सत्तामय आत्मस्वरूपाद्रि पदार्थोनु यथार्थ
 भासनपणु, श्रद्धानपणु थाय त्यारे समकित कथायछे अने समकित
 पूर्वक जे जाणपणु ते सम्यग्ज्ञान कहेवायछे सम्यग्ज्ञाननी प्राप्ति
 रूपसूर्य जे भव्यजनना हृदयमा प्रगटचोछे तने मिथ्यास्वरूप अधकार
 आच्छादन करी शकतु नथी. ज्ञानरूप सूर्योदयथी सर्व पदार्थोनों
 भास थायछे त्यारे मोक्षमय आत्मा स्वयमेव प्रकाशेछे. अने कर्मनो
 नाश थायछे नवतत्त्वमा जीवतत्त्व आदेयछे, सवर निर्जरा मोक्ष ए
 त्रण तत्त्व उपादेयछे, पुद्गल द्रव्य अजीवछे. पुण्य पाप पुद्गल
 स्कंधोछे. ते पुद्गल स्कंधोने आत्मा पोताना स्वरूपमा रमतो दूर
 करेछे. ज्यारे आत्माना असत्यप्रदेशोनी साये कर्मरूप पुद्गल
 स्कंधोनों एक परमाणु सरखो पण रहेतो नथी. त्यारे आत्मा निरा-
 वरण निर्ममपद प्राप्त करी सादि अनत स्थिति पामेछे. एक समयमा
 गुणस्थानातीत थएल आत्मा आकाश प्रदेशनी समथ्रेणिए अन्यप्र-
 देशोने स्पर्शाविना सिद्धिस्थानमा विराजेछे. त्या मिद्धमा किंचित्
 दुःख नथी. दुःख सर्व पुद्गलना सयोगथीछे निर्मल परमात्माने
 परमाणु मात्रनो सवध नथी. तेथी त्यां लेश पण दुःख नथी. आधि
 व्याधि अने उपाधि ए त्रण प्रकारना दुःखथी रहित आत्मा अनत
 सुखमय वर्तेछे सर्वथा प्रकारे दुःखनो अभाव मुक्तिस्थानमां छे.
 अनत सिद्धजीवो लोकना अग्रभागे विराज्याछे अने तेओ सदा-
 काल आत्मस्वभावमा रमण करेछे. अनत ज्ञानदर्शन चारित्ररूप-
 रत्नत्रयीनी लहेरमा स्वगुण भोगवेछे, त्याधी कटापिकाळे संसारमा
 पांछा आवी जन्म-मरण धारण करता नथी. सर्व जगतूने ज्ञानधी-

ફારનાછે. ૧ નામ નિર્ગ્રંથ. ૨ સ્થાપના નિર્ગ્રંથ. ૩ દ્રવ્ય નિર્ગ્રંથ
 ભાવનિર્ગ્રંથ પૂર્વોક્ત ચાર નિર્ગ્રંથમા ભાવ નિર્ગ્રંથસર્વત. મોક્ષસ
 જ્ઞાણવા. કારણકે, ભાવનિર્ગ્રંથપણાની પ્રાપ્તિ વિના કદાપિ કાલે
 ક્ષપદની પ્રાપ્તિ થતી નથી સર્વપર વસ્તુ વિષયોથી મનને
 આત્મસ્વરૂપના ધ્યાનમાં મનને સ્થિર કરે શ્વાસોશ્વાસે આત્મ
 સ્મરણ કરી ભવ્ય જીવો કર્મ સ્વપાવી પરમાત્મપદ પ્રાપ્ત કરેછે.
 પુરુષ આત્મમાજ સ્થિરતા કરે. અને આત્મભાવના સદાકાલ
 અનત મુખમય પોતાને લેખે નીચે પ્રમાણે આત્મભાવના ભાવે.

ગાથા.

એગો મે સાસર્ઠ અપ્પા, નાણ દંસણ સજુઓ,
 સેસામે વાહિરાભાવા, સવ્વે સજોગ લક્કણા,

ભાવાર્થ-એક મારો આત્મા શાશ્વત છે. ત્રિફાલમા પ
 ત્માનો નાશ થતો નથી વઝી આત્માનુ સ્વરૂપ દર્શાવેછે. ઃ
 સંયુત જ્ઞાન અને દર્શનાદિ અનતગુણમય આત્માઠે

આત્માથી દૃશ્યમાન સર્વ પદાર્થો ભિન્નઠે. સર્વ પૌદ્ગર્
 થી સયોગ વિનાશી ધર્મવાલાઠે તે પૌદ્ગલિક પદાર્થમા
 કંઈ નથી રૂપીપદાર્થથી ભિન્ન હુ આત્મા શુદ્ધચૈતન્યમય
 ક્ષિતહુ. આત્માનો પ્રકાશ કરવાને અન્ય પદાર્થની જરૂર ન
 પોતાની મેલે પોતાના સ્વરૂપનો પ્રકાશ કરેછે. કુચુકુ
 જેમ સર્પ નષ્ટ થતો નથી. તેમ શરીર નાશથી આત્મા ન
 ત્રિકાલમા આત્મા પોતાના શુદ્ધ સ્વરૂપથી ભ્રષ્ટ થતો ન
 મૂર્ખ મૂઠ મનુષ્ય શુક્તિમાં રજતની ધ્રાતિ ધાર
 મિથ્યાપ્રયાસ ધારણ કરેછે તેમ વહિરાત્મા, પરપુદ્ગલ
 ત્મત્વ ચુદ્ધિથી ધ્રાતિ ધારણ કરી મિથ્યા ચતુર્ગતિ ભ
 પાત્ર બનેછે.

आत्मद्रव्य हु छु. सूर्य चंद्रादिनी सहाय विना मारो शुद्ध ज्ञान-
रूप प्रकाश समये समये वर्तेछे. त्रण लोकना पदार्थनी उत्पादव्यय
त्रौव्यतानी अनतता मारा शुद्धज्ञानमा ज्ञेय स्वरूपे परिणमी समये
समये भासेछे, ते ज्ञानगुण मारोछे हु ज्ञानत्रु पात्र छु. धर्मास्ति-
कायादिकथी हु भिन्न छु तनु-पनादिक पदार्थी माराथी भिन्नछे.
स्वद्रव्यादिकथी युक्त रत्नत्रयीनो स्वापी आत्मा तेज हुछु. आत्रु
भेद ज्ञानरूप अख मोहनो नाश करेछे माटे सर्व परभावथी भिन्न
एवा आत्मामा रमणता करवी. बळी जे भेदज्ञानीछे ते औदयिक
भावमा लेपातो नथी. जेम आकाश कादवथी लेवातु नथी तेम
अत्र समजत्रु.

बळी अध्यात्म विदु ग्रथमा कथु छे के-

श्लोक.

स्वत्वेनस्वं परमपिपर त्वेनजानन्समस्ता
न्यद्रव्येभ्यो विरमणमिति चिन्मयत्व प्रपन्न
स्वात्मन्येवाभिरतिमुपनयन् स्वात्मशीली स्वदर्शी ॥
त्येवंकर्त्ता कथमपिभवेत् कर्मणो नैपजीवि. ॥ १ ॥

जेणे आत्मामा आत्मपणु जाण्युंछे, अने पुद्गलादिकमा पर-
पणु जाणी समस्त अन्य पदार्थीथी विराम पाम्योछे अने ज्ञानमय-
पणाने पाम्योछे. पोताना आत्मामा आनद्र पापी स्वस्वरूपनो दर्शी
थयोछे एवो आत्मा शी रीते कर्मनो कर्त्ता बनी शके? अर्थात् एवी
अ-यात्मद्रशामा रमण करनार जीव कर्मनो कर्त्ता बनतो नथी. पण
पोताना आत्मस्वभावनो कर्त्ता थायछे. आत्माना स्वरूपमा रमण
करनार योगीश्वरने जे मुख थायछे ते अनवधि मुख जाणत्रु. पर-
स्वभावथी रहित एवा मुनीश्वरने जगत् तृणवद् जाणत्रु. अर्थात्

ભાવાર્થ—પરમાત્મતત્ત્વ સ્વાભાવિક સદાકાલ આનંદરૂપછે વ્હી શુદ્ધ નિશ્ચયનયથી જોતા પરમાત્મતત્ત્વ ફેવા પ્રકારનુછે તે જાણાવે છે કે—સમસ્ત પ્રકારના સકલ્પ અને વિકલ્પથી રહિતછે, એવા પરમાત્મતત્ત્વમા સહજ સ્વરૂપમા લીન થઈલા ભવ્યો સદાકાલ વસેછે, એનુ પરમાત્મતત્ત્વ યોગી પોતાનો મેઢે બનાયાસે જાણેછે ઉત્કૃષ્ટ આલ્હાદથી સપન્ન અને રાગદ્વેપરહિત આત્મા આ શરીરમા વસ્યોછે તેજ હુ પરમાત્માહુ ઈમ જે જાણેછે તે પઢિત જાણવો 'પરમાત્મસ્વરૂપ એવો આત્મા સસારમા પરિભ્રમણ કરેછે તેનુ શુ કારણ છે તે દર્શાવેછે.

ગાથા

આયા નાણસહાવી, દસણસીલોવિસુદ્ધસુહરૂવો ॥
સો સસારે ભમદ્, એસો દોસો શુ મોહસ્સ ?

આત્મા જ્ઞાનસ્વભાવી અને અનત દર્શનગુણમયછે વ્હી તે નિશ્ચયથી વિશુદ્ધ તથા અનત સુખવાનુ છતા સસારમા પરિભ્રમણ કરેછે તેમા મોહનો ઢોપછે માટે આત્માથી ભવ્ય જીવ મોહનો જય કરે મનમા વિચારે કે આ દુનીયામાની સર્વ જડ વસ્તુઓ મારી નથી અને હુ તેનો નથી એમ ભાવતા મોહરિપુનો જય કરી શકાય છે ત્યારે હવે મારુ શુ એમ જિવાસા શિવ્વને થતા ગુરુ મહારાજ કહે છે કે—

શ્લોક

શુદ્ધાત્મદ્રવ્યમેવાહ, શુદ્ધજ્ઞાનગુણો મમ
નાન્યોઽહસિદ્ધબુદ્ધોઽહ, નિર્લેપોનિષ્ક્રિયઃ સદા ॥૧૧॥

સકલ પુદ્ગલના આશ્લેષથી રહીત જ્ઞાન, દર્શન, ચારણ, જ્ઞાનાપાધાદિ અનત ગુણપર્યાયમયઅસરૂપ પ્રદેશીશુદ્ધ

वळी भव्यपुरुषोए समजवु के-अहं अने ममपणु पोताना आत्मामा नथी. ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप रत्नत्रयीनो स्वामी हुछु अन्य किंचित् वस्तु मारी नथी. आत्मिक धन तेज मारुडे. अन्य मारु नथी. आत्मस्वरूप जडमा कल्पे तो जन्मनी वृद्धि थायछे. अने आत्मस्वरूप आत्माजाज धारी निश्चय करे, स्वस्वभावमां रमे तो मोक्षनी प्राप्ति थायछे यथा समाधिगतक-

आपभावना देहमे, देहंतरगति हेत ॥

आपबुद्धि जो आपमे, सोविदेहपददेत ॥ १ ॥

भावार्थ-सारमा सार के-आत्मना स्वद्रव्यादिक चतुष्टयमां आत्मत्वपणु धारण करी एरु चित्तथी आत्मभ्यान करे ते ससार चक्रमाथी छूटेछे. आत्मा पोतेज परमात्मरूप वनेछे. ते वतावेछे.

समाधिगतक.

भविशिवपददे आपकु, आपहि सन्मुखहोइ ॥

तातेंगुरुहे आत्मा, अपनो ओर न कोइ ॥ १ ॥

आत्मा पोते पोताना सन्मुख थायछे, त्यारे पोते पोताने शिवपद आपेछे. ते माटे निश्चय नयथी जोता आत्मा पोते पोतानो गुरु छे, आत्मानो अन्य सोइ गुरु नथी. निश्चयनयथी पोतानो गुरु आत्मा छे, पण तेजु समजीने व्यवहारथी परमोपकारक सद्गुरुनु आलवन मूरुवु नहि पोतानी सा यदशामां सद्गुरुनु आलवन पुष्टिनिमित्त कारणछे. सद्गुरुना आलवनथी आत्मानी शुभपरिणति थायछे. राग द्वेषमा परिणमजु ते परपरिणति छे. बहिरात्मा परपरिणतिने पोतानी करी मानेछे. समय अगीकार करीने पण जे भिक्षु रागद्वेष परिणामयुत परपरिणतिमा राचेछे, माचेछे ते द्रव्यमाधु जाणवो कहुछेके-

मुनीश्वरने जगत् निस्तार लागेछे. अने आत्मस्वरूपमाज सार लागेछे. कह्यु छे के-ज्ञानसारमा देवचद्रकृत टीकामां

गाथा.

तिणसंधारनिसिन्नो, मुणिवरो भठरागमयमोहो ॥

जपावइ मुत्तिसुइ, कत्तो तं चक्रवट्टीवि ॥ १ ॥

भावार्थ-नष्ट पाप्माछे राग, द्वेष, मट, मोह, ते जेना एवा मुनिवर्य तृणना सधारमा वेठा छता जे मुख पामेछे ते मुख चक्रवर्तिने पण क्याथी होय, अर्थात् मुनिवर्यने आत्मस्वभावे रमण करतां जे मुख थायछे ते सुखनो लेश मात्र चक्रवर्तिने नथी पर भावमा रमण करनार चक्रवर्ति मुरपतिने आत्मिक मुख प्राप्त थतु नथी. कह्यु छे के-ज्ञानसारमा देवचद्रकृत टीकामा

गाथा

जेपरभावे रत्ता, मत्ताविसयेसुपाव बहुलेसु ॥

आसापासनिवळा, भमति चत्रगइ महारत्ने ॥

जे भव्यो परभावमा मद्रछे. पंचेन्द्रियना विषयोमा जे मत्त थया छे, अने आशापाशथी जे बधायाछे ते चतुर्गतिरूप महाअरण्यमा परिभ्रमण करेछे, परभावमा आसक्त जीवो समये समये सात वा आठ कर्म ग्रहण करी पुनः पुन पुनर्जन्म धारण करेछे माटे परभावमा रमबु ते आत्माने योग्य नथी जडवस्तुमा किंचित् पण सुख नथी परमा थतो रागभाव तेने परिहरी पोताना आत्मामा जे खोज करेछे ते परम सुख पामेछे. यथा समाधिस्तक-

रागादिकजबपरिहरी, करे सहजगुणखोज,

घटमे भी प्रगटे तदा, विदानदकी मोज " १ ॥

वळी भव्यपुरुषोए समजवु के-अह अने ममपणु पोताना आत्मामा नथी. ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप रत्नत्रयीनो स्वामी हुछु अन्य किंचित् वस्तु मारी नथी. आत्मिक धन तेज मारुडे. अन्य मारु नथी. आत्मस्वरूप जडमा ऋले तो जन्मनी वृथि थायछे. अने आत्मस्वरूप आत्मामाज धारी निश्चय करे, स्वस्वभावमा रमे तो मोक्षनी प्राप्ति थायछे यथा समाधिश्तक-

आपभावना देहमें, देहंतरगति हेत ॥

आपबुद्धि जो आपमे, सोविदेहपददेत ॥ १ ॥

भावार्थ-सारमा सार के-आत्मना स्वद्रव्यादिक चतुष्टयमा आत्मत्वपणु धारण करी एक चित्तथी आत्मभ्यान करे ते ससार चक्रमाथी छूटेछे. आत्मा पोतेज परमात्मरूप बनेछे ते वतावेछे.

समाधिश्तक.

भविशिवपददे आपकु, आपहि सन्मुखहोइ ॥

तातेगुरुहे आतमा, अपनो ओर न कोइ ॥ १ ॥

आत्मा पोते पोताना सन्मुख थायछे, त्यारे पोते पोताने शिवपद आपेछे. ते माटे निश्चय नयथी जोता आत्मा पोते पोतानो गुरु छे, आत्मानो अन्य कोइ गुरु नथी निश्चयनयथी पोतानो गुरु आत्मा छे, पण तेवु समजीने व्यवहारथी परमोपकारक सद्गुरुनु आलवन मूरुनु नहि. पोतानी सायदशामा सद्गुरुनु आलवन पुष्टिनिमित्त कारणछे. सद्गुरुना आलवनथी आत्मानी शुद्धपरिणति थायछे. राग द्वेषमा परिणमवु ते पग्परिणति छे. रहिरात्मा परपरिणतिने पोतानी करी मानेछे सयम अगीकार करीने पण जे भिक्षु रागद्वेष परिणामयुत परपरिणतिमा रावेछे. माचेछे ते द्रव्यसाधु जाणरो.

परपरिणतिपोतानीमाने, क्रियागर्वे गहेलो ।
 उनकु जिनकहो केम कहिए, सो मूरखमे पहेलो--परम
 जेनभावे ज्ञाने सवमांहि, शिवसाधन सहहीए;
 नाम भेखसु काम न सीजे, भाव उदासी रहिए -परम
 ज्ञान सकलनय साधन सांगे, क्रिया ज्ञानकी दासी,
 क्रिया करत धरतु हे ममता, आइ गलेमे फांसी--परम

इत्यादि समजी स्वस्वभावमा रमण करवु. एज सारमा सार
 आत्महित कर्तयनी पराकाष्ठा जाणवी सर्व पुद्गलभावमांधी प्रीति
 हठावी एरु आत्मामा प्रीति जोडनी सर्व जगत् प्रपच दुःखमय छे
 एम आत्मार्थीए सतत अत करणमा भावना भाववी. प्रथम वाल
 जीवने बाह्य वस्तुमां सुख ज्या त्यां लागेछे अने अतरमां उतरवु ते
 महा दुःख लागेछे, पण ज्यारे द्रव्यानुयोगनु ज्ञान थायछे अने आ-
 त्मत्वनी सम्यक् श्रद्धा थायछे त्यारे अतरमा एटले आत्मस्वरूप
 मां सुख लागेछे अने बाह्य जगत्मा दुःख भासेछे. अमृतरस भो-
 जनना करता पण ज्ञानीने आत्मस्वभावमा अनतगुण्य विशेष सुख
 लागेछे. अमृतरसभोजननु सुरा क्षणिक छे अने आत्मसुख तो
 नित्यछे माटे ते अनुपमेय छे. आत्मसुखनु वर्णन करोडो जिह्वापी
 लाखो वर्ष सुधी वर्णन थता पण कदापि पुरु थतु नथी आत्मिक
 सुख अवर्ण्य छे

अनुभवज्ञाननी ज्यारे प्राप्ति थायछे त्यारे आत्मिकसुखनी
 सत्य निश्चय प्रतीति थायछे. अनुभवज्ञान बिना सत्य सुखनी प्र-
 तीति यती नथी श्री चिदानन्दी महाराज पण अनुभवज्ञान बिने
 आनदमां आवी पन्हाारा विवेचन करेछे यथा.

पद.

अबधु पियो अनुभवरसप्याला, कहत प्रेममतिवाला. अ०
 अंतर सप्त धातरस भेदी, परमप्रेम उपजावे
 पूरवभाव अवस्था प्रगटी, अजवरूप दर्शावे. अ०
 नखशिख रहत खुमारीजाकी, सजल सघनघन जेंसी,
 जिण ए प्याला पिये तिणकुं, और वात हे केंसी. अ०
 अमृत होय हलाहल जाकुं, रोगशोगनवी व्यापे,
 रहत सदा घरगाय नशासे, वंवन ममता कापे. अ०
 सत संतोष हैयामां धारे, जनमनां काज सुधारे;
 दीनभाव हीरदे नहि आणे, अपनो विरुद सभारे. अ०
 भावदया रणथंभ गेपके, अनहद तुर वजावे,
 त्रिदानंद अतुली बलराजा, जीतअरि घर आवे. अ०

बळी तेमज श्री आनदघनजी महाराज पण कहेछेके—

आत्म पियाला पीओ मतवाला, चिन्ही अध्यात्म वासा,
 आनंदघन चेतन व्हे खेले, देखे लोक लोक तमासा.
 आशा औरनकी क्या कीजे.

अनुभवगम्य एवु आत्मिक सुख बाह्येन्द्रियी कठी जणातु
 नथी. बहिःगामी प्राणीओ आत्मिकसुखनो गध पण अनुभवी श-
 कता नथी साकरनो स्वाद जेम विपनो फीहो जाणी शकतो नथी
 तेम अहानी जीव आत्मिकसुखनो लेश पण जाणी शकतो नथी.
 शाश्वत एवु आत्मिक सुख साध्य जाणी तेनी प्राप्ति अर्थे सदाकाल
 चारित्र धर्मनी आराधना ज्ञानी मुनिवर्यो एकाग्र चित्तयी क-

રહે, જ્યાંસુધી વાદ્ય પૌદ્ગલિકસુખની ઇચ્છા હૃદયમા પ્રગટે છે ત્યાં સુધી સમાપ્તિની પ્રાપ્તિ થતી નથી જ્ઞાનીઓ વાદ્યભાવને સ્વમવત્ ભ્રાતિ સમાન જાણી સત્યઆત્મિકસુખને માટે પ્રયત્ન કરે છે. પરપુદ્ગલવસ્તુમા આત્મિકધર્મ નથી સ્વસ્વરૂપમા રમણતા કરવી તેમાજ લયલીનતા કરવી, મનવચન અને કાયાના યોગની પ્રવૃત્તિ પરવસ્તુમા થાય છે તે નિવારવી, અને વહિર્વાચા અને અતર્વાચાનો ત્યાગ કરી ભવ્યો મુક્તિ પામે માટે આત્મિકધર્મનું સ્વરૂપ પ્રાપ્ત કરવું જોઈએ જ્ઞાનથી આત્મિકધર્મનો પૂર્ણ રાગ પ્રગટે છે તે સવધી કહે છે

॥ દુહા ॥

લાગ્યો ચોલ મજીઠનો, રાગ તે કવુ ન જાય,
ધર્મ રાગ લાગ્યો ધકો, કદી ન દૂર થાય ॥ ૧૩૯ ॥

ભાવાર્થ-જ્ઞાનદર્શન ચારિત્ર સહિત આત્માનું સ્વરૂપ સમજતાં પરપુદ્ગલ વસ્તુ ઉપરથી રાગ ઉતરી જાય છે, અને આત્માના સ્વરૂપ પર રાગ થાય છે. આત્મા વિના કોઈપણ વસ્તુ મિલે લાગતી નથી. આત્માના ગુણ પર્યાયમાજ રાગાવાનો રાગ થાય છે એ આત્માની જ્ઞાનદષ્ટિ સ્વસ્વરૂપને યોગ્ય ગણે છે તે પરવસ્તુને હેય ગણે છે. આવી દશા થતાં આત્મા પરવસ્તુઓમા અહમમત્વ ભાવથી હુટે છે વિરાતિ સન્મુખે થયેલો આત્મા ગુણસ્થાનક પર ચઢે છે દશમા ગુણઠાણા પર રાગ પણ હુટી જાય છે અને તેરમા ગુણઠાણા પર કેવલજ્ઞાન દર્શન ચારિત્રનો ભોગી બને છે અને અન્તે સિદ્ધગુદ્ધ બને છે. આવી પરમાત્મદશાનું સ્વરૂપ દેલાહનાર સદ્ગુરુ પહારાજ છે. માટે સર્વ ઉપકારીમા મુરુચ એવા ગુરુના ઉપર પ્રીતિ ધારણ કરવી જોઈએ તે દર્શાવે છે,

“ दुहा. ”

पुत्र पुत्रीदारा थकी, अधिको गुरुपर प्यार;
 प्राणाधिक गुरुप्रेम जास, ते भवजल तरनार ॥१४०॥
 एकज देव गुरु पिता, तेमां नही संदेह,
 धर्मगुरु ते एकछे, अन्य मुनि गुणगेह ॥१४१॥
 धर्मगुरुनी चाहना, धर्मगुरुनी भक्ति,
 धर्मगुरु हृदय वदो, सेवो निजनिज शक्ति ॥१५२॥
 सेवे शाश्वत सपदा, देखे दळदर दूर ॥
 वदे वद्यपणुं वरे, गिरूआ गुरु जरूर ॥१४३॥

भावार्थः—पुत्र पुत्री अने स्त्री उपर मनुष्यने घणो प्यार होयछे तेना करता पण अत्यतराग सद्गुरुपर थवो जोइए. पोताना प्राण करता पण सद्गुरु उपर अत्यत प्रेमधारण करे. हृदयमा गुरुशब्द स्मरणनो मंत्र जाप करे गुरुनी आज्ञा शर्पिपर धारण करे. एवो भव्यजीव जन्म जरा मरणथी पूर्ण समुद्र तरी शकेछे. अने मुक्ति पुरी प्राप्त करेछे. भव्यजीवोए समजवानु के पिता एक होयछे सद्देव पण एक होयछे, तथा समाकितप्रदधर्माचार्य सद्गुरु पण एक होयछे. समाकितप्रदधर्माचार्य मुनिनो जे उपगार छे तेना तुल्य अन्य मुनिओनो उपगार नहीं. अन्य मुनिओनो यथायोग्य भक्ति विनय साचववो. धर्म गुरुना सिवाय आचार्य उपाध्याय पण आत्माना मुख्य उपगारी नहीं, माटे धर्मगुरु उपर विशेषत भक्ति मीति धारवी. अने तेमनु बहुमान करवु. स्वकीय शक्तितः धर्मगुरुनु आराधन करवु धर्मगुरुनी सेवाथी त्वरित शाश्वत शिवसपदानी प्राप्ति थायछे. सद्गुरुने देखवाथी दारिद्र

દૂર ધાયછે. સદ્ગુરુને વાંદવાથી આત્મામાં ઘટપણુ મળાડેછે. ગુરુની ગુરુતા અઘૌઠિકાંછે ગુરુની ગુરુતા વર્ણી શકાય તેમ નથી. મન્ય જીવો ગુરુની સેવા કરતાં ગુરુની ગુરુતા માત્ર ફરેછે. શ્રી સદ્ગુરુ કથિત અનનગુણધામપૂન ચેતનમાં સદાકાલ રમનુ તે દર્શાવેજે.

દુદા

અજ અવિનાશી જીવે, અલંક આનંદ પૂર;
 અતર્દષ્ટિ દેખતા, ચેતન નહીંડે દૂર. ॥૧૪૪॥
 ચેતનગત તુજ ધર્મ દેખ, વાહિર ક્યાં કર સ્થાલ;
 વાહિર્દષ્ટિ દેખતાં, મવની અરહદ્રુ માલ. ॥૧૪૫॥
 ધ્યાન ધારણા વૈરિને, દેખો આત્મસ્વરૂપ;
 વહિરૂપાધિ ત્યાગતાં, શિવશાશ્વતચિદ્રૂપ ॥૧૪૬॥
 મૂઢ વન્યો માનવ કહે, ઓ જાણે જગમૂઢ ॥
 આત્મ જ્ઞાની સુલ્લહે, એ અતરનુ ગૂઢ ॥૧૪૭॥
 રાગદ્વેષ પરિણામની, ગ્રથિત્યાં હેદાય ॥
 શૂન્યદશા પુદ્ગલતણી, સહેજે ગાતિ પાય. ॥૧૪૮॥

ભાવાર્થ—અજ અને અવિનાશી એવો આત્મા છે. આત્મા અનાદિ કાલથી છે માટે તે અજ કહેવાય છે અને અનત છે માટે આવનાશી કહેવાય છે અલંક અને આનંદથી પરિપૂર્ણ આત્મા છે એવું આનંદ છે તે આત્મા છે. આનંદનો જ્ઞાતા તથા આનંદનો ભોક્તા આત્માનું અતર્દષ્ટિરૂપ જ્ઞાનદર્શનથી દેખતા આત્મા શરીરમાં જ રહેલો છે પોતાનાથી દૂર નથી આત્માની શોધ સ્ત્રીલ માટે પરદેશ જવા જરૂર નથી. શરીરમાં જ વ્યાપી રહેલો આત્મા જ્ઞાનદષ્ટિથી

शोधता जणायछे. बाह्यदृष्टिथी देखता जडवस्तु जणायछे, अने जड-
वस्तुमा आत्मपणु नथी. जडवस्तुथी भिन्न अरूपी आत्मानो निर्धार
करी स्वस्वभावमा रमवु योग्यछे. जडवस्तुनो धर्म परिहरिने आ-
त्मानो धर्म देखवो जोइए. मनवाणी अने कायाना वेपारमा आत्म
धर्म नथी. आत्मानो धर्म त्रियोगनी क्रियाथी तथा लेश्याथी पण
भिन्नछे. धारणा तथा ध्यानरूप सयम अवलर्षिने हे भव्यजीव आ-
त्मानु स्वरूप देख. सयममां विघ्नभूत वहिरूपाधि परिहरिने स्वस्व-
रूपमां रमतां शाश्वतकल्याण ज्ञानमय आत्मा थायछे आत्मज्ञानी
आत्माया रगायछे त्यारे तेने बाह्यवस्तु भ्रातिमय लागेछे. तेथी
तेने बाह्य वा वेपारमा आचारमा प्रेम रहेतो नथी तेथी जगत् लोको
आत्मज्ञानीने (उन्मत्त) गाडो वनी गयो एम जाणेछे, त्यारे आ-
त्मज्ञानी एम जाणेछे के जगत्ना लोको आधळाछे. पीतानी रुद्धि
आत्मायां नही देखतां जडवस्तुमा गचीमाची रहेछे. अरे तेवा अ
ज्ञानी जीवो जन्मजरा मरणना दुःख पामे तेमा शु आश्चर्य ? एवं
ज्ञानीने अज्ञानीनी दृष्टिमां भेद पडेछे, अने एक बीजाने भिन्न दृष्टि-
थी देखेछे. आत्मज्ञानी अनत ज्ञान दर्शन चारित्रनो धामभूत आ-
त्माने मानतो आत्मायांज स्थिरउपयोगथी रमणता करी क्षणेक्षणे
अनतानंद भोगवेछे. आवी शुद्धदशामा रागद्वेषना परिणामनी
ब्रथी छेदायछे, अने रागद्वेषना अभावे शून्यपणु वर्तायछे.
अने आत्माणी सहजशांति प्रगट थायछे. ज्ञानीने आवी सहज
शांतिदशामा जे भान वर्तेछे ते जणावेछेः-

“ दुहा. ”

भासे एकज आत्मा, सोऽहं सोऽह ध्यान;

तत्त्वमसि i, त्रिदानद भगवान् ॥१४९॥

आत्मदशा तेवी थइ, थिरता निज गुणमांदि,
वश वत्त्यु मन मांकडु, दु स देखे नहि क्यांदि. १५०

भावार्थः—उत्कृष्टनिर्मलध्यानदशामा शुद्ध आत्मस्वरूप भासे छे सोऽह शब्दथी आत्म यान करायछे, आत्मा तेज हु इत्येवसोऽह शब्दनो परमार्थछे ते ज्ञानदर्शन चारित्रमय तेज तु आत्माछे, वीजो नथी, एम तत्त्वमसि शब्दनो परमार्थछे, सोऽह अने तत्त्वमसि वाक्यथी अनेकातधर्ममय चेतनतु ध्यान धरता आत्मा केवलज्ञान अने क्षायिक सुख प्रगटावेछे, अने त्रण जगतमा पूज्य थायछे, सोऽह अने तत्त्वमसिना ध्यानमा पोतानो आत्माज चिदानन्द भगवान् रूप भासेछ, निर्मलध्यानमा शुद्ध आत्मदशा थता आत्माना गुणोमा स्थिरता थायछे अने मनमर्कटनी चचलतारूप सकल्पविकल्प वध पडेछे अर्थात् मन वशमा थायछे, तादृशीध्यानदशामा दुःखना ओघ विलय पामेछे कोइ ठेकाणे तेने ते काले दुःख देखानु नथी, भव्यजीवोए निर्मलध्यानदशामा स्वजीवन गाळु जोइए अतर्दृष्टि थया विना जे जीवो वाह्य आचारमा धर्म मानेछे अने आत्माना धर्म तरफ लक्ष राखता नथी ते पोते धर्म पामी शकता नथी, ने वीजाने धर्म पम डी शकता नथी.

“ दुहा ”

रामे वाह्या जीवडा, आप मतीला मुड,
धूते दोंगी पापीया, लेइ साधुनु झूड १५१
खाबु पीबु पहेरबु, वेशे माने धर्म,
सत्य धर्म नवि दाखवे, बाये उलटां कर्म १५२
सत्य देव नवि ओळखे, दे मिथ्या उपदेश;
पेटभरु कदाग्रही, कुयुरु पामे क्लेश. १५३

मनमाया मूके नहीं, पहरे त्यागी वेप;
 भगवा वस्त्रे भोळवे, लोको देशो देश १५४
 धननी आशा राखता, ठगे ठगारा लोक;
 टीलां टपके धर्म क्यां, आत्म विना सहु फोक. १५५

भावार्थ—अहमत्वमा तल्लीन बनेला केटलाक, आत्मा अने परमात्मानु स्वरूप नहि जाणनार ढांगी पापिगीवो साधुनु वृन्द लेइ गामोगाम फरी धन उधरावी दुनियाने ठगेछे, पण वस्तुतः जोता विचारा ते ठगायछे. केटलाकतो खावामा, पीवामा अने वस्त्रवेपमाज एकाते व्यवहार निश्चयनय अवरोध्या विना धर्म माने छे. धर्मनु शु स्वरूप छे ते सापेक्षदृष्टिथी पाते जाणी शकता नथी तो अन्यने शी रीते जणावी शके धर्मना नामे ढांग करी मिथ्या उपदेश आपी पोते बुडेछे. अने अन्य जनोने पण ससाराब्धिमां बुडाडेछे. अष्टादश दोपरहित सत्य देवने ते जाणी शकता नथी. सत्यज्ञानना अभावे स्वच्छदताथी मनमां जेम आवे तेम मिथ्या उपदेश आपेछे. एतादृश उदरपूर्तिस्वार्थसाधक अज्ञान कुगुरुओ बहिरात्मभावथी भवपरपरा ग्रही लेश पामेछे. मनमा रहेल मिथ्या वस्तुओनु ममत्व मूके नहि अने त्यागीनो वेप पहरेयो तेथी शु थयु. ब्राह्मत्याग अने अन्तर् त्याग ए वे त्यागनी जहेछे. उपरना फक्त ब्राह्म त्यागथी त्यागीपणु कहेवातु नथी. तेमज ज्ञानगर्भितवैराग्य विना केटलाक परिग्रहादिक उपाधिमा रक्त होय छता ब्राह्मत्यागनो अनादर करी अन्तर् त्यागी केहगावे ते पण अनेकान्तनय विरुद्ध छे. माटे ब्राह्मथी फक्त देखाता त्यागी भगवा वस्त्र पहरी कुपथनी जालमा लोकोने फसावेछे. धननी आशा धारक कुगुरुओ अलौकिक ठग जाणवा आत्मतान थया विना उपरनां टीलाटपका मायाथी

કરવામાં આવેતો તેથી કડ આત્માની રુદ્ધિ માત્ર થતી નથી, તેમજ જન્મજરા મરણના વધનમાંથી છૂટાતુ નથી સાતનય અને ચારનિક્ષેપ પૂર્વક આત્મજ્ઞાન થાયતો મિથ્યાત્વ દેવગુરુ ધર્મના અમદ્ વિચારો તો નાશ થાય. સત્યજ્ઞાન થતા આત્મજ્ઞાનિની કેવી દશા થાયછે તે જણાવેટે

“ દોહા ”

ફોફ કરીને લેખવે, સઘઝો દુનિયા લેલ,
 યોગાભ્યાસી યદ્ લે, ટાલે સઘઝો મેલ, ૧૫૬
 ટલે કર્મનો મેલ સદુ, કરતાં નિજગુણ લોજ,
 નિજઘટમા પ્રગટ તદા, ચિદાનન્દની મોજ. ૧૫૭
 અન્તર રુદ્ધિ જ્ઞાનથી, પ્રગટપણે નિરલાય,
 વાહિર રુદ્ધિ વાપડા, મોઝા જન ભરમાય. ૧૫૮
 તનુ ધન યૌવન કારમુ, વિશુત્તના ચમકાર,
 પરભવ સાથ ન આવતુ, મોહ્યા મૃદ્ધ ગમાર ૧૫૯
 રાઘી રુદ્ધિ કારણે, જીવ હણે કેડ્ લાલ,
 જીવન તેનુ ધૂલસમ, જાણો છેવટ રાલ ૧૬૦

ભાવાર્થ—આત્મજ્ઞાનિસન્ત માસારિક મોહક પદાર્થોની રચનાને મિથ્યા જાણેછે મોહક જડ પદાર્થોમા આત્મત્વ લેશ માત્ર નથી. એવ સત્ય નિશ્ચય કરી યોગાભ્યાસમા મદ્દત્ત થાયટે. યમ, નિયમ, આસન, પ્રાણાયામ, પ્રન્યાહાર, ધ્યાન, ધ્યાન અને સમાધિથી અષ્ટકર્મરૂપ મલિનતાનો નાશ કરેછે, ધ્યાન અને સમાધિદ્વારા શોધ કરતા આત્મા પોતેજ પરમાત્મા બનેટે, પરમાત્મા થનનાં અનન્તગુણ

अविर्भाव धायछे, केवलज्ञानधी सर्व रुद्धि प्रत्यक्ष देखायछे एम आत्मज्ञानिमा परिपूर्ण निश्चय धायछे आत्मज्ञानी विचारेछे के अज्ञानि पामर जीवो ज उपाधिमय सुवर्णादिक वाद्यरुद्धिमा आसक्त होयछे. एव सत्य अने अमत्यतो ज्ञानी निर्णय करेछे. सम्यक्त्व जडवस्तुओ जेवीके तनु धन यौवनपणु आदिने विद्युत्ना चमकारानी पेठे क्षणिक गणेछे, परभव तेमानु कड साये आवतुं नथी. अहो मोहममूर्खजीवो ! जडवस्तुओमां राची रहेछे. जे वस्तुओपर राग धारण करेछे ते वस्तुओ मृत्युमाद रुढी साये आवती नथी. ज्यारे आ प्रमाणे छे तो आत्मानि रुद्धिविना वाद्य जड रुद्धिमा बेम मूढनी पेठे राचीमाची रहु. अलवत तेमा मूर्च्छा धारवी ते योग्य नथो एम ज्ञानी निश्चय करेछे, अज्ञानी पामर जीव वाद्य लक्ष्मीनी प्राप्ति माटे अनेक प्रकारना हिंसक व्यापारोमा लक्ष जीवोनो नाश करेछे. अज्ञानी जीव मत्स्य, मूकर, पशु, पखीना जीवोनो आ जीविका माटे नाश करेछे. तादृशअज्ञानिजीवोनु जीवु पाप माटे जाणवु. एतादृश पापी जीवो मृत्यु पामी नरकादि दुर्गतिमा जायछे. तेवा पापी जीवोनु जीवन वृत्त करता अनिष्ट पृथ्वीमा भारभूत जाणवु तेवा पापिजीवो उपर करणादृष्टिधी जोवु योग्यछे. उपदेशादिकधी पापियोनो उद्धार करवो जोइए राखमा पडेलु घृत यथा नकामु छे तद्वत् पापिजीवोनु आयुष्य स्वपरापेक्षाए तेवी पापदशा वर्ते तावत् पर्यंत नकामु जाणवु वाद्यमांज सुखनी बुद्धि धारण करनाराओनी अशुभ प्रवृत्ति दर्शावेछे.

“ दुहा. ”

असत्य वाणी बोलीने, जन वचे धन हेत,
अशुभ कर्म पोठी भरी, जन्म जन्म दु ख लेन. १६१
चोरी चाडी चुगली, परनिन्दा अपमान,

- स्वार्थिक जन ससारमां, नरक गति मेमान १६२
 आत्म प्रशंसा दाखवे, करे घणो अभिमान,
 धर्म मर्म पामे नहीं, पापी जन नादान. १६३
 परापकपें चित्तडु, परने देवे आळ,
 पापारंभ करे मुदा, देवे क्रोधे गाळ १६४
 पाप पुण्य समजे नहि, ले नहि सदगुरु बोध,
 नास्तिक वादी जीवडा, करे शु चेतन शोध १६५
 मत एकान्ते जे ग्रहे, ते अज्ञानी जीव,
 भ्रमण करे भवमां अरे, ले नहि शाश्वत शिव. १६६

भावार्थ—अज्ञानी मोही जीव, असत्य वचन वदीने धनादिक माटे मनुष्योने छेतरेडे, चोरी, चाडी, चुगली करेडे. पापाचरणो थी पापकर्म ग्रहण करेछे, परजीवोनी निन्दा करेडे, परनु अपमान करेछे. स्वार्थिक मनुष्य ससारमा अनेक ज म दु.ख परपरा पामे छे, बाह्यदृष्टिधारकजीव स्वकीय प्रशंसा करेडे अज्ञानी बाह्य धन सत्तादिकथी मनमां अत्यताभिमान धारण करेडे, बाह्यदृष्टिजीव जडमाज धर्म मानेडे नेथी आत्मधर्मनो मर्म समजतो नथी मनुष्यजन्म पापी जे आत्मतत्त्वनी शोध करतो नथी अने मोहक पदार्थोमाज अहमत्व धारण करेडे एरो जीव मोक्षथी पराद्वेष रहेछे, आत्मधर्मनी प्राप्ति दुर्लभछे, नरतत्त्वनु मक्षज्ञान थया विना आत्म ज्ञान थतु नथी, बाह्यदृष्टिजीव अन्यने नीचो पाडवा प्रयत्न करेडे तेमज कृत्याकृत्य विवेक पराद्वेष थड परजीवने आळ चढावेछे परजडवस्तुमां मत्त्वथीरधाड अनेक प्रकारना पापारंभ करेछे क्रोधथी परने गाळी वेछे, अज्ञानी जीव पाप पुण्यमा समजतो नथी.

तेमजपोहा व मनवाधी सदगुरुनो उपदेश श्रवण करतो नथी, सदगुरूपदेश श्रवण करनारने श्रेष्ठ मानतो नथी, मिऱ्यात्वमा अद्य थएला जीवो आत्मानी शोध करी शकता नथी. नास्तिरुवादी एकान्तमत धारण करेछे. एगतो होइ मिठत्त, एकानपणाधी मिऱ्यात्वछे. मिऱ्यात्वी (अज्ञानी) मिऱ्यात्वना योगे भयमा परिभ्रमण करेछे, सम्यग्दृष्टि थया त्रिना सम्यक्चारित्रपार्ग प्राप्त थतो नथी. सम्यग्दृष्टिजीव सम्यक् चारित्र पामी शिवभुख सपत्ति प्राप्त करेछे. मिऱ्यात्वीजीव वस्तुने यथार्थपणे जाणतो नथी. ईश्वरने मानेछे तोपण ते निपरीत पणे जाणीने मानेछे ते प्रसंगतः जणावेछे, तेमा कोटक तो ईश्वर जगत्नो वनावनार मानेछे तेनो मत प्रथम दर्शावेछे.

॥ दुहा ॥

कर्ता ईश्वर मानता, जगमां केइक लोक,

सुखदुःख इश्वर आपतो, ए पण वाणी फोक १६३

भावार्थ—जगत्मा केइठारक मनुष्यो जगत्नो वनावनार ईश्वर मानेछे, वेइठारक मनुष्यो गुढाने जगत्नो वनावनार मालीक माने छे, त्यारे स्त्रीस्तियो ते गुढानी मान्यता नहीं स्वीकारता इथुनो परमेश्वर जगत्नो वनावनारछे एम स्वीकारेछे. स्त्रीस्तिलोकोनी आवी मान्यताधी विरुद्ध पडी वेइठारक हिंदुस्थानना हिंदुओ ब्रह्माने जगत्नो वनावनार मानेछे त्यारे वेइठारक ते पक्षधी विरुद्ध विष्णुभगवान् जगत्नो वनावनारछे एम मानेछे त्यारे वेइठारक ते पक्षधी विरुद्ध पडी महादेवने जगत्नो रचनार स्वीकारेछे. त्यारे वेचित् शक्तिधी जगत् वन्युछे एव स्वीकारेछे. स्त्रीस्तियो दुनिया सातहजार वर्ष लगभगनी वनेली मानेछे. त्यारे मुसल्मानो तेधी विशेषवर्ष कहेछे ब्रह्मा जगत्कर्तावादी तेधी भिन्न रीते कहेछे. शक्तिप्रयवाच्या तेधी भिन्नपण स्वीकारेछे. आर्यसमाजीओ जगत् अनादिछे एम

માનીને પુનઃ જગત્નો ઘનાવનાર ईश्वर સર્વથી બિન્નરીયા કયેછે, સ્ત્રીસ્ત્રી મુસલમાન અને હિંદુઓ જગત્નો ઘનાવનાર બિન્ન બિન્ન સ્ત્રી વારેટે, સર્વ પોતપોતાના પક્ષને સત્ય માની અન્યપક્ષનું મ્લટન કરેછે. મુસલમાનો પુનર્જન્મ સ્વીકારતા નથી. પશુપત્નીમા સુટાનીર (જીવ) છે એમ માનેછે ત્યારે સ્ત્રીસ્ત્રીધર્મપાટનાઓ તો પુનર્જન્મ માનતા નથી. તેમજ પશુપત્નીમાં આત્મા નથી એમ માનેછે પશુપત્નીને માર્યામાં સ્ત્રીસ્ત્રીયો દોષ માનતા નથી. હિંદુધર્મ પાટનારાઓ પુનર્જન્મ માનેછે તેમજ પશુપત્નીમા આત્મા માનેછે અને પશુપત્ની માર્યામાં પાપ ગણેછે, જૈનધર્મ પાટનારાઓ પુનર્જન્મ માનેછે અને એવેન્ડ્રિયાટ્રિક સર્વ જીવોની દયા પાટ્ટી તને મુશ્ય ધર્મ સ્વીકારછે હિંદુઓમાં વેટલાક વેદનો ઘનાવનાર ईश्वર છે એમ માનેછે ત્યારે વેટલાક કહેછેકે વેદનો ઘનાવનાર કોઈ નથી એમ પૌરુષ્ય અને અપૌરુષ્યનો બિવાચ્ ચાલી રહોછે. વેટલાક હિંદુઓ કર્મકાણ્ડને મુશ્યધર્મ તરીકે ગણેછે ત્યારે વેટલાક જ્ઞાનકાણ્ડને મુશ્ય ગણેછે. વેદમાનનારાઓ પૈકી વેટલાક જગત્ સ્વપ્ન સમાન ભ્રાંતિરૂપ માની તેનો કર્તા ईश्वર છે એમ માનતા નથી. ત્યારે વેટલાક જગત્નો કર્તા ईश्वર છે એમ માનેછે જ્ઞાનકાણ્ડમાં પણ અદ્વૈતવાદ માનનારાઓ જગત્ અનાદિ માનેછે અર્થાત્ તેનો ઘનાવનાર કોઈ માનતા નથી. જે વસ્તુની આદિ નથી અર્થાત્ અનાદિ છે તેનો ઘનાવનાર કોઈ નથી. જેનો કોઈ ઘનાવનાર છે તે વસ્તુ અનાદિ કહેવાતી નથી ત્યારે જગત્ અનાદિકાલ્થી છે એમ માન્યુ તો ईश्वર કર્તૃત્વવાચ્ રહતો નથી વેદ પશ્ચાત્ ઉપનિષદો યની એમ માનવામા આગેટે પશ્ચાત્ વ્યાસકૃષ્ણ તેમજે તથા ભગવદ્ગીતા તથા અષ્ટાદશ પુરાણ ઘનાવ્યા એવે કેચિત્ માનેછે આર્ય સમાજીઓ અઢાર પુરાણ વ્યાસજીના ઘનાવેલાં માનતા નથી આધુ-
 . ઘનાવેલાં માનેછે એમ પુરાણો સવથી ચર્ચા ચાલી રહીછે. સના-

तनपक्षवाळा तथा आर्यसमाजीओने भगवद्गीता मान्यडे. तेमा पण केटलाक श्लोको प्रक्षिप्त भगवद्गीतामाडे एम आर्यसमाजीओ मानेछे. भगवद्गीतामा पण ईश्वर जीवोने सुखदुःखनोन्याय आपनो नथी. एव मान्युंछे. तथा जगत्कर्तापणु ईश्वरमां नथी एवु स्वीकार्युंछे. शिष्य-हे सद्गुरो भगवद्गीताना कया अभ्यायमा तेम दर्शावुंछे

ते जणावशो-

सद्गुरु-स्वच्छ चित्तयी श्रवण कर

भगवद्गीता अभ्याय पचम १४ चर्तुदश श्लोक ॥

श्लो०.

न कर्तृत्वं न कर्माणि, लोकस्य सृजति प्रभुः

न कर्मफल संयोग, स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥ १४ ॥

नादत्ते कस्यचित् पाप, नचैव सुकृत विभुः

अज्ञानेनाऽऽवृत ज्ञानं, तेन मुह्यन्ति जतव' ॥ १५ ॥

प्रभु, ईश्वर परमात्मा लोकांना कर्माने बनावता नथी नया लोक-
कनु (जगत्तनु) कर्तृत्व पण ईश्वरमा नथी. जगत् निर्माणे ईश्वर
परमात्मा रचता नथी. तेमज जीवोने पुण्य पापने संयोग बनावता
ईश्वर नथी तेमज पुण्यपापनु फल आपना व ईश्वर नथी न्या
जगत् कर्म विगेरेनु शु समजवु तेना प्रत्यक्ष बनावेछे ॥ १५ ॥

શ્લોક

કૃત કર્મક્ષયો નાસ્તિ, કલ્પકોટીગૈતૈરપિ,
અપ્યયમેવ ભોક્તવ્ય, કૃતં કર્મ શુભાશુભં. ॥ ૧ ॥

કોટી કલ્પશતે પણ પુણ્ય પાપરૂપ જે કર્મ વર્ચાટે તે ભોગ-
ગવ્યા વિના હુટકો નથી ત્યારે ईશ્વર જીવોનું પાપ પોતે શી રીતે
ગ્રહણ કરે, ईશ્વર જીવોનાં પાપપુણ્ય લેતો નથી. જીવો શુભ કર્મ
અને અશુભ કર્મ કરી સ્વયં કર્મના ઉદયથી તેનું ફલ ભોગવે છે,
ईશ્વર પેદા કરે છે ईશ્વર સહરે છે એમ અજ્ઞાનથી આચ્છાન્નિ દૃષ્ટિવા-
લા જીવો માનીને મુજ્જાય છે, જગત્ કર્તા ईશ્વર આ પ્રમાણે જોતાં
સિદ્ધ થતો નથી. અન્યત્ર પણ ભગવદ્ગીતામા ईશ્વર અને પ્રકૃતિ
(જગત્) અનાદિકાલથી છે એમ વળુ છે જ્યારે બ અનાદિકાલથી
છે ત્યારે પ્રકૃતિનો કર્તા ईશ્વર શી રીતે સિદ્ધ થશે અર્થાત્ સિદ્ધ થ
રતો નથી તન્ પાઠઃ ભગવદ્ગીતા અ યાય ૧૩ ત્રયોદશ—

શ્લોક

પ્રકૃતિં પુરુષ ચૈવ, વિહ્યનાદી ઉભાવપિ,
વિકાશશ્ચગુણાંશ્ચૈવ, વિહ્નિ પ્રકૃતિસંભવાન્ ॥ ૧૯ ॥

પુરુષ (પરમાત્મા) પ્રકૃતિ (જગત્ આને અનાદિકાલથી છે
એમ જાણ સત્ત્વ રજો અને તમોગુણ તથા વિચારો પ્રકૃતિજ છે એમ
જાણ આ ઉપરથી પણ સિદ્ધ થાય છે કે અનાદિકાલથી આત્મા
અને કર્મ છે તેમ જગત્ પણ અનાદિકાલથી છે અદ્વૈતવાદી બ્રહ્મસત્ય
જગત્ મિથ્યા એક અદ્વિતીય બ્રહ્મજ માને છે. તે જમત્નો કર્તા ईશ્વર
અન્ય માનતો નથી આ જગત્ દેસાય છે તે ભ્રાતિ માત્ર છે ત્યારે તેનો
વનાવનાર ईશ્વર કેમ કહેવાય એમ અદ્વૈતવાદિયો માને છે જૈનદર્શન
૧. જગત્ સ્વરૂપે સત્ માને છે પણ જગત્ અનાદિથી છે, સત્ત્વાત્

सत्पणाधी जे वस्तु सत् होयछे ते अनादिथी छे. जेम् पद्द्रव्य. जिनदर्शनमा पद्द्रव्य सत्छे हवे मूळ निपय जगत् कर्ता ईश्वर स वधी निराकरणनोछे. वेदात ग्रथावारे जोता पण केटलेक स्थाने ईश्वर कर्तृत्व स्वीकार्युछे. अने केटलेक ठेकाणे जगत्नो वनावनार ईश्वर नथी एम् स्वीकार्युछे. अन्य दर्शनपण जिन दर्शनना सिद्धांतनो केटलाक अगे अनुसरेछे हवे जिनदर्शनमा जगत्कर्तृत्व ईश्वर सबधी केवी मान्यता छे ते बतावेछे.

“ दुहा ”

ईश्वरना वे भेदछे, जीव सिद्ध वे जाण,
कर्ता निज निज कर्मना, जीवो मनमां आण ॥१६८॥
निजने सुखदुःख आपतो, जीवज करी नवकर्म,
कर्ता भोक्ता जीवछे, ईश्वर कर्ता मर्म. ॥१६९॥
चेतन ईश्वर जाणीए, नय व्यवहार प्रमाण
अशुद्ध नय ईश्वर कथ्यो, सापेक्षा मन आण. ॥१७०॥
कर्ता परपरिणामथी, चेतन ईश्वर जोय;
शुद्ध निश्चय नयथकी, कर्म करे नहि सोय. ॥१७१॥
सुख कर्ता निज भावथी, दुःख कर्ता परभाव,
परपरिणतिना नाशथी, कर्ता निजगुण दाव ॥१७२॥
सापेक्षा समजे नर्ही, पक्ष ग्रहे एकांत,
ईश्वर कर्ता मानता, निरपेक्षाथी भ्रान्त, ॥१७३॥
कर्म मैल जेने नही, निराकार भगवान्,
कयुं प्रयोज कर निश्चयथी ज्ञान. ॥१७४॥

- परमप्रभु शिव सिद्धमा, इच्छा नहीं अभिमान,
 शु ते कर्ता सृष्टिनो, माने भूली भान. ॥१७५॥
- उपादान जेवु अहो, तादृश कार्य कहाय,
 निराकार ईश्वरथकी, जडसृष्टि न रचाय ॥१७६॥
- उपादान कारणथकी, जाणो कार्य अभेद,
 उपादान ईश्वर कहो, सृष्टिरूप ते खेद ॥१७७॥
- निमित्त हेतु इशजो, उत्पत्तिमां होय,
 ईश्वरशक्ति नित्यके, अनित्यते अवलोय. ॥१७८॥
- उपादान कारण विना, निमित्तथी शु थाय,
 उपादान कोने कहो, ज्ञाने सत्य जणाय. ॥१७९॥
- कार्य पूर्व तो होयछे, कारणनो सदृभाव,
 उपादान कारण विना, बने न एह बनाव. ॥१८०॥
- उपादानथी भिन्नछे, निमित्त कारण भाइ,
 भिन्न भिन्न शक्तितणी, क्याथी एक सगाइ ॥१८१॥
- सृष्टिनु कारण कदा, ईश्वर नहीं कत्पाय,
 नाहि तो रासभ पण कहो, सद्व्युक्तिधर न्याय ॥१८२॥
- पृथ्व्यादिक परमाणुओ, ग्रही सृष्टि निर्माय,
 ईश्वरमां यदि मानीए, चेतन म्यायी आय. ॥१८३॥
- परमाणु समुदायथी, जडनु कार्यज थाय,
 चेतन तेथी भिन्नछे, अरणि वन्दि न्याय, ॥१८४॥

पुङ्गल द्रव्य अनादिछे, तथा जीव पण जाण;
 निश्चयथी वे भिन्नछे, भिन्नशक्ति पण आण ॥१८५॥
 जडमां चेतन परिणमे, जाणो नय व्यवहार,
 अनेकान्तमत ज्ञान वण, लहो न सम्यक्सार. ॥१८६॥
 काल अनादि द्रव्य पट्ट, कर्त्ता ईश्वर केम,
 ईश्वरशक्ति नित्यवा, अनित्य शु त्यां एम ॥१८७॥
 कर्त्तृत्वशक्ति नित्य तो, नित्य जगत् निर्माय,
 कर्त्ता शक्ति अनित्य तो, क्षणमां विणशी जाय ॥१८८॥
 कर्त्तृत्वशक्ति यादृशी, तादृश कार्यज थाय,
 नित्यानित्य विकल्पथी, वे पक्षे दूपाय. ॥१८९॥
 ईश्वर साकारी कहो, तोपण दोषित थाय,
 पूर्वापर विचारतां, दोषो बहुला आय. ॥१९०॥
 नैयायिकवादी कहे, कर्त्ता ईश्वर सत्य;
 पण युक्तिथी लेखतां, लागे तेह असत्य. ॥१९१॥
 ईश्वर इच्छाथी कदा, सृष्टि नहीं निर्माय,
 निमित्त इच्छा जो कहो, केम स्वभाव न थाय. ॥१९२॥
 का विनिगमना त्यां लहो, करो कदाग्रह दूर,
 स्वभावयुक्तिथी ग्रहो, तो नहि दोष जरूर ॥१९३॥
 उपादान मध्ये रही, तिरोभाव जे शक्ति,
 तेनी आविर्भावता, परिपूर्ण निजव्यक्ति. ॥१९४॥

- परमप्रभु शिव सिद्धमां, इच्छा नहीं अभिमान,
शुं ते कर्ता सृष्टिनो, माने भूली भान. ॥१७५॥
- उपादान जेवु अहो, तादृश कार्य कहाय,
निराकार ईश्वरथकी, जडसृष्टि न रचाय ॥१७६॥
- उपादान कारणकी, जाणो कार्य अभेद,
उपादान ईश्वर कहो, सृष्टिरूप ते खेद. ॥१७७॥
- निमित्त हेतु इशजो, उत्पत्तिमा होय,
ईश्वरशक्ति नित्यके, अनित्यते अवलोय. ॥१७८॥
- उपादान कारण विना, निमित्तथी शु थाय,
उपादान कोने कहो, ज्ञाने सत्य जणाय ॥१७९॥
- कार्य पूर्व तो होयछे, कारणनो सदभाव,
उपादान कारण विना, बने न एह वनाव. ॥१८०॥
- उपादानथी भिन्नछे, निमित्त कारण भाइ,
भिन्न भिन्न शक्तितणी, म्याथी एक सगाइ. ॥१८१॥
- सृष्टिनु कारण कदा, ईश्वर नहीं कटपाय
नाहि तो रासभ पण कहो, सद्व्युक्तिधर न्याय ॥१८२॥
- पृथ्व्यादिक परमाणुओ, ग्रही सृष्टि निर्माय,
ईश्वरमां यदि मानीए, चेतन क्यथी आय. ॥१८३॥
- परमाणु समुदायथी, जडनु कार्यज थाय,
चेतन तेथी भिन्नछे, अरणि गन्हि न्याय, ॥१८४॥

ईश्वर कर्त्ता वादिनुं, वद्वु युक्ति हीन,
जड ईश्वरना धर्म वे, वतें निशदिन भिन्न ॥२०५॥
भिन्न धर्म वेना सदा, भिन्नधर्मी पण दोय,
निराकार साकार एक, रूपी अरूपी जोय ॥२०६॥
चेतन शक्ति अनन्त छे, पुद्गलशक्ति अनन्त;
चेतनशक्ति ज्ञातृता, जडता पुद्गलतत ॥२०७॥
निजस्वभावे शक्ति त्यां, कोइ नही परतत्र,
निश्चयनयथी जाणीए, ज्ञानी एम वदंत ॥२०८॥
अनन्त शक्ति अस्तित्ता, निज द्रव्ये वर्ताय;
पर अपेक्षाए ग्रही, नास्तित्ता एम थाय. ॥२०९॥
अनन्त शक्ति अस्तित्ता, नास्तित्ताज अवलोय,
पद्द्रव्ये व्यापी सदा, निश्चयथी ए जोय ॥२१०॥
चेतनथी जड जो वने, तो खरशृंग जणाय,
स्वप्न सुखलडी सत्यरूप, सत्य विचारो न्याय. ॥२११॥
अनन्त शक्ति इशनी, ईश्वरमांहि समाय,
कूपनी छाया कूपमां, तदत् जाणो न्याय ॥२१२॥
जडनी शक्ति अनन्त छे, पुद्गल वर्म जोय,
वर्णादिक तेमां रख्या, अन्य न कर्त्ता कोय. ॥२१३॥
आत्मापेक्षार्थी अहो, जडनी शक्तिज लेश;
सापेक्षा अवबोधीने, लहो न मनमां क्लेश. ॥२१४॥

शुद्धशक्तिछे वस्तुमा, वर्ते काल अनादि,
 आविर्भाव कराववा, निमित्तहेतु उपावि ॥१९५॥
 आविर्भाव जे वर्मनो, कार्यरूप ते थाय,
 घटनु कारण मृत्तिका, अनन्य कार्य कहाय. ॥१९६॥
 घटनो नाश कर्याथकी, होय न कारण नाश,
 कारण नित्यपणे रहे, मृत्तिकारूप खास ॥१९७॥
 काल स्वभावने नियति, कर्म उद्यम ए पञ्च,
 कार्य प्रति कारण सदा, धरो न मनमां खत्र ॥१९८॥
 राग दोष जेने नथी, ते ईश्वर कहेवाय,
 तेने इच्छा जो कहो, तो ईश्वरता जाय ॥१९९॥
 कृत्य कृत्य ईश्वर थया, तेथी शु इच्छाय,
 इच्छा ज्यां त्यां रागद्वेष, रागदोष दुःख पाय. ॥२००॥
 रागदोष सहचारिणी, इच्छा भवनु मल,
 ईश्वरने इच्छा कहो, इहा मोह प्रतिकल. ॥२०१॥
 इच्छा नहीं त्या सुखशु, कहेगे जन्म जो कोय,
 शर्म अननु समाविमा, इच्छा त्या नहि होय. ॥२०२॥
 जडवस्तुज ईश्वरथकी वने नाहे कोइ काल,
 जड स्वभाव न इशमा, धर मनमाहि ख्याल ॥२०३॥
 ईश्वर शक्ति अनन्तले, जडनी शक्तिज लेश,
 मृष्टि वनेले इशथी, युक्ति लहो ए वेश ॥२०४॥

ईश्वर कर्त्ता वादिनुं, वदवु युक्ति हीन,
 जड ईश्वरना धर्म वे, वर्ते निशदिन भिन्न. ॥२०५॥
 भिन्न धर्म वेना सदा, भिन्नधर्मी पण दोय,
 निराकार साकार एक, रूपा अरूपा जोय ॥२०६॥
 चेतन शक्ति अनन्त छे, पुद्गलशक्ति अनन्त,
 चेतनशक्ति ज्ञातृता, जडता पुद्गलतत ॥२०७॥
 निजस्वभावे शक्ति त्या, कोइ नही परतत्र,
 निश्चयनयथी जाणीए, ज्ञानी एम वदत. ॥२०८॥
 अनन्त शक्ति अस्तित्ता, निज द्रव्ये वर्ताय,
 पर अपेक्षाए ग्रही, नास्तित्ता एम थाय. ॥२०९॥
 अनन्त शक्ति अस्तित्ता, नास्तित्ताज अवलोक्य;
 पद्द्रव्ये व्यापी सदा, निश्चयथी ए जोय ॥२१०॥
 चेतनथी जड जो वने, तो खरशृंग जणाय,
 स्वप्न सुखलडी सत्यरूप, सत्य विचारो न्याय. ॥२११॥
 अनन्त शक्ति इशनी, ईश्वरमांहि समाय,
 कूपनी छाया कूपमां, तद्वत् जाणो न्याय ॥२१२॥
 जडनी शक्ति अनन्त छे, पुद्गल धर्म जोय,
 वर्णादिक तेमां रखा, अन्य न कर्त्ता कोय. ॥२१३॥
 आत्मापेक्षार्थी अहो, जडनी शक्तिज लेश;
 सापेक्षा अवबोधीने, लहो न मनमां क्लेश. ॥२१४॥

तालपूट विष लेशथी, हस्ती प्राण हणाय,
 निजनिजना धर्म वहु, अनेकान्तमतन्याय. ॥२१५॥
 ईश्वरथी सृष्टि वने, कदी नहीं कहेवाय,
 समजु समजे सानमां, सद्व्युक्ति मन लाय. ॥२१६॥
 जीव कहो चेतन कहो, अर्थ एकनो एक;
 ईश्वरसम छे आत्मा, कर्ता इश न टेक ॥२१७॥
 लक्ष चोरथी योनिमां, अर्त्तो जीव अनन्त,
 कर्माटकना योगथी, पामे दु ख अनन्त ॥२१८॥
 काल अनादियी ग्रही, जीवे कर्मनी राश,
 बांधे छोडे कर्मने, करतो परनी आश. ॥२१९॥
 भवितव्यतायोगथी, यावे कर्म विनाश.
 अविचल आत्मस्वरूपनो, सद्देजे थाय विकास. ॥२२०॥
 इशु विभु परब्रह्म छे, परमेश्वर सुखधाम,
 सोऽहं सोऽह पद लब्धु, तेने करु प्रणाम ॥२२१॥
 जीवो कर्म क्षणधकी, अनन्त ईश्वर थाय,
 एकाऽनेक सिद्धात्मनी, ज्ञानी कुची पाय, ॥२२२॥
 कर्म स्वप्याथी सारिखा, समजे ज्ञानी विवेक,
 व्यक्ति स्वरूपे भिन्नता, गुणव्यपेक्षा एक ॥२२३॥
 रागदाष जेने नथी, नहि रमता पग्भाव,
 अनन्त आत्मस्वरूपमां, रमता शुद्ध स्वभाव ॥२२४॥

परम प्रभुसम ध्यानथी, स्वकीय चेतन धार,
 ध्याता ध्याने ध्येयरूप, सिद्ध बुद्ध निर्धार. ॥२२५॥
 तादृक् ईश्वर सिद्धने, वन्दु वार हजार,
 तेना सम्यग् ज्ञानथी, लहिये भवजलपार ॥२२६॥
 सम्यग् ज्ञानक्रियाथकी, मोक्ष न होय परोक्ष,
 आत्मज्ञान ध्यानादिथी, त्वरित पामो मोक्ष. ॥२२७॥

भावार्थ—ईश्वरना वे भेदछे. अष्टकर्मसहित ससारि जीव ते पण अपेक्षाए ईश्वरछे, अष्टकर्मनो सपूर्ण नाश करी जे मुक्ति पाम्या ते सिद्ध परमात्मा ईश्वर रुहेवायछे, जीवो कर्मरूप सृष्टिना कर्ता पर-परिणतियोगे जाणवा, शाता अने अशाता वेदनीय कर्म ग्रही आत्माज पोताने सुख दुःख आपेछे कर्मसृष्टिनो कर्ता तथा तेनो भोक्ता जीवरूप ईश्वर जाणवो. जीवरूप ईश्वर ससारिकअवस्थामां कर्मसृष्टिनो कर्ता जाणवो. सृष्टिकर्तृत्व जीवरूप ईश्वरने परभाव रमणतानी अपेक्षाए घटेछे एम रहम्य अनुमेक्षा करवा योग्यछे. जीवरूप ईश्वर, कर्मरूप सृष्टिनो कर्ता व्यवहारनयथी जाणवो. अशुद्धनयथी जीवरूप ईश्वर परवस्तुनो कर्ता निमित्तपणे जाणवो. हे भव्य आर्षी अपेक्षाधी ईश्वर कर्तृत्वरहस्य हृदयमा धारण कर. शुद्ध निश्चयनयथी कर्मरूप सृष्टिनो कर्ता ईश्वर नथी आत्मिक सहज मुखनो कर्ता अशुद्ध स्वभावथी आत्माछे दु खनो कर्ता परस्वभावथी आत्माछे ज्यारे सपूर्ण अशुद्ध परिणति (परपरिणति) नो आत्मध्यानथी नाश थायछे त्यागे आत्माना अननगुणनो आत्मा स्वय कर्ता थायछे.

जे भव्यो सापेक्षता समजता नथी. अने एकात पञ्च ग्रहण

करेछे ते शुद्ध परमात्मारूप ईश्वरने जडवस्तुनो कर्त्ता मानी भ्रांतिभा पड़ेछे कर्मरूप मलिनता जेनामा नथी एवा सिद्धबुद्ध परमात्माने शु मयोजनछे के सृष्टिनी रचना करे हे भव्य पक्षपात त्यजी मा-पस्थ दृष्टिधी अवबोध.

परममधु, परमब्रह्मरूप ईश्वरमा रजोगुण, तमो गुणादि नथी इच्छा नथी, अभिमान नथी, वेदातमा पण कसुठे के-न च स पुनरावर्तते मुक्तिमा गएला आत्माभो शुद्धबुद्ध थइ पश्चात् सत्सार्मा जन्म लेता नथी रागद्वेषरहित सिद्ध (ईश्वर) जडसृष्टिनो कर्त्ता कदा घनी शकतो नथी जडसृष्टि रचवानो सिद्धबुद्धमा स्वभाव नथी ते माटे.

प्रश्न-सिद्ध परमात्मा जडसृष्टिना कर्त्ता नथी मानता त्पारे अन्य कोइ सृष्टिना कर्त्ता छे के नहीं

उत्तर-सिद्ध परमात्मा-ज्ञान, दर्शन, चारिन, शौर्य, सुख आदि आत्माना अनत शुद्ध गुणरूप सृष्टिना कर्त्ताछे. क्षायिकमावे आत्माना शुद्धरूप सृष्टिना कर्त्ता सादि अनतमा भगेछे प रमाणु आदि जडसृष्टित्व स्वभावना शीलकुल कर्त्ता नथी जे आत्माना शुद्ध क्षायिक वर्मना कर्त्ता थया ते कर्मरूप सृष्टिना कर्त्ता कर्त्ता थता नथी.

माटे विवेकदृष्टिधी भय्यात्मन् सत्यतत्त्व विचार,

यादृक् उपादान कारण होयछे तादृक् कार्यनी उत्पत्ति थायछे, जेम मृत्तिकारूप उपादान कारण जेसु होयछे तेसु घटरूप कार्य बनेछे. उपादान कारण कार्यरूप बनेछे घटकार्यमा कुभकार निमित्त कारणछे घटरूप कार्यमा उपादानकारण मृत्तिहाछे. अने निमित्तकारण कुभकार दृढचक्र वगेरेछे. तेम जो कर्मरहित परमात्माए जगत् बनाथु एम कोइ माने तो तेमा उपादान अने निमित्त

कारण कोण ? निराकार ईश्वरने जगतनु उपादान कारण मानतां जगत् रूप ईश्वर बन्यो. ए पण महादूषण आवेळे. सिद्धान्त एवो छे के निराकारथी साकारनी उत्पत्ति थती नथी. माटे निराकारथी जडसृष्टि रचाती नथी एम सिध्द ठरेछे.

वजी नियम एवोळे के उपादान कारणथी कार्यनो अभेदछे, जेम मृत्तिकारूप उपादानथी घटरूप कार्यनो अभेदछे. मृत्तिकायी घट भिन्न नथी. तेवीज रीतिथी निराकार ईश्वरथी जड सृष्टि मानवामा आवे तो जगत् रूपज ईश्वर बन्यो, सृष्टिरूप कार्यथी ईश्वरनो अभेद थयो माटे जडसृष्टिरूप ईश्वर मानवामा आवे तो अनेरू दूषणरूप खेडनी प्राप्ति थायळे,

सृष्टिकार्यमा ईश्वरने निमित्त हेतु मानता त्रे ^{वि} किरूप उत्पन्न थायळे, ईश्वरनी शक्ति नित्यछे के अनित्यछे ? उपादान कारणविना फक्त निमित्तकारणथी कोड कार्य वनतु नथी. कार्यनी पूर्वे उपादान तथा निमित्तनो सद्भावछे उपादान विना निमित्तभूत ईश्वरथी सृष्टिरूप कार्य वनी शके नही, ईश्वरनी इच्छा निमित्त हेतु कोड माने तो ते पण योग्य नथी, कारण के ईश्वरनेइच्छा होती नथी. अपूर्णने इच्छा होयळे. कृतकृत्य परमात्माने अशमात्र पण इच्छा होती नथी. प्रमाण युक्ति अनुभवथी विरुद्ध सृष्टिहेतु ईश्वर कल्पातो नथी तेम उता यदि ईश्वर मानवामा आवे तो रासभने केम मानवामा न आवे ? पृथिवीआदि परमाणुओनु ग्रहण करीने ईश्वर सृष्टि रवेळे एम जो मानवामा आवे तो जीवो रयाथी आव्या जीवो अनादिकालनाळे एम फहेवामां आवे तो सृष्टिपण अनादिकालथीळे एव केम मानता नथी अनादिकालना जीवो सृष्टि विना अन्यत्र रही शकता नथी माटे सृष्टिपण अनादिकालथी छे एम स्पष्ट भासेळे परमाणुओना कार्यथी चेतन (आत्मा) भिन्नछे माटे अरणिमा बन्दि रहेळे तेवी रीते आत्मा

पण देहमा रहेले पण पचभूतथी भिन्नले. जड अने चेतन ए ने वस्तु आ प्रमाणे विचारतां अनादिकालथी छे एम सिद्ध थायले जीव अने जडनी परस्पर शक्तियो पण भिन्नले जडवस्तुमां चेतन कर्मनावशे परिणमेछे ते व्यवहारनयथी जाणतु. निश्चयथी जडमा चेतन परिणमतो नथी, आ प्रमाणे अनेकान्तनयज्ञान थया विना तखनु यथार्थ भासन थतु नथी.

धर्मास्ति काय, अधर्मास्ति काय, पुद्गलास्ति काय, आकाशास्ति काय, काल अने जीव एम पद्द्रव्यथी जगत् कहेवायले. अनादिकालथी पद्द्रव्यले. ते पद्द्रव्य, द्रव्यार्थिकनयथी नित्यले अने पर्यायार्थिकनयथी अनित्यले. ते पद्द्रव्यथी भिन्न कोइ वस्तु नथी तो पद्द्रव्यनो कर्त्ता ईश्वर वेम मानी शकाय अर्थात् न मानी शकाय. हवे ने विकल्प करवामा आवेले. जगत्कर्तृत्व शक्ति ईश्वरमा नित्यले के अनित्यले ? जगत्कर्तृत्व शक्ति नित्य मानवामा आवे तो ईश्वर सदाकाल जगत् वनाव्या करशे एव महादोष आवेले, तेमज जगत्कर्तृत्व शक्ति अनित्य मानवामा आवे तो जगत्कर्तृत्व शक्ति क्षणमा अनित्य होवाथी विणशी जतां सृष्टि पण क्षणमां नाश पामी जाय पण तेम प्रत्यक्ष अनुभव विरुद्धले माटे वे पक्षथी ईश्वरशक्ति जगत् कर्तृत्वमां सिद्ध थती नथी एम नित्यानित्य पक्षथी ईश्वरशक्ति दूर घायले.

जगत् कर्त्ता ईश्वरने साकारी मानवामा आवे तो अनेकदोषो उत्पन्न थायले. साकार ईश्वर एरुदेशावस्थित होवाथी सर्वत्र सृष्टि घनामी शके नहीं साकारकुभकारवत् साकारकुभकारनी पेठे कर्म विना देह होय नहीं अने देहवडे ईश्वर साकार देवतानी पेठे कहेवाय तो कर्म सहित ठर्या सकर्माईश्वर ठरवाथी अन्य जीवोनी पेठे कर्मना परनत्र रघो, अने स्वतंत्र थयो नहीं न्यारे ते जगत् वनाव-

वामां कथं समर्थं थाय.

नैयायिक कहेछे के सृष्टिनो कर्ता ईश्वर मत्य छे पण ते पूर्वोक्त युक्तिथी विचारता सत्य नथी. ईश्वरनी इच्छाथी जगत् उत्पन्न थयु एम मानवामां आवे तो अनादिकालगी जड अने चेतन वे पदार्थ छे. एम अनादिस्वभाव केम न मानवामा आवे, अर्थात् त्यां एकत्र पक्षपातिनी युक्ति कइ छे के अनादिकालनो स्वभाव न मानवामां आवे अने इच्छाज मानवामा आवे इच्छा मोहरूप छे. ईश्वरने इच्छा कहोतो साधारण मनुष्यनी पेठे ईश्वर पण मोही ठर्यो त्यारे तेनु ईश्वरपणु रहेतु नथी. माटे ईश्वरनामा इच्छा मानवी ते शसशृंगवत् असत्य छे. आत्मानी परमात्मदशामा ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, सुखादि गुणो उपादान कारणछे. तेनो परिपूर्ण आविर्भाव तेज परमात्मपणु जाणवु. अनन्तधर्मनी शुद्धि प्रगटाववा निमित्त हेतुनी जरूरछे, आत्माना धर्मनो आविर्भाव तेज कार्य जाणवु. घटनु कारण जेम मृत्तिका अनन्य कारण कहेवायछे तेम परमात्म दशारूप कार्यमा ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप अनन्य कारण उपादानछे. घटनो नाश थवाथी मृत्तिकानो नाश थतो नथी. अर्थात् कारण सदाकाल वर्तेछे. अत्र काल, स्वभाव, नियति, रूम, अने उग्रम पच कारणथी कार्योत्पत्ति थायछे. पच कारणमाथी एक कारणनी उत्थापना करता मिथ्यात्व प्राप्त थायछे. आ चापतमा लेशमात्र पण शका करवी योग्य नथी.

राग अने द्वेषनो सर्वथा जेणे तय कर्योछे ते ईश्वर परमात्मा कहेवायछे. एवा शुद्ध परमात्माने जो इच्छा कहेवामा आवे तो ईश्वरतानो नाश थायछे सर्व प्रकारनी इच्छानो जेणे नाश कर्योछे एवा ईश्वरने जगत् करवानी इच्छा क्याथी होय. अलगत कदीहोय नहीं, रागद्वेषसहचारिणी इच्छाज ससारनु मूलछे. अने तेवीइच्छा

ईश्वरने कहेरी ते मोदवेष्टित जाणतु. अहो अज्ञाननी कैटली शक्ति.

मोड एम कहे के—ज्यां इच्छा नथी त्यां शु मुख ? अल्पत कहे नहीं. आरी रीते योत्नारे ममजतु के योगीन्द्रमहात्मा समाधिमां अनन्त मुख वेढेडे, पण ते समये तेने इच्छा नथी माटे इच्छा होष त्या मुख णवी व्याप्ति घन्ती नथी

दृश्यजडवस्तु क्वापि ईश्वरथी र्नी शके नहीं. ईश्वरमा जडस्व भाव नथी. जडवस्तुनी कर्ता वायाय आपनार ईश्वर नथी. हे भव्य हृत्पमा अवधार.

फोट एम कहेणे के—ईश्वरनी शक्ति अनन्तते अने जडपदार्थनी शक्ति अल्पते माटे ईश्वरथी मृष्टि वनेडे. आ युक्ति पण वेगु नथी ते जणावेणे. ईश्वरनी शक्ति चैतन्यभावे अनन्तते तेम जडनी शक्ति जडभावे अनन्तते ईश्वरना धर्म अनन्तते जेम जडतत्त्वना धर्म पण अनन्तते आमा अने जड रे तत्त्व भिन्नधर्मोंडे जडपुद्गल द्रव्य साकारते अने आत्मतत्त्व निराकारते प्रत्येक तत्त्व स्वस्वभावे स्वतन्त्रते. वस्तुत मोड द्रव्य परतत्र नथी प्रत्येक द्रव्यमां अनन्त अस्तिधर्म अने परनी अपेक्षाए अनन्तनास्तिधर्म रवोंडे अस्तिधर्म अने नास्तिधर्मनी अनन्तता पड्टद्रव्यमां व्यापी रहीणे. अन्य द्रव्यनो कर्ता अन्यद्रव्य वस्तुत नथी

चेतनथी जो जडनी उत्पत्ति उपादानपणे थाय तो स्वरशृंगनी पण उत्पत्ति थाय पण स्वरने शृंग धनाज नथी ते प्रमाणे ईश्वररूप चैतन्य मृतिमांथी जडवस्तु धती नथी. त्वारे ईश्वरमांथी जगत् थयु एव मलाप करयो ते अधश्रद्धानी बुद्धि विना अन्य समजानु नथी. स्वप्न मुखढीथी पेट भराय तो ईश्वरमाथी जडनी उत्पत्ति थाय

आ प्रमाणे सिद्धात तत्त्वाथी मश्र थशे के अहो ज्यारे परमात्माथी जगत्नी उत्पत्ति धती नथी, त्वारे तेमनी अनन्त शक्ति शा

ज्ञानि ? तेना प्रत्युत्तरमा जणावेडे के-ईश्वरनी ज्ञानादिक अनन्त शक्तियो ईश्वरमाज समायळे. रूपनी त्राया रूपमा समायळे ते प्रमाणे अत्र न्याय समजवो. जडद्रव्योनी अनन्त शक्ति जडमा व्यापी रहीळे. पुद्गलद्रव्यना वर्णादिकनी शक्ति पुद्गलद्रव्यने त्यजी अन्यत्र जतीनथी. पुद्गलद्रव्यनो निश्चयथी अन्यद्रव्य रूर्त्ता गीरीते होट शके,

आत्मद्रव्यनी अपेक्षाए पुद्गलद्रव्यनी शक्ति अल्प गणायळे. पण वस्तुतः जेम आत्मद्रव्यनी आत्मस्वरूपे अनन्ति शक्तिळे तथा पुद्गलद्रव्यनी शक्ति पण तेना स्वरूपे अनन्तळे सापेक्षा अपरोधता कोडपण प्रकारनी हानि आयती नथी. ताल्पूटविपलेशथी हस्तिना प्राणनो नाश थायळे, एक लेशमात्र ताल्पुटविपयी हस्तिनो प्राण नाश थाय त्यारे रुढोके पुद्गलनी शक्ति नेटलीळे आत्मानी शक्ति अपेक्षाए मोटीळे तेमज पुद्गलनी शक्ति पुद्गलनी अपेक्षाए मोटीळे. आ उपरथी सिद्ध थायळे कं शुद्धबुद्धपरमात्माथी मृष्टि वनी शके नहीं, मायस्थष्टिवाळा पुष्पो सहजमा तत्त्व अवबोधी शकेळे. ईश्वर सर्वज्ञ परभावरूप सृष्टिनो रूर्त्ता नथी. एवी प्रतिज्ञा युक्तिमतीळे.

चोरागीलक्षजीवयोनिमा जीवो परिभ्रमण करेळे. अज्ञान राग द्वेष प्रयोगे जीव ससारमा परिभ्रमण करेळे कर्मथीज ससारमा परिभ्रमण थायळे कर्मा कर्म प्रमाणे सुख दुःख थायळे त्यारे शामाटे हे ईश्वर तें मने दुःख आप्पु णम असत् वदतु जोडए. अनादिका-लथी जीवनी साये कर्मनो सपधळे भावरुर्म रागद्वेषयोगे जीव द्रव्यकर्मने ग्रहण करेळे. तेने भोगवी पिखेरेळे पञ्चकारणनी सामग्री मळे त्यारे कर्मनो नाश थायळे. कर्म नाश थता अविचल आत्म स्वरूपनो सहेजे विकाश थायळे.

इशु, विभु, परमब्रह्म, परमेश्वर, सुखधाम ब्रह्मनी स्थिति शुद्ध

ભાવમાં વર્તેછે. પરભાવમાં ન્યાય માટે પણ પ્રવર્તતી નથી. સોઝહ સોઝહ પદ પ્રાપ્ત કર્યું તેને હુ પ્રણામ કરુહુ. પરમાત્મપદને સોઝહપદ કહેછે સોઝહપદનુ ધ્યાન ધર્યાથી પરમાત્મપદ પ્રચેછે જે જે જીવો કર્મનો નાશ કરેછે તે તે જીવો પરમાત્માઓ ધાયછે. સિદ્ધસ્થાનમા એક સિદ્ધછે તેમ અનેક સિદ્ધ પરમાત્માઓટે સર્પૂર્ણ કર્મક્ષયથી મુક્તિસ્થાનમાં સર્વે સિદ્ધાત્માઓ સમાનઠે. જ્ઞાનની અપેક્ષાએ વ્યાપકછે અસહ્ય પ્રદેશરૂપ વ્યક્તિની અપેક્ષાએ વ્યાપ્યઠે. શકરાચાર્ય તથા ડપનિપદોની ઢેટલીઠુ અપેક્ષાએ આત્માનુ વ્યાપરૂપણુ જૈનમત અગી કાર કરેછે. તેમજ રામાનુજમતાપેક્ષાએ આત્માનુ વ્યાપ્યપણુ પણ જૈનમતમાં સમાઈ જાયછે. વ્યક્તિની અપેક્ષાએ સિદ્ધાત્માઓ ભિન્નભિન્ન છે અને જ્ઞાનાદિઠુ ગુણની અપેક્ષાએ એકરૂપ (એક) છે.

જે સિદ્ધ પરમાત્માઓને રાગદ્વેપ નથી. પરભાવમા રમણ કરતા નથી. આત્માના જ્ઞાનાદિઠુ અનન્ત ગુણમા જે સમયે સમયે રમ્યા કરેછે એવા પરમપ્રભુના ધ્યાનથી આત્મા પણ પરમાત્મા થાયછે. ધ્યાતા ધ્યેયના ધ્યાને સ્વશુદ્ધ ધ્યેયરૂપ પ્રાપ્ત કરેછે. પરમશુદ્ધપરમાત્માને વારવાર નમસ્કાર કરુહુ પરમાત્માના સમ્યગ્જ્ઞાનથી અજ્ઞાનાદિ દુઃખનો નાશ થાયછે સમ્યગ્ જ્ઞાનથી સદ્જ શુદ્ધ સ્વરૂપ મય ચિન્તનન્દ્ર સમુદ્રની લહેરો મગટેછે સમ્યગ્ જ્ઞાન ક્રિયાથી મુક્તિ પરોક્ષ નથી. અર્થાત્ મુક્તિ પ્રત્યક્ષઠે મુક્તદશા જે જે અશે થાયછે તે તે અશે મુક્તિનાં સુખ મગટેછે ઢેટલાક અદ્વૈતવાદિયો અદ્વૈતવાદનુ શુરુગમ યથાર્થ સ્વરૂપ ન સમજવાથી બ્રહ્મમાથી સૃષ્ટિ ઉત્પન્ન થઈછે અને બ્રહ્મમાં સમાઈ જાયછે. ઇત્યાદિ એકાંતવાદ સ્વીકારીને મૂલ કરેછે જૈનદર્શન અપેક્ષાએ અદ્વૈતબ્રહ્મવાદ સ્વીકારેછે પણ જે નયોની સાપેક્ષા વિના બ્રહ્મ માની મૂલો સાયે કરેછે તે સઢથી કહેવામાં આવેછે.

“ दोहा. ”

ब्रह्मथकी सृष्टि बनी, सहु छ ब्रह्म स्वरूप;	
व्यापक ते सर्वत्र छे, त्रिदानन्द गुणरूप.	२२८
मायाना बहु जोरथी, भूल्यो ब्रह्मनु भान;	
एकरूप सर्वत्र छु, अद्वैतवादि ज्ञान	२२९
शुद्ध ब्रह्मना अंश छे, जीव अनन्ता लेख,	
परमात्ममांहि ते भळे, द्वैतपणे नावि देख.	२३०
अद्वैतवादि वचन छे, माने ब्रह्मनुज्ञान;	
द्वैतपणु माने नहीं, ब्रह्मध्यान मस्तान.	२३१
नहि सत्यने ढांकीये, सत्य न ढांक्युं जाय,	
छावडीए रवि ढांकतां, कदी नहीं ढकाय.	२३२
जड चेतनता भेदथी, द्वैतपणुं प्रगटाय,	
कथ एक हि आतमा, सुख दु.ख विघटाय.	२३३
जडतारूपे जड अहो, जडनो कदा न नाश;	
असत् कहो शा कारण, ज्ञानी बहु शावाश.	२३४
जीवाजीव बे तत्त्व छे, ज्ञाने दोय जणाय;	
मिथ्या एक ग्रहे मुधा, सम्यक् धर्म न थाय.	२३५
ज्ञानी ज्ञानथकी ग्रहे, वस्तु सत्य स्वरूप,	
द्वैतपणुं अगीकरे, पडे न भवजल रूप.	२३६
एक एव हि आतमा, भूते तेह जणाय,	
जले प्रतिबिम्ब चन्द्रनु, तद्वत् जाणो न्याय.	२३७

- सत्ताने अगीकरी, माने अद्वैत एम,
 सग्रहनय एकान्तथी, तरे भवोदधि केम २३८
- प्रथम विपम दृष्टान्तथी, साध्यसिद्धि शु थाय,
 प्रतिबिम्बरूपितणु, अरूपि शु ते पाय. २३९
- प्रतिबिम्ब पुद्गलतणु, जल चन्द्रे दृष्टान्त;
 जीव अरूपी वस्तुमां, प्रतिबिम्ब नहि भ्रान्त २४०
- प्रतिबिम्बयी जाणशो, प्रतिबिम्ब छे भिन्न,
 प्रतिबिम्बकना भावयी, प्रतिबिम्ब छे खिन्न २४१
- प्रतिबिम्बित चन्द्रनु, भिन्नपणु त्यां लेरु,
 कथ साध्यनी सिद्धि छे, छे नहीं चेतन एक. २४२
- व्यापक आतम एकनु, अज्ञपणु नहीं होय,
 भिन्न भिन्न जीवाशयी, आतम एक न जोय. २४३
- आतम एकयी सर्वने, गर्म दु ख समकाल,
 सुख दु ख आच्छादक कहो, द्वैतपणु त्यां माळ २४४
- घटाकाश उपाधियी, ग्रहो गगननो भेद,
 तेवी उपाधि अत्र नहीं, सुख दु ख वारक वेद २४५
- समकाले सुख दु सनो, जीवोने प्रतिभास,
 अधिक न्यून प्राप्तितणो, मळे नहीं अवकाश २४६
- मळे नहीं अवकाश तो, तेनु कारण कोण,
 भिन्न भिन्न चेतन मिना, घटे नहि कंडू और २४७

- व्यक्तिथी सहु भिन्न छे, सत्ता ए सहु एक,
आत्मतत्त्व अवबोधथी, मानो एकाऽनेक. २४८
- सर्वत्रज व्यापक कहो, युक्ति घटे नहि कोइ;
सम्मत्तितर्के जाणशो, कहु विचारी जोइ. २४९
- सर्वत्रज व्यापक कहो, पिण्डे किम वंधाय,
देहे व्यापी जो कहो, अव्यापक पद पाय. २५०
- व्यापक नहि वंधाय छे, गगन पङ्कनी पेरे,
सर्वत्र सुख दुःखनी, प्राप्तितणु छे ज्ञेरे. २५१
- सर्वत्र व्यापक कहो, कदा नहीं वंधाय,
मानो तो छे अज्ञता, सद्व्युक्ति न जणाय २५२
- अव्यापक छे आत्मा, तेमां नही सदेह,
व्याप्यने व्यापक बोधथी, थाशो नि.सदेह. २५३
- शैलेशीकरणे करी, व्यापक आत्म लोक,
असंख्य शुद्ध प्रदेशथी, जाणो भविजन थोक. २५४
- अव्यापक व्यापक लहो, चेतन गुणनी खाण,
अनेकान्त अवबोधथी, पामो शिवपुर ठाण २५५
- सादि आदि भगे करी, व्यापक चेतन जाण,
स्याद्वाद दृष्टि थकी, साचु मनमां आण २५६

केवलज्ञाने आतमा, व्यापक सहुमां जोय, स्वपर प्रकाशक आतमा, प्रदीप पेठे होय	२५७
तिमिरारि प्रगटे तदा, तमनो शो छे भार, ज्ञानदीपक उद्योतयी, रहे नहि अंधकार	२५८
अद्वैत स्वरूपी आतमा, जडयी भिन्न विचार, द्वैतपणु पण तेहमां एक अनेकावार	२५९
अक्षररूपे आतमा, अनक्षर गुणवान्, आत्माऽऽसङ्ख्य प्रदेशमां, स्थिरता शुद्ध वखाण.	२६०
भास्यो आपोआपमा, टळ्यु महा अज्ञान, अपूर्व वीर्यज उल्लस्यु, यदा ययु निज भान.	२६१
जड इन्द्रियो शु करे, तेनाथी हु भिन्न, जडस्वरूपे तेह छे, क्षणिक नारी दीन	२६२
मन वाणी मारां नहीं, जडनु छे ते काज; तेनी सगे राचता, नहीं रहे मुज लाज	२६३
इसु रसु कोनाथकी, कोनापर ममभाव, मृगजलोपम वस्तुमां, शो ममतानो दाव	२६४
नहीं मारु जड वस्तुमा, राबु शु ससार, शाथी शाने माटे में, लीयो मही अवतार	२६५

- फोगट फंदामां पडयो, जरा न शर्म जणाय;
 [सवळे पन्थे चालतां, मनमां शुं खमचाय. २६६
- नथी तनु ते तु सदा, शरीर माटीघाट,
 पीपळपानपरे खेर, चेत चेत ते माट २६७
- सहुने देखुं ज्ञानथी, सहु म्हारथी दूर,
 प्रतिवध कोनो नही, सिंह इव हु शूर २६८
- रागदोष निन्दा कथा, तेनु भाग्यु जोर,
 स्वाभिमुख थइ चेतना, प्रगट्यो अनुभव तोर. २६९
- शत्रुथी छेदाउ नही, नहि शस्त्रे भेदाउ ?
 शत्रुमित्र सम भावना, भ्रमणा क्यांथी पाउ ? २७०
- कर्मवशे सहु प्राणिया, भ्रमण करे निर्धार,
 पुत्र मित्र ललनापणे, सगपणनो आचार. २७१
- सगपण साचु नहि कदी, स्वारथियो ससार,
 जगमां को केनु नही, संवेगे मनधार २७२
- सर्व जीव छे सिद्ध सम, निर्मल अविचल देव,
 त्रिकरण योगे तेहनी, मित्रभावना सेव २७३
- द्रव्यार्थिकथी नित्य छे, कदी न होवे नाश;
 असंख्यप्रदेशिव्यक्तिथी, ध्रुव स्वरूपी खास. २७४

पूर्वजन्म अभ्यासथी, जीव नित्यता सिद्ध, बाल युवा वृद्धा विपे, ज्ञाता एक प्रसिद्ध.	१७५
क्षणे क्षणे बदलायतो, चेतन होय अनेक, पाप पुण्य कोने घटे, तेनो कगे विवेक	१७६
क्षणिक वस्तुना ज्ञानथी, क्षणिक वाढ सुजाण, वक्ता क्षणिक नहीं थयो, नित्यरूप मन आण	१७७
कोइक वस्तुनो कदी, केवल नाश न होय चेतन नाश कद्या थकी, अन्यावस्था जोय	१७८
अन्यावस्था को नही, माटे चेतन नित्य प्रत्यभिज्ञा सुहेतुथी, नित्यज जाणो चित्त	१७९
पर्याये पलटाय छे, आत्मना पर्याय अनित्य माटे आत्मा, अनेकान्तमतन्याय	१८०
शुभाशुभ आश्रव ग्रही, धरतो नाना देह शाताशाता भोगवे, नय व्यवहारे एह	१८१
पुण्य पापना नाशथी, प्रगटे निजगुण भोग सूर्याच्छादक अम्रनो, छे महासयोग	१८२
कर्मसग टळ्या थकी, पामे जीव शिवगण पुरुषोत्तम परमात्मा, सिद्ध बुद्ध भगवान्	१८३

अगम्य आत्मस्वभावनुं, अवलम्बन करनार	
आश्रव त्यागी संवरी, भवोदाधि तरनार	२८४
जेने इच्छे योगिजन, अनन्यसुखनुं धाम.	
नमुं नमुं ते आतमा, अनन्तगुण विश्राम	२८५
अवलम्बन शुभ आत्मनुं, करतां नाशे दोष,	
प्रगटे अनुभव ज्योति त्यां, चेतन वीर्ये पोष.	२८६
निजपद जिनपद साम्यता, भेदभावनो नाश	
पूर्ण व्यक्तिमय आतमा, राजाने कुण दास	२८७
सर्व सिद्धनी तुत्यता, जीव अनन्ता माय	
कोकोने नडता नही, अरूपपद महिमाय.	२८८
विषमज्वरना जोरथी, होय अरुचि अन्न.	
अभव्य आदि जीवने, आत्मरुचि नहिमन	२८९
सम्यग् ज्ञान प्रभावथी, बहिरातम पद नाश	
अन्तरात्मगुण भावना, प्रगटे शिवपुर वास	२९०
परप्रवृत्ति हेतुओ, समूल त्यां छेदाय	
अन्तर परमप्रभुपणुं, सहजे उदये आय	२९१
हुं कर्त्ता परभावनो, बुद्धि भवनुं मूल	
अन्तरात्मपद योगथी, थाय तेह निर्मल	२९२

- कोटिर्वर्षनुं स्वप्नपण, जागतां लय थाय
आत्मज्ञान उद्योतयी, महजरूप प्रगटाय २९३
- चेतनबुद्धि देहमां, जाणो देहाध्याम
छूटे देहाध्यासतो, कर्म कलक पिनाश २९४
- कर्ता नहि हुं कर्मनो भोक्ता नहि हुतास
शुद्धदशा प्रगट्याथकी, विघटे भयमयवाम २९५
- चेतनधर्म मोक्ष छे, तुळे मोक्षस्वरूप,
भोगी रत्नत्रयितणो, क्षयिकरिवसुखभूष २९६
- सागरमांहि त्हेरियो, उपजेने पिणशाय,
चेतनगुण जे ज्ञान छे, ज्ञेयपणे पलटाय २९७
- शुद्ध बुद्ध निर्मल प्रभु, स्वयज्योति गुणधाम,
चिदानन्द चेतन पिभु, अनन्तगुणनुं ठाम २९८
- निश्चय अत्रज आवता, साक्षर एक स्वरूप
योगत्रिकने सवरी, गिवनगरी था भूष २९९
- रागादिक महावैगियो, ज्या तेनो नहि गन्ध,
आत्मलक्ष्यवृत्ति यता, परपरिणति थइ बध ३००
- देहनिष्ठ पण ध्यानयी, वर्ते देहातीत,
बदने वारवार तास, त्रियोगे हो नित्य, ३०१

- पुद्गल सुखते ऐठवत्, दुनिया स्वप्न समान;
शुद्धज्ञान ते आत्मतु, वाकी वाचा ज्ञान. ३०२
- जेतुं ज्ञान थया थकी, शान्तदशा प्रगटाय,
धर्म रह्यो त्या जाणीए, निश्चयथी सुखदाय. ३०३
- नेगम सग्रह नय कक्षा, त्रीजो नय व्यवहार,
ऋजुसूत्र त्रौथो कक्षो, पञ्चमशब्द विचार ३०४
- समभिरूढ छटो गणो, सप्तम एवभूत,
सप्तनयोथी, धर्मरूप, सत्यज प्रगटे युक्त. ३०५
- सातनयोथी वस्तुरूप, परिपूर्ण परस्काय,
नय एकान्तकदाग्रहे, मिथ्यात्वी कहेवाय ३०६
- सातनयोना बोधथी, सम्यक् अनुभव साथ;
आत्मतत्त्वने पारखी, तरशे भवजल पाथ ३०७
- ऋजुसूत्र आवेशथी, प्रगट्यु दर्शन बुद्ध,
ग्रहे एकान्त एकनय, थाय नहि ते शुद्ध. ३०८
- जीवादिक नवतत्त्वपर, नय साते योजाय,
सद्गुरु सेवा योगथी, सहजे ते बोधाय. ३०९
- स्यादस्ति, भगज कक्षो, अनेकान्त मत कद,
अस्तित्व सह वस्तुमां, ज्ञानी एम वदन्त ३१०

- अन्नं च अन्नं च, निज्यन्ते निज्यन्ते
 अन्नं च अन्नं च, निज्यन्ते निज्यन्ते ३११
- जीवादिषु सत्त्वान्, प्रयत्नं अग्निहेतवे
 कदा नहि जे वस्तु च्छा. प्रयत्नं नहि वस्तु च्छा ३१२
- वर्मायमादिषु च्छा. पुद्गल पंचम जायः
 जीवाद्येषु च्छा. अग्नि मंग अवलोक्य ३१३
- भूत भविष्यन् मंगलं, त्रिकाले वदायः
 षड्व्योमां जाणिये, अग्निमंग निरस्तय ३१४
- समं समं अग्निना, अनंतगुणी जायः
 चेतनद्रव्ये वर्णा निदान्ते व्याख्यात ३१५
- द्रव्ये द्रव्ये अग्निना, मित्र मित्र कहेवायः
 द्रव्यज गुण पर्यायता, अग्निनाज निजमाय ३१६
- पुद्गलना पर्याय जे, वस्तुद्रव्ये लेखः
 तदाकारे अस्तित्वा, सादि सान्तथी देख ३१७
- द्रव्यार्थिक नय जाणिये, अनाद्यनंतज भंगः
 पुद्गलमां व्यापी रक्षो, सादिमान्तगुण च्छा ३१८
- स्यान्नास्ति वीजो कदा, मंग अति
 षड्व्योमां व्या... नाय ३१९

परद्रव्य परक्षेत्रधी, परकालज परभाव,	
नास्तितता तेनी सदा, निजमा वते दाव.	३२०
ग्रही अपेक्षा परतणी, घटे नास्तितता आय,	
परभावे पद्द्रव्यमां, नास्तित्व स्थिरताय	३२१
परद्रव्योनी अस्तितता, तेज नास्तितता रूप,	
प्रणमे निजनिज द्रव्यमां, सापेक्षाए अनुप.	३२२
पूछे पृच्छक अत्र एम, घटे न वे एक ठाम;	
तमः तेज प्रतिपक्षिनुं, घटे न एकज धाम	३२३
नैकस्मिन् ए सूत्रधी, रहे न वे एकत्र,	
अस्ति नास्ति एकत्र नहि, भाखो सदगुरु अत्र	३२४
सापेक्षाए सहु घटे, तथा सर्व समजाय,	
पिता पुत्रत्व एकमां, बन्ने धर्म सुहाय-	३२५
चेतननुं अस्तित्वते, परमां नास्ति स्वरूप,	
परमां नास्ति नहीं रहे, विघटे वस्तु अनूप	३२६
विना अपेक्षा अस्तितता, नास्तितता नहीं जोय,	
नैकस्मिन् ए सूत्रतो, स्याद्वादे अवलोय	३२७
जे समयेछे अस्तितता, नास्तिपणु ते काल,	
एकसमयमां वर्तना, पद्द्रव्योमां भाल	३२८
अस्ति नास्ति त्रीजो कखो, भंग समय सिरताज	
पद्द्रव्योमां व्यापियो, जिनदर्शन साम्राज्य	३२९

- अस्ति शब्द उच्चारतां, समयो वदे असंख्य,
नास्ति शब्दोच्चारमा, तथा कहे भगवत. ३३०
- एकज समये अवाच्यछे, कदी न कोइ कहंत;
अवक्तव्यज भगछे, त्रयो सूत्रे लहंत ३३१
- अस्तिधर्म अनन्तछेज, वाणी अगोत्रर धाय;
पञ्चमभग ते उपजे, अनेकान्त शोभाय. ३३२
- नास्तिधर्म अनन्तता, वस्तुमध्ये रहत,
अवाच्य वाणीधी कह्यो, छठो भंग कहत. ३३३
- अस्तिनास्ति वे छे सदा, अवक्तव्य ते होय,
सप्तमभगज सर्वमां, समय समय अवलाये. ३३४
- गुरुगमज्ञानअवामिथी, भगज सप्त स्वरूप,
जाणी आत्मस्वभावमां, अपहरीए भवधूप. ३३५
- अतिगहनछे तच्चबोध, विरलाजन समजत,
सज्जन भवसागर तरे, करी कर्मनो अन्त. ३३६
- सप्तमगीछे सिद्धमा, अनन्तगुणमा जोय,
अनेकान्तनय जाणता, शुद्ध समकित होय ३३७
- नवतत्त्व पद्द्रव्यनु, सत्यज्ञान जो थाय,
तो जाणो ज्ञानिपणु, सद्देजे शिवपद पाय ३३८
- समकित्तादि मोहिनी, तेनो उपशम भाव,
क्षयोपशम लायिकपणे, प्रगटे समकितदाव ३३९

- निजगुण स्थिरता चरणथी, थाता गुण उद्योत;
स्वयंशुद्ध परमात्मा, प्रगटे निर्मल ज्योत. ३४०
- गुणस्थानक स्पर्शन यतां, सहजे गुण प्रगटाय.
परिपूर्ण निजव्यक्तिथी, अविचलपदवी पाय — ३४१
- पदस्थानक अवबोधथी, समकित प्रगटे चंग;
पदस्थानक धारो सदा, गुण प्रगटे निज अंग. ३४२
- अस्ति चेतनद्रव्यनी, चेतनद्रव्य अनन्त
ससारीने सिद्ध दोय, ज्ञानी एम वदन्त. ३४३
- नित्यज चेतन द्रव्यछे कर्त्ता हर्त्ता जोय,
कर्मथकी मूकाय शिव, तेनां कारण होय. ३४४

शिष्य उवाच

- नथी दृश्य ते दृष्टिथी, स्पर्शे ग्रह्यो न जाय;
आत्मद्रव्यनी अस्तिता, अनुभवे न जणाय. ३४५
- मानो देहज आत्मा, अथवा श्वासोश्वास.
पंचतत्त्वनुं पूतल्लं, अन्य कयो आभास ? ३४६
- घटपट यथा जणायछे. तथा न चेतनद्रव्य;
मोटे चेतन नास्तिता, मिथ्या माने भव्य. ३४७
- यदि नथीजो आत्मा, तपजप सयम फोक;
पुण्यपापनी कल्पना, भूले भोळा लोक. ३४८

शका मोटी जीवनी, टाळो सदगुरुदेव,
मतिहीन हु जीविल्लु, कापो कुमति देव. ३४९

सद्गुरुः उवाच

उत्शर्गलवृत्ति त्यजी, ग्रहो सुयुक्ति दीप;
समजो चेतन अस्तित्ता, यथाऽस्ति मौक्तिक छीप ३५०
पञ्चभूतथी भिन्नछे, अरूप निर्मल शुद्ध
देहे व्याप्यो जीवछे मळ्यु उदकमां दुध ३५१
हुं सुखी हु दु.खी एम, बुद्धि देहनी नांय,
मृत कलेवरमां कदी, जरा न चेष्टा त्यांय. ३५२
कठीन शीतत्वादि गुण, पंचभूतना जोय,
चैतन्यादि त्या नही, सूक्ष्मपणे अवलोय. ३५३
अरूप चेतन चक्षुथी, ग्रहो कदा नहि जाय,
पुद्गलस्कधो स्पर्शथी, ग्रहा सदा जोवाय ३५४
श्वासोश्वास ते स्पर्शथी, सदा अहो ग्रहवाय,
बाहिर जातो आवतो, ते चेतन शु थाय. ३५५
ज्ञातृताश्रय जीव छे, पुद्गल नहीं कदाय,
नहीं तो घटपट वस्तुमा, ज्ञातृशक्ति ग्रहाय ३५६
मद्यांगे मदशक्तिवत्, पञ्चभूत मयोग,
चैतन्यशक्ति उद्भवे, ते युक्ति पण फोक. ३५७

भिन्न भिन्न मद्यांगमां, मदशक्ति अवभास;	
भूत भूत प्रत्येकमां, ज्ञानतणो नहि वास	३५८
बुद्ध्यादिक आधार जे, तेहिज चेतन पेख,	
आदि शब्दथकी ग्रहो, सुख दुख कार्योल्लेख	३५९
बुद्ध्यादिक आश्रित जिहां, त्यां गुणपात्र जणाय;	
रूपादिवत् जाणीए, चेतन सिद्धि उपाय	३६०
गुण निराश्रय नही कदा, आश्रय छे घटरूप;	
बुद्ध्यादिक आश्रय तथा, आनन्दधन चिद्रूप	३६१

शिष्य उवाच

बुद्ध्यादिक आधार तो, इन्द्रियो कहेवाय;	
चेतननी शी कल्पना, करवी सदगुरुराय.	३६२

गुरु उवाच.

उपहत इन्द्रियो थकी, विषयस्मृति न घटाय,	
आश्रयनाशे स्मृतितणी, उत्पत्ति केम थाय?	३६३
कर्णेन्द्रियना नाशयी, स्मरणतणो नहि क्षोद,	
स्मृत्याश्रय ते आत्मा, मानो सत्यज बोध	३६४
अनुभव्युं जे इन्द्रिये, तेनो थाता नाश,	
स्मृति इन्द्रियो अन्यमां, ते पण मिथ्याभास	३६५
थातां एमज चैत्रने, यया अनुभव जेह,	
स्मृत्युत्पत्ति मैत्रने, घटे न युक्तिज तेह.	३६६

शिष्य उवाच.

भले न थावो इन्द्रियो, बुद्धि आश्रय कोइ,	
बुद्धि आश्रय देह छे, कहं विचारी जोइ	३६७
शरीरनाशे बुद्धिनो, नाशज थाता दीठ,	
भस्मीभूत शरीर तो, चेतन थाय अदीठ.	३६८

सद्गुरु उवाच.

बाल युवादिक भेद त्रण, तनुना एह प्रसिद्ध;	
बालदेहर्था भोगव्यु, स्मृति ते तेणे लीध	३६९
तरुण तनुमा तेहनी, स्मृति कदा नाहि थाय;	
बालशरीरे भोगव्यु, कथं युवान जणाय	३७०
मृतक शरीरे बुद्धिनी, स्फूर्ति कथं न थाय,	
माटे बुद्ध्याश्रय कहो, चेतन स्मर्ता आय	३७१

शिष्य उवाच.

बुद्ध्याश्रय नाहि देह तो, श्वासोश्वास जणाय,	
श्वास नहीं त्या सुखदुःख कदा न निरख्युं जाय	३७२
श्वासोश्वासे भिन्नता, नाहि ते एक स्वरूप,	
बुद्ध्याश्रय तेने कहो, ए पण जडता रूप	३७३
एकज श्वासोश्वासर्था, की गो अनुभव जेइ,	
अन्यश्वास स्मर्ता नहीं, बुद्ध्याश्रय नाहि एह.	३७४

बुद्ध्याश्रय जो श्वासतो, त्वक्थी तं स्पर्शाय;
 त्वचा ग्रहेछे श्वासने, केम न बुद्धि ग्रहाय. ३७५
 सोऽयं प्रतीतियोगथी, बुद्ध्याश्रय जे होय;
 आत्मतत्त्व ते जाणीए, नहि त्यां शका कोय. ३७६
 शिष्य उवाच.

देहादिकथी भिन्न जो, मानो चेतनराय;
 भिन्न करी देखाडीए, असिम्यानने न्याय. ३७७
 गुरु उवाच.

वायुरूपीं पण नेत्रथी, निरख्यो कदा न जाय,
 जीव अरूपी चक्षुथी, कथ अहो निरखाय ३७८
 वौ५ उवाच.

क्षणिकसंतति ज्ञाननी, तेतो चेतन मान;
 प्रवृत्तिरूप विज्ञाननो, आलय उपादान ३७९
 एकरूप नही ज्ञाननु, क्षणे क्षणे बदलाय,
 ज्ञानसन्तति आतमा, मानो सबळो न्याय ३८०
 क्षणिक सन्तति ज्ञाननी, मानंतां नहि दोष,
 क्षणिक उत्तर ज्ञानमां, पूर्व ज्ञाननो पोष ३८१
 गुरुः उवाच.

ज्ञान क्षणिकनी सन्तति, चेतन नहि कहेवाय,
 क्षणिक सन्तति मानतां, पुण्य पाप कुण पाय ? ३८२

- उपादान कारणतणो, कदा विनाश न थाय,
 आलयनो जो नाशतो, वृत्ति क्या प्रगटाय. ३८३
- आलयने ध्रुव मानीए, तो ते चेतनरूप,
 मानतां दोषज नथी, कस्वी समजी चूप ३८४
- आलयने प्रवृत्तिमां, मानो जो यदि भेद,
 उपादान, कारणतणो, थाशे त्यां विच्छेद ३८५
- बने नहीं घट वस्तुथी, सूत्रतणो समुदाय;
 कारण कार्यज भिन्नता, त्या शु कार्यज थाय. ३८६
- चेत्रमैत्र इव भेद त्या, कारण कार्यज भाव,
 स्मृतिभग त्यां होयछे, घटे शु युक्ति दाव ? ३८७
- क्षणिक सन्तति ज्ञानमा, कारणकार्याभेद,
 मानो तो क्षणवादनो, थाशे निश्चय छेद. ३८८
- उत्तरज्ञानदशा विपे, पूर्वज्ञान जो होय.
 स्थिरबुद्धि तेथी; थइ, बुद्धि नाश क्यां जोय ३८८
- आलयनी जे स्थिरता, तेतो आत्म मान,
 बन्धमोक्ष सहू तो घटे, चेतन गुणछे ज्ञान. ३८९
- पूर्वजन्मना स्मरणथी, पुनर्जन्मता सिद्ध,
 पुण्य पाप फल भोगवे, चेतन नित्य प्रसिद्ध ३९१
- चेतन नित्यज होय तो, कर्म न लागे कोय,
 अनित्य माटे आत्मा, क्षण क्षण नाशी होय ३९२

- आ क्षणमां जे आतमा, ते क्षण विणशी जाय;
 पुण्य पाप सुख दुःखनी, घटना कहो शी थाय. ३९३
- अन्य करेने अन्यने, पुण्य पापनो वन्ध;
 अन्यतणो जो मोक्षतो, ए सहु मिथ्याबंध. ३९४
- को कर्त्ता भोक्ता अहो, सहुधी अवळो न्याय;
 नित्य आतमा मानतां, कर्त्ता भोक्ता थाय ३९५
- अभ्रसंग दरे थतां, निर्मलरवि प्रकाश,
 नित्य आतमा मानता, होवे दोष विनाश. ३९६
- जेनी सयोगे करी, उत्पत्ति नहीं थाय,
 नाश होय नहि तेहनो, माटे नित्य सदाय. ३९७
- अहंकृतिने क्रोधनी, केशरी फणिधरमांय;
 भासे तरतमता घणी, पूर्ववासना त्यांय. ३९८
- पूर्ववासना योगधी, नित्य आतमा सिद्ध;
 क्षणिकचेतन बुद्धिने, देशवटो एम दीध. ३९९

आठांका शिष्य उवाच.

- जीव न कर्त्ता कर्मनो, कर्मज कर्त्ता कर्म,
 चेतन कर्त्ता कर्मनो, धर्म जीवनो मर्म. ४००
- सदा असंगी आतमा, जलपकजनी पेर.
 कर्त्ताने भोक्तापणु, भासे प्रकृति घेर. ४०१

- ईश्वर इच्छा योगथी, कर्मतणोछे धव,
 सुख दुःख तेथी सपजे, मोटे जीव अवध. ४०२
- सद्गुरु. उवाच—समाधान.
- काल अनादि परिणम्या, चेतन पुद्गल दीय;
 अशुद्धपरिणतियोगथी, कर्ता कर्मनो होय. ४०३
- जीवप्रेरणा जो नहि, तहिं ग्रहे को कर्म,
 जडमां कदी न प्रेरणा, भिन्नपणे वे धर्म ४०४
- मोटे चेतनप्रेरणा, थाता कर्म ग्रहाय;
 परभाविक ते प्रेरणा, ग्रहीलचेष्टान्याय. ४०५
- कर्ता कर्म न कर्मनो, जुओ विचारी चित्त,
 घटपट करे शु प्रेरणा, समजो न्याय पवित्र. ४०६
- मोटे कर्ता कर्मनो, चेतनछे व्यवहार,
 शुद्धस्वभाविक कर्मनो, कर्ता चेतन वार; ४०७
- मलधर्म त्यागे नहीं, एवो जीव स्वभाव,
 अशुद्धपरिणतियोगथी, कर्ता कर्म विभाव ४०८
- परिणम्यां पयनीरवे, भिन्न करेछे हस,
 निजगुण रमतो हस त्या, करे कर्मनो ध्वस ४०९
- चेतननो नहीं जाणीए, जेह विभाविक धर्म,
 स्वाभाविक निजधर्मछे, जाणो अनुभव मर्म. ४१०

अशुद्धपरिणतिथी कर्मा, कर्मतणोछे अन्त;	
सहजशुद्धनिजधर्मथी, भाखेछे भगवन्त.	४११
सदा असंगी आत्मा, निश्चयसत्ता धार,	
कर्ता भोक्ता.कर्मनो, वर्ते ते व्यवहार	४१२
जन्मजराने मृत्युनां, दु खनु कारण कर्म;	
शाताऽशाता कर्मथी, कर्मजालनो मर्म	४१३
रग्युं बीज कपासनुं, लाक्षारस सयोग,	
रूपां लागी रक्तता, कर्मफलो नो भोग	३१४
कर्माष्टक नाशे यदा, तो चेतननी शुद्धि,	
आत्मस्वभावे आत्मनी, पामे तात्त्विकरुद्धि.	४१५

शिष्य उवाच, शंकां

अनादिकालथी सगति, कर्म जीवनी जोय;	
नाश कहो शुं कर्मनो, कारण त्यांशुं होय.	४१६

सद्गुरु उवाच—समाधान.

कालअनादि परिणम्यो, चेतन मिथ्या भ्रान्त;	
छूटे चेतन खाणमां, रजः कनक दृष्टान्त.	४१७
ईश्वर इच्छायोगयी, सुख दुःख क्याथी होय.	
ईश्वरनी जो प्रेरणा, दोपी ईश्वर जोय;	४१८

शार्थी ईश्वर प्रेरणा, ईश्वरतो अन्याय,
न्यार्या अपराधी सह, ईश्वर पोते थाय. ४१९

शिष्य उवाच शंका

कर्म करेछे प्राणिया, सामग्री अनुसार,
सुख दुःख ईश्वर आपतो, जीव अकर्ताधार. ४२०

गुरु उवाच.

कृत्य करे ते भोगवे, पोते सुखने दुःख,
खावे तेह धरायछे. प्रभु न भागे भूख ४२१

क्षेपे निजकर बन्दिमा, ज्वलतो देखे हाय.
स्वयंहि कर्ता जीवछे, कथ प्रेरणा नाय, ४२२

अवळी बुद्धियोगथी, विपभक्षणथी नाश,
प्राणोनो जाणो अहो, ईश्वर न्याय न खास. ४२३

स्वयमेव ज्या सुख दुःख, चेतन कर्म पाय,
ईश्वर प्रेरण कल्पना, सुख दुःख कर्म थाय ४२४

सदा असगी आतमा, निश्चय सत्ता लेख,
व्यवहारे सुख दुःखनो, कर्ता चेतन देख. ४२५

जीव अकर्ता कर्मना, नाशे सत्य जणाय,
चेतन जाणो नयथकी, शुद्धधर्म प्रगटाय ४२६

शिष्य उवाच.

न्याययुक्तिं दृष्टान्तधी, कर्त्ता कर्मनो ज्ञेयः
समजे जडं शुं कर्मके, फलपरिणामी होय ४२७

उवाच गुरुः.

कर्त्ता भोक्ता जीवच्छे, पण तेनो नहि मोक्ष,
वीत्यो काल अनन्त पण, ह्यु न मुक्ति पोष. ४२९

पुण्यतणुं फल भोगवे, मानव स्वर्गं मञ्जार,
पापतणुं फल भोगवे, दुर्गतिमां अवतार. ४३०

पापपुण्य फल भोगवे, चतुर्गतिमां जाय,
समये समये कर्मसंच, कर्मरहित नहि क्यांय. ४३१

उवाच समाधानं सद्गुरुः

अशुद्धपरिणतियोगधी, फलद कर्म प्रमाण,
तथा निवृत्ति धर्मधी, सिद्धं छे निर्वाण. ४३२

काल अनतो वित्तीयो, जीवतणो परभाव,
आत्मरमणता योगधी, प्रगटे मुक्ति प्रभाव. ४३३

सयोगे वियोगछेज, देहादिक दृष्टान्त,
कर्मवियोगे आत्मनी, मुक्ति सुखालय कान्त. ४३४

शाधी ईश्वर प्रेरणा, ईश्वरनो अन्यायः
न्यायी अपराधी सहु, ईश्वर पोते थाय. ४१९

शिष्य उवाच शंका

कर्म करेछे प्राणिया, सामग्री अनुसारः
सुख दुःख ईश्वर आपतो, जीव अकर्ताधार. ४२०

गुरु. उवाच.

कृत्य करे ते भोगवे, पोते सुखने दुःख,
खावे तेह धरायछे. प्रभु न भागे भूख ४२१-

क्षेपे निजकर बन्दिमा, ज्वलतो देखे हाथ.
स्वयंहि कर्ता जीवछे, कथ प्रेरणा नाथ, ४२२

अवळी बुद्धियोगथी, विपभक्षणथी नाशः ;
प्राणोनो जाणो अहो, ईश्वर न्याय न खास. ४२३

स्वयमेव ज्या सुख दुःख, चेतन कमे पायः
ईश्वर प्रेरण कल्पना, सुख दुःख कर्म थाय. ४२४

सदा असगी आत्मा, निश्चय सत्ता लेख,
व्यवहारे सुख दुःखनो. कर्ता चेतन देख. ४२५

जीव अकर्ता कर्मना, नाशे सत्य जणाय,
चेतन जाणो नयथकी, शुद्धवर्म प्रगटाय ४२६

मोहिनी नाशे सर्व हणाय, नृप हार्याथी प्रजा पलाय;
कर्म टळ्याथी शिवसुख गेह, सत्यपथमां शो सदेह ४४३

मतदर्शनना असत्यराग, अथा श्रद्धा ज्ञाने त्याग.

जातिलिंगमां माने मोक्ष, तेथीज मुक्ति होय परोक्ष. ४४४

सत्यतत्त्वनी श्रद्धा थाय, समवायिपचज प्रगटाय;

अरूप चेतन जागे ज्योत, त्रिभुवनमां ज्ञाने उद्योत. ४४५

भवमुक्तिनी नहींछे आदि, प्रवाहथी ते दोष अनादि;

अनेकान्त पन्थज समजाय, श्रद्धाथी सहु मळे उपाय ४४६

केवलज्ञानी वाणी ग्रंथ, गुरुगम समजी ल्यो शिवपंथ;

एकशब्दनो भावज साच, एम कहे तीर्थकर वाच. ४४७

जीव मोक्षादि शब्दज एक, साचो माटे करो विवेक,

जेनो बंधहि तेनो मोक्ष, जरा नहि त्यां लागे दोष. ४४८

शिष्य उवाच.

“ दुहा ”

आपे, पदस्थानक कक्षां, करुणाथी गुरुदेव,

श्रद्धाथी मे सहक्षां, टळी अनादि कुटेव.

४४९

आज लगी अज्ञानथी, थइ न तत्त्व प्रतीत,

नमन करुथी सदगुरु, कीधो शिष्य पवित्र.

४५०

शिष्य गंका.

मोक्षतणी जे आस्तिता, तेतो ममजी जाय,	
अनन्तभवना कर्मनो, अस न क्यारे थाय	४३५
भिन्न भिन्न दर्शन कथे, मुक्ति अनेक उपाय,	
सत्य असत्य तेमां कथुं, निर्णय चित्त न थाय	४३६
को वेपे कइ जातिमां, कया पन्थमां मोक्ष,	
निश्चय तेनो नाहि बने, तो शी करवी होंश	४३७
भव प्रथम के मुक्तिवा, प्रथम जीव के सिद्ध;	
इत्यादिक मन चितता, मोक्ष न होय प्रसिद्ध	४३८

उवाच सद्गुरु

चोपाड.

ज्ञानक्रियाछे मोक्षोपाय, सूत्रे भाखे श्री जिनराय,
 अमिकणार्थी, गजीबुळे, तथा ध्यानथी कल्मषटळे ४३९
 जेने लाग्यो जन्मर्था रोग, औपवयोगे थाय निरोग,
 कीधां अनन्तभवनां कर्म, नष्ट थता प्रगटे शिवशर्म ४४०
 अंधारु जग व्यापी जाय, थातां सूर्योदय विणसाय;
 सत्य ज्ञान त्या गोछे भार, कर्मतणो तुं हृदये धार ४४१
 ज्ञानावरणीयादिक आठ, कर्मतणोछे सूत्रे पाठ,
 मुख्य मोहिनी सह्युमा होय, यथाप्रजामा नृपति जोय.

वदे वेदान्ती मुक्ति स्वरूप, जाणो जग व्यापक त्रिद्रय;
 घटन व्यापक चेतनराय, त्यां शु शिवनी आश रखाय ४५९
 माने मुक्तिज आर्य समाज, भाडे पाम्यो जीवजराज,
 मुक्तिथी जीव पाछे फरे, मुक्ति एवी शुंदु ख हरे ४६०
 कर्म खप्याथी नहि संसार, कथं जीव पामे अवतार,
 जन्म मरण ज्यां वारवार, शान्ति तेनी नही लगार ४६१
 एक केहे छे मुक्ति स्वरूप, मोटो अवारानो कूप,
 जावुजे ईश्वरनी पास, चित्त वरो ईश्वर विश्वास ४६२
 विश्वासी ईश्वरना दास, मुक्तिफोजमां भळतां खास;
 इशु भलो ईश्वरनो पुत्र, ते चलवे छे जगनुं सूत्र. ४६३
 शरीरधारी मुक्तिज ज्यांय, जन्म मरणना फेरा त्यांय;
 मुक्ति तेवीज कदी न होय, साक्षरवादी ग्रहे न कोय. ४६४
 अंधो वनमां फरतो फरे, पण चाली पहोचे नहि घरे,
 ज्ञानचक्षु हृदये प्रगटाय, मुक्ति पन्थ त्यारे देखाय. ४६५
 कोइक राता छे व्यवहार, ज्ञाने राता कोइकधार,
 एकएकनु खडन करे, पक्षापक्षेज लडी मेरे ४६६
 एकान्तनयोथी पक्षापक्ष, सत्यज माने वे नय दक्ष;
 नय-एकेके दर्शन थयां, सापेक्षे ज्ञानिए ग्रह्यां. ४६७

धर्मरत्न आजे ग्रह्यं, देख्युं परमनिधानः,
 शरण शरण त्हारु प्रभु, कोई न तुज समान. ४५१
 काल अनादिथी भयो, पण आव्यो नहीं अन्तः
 सम्यक्त्व जणावियु, नमु प्रभो गुणवन्त. ४५२

शिष्य उवाच शंका.

अनन्तजीवो सिद्धता, शिवमा केम समाय,
 निराकरण तेनु करो जेथी शङ्का जाय. ४५३

उवाच गुरु

सिद्धशिलानी उपरे, शाश्वतछे शिवठाण,
 कर्म खप्यार्थी जीव त्या, थापे श्री भगवान् ४५४
 एकदीपकनी ज्योतिमा, अनेकदीपकज्योत,
 सिद्धअरूपी मावता, दोष न किञ्चित् द्योत. ४५५

चोपाइ

विषयवासना विषयसम खास, त्यागो बहिरातमपदवास,
 शाश्वतपदनी वाञ्छा होय, तो अधिकारी धर्मे जोय ४५६
 दु खनो आत्यंतिकविनाश, मुक्ति वैशेषिकनी खास,
 मनने नित्यज भाने तेह, मुक्तिमा जीव साथे तेह ४५७
 बुद्ध्यादिक नवनो ज्यां नाश, मुक्तिज एवी त्यांशुआश,
 चन्द्रावन जवुक अवतार, तेथी सारो मानव धार. ४५८

आर्त्त रौद्र किरियानो त्याग, तेथी नहि शिवसुखनो लाग;
मुक्तिप्रापक मनमा जाण, तऱ्हेतु अमृत सुख खाण. ४९५

आत्मज्ञानथी छे नहि देह, चेतनधर्मी गुणगणगेह;
अरिहंतादिक पदवी जेह, तेनो धर्ता चेतन एह ४९६

जेजे इच्छे रुचि अनुसार, तेते फळ पामे निर्धार,
भवाभिनंदी भवमां फरे, आत्मानंदी शर्मज वरे ४९७

अव्यय निर्मळ चेतनगति, अनुपम मुक्ति स्त्रीनो पति,
कर तुं तारो स्वयप्रकाश, पोतानो धर तुं विश्वास. ४९८

तहारावण सारो जग कयो, तहारावण निर्मळ को भयो,
नहि नहि तहारा कोय समान, धर निर्मळ पोतानुं ध्यान ४९९

तहारा निर्मळगुणनो लेश, पामंतां नाशेछे क्लेश;
'योगीजन तो देखे त्हेने, मोह न आवे तेनी कने. ५००

योगी देखे आपोआप, तेने क्यांथी लागे पाप;
'ध्यानगुफामां योगी वास, कर्म न आवे तेनी पास. ५०१

सौथी न्यारो योगी योग, नहि पामे ते मोही लोक;
जागे योगीज उंधे सह, शु योगीनी वातज कहु. ५०२

योगी सोह चेतनराय, बोले देखे ते कहेवाय;
'परमात्मने जीवनो भेद, भागे नाशे भवनो खेद. ५०३

पद् द्रव्योमां वर्तन एम, चित्तन करता लहिये क्षेम,
 शुक्लध्यान पण तेयी होय, निश्चय शास्त्रे भाख्यु जोय ४८६
 पद् द्रव्योमां सर्व समाय, भाषे सूत्रे श्री जिनराय;
 सूक्ष्मपणे जो थावे ज्ञान, स्वल्पभवे पामे शिव स्थान ४८७
 निश्चयदृष्टि चित्ते वहे, व्यवहारे वर्ती गुण लहे;
 एकान्ते चाले व्यवहार, पामे नही ते भवनो पार. ४८८
 सर्वज्ञे भाख्या नय दाय, होय न जूवो तेमां कोय;
 निश्चयनो हेतु व्यवहार, कारण कार्यपणु त्यां धार ४८९
 आवश्यादिक जे व्यवहार, करीये लहिये भवजल पार,
 जनमन रंजन किरिया करे, भाव विना ते भवमा फरे ४९०
 भाव विना किरिया छे फोक, करीए ममजी हरिये शोक;
 आडु अवळुं मनडु फरे, धर्मक्रिया ते शानी करे ४९१
 चित्त न ठरतु एकज ठाम, मोटे किरियानुं शु. काम;
 निश्चय एमन करणो कोय, उद्यम अवलवो सुख होय ४९२
 निज गुण रक्षण साचो वर्म, निजगुण, विभवसनजअधर्म,
 आत्म प्रवृत्ति धर्मे वळे, निज ऋद्धि तो निजने मळे. ४९३
 क्रिया वाह्यनी चेतन करे, कर्म ग्रही भव फरतो फरे,
 पाप क्रियाछे भव जजाळ, क्रिया धर्मनी मंगलमाळ ४९४

आर्त्त रौद्रकिरियानो त्याग, तेथी नहि शिवसुखनो लाग;
मुक्तिप्रापक मनमा जाण, तज्जेतु अमृत सुख खाण. ४९५

आत्मज्ञानथी छे नहि देह, चेतनधर्मी गुणगणगेह;
अरिहतादिक पदवी जेह, तेनो धर्ता चेतन एह ४९६

जेजे इच्छे रुचि अनुसार, तेते फळ पामे निर्धार;
भवाभिनंदी भवमां फरे, आत्मानंदी शर्मज वरे. ४९७

अव्यय निर्मळ चेतनगति, अनुपम मुक्ति स्त्रीनो पति;
कर तुं तारो स्वयंप्रकाश, पोतानो धर तुं विश्वास. ४९८

तहारावण सारो जग कयो, तहारावण निर्मळ को भयो,
नहि नहि तहारा कोय समान, धर निर्मळ पोतानुं ध्यान ४९९

तहारा निर्मळगुणनो लेश, पामंतां नाशेछे क्लेश;
योगीजन तो देखे त्हेने, मोह न आवे तेनी कने. ५००

योगी देखे आपोआप, तेने क्यांथी लागे पाप,
ध्यानगुफामां योगी वास, कर्म न आवे तेनी पास ५०१

सौथी न्यारो योगी योग, नहि पामे ते मोही लोक;
जागे योगीज उंधे सह, शुं योगीनी वातज कहूं. ५०२

योगी सोह चेतनराय, बोले देखे ते कहेवाय;
परमात्मने जीवनो भेद, भागे नाशे भवनो खेद, ५०३

धन्य धन्य मानु अवतार, स्वरूप किञ्चित् भास्यु सारः
 अकलगति तु चेतनदेव, कर पोतानी पोने सेव. ५०४
 दानी दे तु निजगुणदान, भानी तु दे निजगुणभानः
 त्हारु सुख छे अव्यावाध, साधनयी तुं तेने साध्य. ५०५
 समतारसनो तुं भण्डार, आत्म धर्मने तुं धरनार,
 नाहं नाह तृष्णादास, नाहं नाह पुद्गलवास. ५०६
 श्री जिनवरभापित वे धर्म, हेतु ते छे शाश्वतशर्म,
 यथाशक्ति तेनो स्वीकार, करिये समजी धर्मप्रकार. ५०७
 निंदो धर्मीने मा कोय, निंदाना कडवा फल होय,
 श्रावक थइने तपजप करे, निंदा करतो भवमां फरे. ५०८
 समजे नहि अंतरनो मर्म, टीला टपके शानो धर्म,
 शुद्धस्वरूपे निश्चय धार, धन्य धन्य तेनो अवतार ५०९
 कुलमा उपन्यो श्रावक नाम, तेथी श्रुं थावे निजकाम,
 नाममात्रथी कार्यज सरे, धनपति भिक्षा खातो फरे. ५१०
 श्रावकव्रत नहि पोते धरे, दे शीखामण साधुघरे,
 गुरुनो प्रत्यनीक चडाल, तेथी जन्म भलो शृंगाल ५११
 अहो विषम कलिकाले जोय, श्रावकना गुणधारी कोय,
 मानी मुनिथी क्लेश, तेने श्रुं लागे उपदेश. ५१२

भण्योगण्यो पण श्रावक कोय, गुरुथी अधिको नाहि तेहोय;
मेरु सरसव समळे फेर, अतर अजवाळुं अवेर. ५१३

उत्तरझयणे तेनी साख, गुणना माटे कर अभिलाप;
दृष्टिरागे शानोज धर्म, द्वेषे वाह्यो बांधे कर्म. ५१४

धर्मगुरुनीज आज्ञा धार, तस्वानु ते तीर्थ विचार;
तेथी पामो भवनो पार, सार सार तेळे सुखकार. ५१५

साधुव्रतनोळे अभिलाप, माने सदृगुरुनो हुं दास;
अस्तुद्रादिक गुणनु नाम, साचु तेनुं श्रावक नाम. ५१६

पंचमहाव्रत पचाचार, धर्मव्यानमां वर्ते सार;
भवभ्रमणभय आज्ञाजिन, वर्ते मन जेनु निशदीन ५१७

वाह्योपाधि विषवत् त्यजी, सहजसमाधि ज्ञाने भूजी;
जेने बोध्युं आत्मस्वरूप, नमु नमुं प्रभु गुरु श्री अनुप ५१८

पार्श्वमणि संयोगे लोह, भजे कनकता तेह अत्रोह;
जेना बोधे टळे सदाय, गुरुनी गुरुता प्राप्तिथाय ५१९

एवा गुरुने सेवो भाइ, तीर्थ तीर्थ ते जग सुखदाइ;
वाणी जेनी वहु गभीर, चेतन योगी ध्यानी धीर. ५२०

धर्मगुरु मुज-प्राणाधार, सदा शुद्ध तेनो उपकार;
गुरुनी सेवा भक्ति मळे, तो भव कल्मकप सहेजे टळे. ५२१

गुरुए कीधो जे उपदेश, पामीने तेनो लवलेश;
 गुरुनी भक्ति वर्णन करी, लागी गुरुभक्ति मुज खरी ५२३
 धर्मगुरुओज थया करो, ज्ञानामृतनो वहो झरो,
 श्रीसखेश्वर पार्श्वकृपाळ, निशदीन करशो मगळमाळ ५२३
 धरणेन्द्र पद्मावती सहाय, पामी पूरो ग्रंथ कराय,
 परमात्मदर्शन निर्मळ ग्रथ, पचशती जाणो शिवपथ ५२४
 गाम लोदराए करी मास, मतिस्फूर्तिथी कर्यो प्रयास,
 म्हैसाणामां पूरो थयो, शुद्धस्वभावे चेतन रह्यो. ५२५

“ दुहा ”

धर्मचन्द्र सुत जीवणलाल, सुरतवासी जीवदयाल;
 सकल संघना माटे कर्यो, ज्ञाताभवपाथोधि तयो ५२६
 श्री सुखसागर गुरुजी वेश, पामी आनन्द होय हमेश,
 बुद्धिसागर रचना सार, मगल सिद्धि जयजयकार ५२७
 सवत औगणीश नपरे, साठतणी शुभसाल,
 अषाढ शुक्ला पचमी, रचतां मगलमाल ५२८

परमात्मदर्शन.

अशुद्धि शुद्धि पत्रक.

पृष्ठ	लीडी	अशुद्धि	शुद्धि
३	१२	भव्यत्मा	भव्यात्मा
४	२३	अवबोध	अवबोध.
६	२४	सुखन	सुखने
७	१३	समयसूचक	समयसूचक
१३	४	साभ्यता	साम्यता
१५	३	पष्ठ	पष्ठ
१५	१५	निद्राधीन	निद्राधिनि
१५	२१	अने	० नथी
१५	२२	तेने	तेणे
१६	७	रूपिसभा	ऋपिसभा
१६	२२	त्वाय	त्वाच
१७	९	ससय	सस्य
१७	२१	तीर्थर्न	तीर्थनी
१७	२२	सद्गुरु	सद्गुरु
१८	१६	य ा	यथा
१८	१८	तादृक	तादृक्
२०	१४	भे ि	भेगु
२०	१८	वचु	वचु
२१	७	स्थीति	स्थिति

पृष्ठ	श्री	शब्द	शब्द
१२०	१	अधगता	धिगता
१२०	१०	सर्वत्रा	सर्वत्र
१२५	८	विचार	विचारे
१२५	८	तारा	तारो
१२६	१०	रा वीश	राखीश
१२६	३	किंचित्नि	किंचिभि
१२७	१०	तिष्ठति	तिष्ठति
१२७	१४	तिष्ठति	तिष्ठति
१२८	१७	पृथ्वी	पृथ्वी
१२९	५	देश	देशे
१२९	९	शु	शु
१२९	१३	सर्व	सर्व
१३१	११	मनुष्यो	मनुष्यो
१३१	१८ ^१	होतु	होतु
१३३	३	स्वरूप	स्वरूप
१३७	८	केश	केश
१४०	५	शुक्ले	शुक्ले
१४०	१२	औदारिका	औदारिका
१४०	१२	तेजस	तेजस
१४०	१५	चाल्या	चाल्यो
१४१	३	शुद्धा	शुद्धा
१४१	५	विष्णु	वण
१४१	७	वृत्तिम	वृत्तिमां
१४१	१६	जेतु	जेतु मन
१४१	१७	ननी	नयी

पृष्ठ	श्लोको	मद्युक्ति	शुद्धि
१४१	१७	भाक्ता	भोक्ता
१४२	२२	मुनिश्वर	मुनीश्वर
१४३	३	शरीरीनु	शरीरीनु
१४३	६	सधा	सुधा
१४४	८	सुभटो	सुभटो
१४४	९	पारो	पसे
१४४	९	हायछे	होयछे
१४४	१३	ता	तो
१४४	२०	ता	तो
१४५	२४	अनुष्ठान	अनुष्ठान
१४६	१०	५	केवलज्ञान
१५३	८	आही	ओही
१५३	२०	अगुलन	अगुलना
१५७	३	आत्मत्व	आत्मतत्व
१५७	२२	लुड	शूड
१६०	१८	आत्तभ्यान	आर्त्तध्यान
१६१	१	वा	वो
१६१	१०	करीन	करीनि
१६२	७	०	तो
१६२	८	रग	रग
१६२	२४	सुरव	सुख
१६६	४	योग	योग
१६७	६	अभिडापि	अभिलापि
१६८	१०	कद्वछे	कद्वुछे
१६८	११	विषयाणा	विषयाणा

पृष्ठ	श्लोकी	भगुदि	शुदि
१६०	११	पाद्य	पाद्य
१७०	१०	विराजीग	विराजित
१७१	१८	लोक	लोक
१७१	१८	र ।	रूप
१७३	१७	हे	छे
१७३	१७	कु	न
१७४	१०	कर	कर
१७४	१०	व्याधि	व्याधि
१७४	२१	याज्य	त्याज्य
१७५	३	हे	छे
१७५	३	कु	न
१७६	३	वा	वा
१७६	३	रु	०
१७८	११	श्रद्ध	श्रद्धा
१८१	७	अत्म	आत्म
१८५	१०	ध्याण	ध्यान
१८७	९	आत्म	आत्मा
१८७	१०	निष्क्रिम	निष्क्रिय
१८७	१६	”	”
१८७	१०	स्वरू - १	स्वरूप
१८७	२३	निदृष्टि	निश्चयदृष्टि
१९१	१८	तृपा	तृपा
१९४	१५	दुष्प्राप्य	दुष्प्राप्य
१९५	२०	त । गर	तवगर
१९८	६	धर्मा	धर्मी

शुद्ध	श्लोटी	अशुद्धि	शुद्धि
१९८	१०	सिंहलद्वीप	सिंहलद्वीप
१९९	१६	पण	पण
२००	११	नु	नु
२०५	२५	गत	०
२०७	६	चारिभ्र	चारिभ्र
२०७	२०	कृत्युमां	कृत्य
२०९	७	राकाइ	रोकाइ
२१०	३	राग	राग
२१०	१८	०	छे
२११	२५	शु	०
२१२	१	०	शु
२१३	१५	गिहेसु	गिहेसु
२१४	५	प्रमा - १	प्रमाण
२१६	१६	सद्भाव	सद्भाव
२१८	४	दशनापयोम	दर्शनोपयोग
२१८	१६	नाणवा	जाणवा
२२१	१	व्याक्ति	व्यक्ति
२२२	०	प्रायश्चित्तेषु	अन्यमतनो जैनदर्शनां समावेश
२२३	१	नारितत्व	नास्तित्व
२२४	२५	एकेकवी	एकेकथी
२२९	९	बलवत्तर	बलवत्तर
२३०	१६	का	कारण
२३१	१९	देवनी	देवनी
२३२	२५	जन	जिन
२३२	११	सामिले	सोमिले

शुद्ध	छाँटी	अनुबि	शुद्धि
२३६	११	भावनै	भावनै
२३६	१९	लारण	कारण
२३८	१	उत्पत्तो	उत्पत्तो
२४१	४	तिक्षण	तीक्षण
२५३	१५	वेना	वेनना
२५९	५	कवलाहर	कवलाहार
२६२	१६	द्वेषो	द्वेषने
२६३	३	स य	सत्य
२६३	७	नयी	नयी
२६३	१९	आयुष्य कर्म	आयुष्य कर्म
२६३	२४	तारतम्य	तारतम्यता
२६४	१	माहनीय	मोहनीय
२६४	१७	आत्मनी	आत्मानी
२७६	१०	प्रधान	प्रधाने
२७६	२५	जोद्धाओ	योद्धाओ
२७७	११	नगर	नगर
२७७	१४	जीवोनो	जीवोने
२७८	०	धम	धर्म
२७८	४	आ	आ
२७८	८	चतुरिन्द्रि	चतुरिन्द्रिय
२७८	११	दशा	दशा
२७८	१४	मोहना	मोह
२७८	१७	पास	पास
२७९	१	रोवरयु डु	रोवरायु डु
२७९	१७	कृती	कृतरी
२८०	१	मोहे	मोहे
२८०	५	रजा	राजा
२८०	१५	जीव	जीव

पृष्ठ	लीटी	अशुद्धि	शुद्धि
२८०	२३	दृढ	दृद्धि
२८१	२५	विष्टा	विष्टा
२८२	१५	कृसप	कुसप
२८४	२१	मुख	सुख
२८४	२२	तेओ	तेमा
२८४	२२	अभावेछे	भमावेछे
२८४	२५	बौध	बौद्ध
२८६	४	ससार	ससार
२८७	१	जावो	जीवो
२८७	२०	लाग्या	लाग्यो
२८८	१२	थाडी	थोडी
२८८	१३	न	ने
२८८	१४	दयाना	दयाना
२८८	१५	वर्षावता	वर्षावतो
२८८	२४	जोवोने	जीवोने
२८८	२४	खेचुछु	खेचुछु
२८९	१	०	के
२९०	१०	सम्यक्	सम्यग्
२९१	१५	नाश	नाश
२९२	७	प्रतिष्ठा	प्रतिष्ठा
२९३	२१	स्माद्वाद	स्याद्वाद
२९३	२४	मारा ।	माराथी
२९५	६	वाइ	काइ
२९८	१०	तरीक	तरीके
२९८	१२	वरणोय	वरणीय
३०३	१२	—	प्रसव
३०५	२	पचम	पञ्चम
३०५	४	खामी-	स्वामी-

शुद्ध	लींग	अशुद्धि	शुद्धि
३०५	१३	येगे-	योगे
३०५	१५	सिद्धात-	सिद्धान्त
३०९	१६	वस्तु	वस्तु
३०८	९	-	ठर्यो
३११	१०	-	स्वरूप
३१६	१०	ब्रह्मचर्य	ब्रह्मचर्य
३१७	१७	तज्ज्ञान	तज्ज्ञान
३१८	७	सु द्वे	सुद्धे
३३५	०	कारणक	कारणके
३३६	१५	सिद्धत्मा	सिद्धात्मा
३५४	४	कवी	केवी
३५५	१	आविर्भाव	आविर्भावे
३६७	१८	एकात	एकान्त
३६४	१३	मल	मूल
३६६	२०	स्वरूपमा	स्वरूपमा
३६९	१३	निमित्त	निमित्त
३७२	६	दृश्य	दृश्य
३७४	८	उपनिषदा	उपनिषदो
३७५	१	सहु छ	सहु छे.
३८३	४	त्या	त्यां
३८८	३	उत्सगल	उत्सृखल
३०४	१३		मूल धर्म
३९४	१६	त्या	त्या
३९१	११	अना।दि	अनादि
३९८	८	चितता	चिततां

ज्यां ईश्वरमा इह स्व उपाइ होय त्या दीर्घ वाचवी.
 बीजी जे अशुद्धि छद्मस्थ दृष्टिणी सुधारता रही गर होय ते
 सुधारीने वाचवी

योगनिष्ठ मुनि बुद्धिसागरजी कृत ग्रन्थोनी यादी.

अने ते मळवाना ठेकाणा—

पुरतकतु नाम.

मणवातु ठेकाणु.

- १ जैन धर्म अने श्रीस्ति धर्मना मुकाबला. } धी जैन केंडली सोसायटी-मु अथ.
- २-३ श्री रविमागरण अने शोकविनाशक. } वडोदरा भाभानी पोण शा केशवलाय लालयदने त्या.
- ४ पद्मव्य विचार. } पादरा. शा. मोहनलालसाध ह्रीमयद } पकील.
- ५ पयनाभृत. }
- ६ अध्यात्म शानि.—शा. रतनय द लाधाण कावीडा पोरसद पागे.
- ७ चि ताभणि. } जैनोदय बुद्धिसागर समाज. } साणु द.
- ८ कन्यानिष्ठय निषेध. }
- ९ पूजा स ग्रह. }
- १० बुद्धिप्रकाश गायतु स ग्रह.—शा. मण्डिलाय वाडीवाल साणु द.
- ११ बुद्धिप्रकाश गायन स ग्रह } अमदावाद स सन जिनम उल. } साग भीजे.
- १२ समाधिशातक—रोक. जगालाध दलपतसाध. मु अमदावाद.
- १३ तत्त्वविचार. } 'ज्ञान प्रसार' म उल. मु वार्ध.अवेरी अजर }
- १४ सत्यस्वरूप. }
- १५ आत्म प्रकाश. } शा. वीरय द कृष्णाल. मु. साधुसा. } पुना-वैतालपेठ.
- १६ सज्जन स ग्रह साग पडेलो. } अमदावाद. }
- १७ सज्जन स ग्रह साग भीजे. }
- १८ सज्जन स ग्रह साग त्रीजे. }
- १९ सज्जन स ग्रह साग चोयो. }
- २० अध्यात्मज्ञान व्याख्यानसाग. } जैन पोरडिंग नागोरीसगळ.

२१ आत्मग्रहीप. }
 २२ अध्यात्मगीता. }
 २३ आत्मस्वप्न. } अमदावाद जैनचैतान्तर योर्डींग
 २४ अतुल्य पुराणीशी. }
 २५ परमात्म दर्शन } नागोरीशराह.
 २६ परमात्म व्योमिति.
 २७ शुद्धबोध

२८ प्राचीन न्याय ग्रंथ विद्वान्. } अवेगी जोगीलाल ताराय ह.
 म स्मृत व्याख्या सुक्यावली. } अमदावाद राशीनाडानीपाण.

२९ तत्त्वचिह्न (याने मक्षिण) } जैन योर्डींग
 सिद्धांत रत्न. } नागोरीशराह अमदावाद-

३० चैतनशक्ति ग्रंथ-(लज्जन सभ्रह त्रीण लागमा)

३१ वर्तमानकाव्य सुधारें-(ल. त्रीण लागमा)

३२ परमब्रह्म निराकरण-(लज्जन स. ४ चोथामा)

३३ अघात्म वचनामृत ग्रंथ (लज्जन सभ्रह लाग चोथामा)

नहीं छपावेला ग्रंथोनी यादी.

३४ तल्ल परीक्षा विचार

३५ ध्यान विचार

३६ सुभसागर

३७ शुद्धभाहात्म्य.

३८ श्रीमत्त सरकायकनाड सयालशाननी आगण आपेवु' लापण

३९ पत्र सदुपदेश.

